दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र

CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION

जम्मू विश्वविद्यालय

UNIVERSITY OF JAMMU

जम्मू

JAMMU

स्व-शिक्षण सामग्री

SELF LEARNING MATERIAL

एम. ए. हिन्दी

M. A. HINDI

SESSION – 2025 ONWARDS

सत्र- दूसरा	स्वातंत्र्योत्तर	कोर्स कोड- HIN-204
Semester- II	हिन्दी कविता	COURSE CODE- HIN-204
इकाई - I-IV		आलेख संख्या - 1 से 20 तक
UNIT- I-IV	CREDITS-6	LESSON NO. - 1-20

PROF. ANJU SHARMA
COURSE CO-ORDINATOR

DR. POOJA SHARMA
TEACHER INCHARGE

इस पाठ्य सामग्री का रचना स्वत्व/प्रकाशनाधिकार दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू-180006 के पास सुरक्षित है।

---

http:/www.distanceeducation.in

Printed and published on behalf of the Centre for Distance & Online Education, University of Jammu, Jammu by the Director, CDOE, University of Jammu, Jammu.

M.A. HINDI	CREDITS: 6	C.No. HIN-204

Course Contributors		Lesson No.
1.	Prof. Anju Sharma Professor, Centre for Distance & Online Education, University of Jammu.	1 to 6
2.	Prof. Rajni Bala Head, Department of Hindi University of Jammu.	11 to 14
3.	Dr. Shashank Shukla Associate Professor, Department of Hindi Central University of Jammu.	15 to 17
4.	Dr. Parshotam Kumar Assistant Professor, Department of Hindi University of Jammu.	7 to 10
5.	Mr. Devinder Kumar Ph.D. Research Scholar NET, JRF Department of Hindi University of Jammu.	18 to 20

Course Co-ordinator	Teacher Incharge
Prof. Anju Sharma, CDOE	Dr. Pooja Sharma, CDOE

CONTENT EDITING/REVEIW & PROOF READING

Dr. Pooja Sharma

Lecturer in Hindi, CDOE

University of Jammu.

* All rights reserve. No Part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the CDOE, University of Jammu.

* The Script writer shall be responsible for the lesson / script submitted to the CDOE and any plagiarism shall be his/her entire responsibility.

संदेश

दूसरे सत्र में आपका स्वागत है !

एम.ए हिंदी के दूसरे सत्र में आपका स्वागत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। जब आपने एम.ए हिंदी कोर्स के लिए नामांकन कराया था, तब हमने साथ मिलकर अपनी यात्रा शुरू की । एम.ए हिंदी में अच्छे अंक लाने के लिए कड़ी मेहनत करें और आंतरिक मूल्यांकन अर्थात असाइनमेंट तैयार करने के लिए थोड़ा अतिरिक्त प्रयास करें। असाइनमेंट बनाते हुए यह ध्यान में रखे कि यह अंक आपके हाथ में हैं। जितनी मेहनत बाहरी परीक्षा के लिए करनी है उतनी ही मेहनत आंतरिक मूल्यांकन अर्थात असाइनमेंट बनाने में करें।

आपको सलाह दी जाती है कि आप नियमित रूप से दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की पुस्तकालय जाएँ और नोट्स बनाने के लिए उपलब्ध पुस्तकों का अधिक से अधिक अध्ययन करें। आप अपनी NET/JRF/SET/SLET या हिंदी से संबधित किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिए भी एक साथ तैयारी कर सकते हैं और कोर्स कोड: HIN-204 की अध्ययन सामग्री आपके पाठ्यक्रम और NET/SET परीक्षा की तैयारी को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। कड़ी मेहनत करें।

शुभकामना सहित

प्रोफेसर अंजू शर्मा

पाठ्यक्रम समन्वयक

विषय सूची

आलेख संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	इकाई-1	
1.	पाठ्यक्रम में निर्धारित निराला की कुकरमुत्ता, भिक्षुक तथा वह तोड़ती पत्थर कविताओं की सप्रसंग व्याख्या	1-22
2.	पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की 'यह दीप अकेला' तथा 'कलगी बाजरे की' कविताओं की सप्रसंग व्याख्या	23-32
3.	पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की 'शब्द और सत्य' तथा 'नदी के द्वीप' कविताओं की सप्रसंग व्याख्या	33-41
4.	पाठ्यक्रम में निर्धारित धूमिल की मुनासिब कारवाई, मोचीराम तथा नक्सलवाड़ी कविताओं की सप्रसंग व्याख्या	42-66
5.	पाठ्यक्रम में निर्धारित केदारनाथ सिंह की अकाल में दूब, बुद्ध से तथा रोटी कविताओं की सप्रसंग व्याख्या	67-78
6.	पाठ्यक्रम में निर्धारित केदारनाथ सिंह की 'नमक' कविता की सप्रसंग व्याख्या	79-83
	इकाई-2	
7.	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : नयी कविता के प्रस्तोता	84-97
8.	निराला का काव्य सौन्दर्य	98-111
9.	निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना	113-124
10.	कुकुरमुत्ता की प्रतीक योजना	125-135
	इकाई-3	
11.	अज्ञेय का काव्य-विकास	136-152
12.	अज्ञेय के काव्य में व्यक्ति और समाज	153-166
13.	निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना	167-184
14.	निर्धारित कविताओं का शिल्पगत सौन्दर्य	185-199

इकाई-4

15.	जनवादी कवि धूमिल	200-211
16.	धूमिल की काव्यकला	212-227
17.	निर्धारित कविताओं का संवेदनागत और शिल्पगत वैशिष्ट्य	228-245
18.	केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताएँ	246-261
19.	वर्तमान परिदृश्य और केदारनाथ सिंह	262-274
20.	निर्धारित कविताओं (नमक, बुद्ध से, अकाल में दूब, उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएँ, रोटी) में संवेदनागत और शिल्पगत वैशिष्टय।	275-292

पाठ्यक्रम में निर्धारित निराला की कुकुरमुत्ता, भिक्षुक तथा वह तोड़ती पत्थर कविताओं की सप्रसंग व्याख्या

रूपरेखा

1.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
1.2 प्रस्तावना
1.3 कुकुरमुत्ता
स्व-मूल्यांकन (क)
1.4 भिक्षुक
स्व-मूल्यांकन (ख)
1.5 वह तोडती पत्थर
स्व-मूल्यांकन (ग)
1.6 उत्तर कुंजी
1.7 पाठनीय पुस्तकें

1.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको निराला की कुकुरमुत्ता, भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर कविताओं को समझाना हैं।

अपेक्षित परिणाम : प्रिय विदयार्थियों! प्रस्तुत अध्याय का अध्य्यन करने के पश्चात आप निराला की कुकुरमुत्ता, भिक्षुक तथा वह तोड़ती पत्थर कविताओं से पूर्ण रूप से परिचित हो सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना : प्रिय विद्यार्थियों इस पाठ में निराला की कुकुरमुत्ता, भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर कविताओं की महत्वपूर्ण पंक्तियों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

1.3 कुकुरमुत्ता

1. एक थे नव्वाब,
फारस से मंगाए थे गुलाब।
बड़ी बाड़ी में लगाए
देशी पौधे भी उगाए
रखे माली, केई नौकर
गजनवी का बाग मनहर
लग रहा था
एक सपना जग रहा था
सांस पर तहजीब की,
गोद पर तरतीब की।
क्यारियां सुन्दर बनी
चमन में फैली घनी।
फूलों के पौधे वहाँ
लग रहे थे खुशनुमा।
बेला, गुलशब्बो, चमेली, कामिनी
जूही, नरगिस, रातरानी, कमलिनी,
चम्पा, गुलमेंहदी, गुलखैरू, गुलअब्बास,
गेंदा, गुलदाऊदी, निवाड़ी, गन्धराज,
और कितने फूल, फव्वारे केई,
रंग अनकों, सुर्ख, धनी, चम्पई
आसमानी, सब्ज, फिरोज सफेद,
जर्द, बादामी, बसन्त, सभी भेद।
फलों के भी पेड़ थे
आम, लीची, सन्तरे और फ़ालसे
चटकती कलियां, निकलती मृदुल गन्ध,

लगे लगाकर हवा चलती मन्द-मन्द,

चहकती बुलबुल, मचलती टहनियां,

बाग चिड़ियों का बना था आशियाँ।

साफ़ राह, सरा दोनों ओर

दूर तक फैले हुए कुल छोर,

बीच में आरामगाह

दे रही थी बडप्पन की थाह,

कहीं झलने, कहीं छोटी-सी पहाडी,

कही सुथरा चमन, नकली कहीं झाड़ी।

शब्दार्थ :- बाडी = उद्यान, तहजीव = शिष्टता। तरतीब=व्यवस्था, ढंग। आशियाँ=घोंसला, घर। सरो = एक पेड़ विशेष का नाम। आरामगाह = विश्राम करने का स्थान। सुथरा = स्वच्छ।

प्रसंग : निराला के प्रसिद्ध व्यंग-काव्य 'कुकुरमत्ता' से ये पंक्तियाँ उद्धृत हैं। यह कविता भाव, विषय एंव भाषा की दृष्टि से स्वंय निराला की पूर्वलिखित छायावादी कविताओं से पूर्णत : भिन्न है। कहना न होगा कि साहित्य के क्षेत्र में इनकी रचना एक क्रांतिकारी शुरूआत थी। उद्धृत अंश में कवि ने कविता का प्रारम्भ करते हुए एक नवाब के उद्यान का वर्णन किया है-

व्याख्या : एक नवाब थे जो फूलों के बेहद शौकीन पे। उन्होंने फारस से गुलाब मंगाकर अपने विशाल उद्यान में लगवाये। गुलाब के साथ देसी पौधों को भी लगाया गया था ताथा इनकी देखभाल के लिए कई माली एवं नौकरों को नियुक्त कर रखा था। उनके परिश्रम से नवाब साहब का उपवन फारस की राजधानी गजनवी के उद्यान के समान मनोहारी एवं सुन्दर प्रतीत होता था। नवाब साहब के उद्यान की सभ्यता के प्रसार एवं व्यास्था के ढंग से मानो कोई सुन्दर स्वप्न साकार हो रहा था। विभिन्न पौधों की क्यारियों को करीने से बनाया गया था। जो घनी होकर पूरे उपवन में फैल रही था। फूलों के पौधे तो और भी सुन्दर लग रहे थे। इनमें बेला, गुलशब्बों, चमेली, कामिनी, जुही, नरगिस, रातरानी, कमलिनी, चम्पा, गुलमेंहदी, गुलखैरू, गुलअब्बा, गेंदा, गुलदाउदी, निवाड़ी, गंधराज तो थे ही, और भी अनेक प्रकार के पुष्प यत्र-तत्र खिले हुए थे। केई रंगों की फुहार वाले फव्वारे भी वहां सुशोभित हो रहे थे जिनमें लाल, धानी, चम्पी, आसमानी, हरा, फीरोजी, श्वेत, पीला, बादामी, बसन्ती आदि विभिन्न प्रकार के

रंग बिखर रहे थे। इतना ही नहीं, इस उद्यान में फलों के तरूवर भी थे जिनमें आम, लीची, सन्तरे और फालरो के पेड़ प्रमुख थे।

इस उद्यान में कलियाँ पुष्प रूप में विकसित होने से पूर्व चटखने के मधुर ध्वनि करती थी तथा उनसे सब और सुकोमल गंध का प्रसार होता था। इस सुगन्ध को अपने साथ लेकर हवा मन्द गति से मदमस्त होकर बहती थी। झूमती हुई शाखाओं पर बुलबुल मधुर कलरव करती थीं। यह सुन्दर उद्यान कईं चिड़ियों का घर बन गया था। उस उद्यान में स्वच्छ आवागमन-पथ भी बनाये गये थे जिनके दोनों ओर सरो के पेड़ लगे हुए थे। यह उद्यान बेहद विशाल एवं विस्तृत था तथा दूर-दूर तक फैला हुआ था। इसके बीच में विश्राम करने के लिए स्थल की विद्यमान था जो नवाब साहब के बडप्पन को प्रकट कर रहा था इस सौंदर्य को बढाने के लिए कही छोटी-सी पहाड़ी भी बनाई गई थी जिनमें से झरने बह रहे थे। कही स्वच्छ पुष्पों वाला उपवन था तो कहीं पर कृत्रिम झाड़ियों को भी लगाया गया था।

विशेष:

1. कविता का प्रारंभ कथा-कथन शैली में हुआ है तथा अंश का विस्तार वस्तु-परि-गणनात्मक शैली द्वारा किया गया है, वस्तु-परिगणना से कवि के ज्ञान का ही नहीं वरन् प्रकृति संबंधी उसके रुझान का भी परिचय मिलता है।
2. कुकुरमत्ता व्यंग्यात्मक कविता है। इस अंश के द्वारा कवि ने व्यंग्यात्मक पृष्ठभूमि तैयार की है जिसका प्रसार अगले अंश में होता है।
3. नवाब के एश्वर्य-विलास का वर्णन इसमें किया गया है तथा व्यंग्य के तौर पर ये पंक्तियाँ लिखी गेई है-

   एक सपना जग रहा था

   साँस पर तहजीव की,

   गोद पर तरजीव की

4. यह पद सार्केतिक बिंब का उदाहरण भी है।
5. छायावादी कविता की भाषिक प्रकृति से भिन्न इस अंश में उर्दू व फारसी के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है।
6. दो-दो पंक्तियों में ध्वनियुक्त तुकान्त का प्रयोग किया गया है तथा कविता में मुक्त छंद के प्रयोग से अभिनव सौष्ठव का समावेश हुआ है।

7. नवाब के भाग में विभिन्न पुष्पों, रंग-भरे फव्वारों तथा फलों के पेड़ो के वर्णन में चाक्षुष बिंब है।

8. चटकती कलियाँ-हवा चलती मन्द-मन्द से में छायावादी काव्यात्मकता उभरती है।

9. बेला, जुही और नरगिस पर कवि का प्रेम छायावादी काव्य में प्रकट हो चुका था, किन्तु इस यथार्थवादी कविता में भी वह इन्हें विस्मृत नहीं करता।

10. अलंकार-उल्लेख- पूरे बंध में

अनुप्रास- बड़ी बाड़ी; सांस पर तहजीव की,

गोद पर तरतीव की, कितने फूल, फव्वारे कई

मानवीकरण - गले लगाकार हवा चलती मन्द-मन्द, मचलती टहनियाँ पुनरूकित-मन्द-मन्द।

2. **लगाता हूँ पार मैं ही**

डुबाता मझधार मैं ही।

डब्बे का मैं ही नमूना

पान में ही, मै ही चूना

मैं कुकुरमुत्ता हूँ,

पर बेन्जाइन (Bengoin) वैसे

बने दर्शनशास्त्र जैसे,

ओमफ़लस (omphalos) और ब्रहमावर्त

वैसे ही दुनिया के गोले और पर्व

जैसे सिकुड़न और साड़ी,

ज्यों सफ़ाई और माड़ी

कास्मोपॉलिटन और मेट्रोपालिटन

जैसे फ्रायड और लीटन।

फेलसी और फलसफ़ा

जरूरत और हो रफ़ा।

सरसता में फ्राड़
केपिटल में जैसे लेनिनग्राड।
सच समझ जैसे रकीब
लेखकों में लण्ठ जैसे खुशनसीब
मैं डबल जब, बना डमरू
इकबगल, तब बना वीणा।
मंद्र होकर कभी निकला
कभी बनकर ध्वनि क्षीणा।
मैं पुरुष और मैं ही अबला।
मैं मृदंग और मैं ही तबला।
चुन्ने खाँ के हाथ का मैं ही सितार
दिगम्बर का तानपूरा, हसीना का सुरबहार।
मैं ही लायर, लिरिक मुझसे ही बने
संस्कृत, फारसी, अरबी, ग्रीक, लैटिन के जने
मंत्र, गजलें, गीत, मुझसे ही हुए शौदा
जीते हैं, फिर मरते हैं, फिर होते है पैदा ।
वापलिन मुझसे बजा
बेन्जो मुझसे सजा ।
घण्टा, घण्टी ढोल, डफ़, घडियाल
शंख, तुरही, मजीरे, करताल,
करनेट, क्लेरीअनेट, ड्रम, फ्लूट, गीटर
बजानेवाले हसन खाँ, बुद्ध पीटर
मानते हैं सब मूझे ए बायें से
जानते हैं दाये से।
ताताधिन्ना चलती है जितनी तरह
देख, सब में लगी है मेरी गिरह

नाच में यह मेरा ही जीवन खुला

पैरों से मैं ही तुला ।

कत्थक हो या कथकली या बालडान्स

क्लियोपेट्रा, कमल-भौंरा, कोई रोमान्स

बहेलिया हो, मोर हो, मणिपुरी, गरबा,

पैर, माझा, हाथ, गरदन, भौंहे मटका

नाच अफ़्रीकन हो या यूरोपीयन,

सब में मेरी ही गढ़न

किसी भी तरह का हावभाव,

मेरा ही रहता है सबमें ताव।

मैने बदलें पैंतरे,

जहां भी शासक बड़े।

पर हैं प्रोलेटेरियन झगड़े जहां,

मियां - बीवी के, क्या कहना है वहां ।

नाचता है सूदखोर जहां कहीं ब्याज डुचता

नाच मेरा क्लाईमेक्स को पहुँचता ।

शब्दार्थ : फ्राड़ - धोखा । केपीटल=राजधानी। रकीब-दुश्मन। लण्ठ=निपट गंवार। खुशनसीब=भाग्यवान। शैदा=मस्त । गिरह = गाँठ ।

सूदखोर - सूद पर धन उधार देने वाला महाजन ।

क्लाईमेक्स = अंतिम दृश्य ।

प्रसंग: पूर्व प्रसंगों की भांति इसमें भी कवि ने कुकुरमता को सर्वव्यापी दिखाते हुए उसका एकालाप प्रस्तुत किया है, गुलाब से एकतरफा कथन करता हुआ कुकुरमुत्ता अपना बड़प्पन प्रदर्शित करता है कि वह ही प्राणियों को संसार रुपी सागर से पार लगाता है तथा कभी बीच मंझधार में भी डुबा देने में सक्षम है। वह ही डब्बे का नमूना है अर्थात् उसी को देखकर डब्बे का आकार परिकल्पित हुआ है। वह ही पान है तथा वह ही उसमें लगने वाला चूना है। मैं स्वयं बनने वाला कुकुरमुत्ता हूँ-जिस प्रकार बेंजाइन का दर्शनशास्त्र स्वयं ही बन गया, जिस प्रकार ओमफ़लस तथा ब्रह्मावर्त अपने आप बन

गये, ब्रह्माण्ड के गोले तथा उसके पर्ते स्वयं बन गई, जैसे साड़ी पर सिकुड़न अपने आप आ जाया करती है, जैसे कपड़े पर सफाई और मांड हुआ करती है। कास्मोपालीटन और मैट्रोपालीटन में भी मैं ही हूँ । जैसे फ्रायड़ और लीटन का अस्तित्व स्वयंमेव ही सर्वप्रसिद्ध हुआ है, वैसे ही में भी सर्वप्रसिद्ध हूँ। फेलसी और दर्शन की आवश्यकता एवं उसकी पूर्ति भी मुझ ही से है। सरसता या मीठी-मीठी बातों से होने वाले धोखे में भी मैं ही हूँ तथा लेनिनग्राड जैसे राजधानी भी मेरे ही कारण है। जिस प्रकार दुश्मन का सदैव दुश्मन होना ही सत्य होता है उसी प्रकार मैं भी सत्य हूँ। जैसे लेखकों में गंवार लोग भी भाग्यवान होते हैं वैसे ही मैं भी भाग्यवान हूँ। जब मुझे दोहरा किया गया तो मैं डमरु का आकार बन गया। एक ओर बगल में करके मुझसे ही वीणा बनी, जिससे कभी मन्द्र ध्वनि निकली तो कभी तार सप्तक की पतली ध्वनि निकली। वास्तव में मैं ही नर हूँ, मैं ही नारी हूँ। यही नहीं, मैं ही दक्षिण का मृदंग हूँ तो उतर का तबला भी हूँ। सितारवादक चुन्ने खाँ के हाथ का सितार मेरे ही रूप से निर्मित है, पंडित दिगम्बर का तानपूटा तथा सुन्दर गायिकाओं का सुरबहार भी मुझ ही से है। मैं ही लायर (अंग्रेजी वाद्य विशेष) हूँ तथा सभी भाषाओं (संस्कृत, फारसी, अरबी, ग्रीक, लेटिन के गीतकार मुझसे ही बने हैं, मेरी ही मस्ती में मस्त होकर मंत्र, गज़लें, गीत आदि पैदा हुए जो कभी प्रसिद्ध हुए, कभी अनजान ही रह गये। वायलिन मेरी ही धुन पर बजा हैं, बेन्जो की शोभा मुझसे ही है। विभिन प्रकार के वाद्य जैसे घण्टा, ढोल, डफ घड़ियाल-शंख, तुरही, मजीरे, करताल, कारनेट, क्लेरी -अनेट्, ड्रम, फ्लूट, गीटर आदि तथा उनके वादक हसन खाँ, वृद्ध, पीटर आदि सभी मेरा बड़प्पन मानते हैं तथा तथा मुझे हमेशा से जानते हैं। विभिन्न प्रकार के नृत्यों की ताताधिन्ना में मेरी ही गाँठ लगी हुई है अर्थात, भारतीय संस्कृति पूरी तरह से मुझसे जुड़ी हुई है। नृत्य में मेरा ही जीवन भरा हुआ है। पैरों की लय में मेरा ही संगीत है। कत्थक हो या कथकली, पश्चिम का बाल डांस हो या क्लियोपेट्रा अथवा कमल एवं भवरे का प्रेम-प्रसंग हो, पक्षी फंसाने वाला बहेलिया हो, मोर का नाच हो, मणिपुरी नृत्य हो अथवा गरबा हो, पैर, कमर, हाथ, गरदन एवं भौहों के संचालन में तथा किसी भी प्रकार के नृत्य चाहे वह अफ्रीकन हो या यूरोपियन, सब में मेरा ही सौष्ठव व्याप्त है। प्रत्येक शारीरिक एवं मानसिक हाव-भाव में मेरी ही प्रेरणा रही है। संसार में कहीं भी जब शासको में युद्ध होता है, मैंने पैंतरे बदल कर निर्णय ही बदल दिया है। किंतु जहां कहीं भी शोषित वर्ग के संघर्ष - संबंधी झगड़े होते हैं, अथवा पति-पत्नियों की नोंक- झोंक होती है, उनके विषय में तो कहना ही क्या। जहां भी सूदखोर अपने ब्याज का तकाजा करता हुआ नाचता है अथवा दौड़ा फिरता है, वहीं समझो मेरा नृत्य अत्यंत तीव्र होकर अन्त को पहुंचने लगता है।

विशेष :

1. यहाँ पर कुकुरमुत्ता अप्रत्यक्ष रूप से हर वस्तु में श्रमिक वर्ग के छिपे हुए श्रम को व्यक्त करता है। वास्तव में दुनिया की हर निर्मित वस्तु में श्रमिकों का श्रम ही लगा है।
2. यहाँ पर भी वस्तु-परिगणन शैली का प्रयोग किया गया है जो कवि के विश्वव्यापी ज्ञान का भी परिचायक है। । साथ ही संगीत सम्बंधी शब्दावली के प्रयोग से कवि के संगीत - प्रेम का भी ज्ञान होता है।
3. कहीं-कही पर इस अंश में कवि ने कुकुरमत्ता के समक्ष हर वस्तु को रखकर हास्य भी उत्पन्न किया है। यहां व्यंग्य है उन साम्यवादियों पर जो निराला की कविता को साम्यवाद से जोड़ने की भूल कर बैठे हैं।

4 यहां पर गर्व संचारी भाव व्यक्त हुआ है,

5 शब्दों में भाषिक विविधता नये सौंदर्य को उभार रही है। अंग्रेजी का बहुत प्रयोग खटकता नहीं है। संज्ञओं के अतिरिक्त भाषिक रवानगी में अंग्रेजी शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। सान्त्यानुप्रास प्रयुक्त हैं।

6. भाषा मुहावरेदार है, यथा- लेखकों में लण्ठ, पार लगाना, मंझधार डुबाना, गिरह लगना, पैतरे बदलना आदि ।
7. यहां अंत में अस्पष्ट बिंब रुपायित हुआ है क्योंकि एक प्रधान बिम्ब कोई नहीं है तथा अनेक लघु बिंबों में परस्पर सम्बद्धता भी नहीं है। अत: ये अपने आप में अपूर्ण हैं।
8. पूरे छन्द में उपमाओं की विविधता है।

9 अलंकार अनुप्रास - फैलसी और फलसफा

डबल जब, बना डमरु

उल्लेख - कुकुरमुत्ते के विषय में।

3. एक मालिन

बीवी मोना माली की थी बंगालिन,

लड़की उसकी, नाम गोली

वह नव्वाबजादी की थी हमजोली।

नाम था नव्वाबजादी का बहार

नजरों में सारा जहां फ़र्माबरदार ।
सारंगी जैसी चढ़ी
पोएट्री में बोलती थी
प्रोज में बिल्कुल अड़ी।
गोली की मां बंगालिन, बहुत शिष्ट
पोयट्री की स्पेशलिस्ट।
बातों जैसे मजती थी
सारंगी वह बजती था
सुनकर राग, सरगम तान
खिलती थी बहार की जान।
गोली की माँ सोचती थी-
गुर मिला,
बिनहा पकडे खिच कान
देखादेखी बोली में
मां की अदा सीखी नन्हीं गोली ने।
इस लिए बहार वहां बारहोमास
डटी रही गोली की मां के
कभी गोली के पास।
सुबहो-शाम दोनों वक्त जाती थी
खुशामद से तनतनाई आती थी
गोली डांडी पर पासंगवाली कौड़ी
स्टीमबोट की डोंगी, फिरती दौड़ी
पर कहेंगे-
साथ-ही-साथ वहां दोनों रहती थीं
अपनी-अपनी कहती थी।
दोनों के दिल मिले थे

तारे खुले-खिले थे

हाथ पकड़े घूमती थी

खिखिलाती झूमती थीं।

इक पर इक करती थीं चोट

हंसकर होंती लोटपोट,

सात का दोनों का सिन

खुशी से कहते थे दिन।

महल में फी गोली जाया करती थी

जैसे याहं बहार आया करती थी।

शब्दार्थ: नव्वाबजादी- नवाब की पुत्री। हमजोली=सखी । फर्माबरदार=आज्ञाकारी। पोएट्री=कविता । प्रोज = गद्य। स्पे लिस्ट=विशेष जानकारा। मजती = शुद्ध भाषी। अदा = तरीका । सिन - उम्र ।

प्रसंग : घृणित वातावरण से युक्त बस्ती का परिचय देने के बाद कवि अपने प्रमुख पात्रों का परिचय उनकी विशेषताओं के साथ इस अंश में देता है-

व्याख्या: उसी बस्ती में एक मालिन रहती थी जो जाति से बंगालिन थी एवं मोना माली की पत्नी थी। उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम गोली था। गोली की दोस्ती नवाब की पुत्री से थी। नवाब की पुत्री का नाम बहार था। और नवाब की बेटी होने के कारण वे हर किसी पर हुक्म चलाना अपना अधिकार समझती थी। सारंगी के तारों की भांति हमेशा ऐंठी रहती थी। पढ़ी-लिखी होने के कारण परिष्कृत कविता भी मधुर भाषा में बोलती थी। गद्यभाषा में बोलना यानी सीधी बात करना उसे आता ही नहीं था। गोली की माँ बंगालिन थी एवं अत्यंत शिष्ट एवं सहज स्वभाव की नारी थी। वह कविता की अच्छी जानकार थी। उसकी बातें सुनकर नहीं लगता था कि वह अभावग्रस्त माली की बीबी है। वह शिक्षित जान पड़ती थी। उसका स्वर सारंगी की भांति मधुर एवं महीन था। संगीत का ज्ञान होने के कारण वह राग, सरगम तथा तानों को सुनाया करती जिसे सुनकर बहार का हृदय प्रसन्न हो जाता । गोली की माँ भी सोचा करती कि चलो, बहार के रूप में एक गुरु मिल गया जो बिना पकड़े ही कान खींच देता है अर्थात बातों-बातों में ही त्रुटियाँ बता देता है। अपनी माँ से कालिका गोली ने शिष्टतापूर्ण संस्कारों को ग्रहण किया और मधुर स्वभाव से बहार को अपनी सखी बना लिया। इसी के कारण बहार पूरे वर्ष भर कभी गोली की माँ से बतियाती तो कभी गोली के साथ

खेला करती। वह सुबह एवं शाम को दिन के दोनों ही समय गोली के घर जाती तथा माँ एवं गोली की खुशामद से खुश होती हुई वापिस आती थी। गोली उसके सत्कार के लिए दौडती फिरती मानो स्टीमवोट की नाव की पतवार पर पासंग वाली कौड़ी हो जो नाव को तेज चलने में मदद करती है। इस सबके बावजूद यह कह सकते हैं कि वे दोनों साथ ही साथ अपना समय बिताती थी। एक दूसरे से अपने मन की कहती थी। दोनों का बाल - मन एक जैसा था, बातें एक जैसी तथा एक दूसरे की मनभावन थी। एक दूसरे का हाथ पकड़कर सैर करती थीं। हास - परिहास करती हुई नाचती-झुमती रहती थीं। खेल-खेल में एक दूसरे को मार भी देती थीं और फिर हंस-हंस कर एक दूसरे पर गिरी पड़ती थीं। दोनों ही सात वर्ष की होने के कारण हमउम्र थी और सखी होने के कारण हंस-खेल कर दोनों का जीवन गुजर रहा था। गोली भी बहार से मिलने महल में वेझिझक जाया करती थी और बहार भी गोली के घर आती-जाती रहती थी।

विशेष:

1. यहां कवि इस खंड की कथा के पात्रों के संक्षिप्त चरित्र - परिचय देता है। चरित्र में भी कवि ने वर्गानुरूपता का ध्यान रखा है। बहार नवान की पुत्री होने के कारण अकड़वाली शिक्षित एवं सब पर हुक्म चलाने वाली लड़की है तो गोली की माँ नौकरानी होने के कारण शिष्ट है। इसी प्रकार गोली अल्हड़ता से पूर्ण है।
2. यहां कवि ने बहार और गोली की घनिष्ट मैत्री एवं बालसुलभ क्रीड़ाओं का अंकन किया है।
3. कवि मानवतावादी है। वह किसी भी वर्ग को किसी भी मानव को हीन नहीं देखना चाहता, इसलिए गोली और बहार की मैत्री का आदर्श प्रस्तुत करता है।
4. अंश कथा-वर्णन शैली दृष्टव्य है।
5. भाषा में उर्दू - बाहुल्य है और आम व्यवहार की शब्दावली प्रयुक्त हुई है।
6. अलंकार अनुप्रास- मोना माली, खुले-खिले,

   वीप्सा-साथ-ही-साथ, उपमा- डाँडी पर पासंग वाली कौड़ी, स्टीमबोट की डोंगी।

4. कुकुरमुत्ते की कहानी

सुनी जब बहार से

नव्वाब के मुंह आया पानी।

बांदी से की पूछताछ

उनको हो गया विश्वास ।

माली को बुला भेजा,

कहा, " कुकुरमुत्ता अब नहीं रहा है, अर्ज हो मन्जूर,

रहे है अब सिर्फ गुलाब।"

गुस्सा आया कांपने लगे नव्वाब ।

बोले, "चल, गुलाब जहां थे उगा,

सबके साथ हम भी चाहते है अब कुकुरमुत्ता ।

बोला माली, "फ़रमाएं मआफ़ खता,

कुकुरमुत्ता अब उगाया नहीं उगता ।"

शब्दार्थ : बाँदी = दासी । अर्ज = निवेदन ।

मुआफ खता = त्रुटि क्षमा । फरमाएँ = करें।

प्रसंग : कविता के दूसरे खंड के इस अंतिम पद्यांश में कवि ने कुकुरमुत्ता के अस्तित्व की महता को पुन: प्रतिपादित किया है तथा नवाब के क्रोध की विवशता दिखाते हुए इस लघु कहानी का अंत किया है।

व्याख्या : कुकुरमुते के अद्भुत स्वाद से भरी हुए बहार ने जब कलिया कवाब के विषय में अपने पिता नवाब को बताया तो नवाब की इच्छा भी इस अनोखे एवं नये स्वाद को चखने की हुई। उसने बहार के साथ गई बाँदी से इस विषय में पूछताछ की तो बहार के कथन को सत्य पाकर उसे विश्वास हो गया । उसने उसी समय अपने उद्यान के माली को बुलावा भेजा तथा कहा कि मालिक, मेरी विनती स्वीकार करें, अब कुकुरमुत्ते का मौसम नहीं रहा है और उद्यान में केवल गुलाब ही उग रहे हैं। माली का नकारात्मक उत्तर सुनकर नवाब को क्रोध आ गया तथा वे आवेश में काँपने लगे तथा नियमों को विस्मृत कर माली को आदेश देने लगे कि जहां-जहां गुलाब उगे हैं वे वहां पर सब तरफ कुकुरमुत्ते चाहते है, क्योंकि जब सब तरफ कुकुरमुत्ते की प्रशंसा हो रही है तो हमें भी कुकुरमुत्ता ही चाहिए। माली विवश था वह बोला कि स्वामी मेरी त्रुटि को

क्षमा करें लेकिन कुकुरमुत्ता कोई ऐसा पेड-पौधा नहीं है जिसे उगाया जा सके। वह तो स्वयं ही उगने वाली वनस्पति है।

विशेष:

1. कविता के इस अंतिम अंश में कवि ने गुलाब पर कुकुरमुत्ते के महत्व को अन्तत: सिद्ध कर ही दिया । नवाव का क्रोध एवं निरंकुशता कुकुरमुत्ते या सर्वहारा वर्ग पर नहीं चल सकती।
2. अंतिम पंक्तियों में कुकुरमुत्ता अब उगाये नहीं उगता का सम्बन्ध प्रथम खंड में कुकरमुते के कथन "कलम मेरा नहीं लगता, मेरा जीवन आप जगता" से सम्बंधित है।
3. 'सबके साथ हम भी चाहते हैं अब कुकुरमुत्ता का कथन कहने वाले नवाब उन पूंजीपतियों से हैं जो समाज में जिसके महत्व को बढ़ता देखते है उसी को अपना लेते हैं चाहे वह उनके अनुकुल हो या न हो।
4. अलंकार अनुप्रास - कुकुरमुत्ते की कहानी

   वीप्सा - ताजा-ताजा

   वक्रोक्ति - कुकुरमुत्ता अब उगाए नहीं उगता।

स्व-मूल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थियों ! निराला की कविता कुकुरमुत्ता के व्याख्या भाग से अभी तक आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसका मूल्यांकन आप निम्न रिक्त स्थान भरकर करें। यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते है साथ ही कुकुरमुत्ता कविता का पुन: अध्य्यन करें।

1. नवान ने .....से गुलाव मंगाकर अपने विशाल उद्यान में लगवाये ।
2. .....एवं नौकरों के परिश्रम से नवाब साहब का उपवन फारस की राजधानी गजनवी के उद्यान के समान मनोहारी एवं सुन्दर प्रतीत होता था।
3. कुकुरमुत्ता कविता का प्रारंभ.....शैली में हुआ है तथा अंश का विस्तार वस्तु-परिगणनात्मक शैली द्वारा किया गया है।
4. कुकुरमत्ता.....कविता है।

5. नवाब की पुत्री का नाम..... था।

6. बंगालिन की पुत्री गोली की दोस्ती.....की पुत्री से थी।

7. नवाव उन..... में से है जो समाज में जिसके महत्व को बढ़ता देखते हैं, उसी को अपना लेते हैं चाहे वह उनके अनुकूल हो या न हो।

1.4 'भिक्षुक'

1. वह आता -

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।

पेट - पीठ दोनों मिलकर है एक,

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी - भर दाने को भूख मिटाने को

मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता -

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।

शब्दार्थ: टूक = टुकड़े। लकुटिया = लाठी। टेक = सहाय ।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की कविता भिक्षुक से लिया गया है। प्रस्तुत कविता में कवि ने एक गरीब एवं दरिद्र भिखारी की स्थिति का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में निराला जी कहते हैं कि एक भिक्षुक को भीख माँगते हुए जब वह देखते हैं तो उसकी दयनीय अवस्था को देखकर उनके हृदय के दो टुकड़े हो जाते है। वह भिखारी अपनी दीन-हीन स्थिति को देखकर अनुताप करता हुआ आता है। गरीबी एवं दरिद्रता के कारण उसकी पीठ और पेट दोनों एक समान लगते है। वह लाठी के सहारे धीरे-धीरे चलता है। मुट्ठी भर दाने के लिए उसे द्वार-द्वार की ठोकरे सहनी पड़ती है। भीख मांगने के लिए उसके पास एक फटी पुरानी झोली भी है जिसको वह सबके सामने फैलाता है। जिससे वह भरपेट भोजन ले सके। यह दृश्य कवि के हृदय को व्याकुल कर देता है।

विशेष

1. यहां दीन-हीन भिक्षुक का वास्तविक एवं करुणायुक्त चित्र वर्णित है,
2. भाषा सरल एवं मुहावरेदार है।
3. अनुप्रास अंलकार है।

2. **साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए**

बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दया-दृष्टि पाने की और बढ़ाये।

भूख से सूख ओठ जब जाते

दाता- भाग्य-विधाता से क्या पाते।

घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे झूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खडे हुए

और झपट लेने को उनसे कुते भी हैं अड़े हुए।

शब्दार्थ : दाता- भाग्य- विधाता= दानी, भाग्य का निर्माण करने वाला ।

दृष्टि = नजर, निगाह ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां निराला द्वारा रचित कविता 'भिक्षुक' से ली गई हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने भिखारी की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है।

व्याख्या: प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि सडक पर चलने वाले भिखारी के साथ उसके दो बच्चे भी हैं। जो दोनों हाथ भीख के लिए फैलाए हुए हैं। वह अपनी भूख से परिचित कराते हुए बाएँ हाथ से अपने पेट को मलते है। तथा दाए हाथ से वहां से आते-जाते लोगों से कुछ प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं, वह अपनी दशा से भाग्य-विधाता के मन में दया का भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु उन्हें भाग्य-विधाता से कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। भूख के कारण उनके होंठ भी सूख गए है। ऐसी अवस्था में वे विवशता के कारण अपने आंसूओं के घूंट पीकर ही रह जाते हैं। अपनी दरिद्रता एवं निर्धनता के कारण भिखारी तथा उसके बच्चें सड़क के किनारे पड़ी हुई झूठी पत्तले चाटते हैं। जिसे झपटने के लिए कुत्ते भी वहाँ डट कर खड़े हैं।

विशेष

1. यहाँ भिक्षुक की कारूणिक दशा का यथार्थ चित्रण हुआ है।
2. मुहावरों का सहज प्रयोग तथा अनुप्रास अलंकार विद्यमान है।
3. भाषा सरल तथा मुक्त छंद है।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थियों ! आगे बढ़ने से पहले अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दें और 'भिक्षुक' कविता के भावार्थ से जो ज्ञान आपको मिला उसका मूल्यांकन निम्न प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिह्न द्वारा देकर करें ।

1. निराला की भिक्षुक कविता में कवि ने एक गरीब एवं दरिद्र भिखारी का मर्मस्पर्शी वर्णन किया हैं।( )
2. मुट्ठी भर दाने के लिए भिक्षुक को द्वार-द्वार की ठोकरें खानी पड़ती हैं | ( )
3. सड़क पर चलने वाला भिखारी अकेला चलता हुआ दोनों हाथ भीख के लिए फैलता है | ( )
4. भिखारी के साथ उसके दो बच्चे भी हैं जो बाएँ हाथ से पेट मलते हैं तथा दाएँ हाथ से भीख मांगते हैं | ( )
5. अपनी निर्धनता एवं दरिद्रता के कारण भिखारी तथा उसके बच्चे सड़क के किनारे पड़ी हुई झूठी पत्तलें चाटते हैं | ( )

1.5 वह तोड़ती पत्थर कविता

1. वह तोड़ती पत्थर

देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर

वह तोड़ती पत्थर ।

कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकारः

श्याम तन, भर बंधा यौवन,

नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन

गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार - बार प्रहार

सामने तरु-मालिका अहालिका, प्राकार।

शब्दार्थ : श्यामतन = काले रंग का शरीर।

प्रिय कर्मरत-प्रिय रूपी कर्म में लगी हुई । गुरु = भारी ।

तरु मालिका= वृक्षों का समूह । प्राकार = परकोटा।

प्रसंग: कवि निराला इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ने वाली एक मजदूरिनी का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : मैंने उसको ईलाहाबाद के एक मार्ग पर पत्थर तोड़ती हुई देखा जिस पेड़ के नीचे वह बैठी हुई काम कर रही थी। वह पेड़ छायादार नहीं था। परन्तु विवश होकर उसको उसी के नीचे बैठ कर काम करना स्वीकार करना पड़ा था। उसके शरीर का रंग काला था, उसकी भरी जवानी थी, अर्थात वह पूर्ण युवती थी। उसकी आँखे नीचे की ओर झुकी हुई थी और वह तल्लीनता के साथ अपने प्रिय कर्म में लगी हुई थी। उसके हाथ मैं भारी हथौड़ा था जिससे वह पत्थरों पर बार - बार चोट मारती थी। उसके सामने ही दूसरी और वृक्षों की पंक्ति, अट्टालिकाएँ और परकोटे वाली कोठियाँ थी।

विशेष:

1. इस कविता का रचना-काल सन 1937 है यह प्रगतिवाद की रचना है। हिन्दी में प्रगतिवाद के युग का आरम्भ 1936 से माना जाता है। इसमें मार्क्सवादी तत्व सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं पूंजीपतियों के प्रति आक्रोशपूर्ण व्यंग्य स्पष्ट: अभिव्यंजित है।
2. जिस मज़दूरिनी पर निराला जी की नज़र टिकी है, वह कोई बुढिया न होकर भरे यौवन वाली तरुणी है।
3. सौंदर्य - वर्णन में मांसलता है और इसके अनुरूप स्थूल भाषा का प्रयोग है।

   अलंकार- 1. पदमैत्री - नत नयन प्रिय कर्मरत मन

   2. पुनरुक्ति - प्रकाश - बार-बार ।

2. चढ़ रही थी धूप,

गर्मियों के दिन,

दिवा का तमतमाता रूप

उठी झुलसाती हुई लू

रुई ज्यों जलती हुई भू

गर्द चिनगीं छा गई,

प्राप: हुई दुपहर:-

वह तोड़ती पत्थर ।

शब्दार्थ : दिवा = सूर्य । चिनगी = चिनगारी ।

प्रसंग : कवि निराला इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ने वाली एक मज़दूरिनी का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : दिन चढ़ने के साथ धूप तेज होती जा रही थी। गरमी की धूप थी। सूर्य अपने जलते हुए रूप में प्रकट था। झुलसाने वाली लू चलने वाली थी। सूर्य की तेज गर्मी के कारण पृथ्वी रुई की तरह जल रही थी और आग रुपी चिनगारियों चारों ओर छा गई थीं। अर्थात् चारों ओर आग की चिनगारियों की तरह गरम धूल छाई हुई थी। धूल के कण क्या है, मानो आग की चिनगारियाँ ही थीं। प्राय: मध्याह्न का समय था और वह पत्थर तोड़ कर गिट्टी बना रही थी।

अलंकार : 1. उपमा-रूई। 2 रूपक - गर्द चिनगी विशेष = पूर्व छन्द

(क) के समान।

3. देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार:

देखकर कोई नहीं,

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं,

सजा सहज सितार,

सुनी मैने वह नहीं जो थी सुनी झंकार ।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुधर,

ढुलक माथे से गिरे सीकर,

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-

"मैं तोडती पत्थर।"

शब्दार्थ : सहज = सहज भाव से। छिन्न=बिखरा हुआ ।

सुधर = सुन्दर । सीकर = पसीने की बूंदें।

प्रसंग : कवि निराला इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोडने वाली एक मज़दूरिनी का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : जैसे ही वहाँ रुक कर मैंने उसकी ओर देखा, वैसे ही उसने मेरी ओर देखा और इसी दृष्टि में उसने सामने वाले बड़े मकान की ओर देखा। यह देख कर कि मैं अकेला ही था, उसने अपने तार-तार फटे हुए कपड़ों की ओर दृष्टि डाली। उसने मेरी ओर उस व्यक्ति की भाँति देखा जिसको कोई ऐसा जबरदस्त व्यक्ति मारता है जो मार खाने वाले को रोने भी नहीं देता। उस एक दृष्टि द्वारा ही उसने मुझे अपनी सम्पूर्ण करुण-कथा उसी प्रकार सुना दी, जिस प्रकार कोई सितार पर सहज भाव से उंगलियों चलाकर एक अभूतपूर्व झंकार उत्पन्न कर देता है। भाव यह कि निराला जी ने जीवन में पहली बार इतने सहज भाव से एक शोषिता नारी के जीवन में व्याप्त करुणा एवं विवशता का अनुभव किया था। एक क्षण तक मेरी ओर देखने के पश्चात् वह युवती काँप उठी। उसके माथे से पसीने की बूँदै नीचे गिर पड़ी। वह फिर अपने पत्थर तोडने के काम में पूर्ववत लग गयी। "मै तोडती पत्थर हूँ" उसका यह मौन स्वर उस वातावरण में निनादित हो उठा ।

विशेष:

1 पूर्व छन्द के समान । 2 इस छन्द में कई वाक्यांश महत्वपूर्ण है- निराला सदृश विशालकाय एवं स्वस्थ व्यक्ति को देखकर उसने सामने के भवन की ओर देखा, उसने अपने फटे कपड़ों में से झाँकते हुए शरीरांगों की ओर दृष्टिपाट किया और यह सब एकान्त समझकर। साथ ही वह काँप भी उठी। क्या उसको कम्प सात्विक हुआ ?

माथे से पसीना गिरना तो गरमी के कारण भी हो सकता है। ये समस्त संकेत हमको यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि इन पंक्तियों में कवि की अभुक्त काम-वासना अभिव्यंजित है।

दृष्टव्य= निराला जी की यह कविता प्रगतिवादी काव्य की एक महत्वपूर्ण रचना है। "जो मार खा रोई नहीं" इस एक ही पंक्ति में शोषित-दलित मानव की करुण व्यथा साकार हो उठी है।

कविता, में जीवन का यथार्थ कटुतापूर्ण शैली में चित्रित है। छायावादी निराला की भाषा अपनी सूक्ष्मता का परित्याग करके यहाँ एकदम स्थूल और मांसल बन गई है।

अलंकार: 1. अनुप्रास- सजा सहज सितार। 2. विशेषोक्ति की व्यंजना-जो मार खाकर रोई नहीं। 3. उदाहरण-सजा-झंकार ।

स्व-मूल्यांकन (ग)

प्रिय विद्यार्थियों । निराला की 'वह तोडती पत्थर' कविता के व्याख्या भाग से अभी तक आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है। उसका मूल्यांकन आप निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करे। यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता ले सकते हैं। साथ ही पाठ का पूण: अध्ययन करें।

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि निराला..... की सड़क पर पत्थर तोड़ने वाली एक मजदूरिनी का वर्णन कहते है।
2. मजदूरिनी की आँखे नीचे की ओर झुकी हुई थी और वह..... के साथ अपने प्रिय कर्म में लगी हुई थी।
3. वह तोड़ती पत्या कविता में..... तत्व सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं पूंजीपतियों के प्रति आक्रोश पूर्ण व्यंग्य स्पष्टतः अभिव्यंजित है
4. सूर्य की तेज गर्मी के कारण पृथ्वी रुई की तरह जल रही थी और..... चिनगारियां चारों ओर छा गई थी।
5. वह तोड़ती पत्थर कविता में जीवन का..... कटुतापूर्ण शैली में चित्रित है।

1.6 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1. पारस 2. माली 3. कथा-कथन 4. व्यंग्यात्मक
5. बहार 6. नवाब 7. पूंजीपत्तियों

स्व-मूल्यांकन (ख)

1. सही 2. सही 3. गलत 4. सही 5. सही

स्व-मूल्यांकन (ग)

1. इलाहाबाद 2. तल्लीनता 3. मार्क्सवादी 4. आगरूपी 5. यथार्थ

1.7 पठनीय पुस्तके

1. निराला : निराला रचनावली-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2009
2. ड़ाँ अनुपम माथुर: महाकवि निराला एवं उनकी कालजयी कविताएं, कला -मन्दिर प्रकाशक, दिल्ली-2003
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला: परिमल, राजकमल दिल्ली- 2008
4. डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी : निराला और राग, विराग, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1994

पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की 'यह दीप अकेला' तथा 'कलगी बाजरे की' कविताओं की सप्रसंग व्याख्या

रूपरेखा

2.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
2.2 प्रस्तावना
2.3 यह दीप अकेला
स्व-मूल्यांकन (क)
2.4 कलगी बाजरे की
स्व-मूल्यांकन (ख)
2.5 उत्तर कुंजी
2.6 पठनीय पुस्तकें

2.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

उद्देश्य: प्रिय विद्यार्थियों! प्रस्तुत पाठ का उदेश्य आपको अज्ञेय की 'यह दीप अकेला' तथा 'कलगी बाजरे की' कविताओं को समझाना है।

अपेक्षित परिणाम: प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात आप अज्ञेय की 'यह दीप अकेला' तथा 'कलगी बाजरे की', कविताओं से पूर्ण रूप से परिचित हो सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना : प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ में अज्ञेय की 'यह दीप अकेला' तथा 'कलगी बाजरे की' कविताओं की महत्वपूर्ण पंक्तियों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

1.3 यह दीप अकेला

1. यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो
यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा

पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लायेगा ?

यह समिधा : एसी भाग हठीला निरला सुलगायेगॉ

यह अद्‌वितीय : यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित:

यह दीप अकेला स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता पर

इस को भी पंक्ति दे दो

शब्दार्थ - स्नेह - प्रेम, प्यार । मदमाता - मतवाला-मस्त। पनडुब्बा पानी में गोता लगाने वाल, गोताखोर, समिधा-हवन की लकडी। हठीला-हठी, जिद्‌धी, बिरला-इक्का-दुक्का। अद्‌वितीय-बेजोड़, अनुपम, अनोखा-अदभुत। विसर्जित = त्यागा हुआ, छोडा हुआ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' से ली गई हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने खुद पर दीप का दोषारोपण करते हुए अपने निश्चित आत्म-विश्वास एवं ऊपर उठते जाने की कामना की अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या: प्रस्तुत पद्‌यांश में कवि स्वयं को लक्ष्य करते हुए कहता है कि वह दूसरों की उम्मीद से अधिक प्रतिभायुक्त, श्रेष्ठ तथा समर्थ है, कवि को अपनी क्षमता और योग्यता पर नाज एवं गर्व है। किन्तु कवि की धारणा है, कि उसकी योग्यता तथा क्षमता का प्रयोजन सामाजिक हित के लिए हो। वह स्वैच्छिक समाज के लाभ के लिए प्रतिबद्‌ध रहना चाहता है।

कवि में अद्‌भुत मेधा उपस्थित है। वह जैसी उत्कृष्ट कविता की रचना कर सकता है, वैसी कोई दूसरा सामान्य कवि नहीं कर सकता । कवि ने सृजनात्मक क्षेत्र में नवीन उपलब्धियाँ संग्रहीत की हैं, सत्य के नवीन दायरों को उद्‌घाटित किया है।

किसी अन्य रचयिता के लिए यह कठिन कार्य मुमकिन न था और न होगा। उसके जैसा परिपक्व व्यक्ति मुश्किल से देखने को मिलता है। उसने अपने अगम परिश्रम से विद्रोह की जो लौ प्रज्वलित की है, वह कोई साधारण कवि नहीं कर सकता था। उसका चरित्र विलक्षण है। उसके समतुल्य कोई अन्य नहीं हो सकता। उसे अपने व्यक्तित्व पर गर्व है। उसके चरित्र में अच्छा - बुरा जो भी है वह उसका सर्वथा अपना है। वह उसे अपनी इच्छा से सामाजिक कार्यो के लिए नियुक्त करना चाहता है।

विशेष : उपयुक्त पंक्तियों में निम्नलिखित प्रवृतियाँ दृष्टिगत होती है-

1. यहाँ अज्ञेय की लोककल्याणकारी ध्वनि गूँज रही है।

2 प्रस्तुत पंक्तियों में अनुप्रास-वक्रोक्ति तथा रुपकातिश्योक्ति अलंकार है।

2. यह मधु है: स्वयं काल की मौना का युगसंचय

यह गोरस : जीवन - कामधेनु का अमृत-पूट पय

यह अंकुर : फोड़ धरा को रवि को ताकता निर्भय

यह प्रकृत, स्वयम्भू, ब्रह्म, अयुत :

इस को भी शक्ति को दे दो

यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,

वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा

कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधआते कड़वे तम में

यह सदा - द्रवित, चिट - जागरुक, अनुरक्त-नेत्र

उल्लम्ब - बाहु, यह चिर-अखण्ड अपनाया जिज्ञासु, प्रवुद्ध सदा श्रद्धामय

इस को भक्ति को दे दो

यह दीप अकेला स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता पर

इस को भी पंक्ति दे दो

शब्दार्थ= मधु=शहद, अमृत । मौना-तरल पदार्थ रखने का बरतन, वह अवस्था या वार्ता जो मौन रहने के दौरान हो । गोरेस= गाय का दूध। कामधेनु= गाय जिससे वह सब मिलता है जो वांछित है, पय=दूध, जल, पानी । अंकुर = कोंपल, पल्लव | धरा = पृथ्वी, धरती । रवि = सूर्य। निर्भय = भयमुक्त, निडर कुत्सा=निंदा, बुराई। अपमान=निरादर, तिरस्कार,दुत्कार । द्रवित= पिघला हुआ, पसीजा हुआ । चिर = दीर्घकाल तक। अनुरक्त=आसक्त, प्रसन्न । अखंड =अविभाज्य, जिसके खंड न हो। जिज्ञासु= जो जानना चाहता हो, ज्ञानार्थी। प्रवुद्ध -ज्ञानी, जागा हुआ, जागृत । मदमाता= मतवाला, मस्त ।

प्रसंग= प्रस्तुत पंक्तियां अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' से ली गई हैं। कवि ने कविता में स्वयं पर दीप का आरोप लगाते हुए खुद पर दृढ़ भरोसा एवं ऊपर उठते जाने की भावना भी उद्घाटित की है।

व्याख्या = प्रस्तुत पंक्तियों में अज्ञेय ने वक्त के प्रत्यक्ष ज्ञान से फायदा उठाकर समसामयिक समाज के लिए सुविधाजनक ज्ञान भंडार का संकलन किया है। कवि ने अपने जीवन के अनुभवों को जोड़कर उससे अन्यों के लिए अमृत का संयोजन किया है। उसने रास्ते में आने वाले कष्ट व बाधाओं की चिंता किए बिना हिम्मत एवं सामर्थ्य के साथ सत्य व वास्तविक स्थिति का साक्षात्कार किया है। कवि जो भी है वह अपने प्राकृतिक रूप में है। उसमें किसी प्रकार की कोई भी अशुद्धता नहीं है। कवि किसी के साथ स्वय की समानता नहीं करता है। अज्ञेय का अद्भुत एवं विलक्षण व्यक्तित्व समाज को संगठित, एकत्व तथा सशक्त बनाने के लिए स्वयं को स्वेच्छा से निष्ठावान कर देना चाहता है।

सच्चाई इसी में निहीत है कि एक मनुष्य के रूप में कवि की योग्यता एवं क्षमता प्रतिबंधित है परन्तु फिर भी अज्ञेय को स्वयं पर विश्वास है कि वह मुश्किल से मुश्किल हालातों में भी घबराने वाला नहीं है।

उसने अपने दुख दर्द को हिम्मत एवं संतोष के साथ सहा है। किसी अन्य ने न तो उसकी पीड़ा को झेला न ही उसके दुख-दर्द को बांटा है। दूसरो से निरादर, अपमान पाकर वह सदैव अपने प्रयास में डटा रहा। अन्य लोगों को कवि के दुख की अनुभूति भले ही न हुई हो परन्तु हमेशा दूसरों के दुख से दुखी हुआ।

कवि ने अपनी समीप की परिस्थितियों को सर्वदा अपनी तर्कशीलता से जांच पड़ताल की। इस प्रकार अज्ञेय ने चिरकालीन के आत्मज्ञान अनुभव तथा कठोर परिश्रम से अपनी अस्मिता को खोजकर पाया। कवि ने अपने स्वप्रयास से अपने असामान्य व्यक्तित्व का निर्माण किया। उसी अदभुत व्यक्तित्व को वह स्वैच्छिक समाज सेवा में समर्पित करना चाहता है।

विशेष- कवि प्रतिभा का स्वयं निर्माण किया जाता है। रचयिता के रूप में विधाता के समान ही है।

अनुप्रास रूपक तथा रुपकातिश्योक्ति अलंकार है

स्व-मूल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थियों ! अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' के व्याख्या भाग से अभी तक आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसका स्व-मूल्यांकन आप निम्मलिखित रिक्त स्थान भरकर करे। यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमें निराश होने की अवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते हैं साथ ही पाठ का पुनः अध्ययन करें।

1. यह दीप अकेला कविता में अज्ञेय ने स्वंय .....का दोषारोपण करते हुए अपने निश्चित आत्म-विश्वास एवं ऊपर उठते जाने की कामना की अभिव्यक्ति की है।
2. कवि को अपनी क्षमता और योग्यता पर नाज एवं.....है।
3. अजेय.....समाज के लाभ के लिए प्रतिवद्ध रहना चाहता है।
4. अज्ञेय ने समय के प्रत्यक्ष ज्ञान का लाभ उठाकर समसामयिक समाज के लिए.....ज्ञान भंडार का संकलन किया है
5. अज्ञेय ने रास्ते में आने वाले कष्ट व..... की चिंता किए बिना हिम्मत के साथ सत्य व वास्तविक स्थिति का साक्षत्कार किया है।
6. कवि ने अपने समीप की परिस्थितियों की सर्वदा ..... की है।
7. कवि अपने अद्भुत व्यक्तित्व को स्वेच्छा से समाज सेवा में..... करना चाहता है।

1.4 कलगी बाजरे की

कलगी बाजरे की

हरी बिछली घास ।

दोलती कलगी छरहरे बाजरे की।

अगर मैं तुम को ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार - न्हायी कुंई,

टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो

नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही: ये उपमान मैले हो गये हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।

कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

शब्दार्थ - कलगी = कुछ पक्षियों के सिर पर बने परों, बालों आदि का गुच्छा । बाजरा = अन्न का एक प्रसिद्ध पौधा एवं उसके दाने (जैसे-बाजरे की रोटी), दोलती=

हिलना, कांपना । छरहरे= जो इकहरे शरीर का हो, जो मोटा न हो, दुबला- पुतला । सांझ=संध्या, शाम, सायंकाल । तारिका= तारा, आँख की पुतली, फिल्म की नायिका या अभिनेत्री । भोर = सूर्योदय के पूर्व की स्थिति, प्रात: काल, तड़के बासन = बरतन, भोजन बनाने और खाने में प्रयुक्त बरतन आदि। मुलम्मा = चमकता हुआ।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश साच्चदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की कविता कलगी बाजरे की से ली गई है। कवि अपनी प्रेयसी की सुन्दरता के वर्णन में प्राचीन उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों का प्रयोग करता है जो बिल्कुल सामान्य से लगते हैं।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में अज्ञेय अपनी प्रेमिका की रमणीयता के वर्णन में नवीन उपमानों का उपयोग कर रहा है। वह प्रियतमा की सुन्दरता के चित्रण में पारंपरिक उपमानों के प्रयोग की साफ मनाही करता हुआ दिखाई देता है। सांझ के समय जब गगन पश्चिम दिशा में लाल हो जाता है तब सबसे पहले जो तारा लाल हो जगमगाता हुआ दिखता है, कवियों ने अपनी प्रेमिका की सुंदरता की तुलना उसी से की है अथवा शरद ऋतु में प्रभात के समय में ओस की बूंदों से भीगी हुई नलिनी (कमल) की कलिका को प्रेयसी की सुन्दरता का उपमान बनाया है। कवि ने सभी प्राचीन उपमानों को तुच्छ कर अपनी प्रेमिका के सौन्दर्य को हरी कोमल घास तथा हवा के हल्के झोंकों से लहराती बाजरे की कलियों से समानता की है। कवि कहते हैं कि हरी कोमल घास तथा बाजरे की पतली लम्बी कलियों की लालिमा आसमान में प्रफुल्लित जगमगाते तारों और ओंस की बूंदों से भीगी मृणालिनी तथा चम्पे की कलिकाओ की समानता सामान्य मानकर यह समझने की गलती नहीं करनी चाहिए कि कवि का प्रेम पूर्वगामी के प्रेम की तुलना में क्षुद्र, अशुद्ध या अगम्भीर है। नए उपमानों से अपनी प्रियतमा की सुन्दरता की समानता करने का कारण यह है कि पारंपरिक उपमानों में अब सौन्दर्य को प्रेषित करने की शक्ति नहीं रही है। जिस प्रकार धातु (लोह) के बर्तन को बार-बार रगडने से उसकी उपरी चमक खत्म हो जाती है और बर्तन का रंग धुंधला पड़ जाता है, उसी तरह उपमानों का बार-बार उपयोग करने से उसी सुन्दरता को प्रेषित करने की निपुणता का समापन हो जाता है। इसीलिए कवि ने प्राचीन उपमानों की जगह नवीन और उपेक्षित उपमानों के प्रोयग पर विशिष्ट गति दी है।

विशेष

1. कवि ने पारंपरिक उपमानों की जगह नवीन उपमानों को लाने का जो कारण बताया है कि वास्तविकता लुप्त हो गयी है वह वाज़िब ही है।
2. यहाँ उल्लेख अलंकार है।

2. मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगी:

तुम्हारे रूप के --तुम हो, निकट हो, इसी जादु के
निजी किसी सहज, गहरे बोध से,
किस से मैं कह रहा हूँ
अगर मैं यह कहूं -बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरे बाजरे की
आज हम शहरातियों को
पालतु मालंच पर संवरी जुही के फूल से
सृष्टि के विस्तार का -ऐश्वर्य का औदार्य का
कहीं सच्चा, कहीं प्यारा एक प्रतीक बिछली घास है,
या शरद की सांझ के सूने गगन की पीठिका पर ढोलती
कलगी अकेली बाजरे की ।
और सचमुच, इन्हें जब-जब देखता हूं
यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट आता है-
और मैं एकान्त होता हूं समर्पित
शब्द जादु हैं
मगर क्या समपर्ण कुछ नहीं है।

शब्दार्थ निकट= थोड़ी दूरी पर, पास, नज़दीक। बोध = अहसास, ज्ञान, जानकारी । सहज= सरल, सुगम, स्वाभाविक। शहराती-नागरिक, शहर का निवासी, शहर, एश्वर्य=समृद्धि, वैभव, धन-संपति। औदार्य=उदारता।पीठिका = वह पत्थर का आसम या पीढा जिस पर देव मूर्ति की स्थापना की जाती है, वीरान-खंडहर मकान, उजडा हुआ। संसृति=प्रवाह, संसार में बार-बार जन्म लेने की पंरपरा, आवागमन, संसार, जगत, लोक, एकान्त-अलग, पृथक अकेला, समर्पण=अर्पित करना।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' से लिया गया है। कवि प्रेमिका के लिए पारंपरिक उपमानों की जगह नए उपमानों का प्रोयग करने की उपयुक्तता प्रमाणित करता है।

व्याख्या : कवि फिर से अपनी प्रेयसी से सवाल करता हुआ कहता है कि क्या नए उपमानों से उसकी सुन्दरता की तुलना के कारण वह अपने रूप तथा उस रूप के समान कवि के असामान्य प्रेम को पहचानने में चूक कर बैठेगी? क्या उसे अपने स्वरूप तथा कवि के प्रेम की असामान्यता में सन्देह उत्पत्ति हो पाएगी। यह होना नैसर्गिक है क्योंकि पारंपरिक उपमानों के साथ हृदय जैसा तालमेल कायम हो पाता है वैसा आधुनिक उपमानों के साथ स्थापित नहीं हो पाता।

कवि को पुन: भरोसा है कि नए उपमानों की मदद से वर्णित किये गये रूप और उस रूप के प्रति कवि के गंभीर स्नेह को मार्मिक करने में उसकी प्रेमिका से कोई भूल नहीं होगी।

आगामी पंक्तियों में अज्ञेय ने नूतन उपमानों के उपयोग की उपयुक्तता को प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। इसका प्रमाण तो कवि द्वारा आरंभ में ही उपस्थित किया जा चुका है। वह यह की पारंपरिक उपमानों की जगह आधुनिक उपमानों से सुन्दरता को अत्यंत सफल रूप से संचारिक किया जा सकता है। अब कवि का एक अन्य विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है। कवि के अनुसार आज के नागरिक कवियों का पुष्पदान में लालन-पालन कर बडे किए गए चमेली जैसे फूलों से ही विशिष्ट पहचान रहती है। वे कुदरत के स्वच्छंद परिवेश में मुक्त रूप से विकासशील बनस्पतियों तथा पुष्प-पेड़ों की सुन्दरता के साथ अपने हृदय का सामंजस्य निश्चित नहीं कर पाते। इसी कारण कवि के लिए यह अनिवार्य है कि संसार के यथार्थ व सहज सौन्दर्य का ज्ञान कराने के लिए प्रयासपूर्वक बनावटी रूप से उत्पन्न किए गए कुसुम-वृक्षों के स्थान पर वनो, बगीचों में स्वंय अंकुरित हुए पुष्पों-पौधों बनस्पतियों से सौन्दर्य की तुलन की जाए। परिणामत: कवि ने अपनी प्रियतमा को सुन्दरता की समानता हरी कोमल घास एवं बाजरे की कलगी से की है।

कवि के कहने का आशय है कि उसके द्वारा जो कुछ भी कहा गया है वे सिर्फ कहने के लिए नहीं है बल्कि उसके हृदय की गंभीर अनभूति है। सच ही कहा गया है कि शब्दों में अधिक शक्ति होती है तथा भारी-भरकम सुशोभित शब्द व्यवस्था से अभिव्यक्ति तुलना में अत्याधिक संचारित बन जाती है, परन्तु समय-समय पर इसका प्रतिवाद भी दिखाई देता है, शब्दों से जो प्रकट नहीं किया जाता उसे खामोश रहकर जाहिर कर देते है। किसी क्षण निरुत्तर आत्मसमर्पण मुखर अभिव्यंजना से ज्यादा बहुमूल्य बन जाता है।

विशेष

1. अज्ञेय ने नए उपमानों के उपयोग का समर्थन किया है।
2. 'या शरद.....अकेली के अंतर्गत दृश्य-बिम्ब है।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थियों। आपको जो अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' के व्याख्या भाग से ज्ञान प्राप्त हुआ है उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्हा द्वारा देकर अभी तक प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें।

1. 'कलगी बाजरे की' की कविता में कवि अपनी प्रेयसी की सुन्दरता के वर्णन में प्राचीन उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों का प्रयोग करता है( )
2. सांझ के समय जो सबसे पहले तारा जगमगाता हुआ दिखाई देता है, कवियों ने अपनी प्रेमिका की सुंदरता की तुलना उसी से की है।( )
3. उपमानों का बार-बार उपयोग करने से उसकी सुन्दरता को प्रेषित करने की निपुणता का समापन हो जाता है। ( )
4. कवि ने पारंपरिक उपमानों की जगह नवीन उपमानों को लाने का कारण नवीनता को बताया है। ( )
5. कवि को पूर्ण विश्वास है कि नए उपमानों की सहायता से कवि के गंभीर स्नेह को अभिव्यक्त करने में उसकी प्रेमिका से कोई भूल नहीं होगी( )
6. कवि की धारणा है कि प्रयासपूर्वक बनावटी रूप से उत्पन्न किए गे कुसुम-वृक्षों के स्थान पर वनो-बगीचों में स्वंय अकुरित हुए पुष्पों-पौधों वनस्पतियों से सौन्दर्य की तुलना की जाए। ( )
7. कवि ने अपनी प्रियतमा की सुन्दरता की समानता हरी कोमल घास एवं बाजरे की कलगी से की है। ( )
8. कवि के अनुसार जो कुछ भी कहा गया है वे सिर्फ शब्द नहीं बल्कि उसके हृदय की गहरी अनुभूति है। ( )

2.5 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1 दीप 2 गर्व 3 स्वैच्छिक 4 सुविधाजनक 5 बाधाओं 6 जांच-पड़ताल 7 समर्पित

स्व-मूल्यांकन (ख)

1 सही 2 सही 3 सही 4 गलत

5 सही 6 सही 7 सही 8 सही

2.6 पठनीय पुस्तके

1. अज्ञेय संपादक, विद्यानिवास मिश्र, अज्ञेय प्रतिनिधि कविताएँ, राजपाल एण्ड संत, दिल्ली 2002
2. संपादक, नन्दकिशोर, आचार्य, अज्ञेय संचयिता राजकमल प्रकाशन दिल्ली 2001

पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की 'शब्द और सत्य' तथा 'नदी के द्वीप' कविताओं की सप्रसंग व्याख्या

रूपरेखा

3.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
3.2 प्रस्तावना
3.3 शब्द और सत्य
स्व-मूल्यांकन (क)
3.4 नदी के द्वीप
स्व-मूल्यांकन (ख)
3.5 उत्तर कुंजी
3.6 पठनीय पुस्तकें

3.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

उद्देश्य : प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको अज्ञेय की 'शब्द और सत्य' तथा 'नदी के द्वीप' कविताओं को समझाना है।

अपेक्षित परिणाम : प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप अज्ञेय की 'शब्द और सत्य' तथा 'नदी के द्वीप' कविताओं से पूर्ण परिचित हो सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ में अज्ञेय की शब्द और सत्य तथाम नदी के द्वी कविताओं की महत्वपूर्ण पंक्तियों की व्याख्या प्रस्तुत की गेई है।

3.3 अज्ञेय 'शब्द और सत्य'

1. यह नहीं कि मैने सत्य नहीं पाया था
यह नहीं कि मुझको शब्द अचानक

कभी-कभी मिलता है:

दोनों जब-तब सम्मुख आते ही रहते हैं।

प्रश्न यही रहता है:

दोनों जो अपने बीच एक दीवार बनाए रहते है

मैं कब, कैसे, उनके अनदेखे

उसमें सेंध लगा दूँ

या भरकर विस्फोटक

उसे उड़ा दूँ ?

कवि जो होंगे हों, जो कुछ करते हैं करें,

प्रयोजन मेरा नस इतना है:

ये दोनों जो

सदा एक-दूरसके से तनकर रहते हैं

कब, कैसे, किस आलोक-स्फुरण में

इनें मिला दूँ

दोनों जो है बंधु, सखा, चिर सहचर मेरे।

शब्दार्थ:

1. सम्मुख - सामने
2. अनदेखा = जिसे कभी देखा न गया हो।
3. सेंध = चोर द्वारा चोरी के उद्देश्य में किया छेद, नकब।
4. प्रयोजन=उद्देश्य
5. आलोक - प्रकाश, उजाला 6 स्फुर - कंपन, अंकुरण
6. बंधु - भाई, भ्राता 8. सखा - साथी, संगी 9. चिर-दीर्घकालीन। 10. सहचर - साथी।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियां 'अज्ञेय' की कविता 'शब्द और सत्य' से उद्धृत की गई हैं जो अज्ञेय के काव्य संग्रह 'सन्नाटे के छंद' में संकलिन है। यह कविता कवि की एक लोकप्रिय कविता है, जिसमें सत्य के शोध तथा शब्दों की सीमाओं के मध्य मतभेद

को दर्शाया गया है प्रस्तुत कविता में कवि ने यथार्थ को ऐसे रहस्य के रूप में निरुपित किया है जो सदैव शब्दों से अलग है तथा जिसे अभिव्यक्त करना कठिन है।

व्याख्या: प्रस्तुत पद्यांश में कवि सच को ऐसी वस्तु के रूप में चित्रित करता है जो सर्वदा खोजने के उपरान्त भी उसे भ्रमित करती है। कवि का मानना है कि वह वास्तविकता तक पहुंचने के लिए कई शब्दों का प्रयोग भी करता है। पन्तु वह इस बात से भी अवगत है कि शब्द सदैव सच को उसकी पूरी वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त नहीं कर सकते है।

कविता के अंतर्गत शब्दों और सच के मध्य संघर्ष चलता रहता है। सत्य निरंतर शब्दों से अलग है। जिसके परिणामस्वरूप शब्दों के प्रयोग से इसे पूर्ण रूप से स्पष्ट नही किया जा सकता। कवि के अनुसार सच्चाई और शब्दों के मध्य जो दीवार है, उसे तोडने के लिए कई प्रयास करने की आवश्यकता है।

कवि पुन: कहता है कि सच को जानने के लिए शब्दों का निरंतर इस्तेमाल करना अनिवार्य है किन्तु साथ ही शब्दों की सीमाओं का ध्यान रखना भी आवश्यक है। कवि के अनुसार सच का अनवेषण करना एक अनवरत प्रकरण है, तथा शब्दो का प्रयोग सच्चाई तक पहुंचने के लिए एक साधन के रूप में किया जा सकता है, परन्तु शब्दों को यथार्थ के आखरी रूप के रूप में नहीं समझना चाहिए।

विशेष: प्रस्तुत कविता सच्चाई के अनवेषण तथा शब्द प्रतिबंध के मध्य मतभेद को व्यक्त करती है। कविता के अंतर्गत कवि शब्दों के प्रयोग को सच तक पहुंचने के लिए अनिवार्य मानता है, अपितु साथ ही शब्दों की सीमाओं से भी सहमत होता है।

स्व-मूल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थियों ! आगे बढने से पहले अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दे और अभी तक आपको जो अज्ञेय की कविता 'शब्द और सत्य' के व्याख्या भाग से ज्ञान प्राप्त हुआ है। उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर अभी तक प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें।

1. 'शब्द और सत्य' कविता अज्ञेय के 'सन्नाटे के छंद' काव्य संग्रह में संकलित है। ( )
2. कवि सच को ऐसी वस्तु के रूप में वर्णित करता है जो सर्वदा खोजने के उपरान्त भी उसे भ्रमित नही करती है । ( )

3. 'शब्द और सत्य' कविता में शब्दों और सच के बीच संघर्ष चलता रहता है। ( )

4. कवि के अनुसार सत्य को जानने के लिए शब्दों का निरंतर उपयोग आवश्यक है। ( )

5. 'शब्द और सत्य' कविता में कवि का कहना है कि सत्य और शब्दों के मध्य जो दीवार है, उसे तोड़ने के लिए कई प्रयास की आवश्यकता है। ( )

3.4 नदी के द्वीप

1. हम नदी के द्वीप हैं।

हम नही कहते कि हम को छोड़कर स्त्रोतवाहिनी बह जाए।

वह हमें आकार देती हैं।

हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीय, उभार, सकैत-कूल

सब गोलाइयाँ उसकी गढी हैं।

शब्दार्थ: स्त्रोतवाहिनी - नदी। अन्तरीय - बीच के टीले। सैकत - कूल -रेतीले किनारे।

प्रसंग: प्रस्तुत अवतरण - नदी के द्वीप कविता से लिया गया है। यह कविता अज्ञेय जी के संग्रह 'बावरा अहेरी' से संकलित की गई है। इस प्रतीकात्मक कविता में समाज और परम्परा के पारस्परिक संबंधों को नवीन दृष्टि से देखा गया है। यहां द्वीप व्यक्ति का, नदी पंरपरा अथवा काल की और भूखंड समाज का प्रतीक है। समाज और व्यक्ति को मिलाने वाली पंरपरा ही है। जिस प्रकार द्वीप भूमि का एक खंड है किन्तु नदी के कारण उसका पृथक अस्तित्व है। उसी प्रकार व्यक्ति भी समाज का एक अंग है किन्तु काल-प्रवाह के कारण उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व भी बन जाता है। यहां इसी तथ्य पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या: कवि का कथन है कि हम नदी के द्वीप हैं। हम यह कदापि नहीं चाहते हैं कि नदी की धारा हम को छोडकर बह जाए क्योंकि उससे अलग रहना सम्भव नहीं। नदी से हमारा निर्माण होता है। वही हमें रूप और आकार प्रदान करती है। उसी की धारा ही हमारे किनारों को काटती और बनाती है। हमारे बीच के रास्ते, गलियां, टीले तथा सभी गोलाइयां नदी की धारा से ही बने हैं। भाव यह है कि द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है और नदी समाज का | जल-प्रवाह समाज की परंपराओं का प्रतीक है। व्यक्ति समाज

का अटूट अगं है। समाज ही युगानुरूप व्यक्ति को रूप प्रदान करता है। व्यक्ति समाज से अलग नहीं रह सकता। वह पृथक व्यक्तित्व लिए हुए भी समाज से अछूता नहीं है।

विशेष:

1. कविता में प्रतीकों का सुन्दर निर्वाह है, भाषा सरल होते हुए भी गंभीर एवं व्यापक अर्थ को वहन करने में समर्थ है। अनुप्रास अलंकार है।
2. व्यक्ति समाज में कोई विरोध नहीं। व्यक्ति समाज से जुड़कर ही महत्व प्राप्त करता है।

2. माँ है वह ! है, इसीसे हम बने हैं।

किन्तु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।

स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्त्रोतस्विनी के

किन्तु हम बहते नहीं है। क्योंकि बहना रेत होना है।

हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

पैर उखड़ेगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएंगे।

और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते?

रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदलता ही करेंगे।

अनुपयोगी ही बनाएँगे।

द्वीप हैं हम ! हम नहीं है शाप । यह अपनी नियति है।

शब्दार्थ: समर्पण=पूरी तरह से सौपना, स्त्रोतवाहिनी-नदी। प्लावन=बाढ़।

प्रसंग: प्रस्तुत अवतरण अज्ञेय की कविता 'नदी के द्वीप' से अवतरित किया गया है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है जिसमें द्वीप तथा नदी के मधाय्म से व्यक्ति तथा समाज के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। नदी द्वीप का निर्माण करती है। व्यक्ति भी तो समाज की परम्पराओं में रहकर अपने व्यक्तित्व को प्रकट करता है।

व्याख्या: व्यक्ति का निर्माण समाज द्वारा होता है। इसी भाव को व्यक्त करता हुआ द्वीप कहता है-यह नदी हमारी माँ है। इसी ने हमें स्वरूप प्रदान किया है। हम नदी से अटूट संबंध रखते हुए भी नदी नहीं हैं क्योंकि हम द्वीप हैं। हम नदी की जल धारा नहीं है। हमारा समर्पण स्थिर है। हम हमेशा से इस नदी के द्वीप हैं। भाव यह है कि समाज में निरन्तर परिवर्तन आता रहता है। व्यक्ति सामाजिक परंपराओं से

संस्कार ग्रहण करता हुआ भी अपना अलग अस्तित्व रखता है द्वीप बहता नहीं। बहने से उसका अस्तित्व समाप्त होता है। बहने का अभिप्राय रेत होना है। पैर उखड़ेंगे, बाढ़ आएगी, गिर जाएंगे और सब कुछ सहन करते हुए बह जाएंगे। आगे द्वीप कहता है कि हम यदि कण-कण होकर बह भी जाएंगे तो क्या धारा बन सकते हैं, धारा के समान प्रवाहित हो सकते हैं। रेत बनकर भी हम पानी के साथ पानी नहीं बन सकते। हम रेत के रूप में बह कर अंतत: पानी को गन्दा ही करेंगे। इसी तरह पानी पीने योग्य भी नहीं रह जाएगा। हम द्वीप हैं और द्वीप होने को शाप नहीं मानते। यह तो हमारा भाग्य है।

विशेष:

1. व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को समाज से अलग रखकर ही अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकता है।
2. 'द्वीप' व्यक्ति का, धारा परंपरा की तथा भूखंड समाज का प्रतीक है। भाषा तत्सम प्रधान तथा लाक्षणित है।

3. हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड में।

वह वृहत् भूखंड से हमको मिलती है।

और वह भूखंड अपना पितर है।

नदी तुम बहती चलो।

भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है

माँजती, संस्कार देती चलो।

शब्दार्थ: क्रोड-नदी। वृहत-विशाल। भू-खंड-पृथ्वी। दाय-संपदा।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश अज्ञेय द्वारा चरित कविता 'नदी के द्वीप' से उद्धृत है। प्रस्तुत पद्यांश में कवि द्वीप के मुख से उसका वर्णन कर रहे है।

व्याख्या: द्वीप कहता है कि हम नदी के पुत्र हैं, उसकी सन्तान हैं-इसीलिए हम नदी की गोद में बैठकर उसकी ममता का आनंद ले रहे हैं। यह नदी हमें विशाल भू-खंड से मिलाती है। यह विशाल भू-खंड ही हमारा पिता है। हे नदी ! तुम निरंतर बहती रहो यही हमारी कामना है। इस भूमि से जो संपत्ति, जो विरासत हमें मिली है, मिलती रही उसे तुम मांजती, सजाती संवारती हुई चलो। है नदी ! यदि कभी ऐसा हो जाए कि तुम अपनी मौज मस्ती में, अपनी इच्छावश अथवा अत्याचार करने की भावना से अपनी सीमाओं को तोड़ डालो तो भी हमें स्वीकारा है। हम चाहेंगे कि तुम निरंतर आगे बढ़ो तथा तुम्हारी याद में हमारे कर्म, हमारा यश, हमारा सर्वस्व बह जाए।

विशेष:

1. यहाँ द्वीप, नदी तथा भू-खंडों के माध्यम से क्रमश: व्यक्ति, परम्परा और समाज के पारस्पारिक संबंधों की चर्चा है। द्वीप का नदी के प्रति कृतज्ञ-भाव प्रकट हुआ है। नदी का कर्तव्यनिष्ठ मां के रूप में भावपूर्ण चित्रण है।
2. संस्कृतनिष्ठ प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग है। नदी-द्वीप और भू-खंड के प्रतीकों के माध्यम से परपंरा, व्यक्ति और समाज के संबंधों पर विचार किया गया है।

4. यदि ऐसा कभी हो

तुम्हारे आहार से या दूसरों के

किसी स्वेच्छाचार से, अतिचार से,

तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घटघराता उठे-

यह सत्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल,

प्रवाहिनी बन जाए-

तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर-

फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।

कहीं फिर खड़ा होगा नए व्यक्तित्व का आकार

मात: उसे फिर संस्कार तुम देना।

शब्दार्थ: आह्लाद-खुशी। स्वेच्छाचार-मनमानी। अतिचार-व्यभिचार। घरघराता-चिंघाड़ता हुआ। कर्मनाशा-कर्म को मिटाने वाली। कीर्तिनाशा-यश को नष्ट करने वाली। काल-प्रवाहिनी-मृत्यु की नदी। संस्कार-विशेष गुण।

प्रसंग: प्रस्तुत अवतरण अज्ञेय की कविता 'नदी के द्वीप' से अवतरित किया गया है। इस कविता में कवि ने व्यक्ति को द्वीप के समान तथा समाज को नदी के समान मानकर उनके आपसी संबंधों पर प्रकाश डाला है। इन पंक्तियों में यह स्पष्ट हो गया है कि जिस प्रकार नदी में बाढ आने पर द्वीप का अस्तित्व मिटता नहीं, उसी प्रकार समाज में उथल-पुथल मचने पर भी व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त नहीं होता बल्कि उसे एक नया रूप प्राप्त होता है।

व्याख्या: यदि मन्द गति से बहने वाली नदी काल रूप धारण कर भंयकर गर्जना करती हुई बहने लगे और उसमें हमारे कर्म और यश भी नष्ट होकर उसी के साथ बहने लगें, तब भी हमें उसका वह रूप स्वीकार होगा। ऐसी स्थिति में हम रेत का रूप धारण कर लेंगे। रेत बनकर ही हम उसकी धारा के साथ नहीं बह सकेंगे। परन्तु जब नदी स्वभाविक गति से बहने लगेगी तो यह रेत छनकर एक जगह इकट्ठी हो जाएगी। उस स्थान पर पुन: द्वीप एक नए रूप और आकार में खड़ा होगा। हे माता! तुम उसे फिर नया स्थान प्रदान करना। भाव यह है कि समाज की उथल-पुथल व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को भी अस्त-व्यस्थ कर देती है पर व्यक्ति का अस्तित्व नष्ट नहीं होता। समाज फिर उसे नए संस्कार प्रदान करता है।

विशेष:

1. नदी को माँ की संज्ञा दी है क्योंकि नदी ही द्वीप को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करती है। समाज भी व्यक्ति के प्रति माँ का उत्तरदायित्व निभाता है। उसी के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।
2. भाषा लाक्षणिक तथा प्रतीकात्मक है गत्यात्मक बिंब योजना है। छंद मुक्त रचना है। अनुप्रास अलंकार है।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थियों ! अज्ञेय की कविता नदी के द्वीप के व्याख्या भाग से अभी तक आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है। उसका स्व-मुल्यांकन आप निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करे। यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमे निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते है। साथ ही पाठ का पुनः अध्य्यन करें।

1. 'नदी के द्वीप' कविता अज्ञेय के काव्य संग्रह.....से संकलित की गई है।
2. 'नदी के द्वीप' कविता में समाज और पंरपरा के.....सबंधों को नवीव दृष्टि से देखा गया है।
3. 'नदी के द्वीप' कविता में द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है अथवा नदी..... का प्रतीक है।
4. जल-प्रवाह समाज की.....का प्रतीक है।
5. व्यक्ति का निर्माण.....द्वारा होता है।

6. नदी विशाल.....से मिलाती है।

8. नदी का.....माँ के रूप में भावपूर्ण चित्रण है।

9. समाज उथल-पुथल व्यक्ति के.....जीवन को भी अस्त-व्यस्त कर देती हैं पर व्यक्ति का अस्तित्व नष्ट नही होता।

3.5 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1. सही 2. गलत 3. सही 4. सही 5. सही

स्व-मूल्यांकन (ख)

1. बाबरा अहेरी 2. पारस्परिक 3. समाज 4. परंपराओं

5. समाज 6. भूखंड 7. कर्तव्यनिष्ठ

3.6 पठनीय पुस्तकें

1. अज्ञेय संपादक, विद्यानिवास मिश्र, अज्ञेय प्रतिनिधि कविताएं, राज्यपाल एंड सन्ज, दिल्ली-2002

2. संपादक नन्दकिशोर आचार्य, अज्ञेय संचयिता, राजकमल प्रकाशन दिल्ली-2001

पाठ्यक्रम में निर्धारित धूमिल की 'मुनासिब कारवाई', 'मोचीराम' तथा 'नक्सलवाड़ी' कविताओं की सप्रसंग व्याख्या

रूपरेखा

4.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
4.2 प्रस्तावना
4.3 मुनासिब कारवाई
स्व-मूल्यांकन (क)
4.4 मोचीराम
स्व-मूल्यांकन (ख)
4.5 नक्सलवाड़ी
स्व-मूल्यांकन (ग)
4.6 पठनीय पुस्तके

4.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उदेद्श्य आपको धूमिल की 'मुनासिब कारवाई', 'मोचीराम' तथा 'नक्सलवाड़ी' कविताओं के भावार्थ को समझाना है।

आपेक्षित परिणाम: प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत अध्याय का अध्य्यन करने के पश्चात आप धूमिल की 'मुनासिब कारवाई', 'मोचीराम' तथा 'नक्सवाडी', कविताओं से पूर्ण रूप से परिचित हो सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों इस ! पाठ में धूमिल की 'मुनासिब कारवाई', 'मोचीराम' तथा 'नक्सवाडी', कविताओं की महत्वपूर्ण पंक्तियों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

4.3 मुनासिब कारवाई

1. अकेला कवि कठघरा होता है।

इससे पहले कि 'वह' तुम्हें

सिलसिले से काटकर अलग कर दे

कविता पर

बहस शुरू करो

और शहर को अपनी ओर

झुका लो।

यह सबूत के लिए है।

- रंगीन पत्रिकाओं में चरित्र

पोंकता हुआ ईमान,

जो दाँतों में फैली हुई भाषा की

तिकड़म है,

टूटे हुए बकलस का खुफिया तनाव,

एक बातूनी घड़ी,

वकील का लबार चोगा,

एक डरपोक चाकू

जिसका फल कानून की ज़द से

सूत-भर कम है।

शब्दार्थ: कठघरा- काठ का जँगलेदार घेरा। कटघरा; (वैरिपर) ईमान = सत्य, न्याय और धर्म के बारे में होने वाली पूरी निष्ठा । तिकड़म = चालबाज या चतुर व्यक्ति, होशियार, चालाक। बकलस-लोहा, पीतल आदि का विशेष छल्ला जिससे तस्में, फीते आदि बाँधे जाते है। लबार-बहुत बातें बनानेवाला, झूठा, अनृतभाषा, मिथ्याभाषी, सूत = डोरा, तंतु, रेशम आदि का बारीक तार कच्चा धागा ।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश साठोत्तरी कविता के ख्याति प्राप्त कवि धूमिल की रचना 'मुनासिब कारवाई' से उद्धृत है। कवि के निजी जीवन में कोर्ट-कचहरी के कड्डवे अनुभव थे उन्हीं कडुवे अनुभवों को कविता के माध्यम से कवि ने व्यक्त किया जिसमें

न्याय व्यवस्था की अंतरंग कमजोरियों को निरावृत्त किया गया है-

व्याख्या: न्यायतंत्र की जटिलता के द्वारा कवि कहता है कि एकाकी कवि कटघरा होता है। जैसे कटघरे में न्याय-अन्याय पर विवाद होता है वैसे ही कवि के अन्तर्मन में न्याय-अन्याय को लेकर द्वंद्व चलता है। इसलिए प्रतिपक्षी जब तक आपको क्रम से निष्कासित कर दें, अपने तर्कों द्वारा तुम्हें परास्त कर दे और मौन धारण करने के लिए विवश कर दे, उससे पहले जरूरी है जन समर्थन अपनी ओर जुटा लेना। कवि भी शब्दों के समक्ष अकेला पड़ जाता है, शब्दों के घेरे में जाने से पहले, कविता पर वाद-विवाद शुरू कर देना चाहिए तथा व्यापक समर्थन जटा लेना चाहिए क्योंकि न्याय-अन्याय का प्रश्न होता ही नहीं है। जिसके पक्ष में समर्थको की संख्या अधिक है वही न्याय है। जो समर्थन हीन है वही अन्यायी सिद्ध कर दिया जाता है। समर्थन के लिए प्रमाणों की आवश्यकता होती है। पर्याप्त प्रमाण होने पर विजय निश्चित है।

रंगीन पत्रिकाओं में जो चरित्र व्यक्त होता है। उनका यथार्थ जान लेने पर ज्ञात होता है कि ईमान का वहाँ स्पर्श तक नहीं है पर पत्रिकाओं में वे सज्जन तथा ईमान के रक्षक ही समझे जाते है, वास्तव में उनके समक्ष ईमान भी भयभीत है। भाषा जो उनके मुख में है, वस्तुत: वह सरल व सहज व्यक्ति की भाषा नहीं है बल्कि उसके प्रत्येक शब्द में एक चाल, एक षड्यंत्र छिपा रहता है। इसी षड्यंत्र को आवरणहीन करना है। उस चरित्र की सज्जनता के पीछे छिपी हुई कुटिलता को सामने लाना है। बकसुआ टूट चुका है, किसी बंधन को बाँधे रखने की क्षमता उसमें से तिरोहित हो गई हैं, अंकुश समाप्त हो गए हैं, सीमाओं को तोड़ दिया गया है, इसीलिए टूटे हुए बकलस से गुप्त तनाव का संचार होता है। न्यायव्यवस्था में न्याय संबंधी नियम सिद्धांत बहुत है लेकिन उसी न्यायव्यवस्था में ऐसे छिद्र भी हैं जो नियम-सिद्धांतों को तोड़ने में सहायक रहता है इसलिए ऐसी न्याय प्रणाली से किसी प्रकार की सुचारू व्यवस्था की आशा नहीं की जा सकती, और एक गुप्त व शीत तनाव बना रहता है इसी न्याय व्यवस्था के छिद्रों को ढूंढ लेना होगा। समय की घड़ी तेजी से चलती चली जाती है घड़ी की टिक-टिक निरंतर काल की गति का आभास देती है, काल अपनी गति से आगे बढ़ता जाता है परंतु कही कोई परिवर्तन नहीं हो पाता, अदालत में तर्क-वितर्क होता रहता है, वकील न्याय की रक्षा में सहायक नहीं होते वरन अन्याय के पक्ष में वे बिक जाते हैं जो लबादा या ओवरकोट उनके पेशे की पवित्रता का घातक था, जो उन्हें न्याय का प्रहरी बताता था वही लबादा झूठा, आडम्बरयुक्त व दिखावटी रह गया है। एक डरपोक चाकू है। यानि अन्याय है, न्याय की उपेक्षा करने वाले उपकरण हैं,

न्याय की हत्या करने वाले औजार हैं उनसे भय पैदा किया जाता है, इनेक शक्ति व समर्थ्य कानून की शक्ति के समान ही है, कवि का अभिप्रेत यही है कि सत्य के पक्ष में लड़ने वालों को सर्वप्रथम यही प्रमाण एकत्रित कर लेने चाहिए कि वह उन चेहरों को पहचान ले, जो ईमान खरीदते हैं, उनके षडयंत्रों को समझ ले, कानून की शक्ति-सीमा व दुर्बलता को जान लें एवं वकीलों के दोहरे रूप को देख ले, उस चाकू यानि माध्यमों को परख लें जिनसे न्याय की हत्या की जाती है।

विशेष:

1. कवि के व्यक्तिगत अनुभव कविता में शासनतंत्र की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं, कानून में प्रमाणों का विशेष महत्व होता है,
2. न्याय व्यवस्था में विकृति लाने वाले और कोई नहीं न्यायतंत्र का निर्माण करने वाले तथा उसके रक्षक ही हैं।
3. प्रतीकात्मक शब्दावली में कवि ने शासनतंत्र पर चोट की है।
4. कटघरा कवि की दृष्टि से समकालीन अव्यवस्था द्वारा खडा कर दिया गया न्यायदान कौशल मात्र है।
5. पोकता, बकलस, तनाव आदि तदभव शब्दों का भाषा में प्रयोग है। धूमिल की भाषा सहज, सरल होकर भी जटिल होती है।
6. व्यंग्य है न्याय व्यवस्था, शासन तंत्र पर

2. मगरा अब चीजों के ग़लत होने का

पता चल गया है:

एक रिश्ता ग़लत समय देने लगा है:

उसकी मरम्मत के लिए

घड़ीसाज की दुकान पर जाना

सरासर भूल है।

तुम्हारे जिगरी दोस्त की कमर

वक़्त से पहले ही झुक गई है

उसके लिए-

बढ़ई के आरी और बसूले से

लड़ना फिजूल है।

क्योंकि ग़लत होने पर जड़

न घडीसाज की दुकान में है,

न बढई के बसूले में

और न आरी में है

बल्कि न इस समझदारी में है

कि वित्तमंत्री की ऐनक का

कौन-सा शीशा कितना मोटा है;

और विपक्ष की बेंच पर बैठे हुए

नेता के भाईयों के नाम

सस्ते गल्ले की कितनी दुकानों का

कोटा है।

शब्दार्थ: मरम्मत - टूटा-फूटा ठीक करने का काम। घड़ीसाज़-घड़ी की मरम्मत व सफाई आदि करने वाला कारीगर। सरासर-शीघ्रता जल्दी, फुरती।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश साठोत्तरी कविता के प्रसिद्ध कवि धूमिल की कविता 'मुनासिब कार्रवाई' से उद्धृत है। कवि ने न्याय व्यवस्था में प्रमाणों की महत्ता को समझ लिया है तथा न्याय के खरीदारों को भी जाना है एवं एक रास्ता भी दिया है कि किस प्रकार इन खरीदारों को सामने लाया जा सकता है। कवि को इस बात से संतोष होता है कि तानाशाही का समय बीत गया। एकाधिकार समाप्त हो गया है।

व्याख्या: कवि कहता है कि गलत को गलत सिद्ध करने के लिए प्रमाणों की आवश्यकता बनी रहती थीं परन्तु अब समय बदल गया है अब प्रजातंत्र का अणमन हो गया है, सबको समानाधिकार प्राप्त हैं, अब चीजों के गलत व सही होने का ज्ञान सहज ही हो जाता है। गलत होने का मूल ढूंढने के लिए अब कहीं और जाना पड़ता है। अगर रिश्ते बदल गए हैं। संबंध बदल गए हैं यदि गलत समय मिलने लगा है। तब वास्तव में यह घड़ी का दोष नहीं है, काल का प्रभाव नहीं है यह आदमी की बदली हुई वृत्ति है तब समय को सही गति देने के लिए, नैतिकता के परिमाप पर चलाने के लिए घड़ी की मरम्मत करने वाले के पास जाना भी गलती है। यदि अपने ही आत्मीय मित्र की कमर समय से पहले झुक गई। अभावों ने उसे तोड़ डाला है अथवा अन्याय के

वातावरण में वह शोषण का शिकार होता रहा, तथा दुख झेलता रहा तो उसकी कमर बढ़ाई के आरी वसूले से ठीक नहीं होगी। अब समय ऐसा है कि यदि रिश्तों के मध्य के अन्तराल को और झुकी हुई कमर के पीछे छिपी हुई गलती को पकड़ना हो तो घडी साज की दुकान में तथा बढाई के वसूले व आरी के पीछे न जाकर देखना तो यह चाहिए कि अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने वाले वित्त मंत्री की ऐनक का कौन-सा शीशा कितना मोटा अथवा पतला है। अर्थात वित्तमंत्री ने कितना प्रयास वास्तव में किया है अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने का या किया ही नहीं है और अपना तथा अपने साथी लोगों की अर्थव्यवस्था को ही मजबूत किया है। और देखना चाहिए कि प्रतिपक्ष में बैठे हुए नेता के अपने ही जैसे लोगों या उसके सगे संबंधियों के नाम कितनी दुकानों का कोटा है। कोटे की मात्रा से ही तय होता है पक्ष के मंत्री का भविष्य तथा उसका वर्चस्व एवं प्रभाव। जिससे ज्ञात होता है कि विपक्ष के भी कितने लोग खरीद लिए गए है। अर्थतंत्र के इस शोषणकारी रूप से ही रिश्तों में परिवर्तन आता है, आम आदमी बेरोजगारी तथा महंगाई के बोझ के दबा वक्त के पहले ही बूढा हो जाने को विवश है। लेकिन इस विवशता में मंत्री ही तो सहयोगी नहीं, वह साथी भी तो दोषी है जो इस अन्याय का प्रतिकार न करके उसका समर्थन ही करते हैं और इस प्रकार आम आदमी शोषित होता रहता है।

विशेष

1. एकाधिकार-प्रभुत्व वाले स्पष्ट शासन में जितने दोष थे प्रजातंत्र भी भिन्न प्रकार के दोषों से ग्रस्त है। प्रजातंत्र में भी जनता के शासन के स्थान पर कुछ ही लोगों का शासन चलता है। यह सत्य धूमिल की इस पंक्तियों से स्पष्ट होता है।
2. धूमिल ने शोषकों को तो अन्यायी ठहराया ही है साथ ही आम आदमी को उसकी अपनी शोचनीय अवस्था के लिए दोषी मना है.
3. भाषा मैं लाक्षणिकता है।
4. उपर्युक्त पंक्तियों में व्यंग्य की शक्ति को देख सकते हैं, धूमिल ने अन्य कविताओं में भी इसी प्रकार शासन तंत्र तथा शासकों पर व्यंग्य करते हुए उसकी लोलुपता को उभारा है। एस राजनीति के भाईचारे को निरावृत्त किया है।

3. और जो चरित्रहीन है

उसकी रसोई में पकनेवाले चावल

कितना महीन है।

इस वक्त सच्चाई को जानना

विरोध में होना है।

और यहीं से-

अपराधियों की नाक के ठीक नीचे

कविता पर

बहस शुरू होती है।

चेहरे से चेहरा बटोरते हुए

एक तीखा स्वर

सवाल पर सवाल करता है।

सन्नाटा टूटता है।

गूँगे के मुहँ से उत्तर फूटता है।

'कविता क्या है,

कुर्ता-पाजामा है।

शब्दार्थ: महीन -अत्यंत पतला, बारीक 2 सन्नाटा-मौन, चुप्पी, ऐसा वातावरण जिसमें कोई शब्द या ध्वनि न हो।

प्रसंग: प्रस्तुत प्रद्यांश हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि धूमिल की प्रसिद्ध कविता मुनासिब कार्रवाई' से उद्धृत है। कवि जानता है कि यह ऐसा समय है जब आदमी मुखौटे लगाकर जीता है। आदमी के मूल चेहरे का उन सबके बीज से खोज निकालना सरल कार्य नहीं है तथा इससे भी कठिन कार्य यह है कि आम आदमी को इस वास्तविकता से परिचित करवाना तथा उसमें यह विवेकशक्ति पैदा करना कि अमुक आदमी अथवा वस्तु का छद्म रूप कौन-सा है तथा वास्तविक कौन-सा है।

व्याख्या: कवि कहता है कि जो चरित्रहीन है, जिसे चरित्रहीन सिद्ध भी किया जा सकता है, जो बेईमानी करता है तथा अमानवीय है, उसके अंतर्मन में कितने षडयंत्र पल रहे हैं इस वस्तुस्थिति को जानना भी कम खतरों से भरा नहीं है, रसोई में पकने

वाले महीन चावल से कवि का यही आशाय है कि कितने और षडयंत्रों को जन्म दे रहा है, इस समय अगर कोई इस सच्चाई को जान ले तो उसका तात्पर्य होगा कि उसका शत्रु बन जाना तथा शत्रुता मोल लेना। सच्चाई को जान लेना अर्थात उनके वास्तविक चेहरों को देख लेना भी उसका शात्रु बन जाता है भले ही शत्रुतापूर्ण कोई कार्य नहीं किया जाता। वास्तव में किसी भी षडयंत्रकारी का रूप देख लिया जाए तो वह विचलित हो जाता है क्योंकि उसकी सज्जनता का मुखौटा निरर्थक हो जाता है, इसीलिए कवि कहता है इस समय सच्चाई को जानकर विरोधी होने की उपाधि पा लेनी होगी। ऐसे ही बिन्दु से कविता पर वाद-विवाद आरंभ होता है। अपराधियों के संरक्षण में ही कविता पलती है और यही कारण है कि कविता षडयंत्रकारियों के चेहरो को देख लेने के बाद भी मौन हो जाती है। वाद-विवाद होता है अन्याय, अव्यवस्था, विसंगति विद्रूपता पर। लेकिन कविता की बहस की सार्थकता इस बात में है कि वह मुखौटे पर मुखौटे उतारती चली जाए तथा मूल सत्य को प्राप्त करें तथा मूल सत्य को जनता के समक्ष ले आए। तब एक-एक चेहरा समूह में बदलने लगता है तथा स्वर उग्र हो उठता है। प्रश्न दर प्रश्न करते हुए जब व्यक्ति मूल सत्य पर पहुँचता है वस्तु स्थिति को जानता है तब लम्बे समय का जड़ मौन टूटता है जो आम आदमी आज तक चुप था या जो सत्य की अंतिम तह तक पहुँच ही नहीं पाया था। वे सब समूह में बल पाकर लम्बी जड़ता को तोड़ देते हैं। जैसे गूंगे के मुख से स्वर फूटता है, और यह स्वर भी इस विवेक सम्पन्न जिज्ञासा से प्रस्फुटित हो कि 'कविता क्या है?' जब आम आदमी अत्याचार और अन्याय के कारण फिर चुप ही न हो और 'कविता' पर बहस करे। उस कविता पर जो कभी मार्ग दर्शक बनी है, कविता के उसी स्वरूप को पाने के लिए आम आदमी सक्रिय हो जाए कि कविता क्या कोई आवरण वस्त्र है, कविता कोई पहनने का वस्त्र है ? अर्थात कविता धारण करने की चीज है एक भाव, एक दिशा आम आदमी को उससे मिलती है।

विशेष:

1. मुहावरेदार भाषा है, रसोई में पकने वाला चावल, अपनी खिचडी अलग पकाना का ही बदला हुआ रूप है। 'नाक के ठीक नीचे' अर्थात उन्हीं के संरक्षण में। सन्नाटा टूटना-जड़ता टूटना।
2. कविता की सामर्थ्य शक्ति तथा कविता की जनप्रेरक क्षमता को कवि ने स्पष्ट किया है।
3. संवाद शैली का प्रयोग किया है ।
4. भाषा सहज सरल है।

स्व-मूल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थियों ! धूमिल की कविता 'मुनासिब कारवई' के व्याख्या भाग से अभी तक आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसका स्व-मूल्यांकन आप निम्नलिखत रिक्त स्थान भरक करें। यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते है साथ ही पाठ का पुनः अध्य्यन करें।

1. न्यायतंत्र की जटिलता के द्वारा कवि कहता है कि एकांकी कवि..... होता है।
2. जैसे कटघरे में न्याय-अन्याय पर विवाद होता है वैसे ही कवि के..... में न्याय-अन्याय को लेकर द्वंद्व चलता है,
3. समर्थन के लिए प्रमाणों की आवश्यकता होती है। पर्याप्त प्रमाण होने पर.....निश्चित है।
4. आम आदमी बेरोजगारी तथा महंगाई के बोझ से दवा वक्त के पहले ही बूढा हो जाने को.....है।
5. एकाधिकार-प्रभुत्व वाले स्पष्ट शासन में जितने दोष थे.....भी भिन्न प्रकार के दोषों से ग्रस्त है।
6. कवि के अनुसार आज ऐसा समय है जब आदमी.....लगातार जीता है।
7. किसी भी षडयंत्रकारी का रूप देख लिया जाए तो वह विचलित हो जाता है क्योंकि उसकी.....का मुखौटा निरर्थक हो जाता है।

4.4 मोचीराम

राँपी से उठी हुई आँखों ने मुझे
क्षण-भर टटोला
और फिर
जैसे पतियाए हुए स्वर में
वह हँसते हुए बोला-
बाबूजी। सच कहूँ-मेरी निगाह में
न कोई छोटा है

न कोई बड़ा है

मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है

जो मेरे सामने

मरम्मत के लिए खड़ा है।

शब्दार्थ: राँपी- जिस औजार से मोची चमड़ा छीलता है। टोटला-खोजा। पतियाए-खिसियाए हुए।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश साठोतरी कविता के अप्रतिम हस्ताक्षर, विद्रोही कवि धूमिल की कविता 'मोचीराम' से उद्धृत है। उपर्युक्त पंक्तियाँ मोचीराम तथा बाबूजी यानि स्वंय कवि के बीच चल रहा संवाद है। इस संवाद में मोचीराम और मोचीरम के माध्यम से कवि समता और समानता का विचार प्रतिपादित करता है। मोचीराम का प्रथम करणीय उसका अपना पेश है, काम है। और अपने काम को करते हुए वह किसी के बीच भेदभाव नहीं करता है। इसलिए जो भी उसके पास आता है उसके लिए मात्र वह एक ग्राहक है जिसके जूतों की मरम्मत करना उसका पेश ही है। अत: जब लेखक ने पूछा कि आदमी-आदमी के बीच की पहचान वह कैसे करता है, छोटे-बडे होने का भेद क्या है ? तब मोचीराम प्रत्युत्तर में कहता है -

व्याख्या: जब मोचीराम ने राँपी से आँखे उठाई तो कवि को महसूस होता है कि वह आँखे उसके स्वंय के अंतर्मन में कुछ खोजने का प्रयास कर रही हैं। मोचीराम की आँखे एक क्षण के लिए कवि की ओर देखती हैं और पुन: अपने में लीन हो जाती हैं, तब मोचीराम अपने जीवन के संचित अनुभवों तथा पेशे के अनुकूल अपने धर्म का निर्वाह करते हुए अपने मोची होने के अहसास के साथ दार्शनिक बनते हुए, खिसिया कर परन्तु अपनी खिसियाहट को हँसी में छिपाकर अभिजात्य के साथ कहता है सच बात तो बावूजी यह है कि मेरे लिए आदमी-आदमी के बीच कोई अंतर नहीं है जिनके नीचे दुनिया ने फासले बनाए हैं। अर्थ, जाति, धर्म के पैमाने पर छोटे-बडे का निर्धारण किया है, वास्तव में मेरे लिए आदमी को मापने के पैमाने ही नहीं हैं, न तो मैं किसी को छोटा ही मानता हूँ न बड़ा ही। मेंरे लिए यह अन्तर निरर्थक है। क्योंकि मेरे पास जो भी कोई आता है वह पेशे, जाति, धर्म को लेकर नहीं आता वह जूते मरम्मत करवाने के लिए आता है और मेरा अपना धर्म तथा मेरे पेशे का तकाजा जूतों से है, इसलिए मेरे लिए तो आदमी किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का हो, एक जोड़ी जूते के समान ही है। और जो भी आदमी उसके पास आता है वह जूतों के माध्यम से ही उस तक पहुँचता है, तभी मोचीराम कहता है कि मेरे लिए हर आदमी एक जोडी जूता है, ऐसा जूता जो

मरम्मत के लिए मेरे पास आया है। मोचीराम स्पष्टत: अपने रोजी-रोटी के कर्म को प्राथमिकता देता है जो मरम्मत के लिए आए हैं क्योंकि वही आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम है। आदमी को वह महत्व देता है, किन्तु आदमी के महत्व से अधिक उन जूतों का महत्व है। स्पष्टत: मोचीराम की नजर में आदमी और जूता एक-दूसरे का पर्याय बनकर सामने आते हैं।

विशेष -

1. धूमिल की कविता 'मोचीराम' मुक्तिबोध की लम्बी कविताओं की भाँति अपने ही मैं, तुम का प्रभाव लिए आरंभ होती है, मोचीराम के माध्यम से भी कवि की दृष्टि व विचार प्रस्तुत होते हैं, तथा उनका श्रोता भी स्वंय कवि ही है, यह स्वंय से स्वंय का वार्तालाप बन जाता है तथा मोचीराम का आभिजात्य निराला की 'वह तोडती पत्थर' की पत्थर तोडने वाली नायिका की भाँती व्यक्त होता है। पत्थर तोडने वाली स्वंय नहीं बोलती लेकिन उसकी आँखे बोलती हैं। लेकिन मोचीराम स्वंय ही दार्शनिक बन जाता है जिसके पास अनुभवों की पूंजी हैं।
2. धूमिल की भाषा अपने जन-जीवन के संस्कारो को ग्रहण करके बनी है इसलिए 'पतियाएं', 'राँपी' जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है।
3. संवाद शैली में लिखी गई ये पंक्तियां स्वंय में पूर्ण एक बिम्ब है। इस बिम्ब में मोचीराम का गहरा व्यंग्य छिपा है। जो प्रश्न कवि ने उससे पूछे हैं उनका उत्तर जिस तरह से मोचीराम ने दिया है उससे स्पष्ट होता है कि छोटे-बडे का भेदस्थापित करने वाले मोचीराम जैसे व्यक्ति नहीं हैं जो जीवन को बनाए रखने के प्रयासों में लगे हुए हैं, बल्कि यह प्रश्न उनके समक्ष निरर्थक है, यह समस्या तो उन लोगों के लिए है जिनेहें जीवन से अधिक उसका अभिजात्य प्रिय है इसलिए जो भी मोचीराम के लिए नहीं है वह बाबूजी के लिए हो सकता है। इश प्रकार एक बडे वर्ग पर वह प्रहार करता है।
4. मुक्त छंद युक्त इन पंक्तियों में अर्थसंगति का भाव कविता को प्रखर बनाता है।
5. प्रगतिवादी प्रतिबद्धता तो धूमिल में नहीं है लकिन यहाँ साम्यवादी वैचारिक के दर्शन अवश्य होते हैं।

2 . 'बाबूजी ! इस पर पैसा क्यों फूँकते हो ?

मैं कहना चाहता हूँ

मगर मेरी आवाज़ लड़खडा रही है

मैं महसूस करता हूँ -भीतर से

एक आवाजा आती है- कैसे आदमी हो

अपनी जाति पर थूकते हो।

आप यकीन करें, उस समय

में चकतियों की जगह आँखें टाँकता हूँ

और पेश में पड़े हुए आदमी को

बडी मुश्किल से निबाहता हूँ

शब्दार्थ: फूँकते - व्यर्थ में खर्च करना, पैसे का निरर्थक प्रयोग, थूकते हो-एक मुहावरा-अपमान करना। चकतियों-पैबंदो। पेशे-काम धंधा। निबाहता-निर्वाह करना, सहन करना, सामंजस्य स्थापित करना

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश नयी कविता के अग्रणी कवि धूमिल की प्रसिद्ध कविता 'मोचीराम' से उद्धृत है। मोचीराम एक ऐसे जूते की मरम्मत में लगा है जिसमें मरम्मत करने के लिए स्थान ही शेष नहीं है, पहले ही उसकी इतनी मरम्मत हो चुकी है तथा पर्याप्त चकत्तियाँ लग चुकी है कि और कोई पैबंद लगाने की जगह ही नहीं है, ऐसा जूता मोचीराम के पास एक बार पहले भी सुधार के लिए आया हुआ है। मोचीराम उसे चेचक के चुगे हुए चेहरे वाले आदमी के इस जूते को देखता है और समझता है कि इसकी और मरम्मत की भी जाए तो भी कोई लाभ नहीं, क्योंकि उसमें इस बात की गुंजाइश भी नहीं है, तभी मोचीराम कहना चाहता है।

व्याख्या: बाबूजी ! इस जूते को ठीक करवाने का मतलब पैसा बर्बाद करना ही है। ऐसा मोचीराम कहना चाहता है पर कह नहीं पाता। कहने के प्रयास में उसकी आवाज़ लड़खड़ाने लगती है। मोचीराम को इस बात का अहसास होता है कि सामने खड़ा तथाकथित आदमी उसकी स्थिति से अलग कहाँ है। उसकी और मोचीराम की स्थिति में सघन साम्य है। जिन अभावों का प्रतीक वह जूता है, उन्हीं अभावों को तो मोचीराम प्रतिदिन सहता है। इस वस्तुस्थिति को मोचीराम समझ रहा है। उसे लगता है कि कोई अन्तर्मन में कह उठता है कि कैसे आदमी हो, अपने ही वर्ग के आदमी का अपमान करते हो क्योंकि उस अत्याधिक फटे हुए जूते पर पैसा खर्च करना विवशता

है, कम से कम इतनी आशा तो उससे बंध जाती है कि कुछ दिन और कट जाँगे। यदि ऐसे में जूते कि मरम्मत करने से ही इंकार कर दिया जाए ते उसकी रही-सही आशा भी समाप्त हो जाएगी। उसी आशा की बात सोचकर मोचीराम आदमी से फिर मोची बन जाता है और अपने पेशे के निर्वाह को पहला धर्म स्वीकार कर लेता है तब उसकी आंखों के सामने आदमी के स्थान पर एक जोड़ी जूता प्रमुख हो जाता है। और एक बार फिर उन चकतियों वाले जूते में और चकतियाँ लगानी आरंभ कर देता है परन्तु इस बार वह चकतियाँ ही नहीं होती मानो मोचीराम की आंखे वहाँ लगी हैं जो उस विविशता को महसूस कर रहीं है जो स्वंय उसकी तथा समक्ष खड़े आदमी की है। अपनी भावनाओं वा संवेदनाओं पर अंकुश लगाकार मोचीराम बडी कठिनाई के साथ उन जूतों की मरम्मत कर अपने पेशेवर धर्म की रक्षा कर पाने में समर्थ हो पाता है।

विशेष:

1. आरंभ में मोचीराम के लिए कोई छोटा-बड़ा नहीं है वही मोचीराम अब इन पंक्तियों में अपनी जाति यानि एक वर्ग विशेष की ओर झुका हुआ दिखाई देता है तथा लेखक की सहानुभूति इस वर्ग विशेष के साथ प्रतीत होती है।
2. भाषा में तदभव, देशज, विदेशी सभी शब्दों का प्रयोग है। मुश्किल, निवाहता, टाँकता आदि ऐसे ही शब्द हैं।
3. भाषा मुहावरेदार है-पैसा फूंकना, जाति पर थूकना।
4. तथाकथित आदमी के माध्यम से मोचीराम तथा मोचीराम के माध्यम से कवि आत्मविश्लेषण करता है। इस आत्मविश्लेषण में एक वर्ग विशेष से परिचत प्राप्त होता है।

3. चोट जब पेशे पर पड़ती है

तो कीहं-न-कहीं एक चोर कील

दबी रह जाती है

जो मौका पाकर उभरती है

और अँगुली में गड़ती है

मगर इसका मतलब यह नहीं है

कि मुझे कोई गलतफहमी है

मुझे हर वक्त यह ख्याल रहता है कि जूते

और पेशे के बीच

कहीं-न-कहीं एक अदद आदमी है

जिस पर टाँके पड़ते हैं

जो जूते से झाँती हुई अँगुली की चोट

छाती पर

हथौड़े की तरह सहता है।

शब्दार्थ: पेश-धंधा, अर्थोपार्जन का साधन। गड़ती - चुभ जाना। गलतफहमी-भ्रम, सन्देह। ख्याल-ध्यान, सजग। सहमा-बर्दाश्त करना।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश नयी कविता के जाने-माने कवि धूमिल की सुप्रसिद्ध कविता 'मोचीराम' से उद्धृत है। मोचीराम के पास एक आदमी आता है और अपने जूते ठीक करवाता है। काफी देर तक काम करवाने के बाद भी उचित परिश्रमिक नहीं देता और कुछ सिक्के उसके सामने फेंक कर आगे बढ जाता है। इसी कारण मोचीराम का आभिजात्य भी आहत होता है और वह मोचीराम जो अपने पेशे के साथ पूर्ण न्याय करना चाहता है, वही मोचीराम स्वंय के अनचाहें ही कोई कील जूतें में पूरी नहीं ठोक पाता और वह निकली रह जाती है। इसके पीछे उपर्युक्त कारण क्या है ? इसका उत्तर देते हुए मोचीराम कहता है कि-

व्याख्या: जब कोई उचित तथा न्यायिक पारिश्रमिक नहीं देता तो ऐसे ही होता है कि कोई कील दबी ही रह जाती है जो ठीक से ठोकने से रह जाती है। वास्तव में जब पेशे के साथ न्याय नहीं मिलता तो कील जूते में नहीं मोचीराम के सीने में गड़ी रह जाती है वही दर्द अभिव्यंजित होता है। अप्रत्यक्ष रूप से वही अन्याय का प्रतिकार मोचीराम करता है और ठुकने से रह गई कील उस आदमी की अंगुलियों में कभी न कभी चुभ जाती है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि ऐसा किसी भ्रम के कारण होता है अथवा मोचीराम अपने पेशे में सचेत नहीं रहता बल्कि उसे तो हर क्षण उस एक अदद आदमी का ध्यान रहता है जो जूते और पेशे के बीच खड़ा है कि जिसका दुख-दर्द मोचीराम का दुख-दर्द बनता है जिसेक साथ मोचीराम तादाम्य स्थापित करता है, यह आदमी, जो जूतों से झांकती अंगुलियों की पीड़ा को अनुभव करता है। जो उस आदमी को आत्मसात करता है जिसकी विवशता फटा हुआ जूता है जिसे फटे हुए जूते को ठीक करवाने के अतरिक्त दूसरा मार्ग दिखाई ही नहीं देता। और मोचीराम जानता है

कि हाँ ठीक करने की गुंजाइश नहीं है वहाँ भी उसे ठीक करना ही है। यही उसके पेशे का धर्म है। मोचीराम की अपनी विवशता है तो उस एक अदद आदमी की भी मजबूरी है। दोनों ही अभावों से घिरे हैं दोनों ही अभावों को भरने के प्रयास में कार्यरत हैं। मोचीराम इस विवशता को आत्मसात करता है। फटे हुए जूते को पहनने की भी मजबूरी है वही उसके अभावों का घोतक भी है। इसी स्थिती विशेष के कारण जूते से झाँकती हुई अंगुलियाँ हथौड़े की भांति मोचीराम के दिल दिमाग पर चोट करती हैं। इसी चोट से उत्पन्न पीड़ा मोचीराम को किसी स्तर पर द्रवीभूत कर देती है और मोचीराम पुन: चकत्तियों भरे जूते में कुछ और चकतियाँ जोडने लगता है।

विशेष:

1. कवि धूमिल ने व्यवसाय की शुद्ध तार्किकता का परिचत दिया है।
2. चोर कील लाक्षणिक प्रयोग है।
3. गलतफहमी, ख्याल, पेशे आदि उर्दू के शब्दों का बहुलता से प्रयोग उपर्युक्त पंक्तियों में मिलता है।
4. मुक्त छंद युक्त इन पंक्तियों में अलंकारहीनता के दर्शन होते हैं किन्तु अर्थ-का गंभीर्य पूर्ववत् बना रहता है।

4 . सच कहता हूँ-उस समय

राँपी की मूठ को हाथ में संभालना

मुश्किल हो जाता है

आँख कहीं जाती है

हाथ कहीं जाता है

मन किसी झुँझलाए हुए बच्चे-सा

काम पर आने से बार-बार इंकार करता है

लगता है कि चमड़े की शराफ़त के पीछे

कोई जंगल है जो आदमी पर

पेड़ से वार करता है

और यह चौंकने की नहीं, सोचने की बात है

मगर जो ज़िन्दगी को किताब से नापता है

जो असलियत और अनुभव के बीच

खून के किसी कमज़ात मौके पर कायर है

वह बड़ी आसानी से कह सकता है

कि यार ! तू मोची नहीं, शायर है

शब्दार्थ: राँपी -चमड़ा छीलनै का औजार।

झुँझलाए - खीझ उठना, क्रोधित होना। शराफत-इंसानियत, सज्जनता। वार-प्रहार। चौंकने-हैरान होना। कमजात- जरूर के समय नाजुक, समय पर। शायर -उर्दू में कविता करने वाला, शायरी करने वाला व्यक्ति शायर कहलाता है।

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश नयी कविता के लब्ध प्रतिष्ठित कवि धूमिल की प्रसिद्ध लंबी कविता 'मोचीराम' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कवि ने कहा है कि जब जीवन सिद्धांतहीन एवं तर्कहीन हो जाता है और जब आदमी भीड़ में पर्यवसित हो जाता है तब भी भाषा के प्रहार या शब्दों के प्रहार से बच नहीं पाता। मोचीराम आदमी की पीड़ा का निरंतर आत्मसात किए हुए चलता है और बसंत के प्रभाव को अपने अन्दर महसूस भी करता है। वहीं बसंत जो एक समय सुखकर है वही बसंत पीड़ा भी छोड़ जाता है।

व्याख्या: बाबूजी ! सत्य कहता हूँ जब वास्तविकता एवं वस्तुस्थिति का भान होता है तब राँपी की मूठ पर हाथ की पकड़ ढीली पड़ जाती है। सारी नैतिकता, नीति-सिद्धांत, आदर्श गैरजरूरी प्रतीत होने लगते हैं। इसलिए निर्थकता का बोध गहरा हो उठता है। ऐसे समय में राँपी को हाथ में पकड़े रह पाना कठिन हो जाता है। अपने पैरों से नजर चूक जाती है। आँख लक्ष्य से हट जाती है, हाथ अपने लक्ष्य पर से हट जाता है। वास्त्व में मन जब भटक जाता है तब क्रिया रूप में आँख और हाथ भी लक्ष्य से हट जाते हैं। और अपने पेशे में न्यायिक न रह पाने से मोचीराम की व्यथा और भी बढ जाती है। मन में तनिक क्रोध पैदा होता है। मन किसी बच्चे की भाँति हठधर्मिता धारण कर लेता है जो काम करने से इंकार करने लगता है। काम के प्रति सारी निष्ठा तिरोहित हो जाती है। अपने पेश से मोचीराम विचलित हो उठता है और लगने लगता है चमड़े की शराफत में एक जंगल है।जो आदमी पर पेड़ प्रहार करता है। मोचीराम का ऐसा कहने का तात्पर्य कहीं अधिक सघन व गहरा है। चमडे को छीलती हुई राँपी पर मोचीराम के हाथ और उसका हृदय जो आदमी के दर्द को महसूस करता है, जो अपने पेशे के साथ न्यायसंगत रहने के लिए कटिबद्ध है, वही मोचीराम आदमी को भीड़ में पाता है, भीड़ में जिसके कोई जीवन मूल्य शेष नहीं रहे हैं। वह भीड़ जो एक जंगल की भांति है जिसके अपने ही नियम व कानून है। जो आदमी को इंसानियत की दृष्टि

से नहीं देखती समझती । जिस आदमी ने जंगल का निर्माण किया था और आरंभ में आह्लादित हो रहा था वही जंगल आगे चलकर उसका शत्रु भी बन जाता है। भीड़ में शामिल होकर अस्तित्व का संकट भी पैदा हो जाता है। वह बसंत जो सुख का प्रतीक बनकर आया था वह पेड़ पौधे आदमी पर प्रहार करते हैं। वही आदमी के दुख का कारण भी बन जाते हैं। परन्तु इसमें हैरान होने की जरूरत नहीं है, जरूरत है गंभीरता से विचार-मनन करने की, क्योंकि जिन लोगों ने जीवन को वास्तविकता के यथार्थ के धरातल पर आकर नहीं देखा है जो किताबों में वर्णित ज्ञान के आधार पर जीवन को जानता-समझता है जो यथार्थ से तथा यथार्थ से अर्जत अनुभव से वंचित है वह जिन्दगी को किन्ही कल्पित आदर्शो से नापता-तोलता है ऐसा व्यक्ति अवसर समक्ष उपस्थित हो जाने पर खून के सम्बन्धों की बात करने लगता है तथा बाहुबल का परिचय न देकर अहिंसा और अशांति की बात करता है ऐसा व्यक्ति कायर ही है और कायर व्यक्ति बड़ी सरलता से कह सकता है कि यार ! तू मोची नहीं हो सकता है तू शायर हो सकता है। शायर जो वास्तविकता को भी काव्यगत आग्रह के कारण यथार्थ को भी ज्यों का त्यों प्रस्तुत नहीं करता बल्कि अपने कल्पना लोक से उसे वायवीय बनाता है, रसयुक्त बनाता है। इसी भाँति मोची के मुख से निकलने वाला यथार्थ, आदमी की विवशता, आदमी के चरित्र की विचित्रता आदि कायर को अकल्पनीय प्रतीत होती है। वह उस यथास्थिति को सहज की स्वीकार नहीं कर पाता। इसीलिए वह कायर व्यक्ति मोची की जीवन के प्रति गहन दृष्टि की शायर की कल्पना से तुलना करता है।

विशेष:

1. औद्योगिकरण के काल में आदमी व समाज का जंगल में पर्यवसित हो जाना स्वातन्त्र्योत्तर युग की निजी विशेषता रही और वह किसी भी व्यवसायिक परिवेश की विशेषता है।
2. राँपी, मूठ, शराफत, वार, असलियत, कायर आदि देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है।
3. बुद्धजीवी वर्ग पर तीखा व्यंग्य किया है जो किताबी ज्ञानार्जन करने में ही समस्त जीवन लगा देते हैं।
4. मुक्त चंद युक्त उपर्युक्त पंक्तियों में लय का संयोजन सुन्दर है।
5. इसी भाव सम्य का परिचय 'मुक्तिबोध' की कविता 'अंधेरे में' मिलता है। इसी भाँति मुक्तिबोध भी आदमी पर तथा बुद्धीजीवी वर्ग की कायरता पर व्यंग्य करते हैं।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थियों ! आगे बढ़ने से पहले अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दे और अभी तक आपको जो 'धूमिल' की कविता 'मोचीराम' के व्याख्या भाग से ज्ञान प्राप्त हुआ है उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें।

1. जब मोचीराम ने राँपी से आंखे उठाई तो कवि को महसूस होता है कि वह आंखे उसके स्वंय के अन्तर्मन में कुछ खोजने का प्रयास कर रही हैं। ( )
2. मोचीराम की नजर में आदमी और जूता एक समान नहीं, एक-दूसरे का पर्याय बनकर आते हैं। ( )
3. मोचीराम एक ऐसे जूते की मरम्मत में लगा है जिसमें मरम्मत करने के लिए स्थान ही शेष नहीं है। ( )
4. अपनी भावनाओ व संवेदनाओं पर अंकुश लगाकर मोचीराम बड़ी कठिनाई के साथ उन जूतों की मरम्मत कर अपने पेशेवर धर्म की रक्षा कर पाने में समर्थ हो पाता है। ( )
5. मोचीराम इस विवशता को आत्मसात करता है। फटे हुए जूते को पहनने की भी मजबूरी है वही उसके अभावों का घोतक भी है। ( )
6. वास्तव में मन जब भटक जाता है तब क्रिया रूप में आँख और हाथ भी लक्ष्य से हट जाते हैं। ( )
7. औद्योगिकरण के काल में आदमी व समाज का जंगल में पर्यवसित हो जाना स्वातंत्र्योत्तर युग की निजी विशेषता रही है और वह किसी भी व्यवसायिक परिवेश की विशेषता नही है। ( )

4.5 नक्सलबाड़ी

1. **'सहमति.....**

   नहीं, यह समकालीन शब्द नहीं है

   इसे बालिग़ो के बीच चालू मत करो

   -जंगल से जिरह करने के बाद

   उसके साथियों ने उसे समझाया कि भूख

   का इलाज नींद के पास है।

मगर इस बात से वह सहमत नहीं था
विरोध के लिए सही शब्द टटोलते हुए
उसने पाया कि वह अपनी ज़ुबान
सहुवाइन की जांघ पर भूल आया है;
फिर भी हकलाते हुए उसने कहा-
मुझे अपनी कविताओं के लिए
दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश है,
सहसा तुम कहोगे और फिर एक दिन-पेट के इशारे पर
प्रजातन्त्र से बाहर आकर
वाजिब गुस्से के साथ अपने चेहरे से कूदोगे
और अपने ही घूँसे पर गिर पड़ोगे।
क्या मैंने ग़लत कहा ? आख़िरकार
इस ख़ाली पेट के सिवा
तुम्हारे पास वह कौन-सी सुरक्षित
जगह है, जहाँ खड़े होकर
तुम अपने दाहिने हाथ की
साज़िश के ख़िलाफ़ लड़ोगे ?

शब्दार्थ: सहमति- समान विचार। समकालीन-एक ही समय में हो रहा या मौजूद। जिरह-बहस, दलील। प्रचातंत्र-जतना का शासन। वाजिब-उचित, संगत।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'धूमिल' की रचना 'नक्सलबाड़ी' से ली गई हैं। नक्सलबाड़ी एक ऐसे पूर्वी अंचलीय क्षेत्र का नाम है जहाँ के कुछेक पढे-लिखे पर शोषित नौजवानों ने चीन के सर्वेसर्वा माओव्सेतुंग के जीवन-दर्शन एवं हिंसक कार्य पद्धति-(माओवाद) से प्रेरित होकर जनतांत्रिक, राजनैतिक, प्रशासनिक और वित्तीय व्यवस्था के खिलाफ सशस्त्र क्रांति छेड़ी थी. धीरे-धीरे यह शस्त्र-द्रोह एक राजनैतिक सिद्धांत और प्रतिरोध-पद्धति बनकर फैलता चला गया तथा देश के ग्रामीण अंचलों में विशेषकर लोकप्रिय हुआ। सरकार ने हर संभव तरीका अपनाकर इसे निर्ममता से कुचलने का भरपूर प्रयास किया है। कवि इसी अंदोलन के कारकों का विश्लेषण करते हुए इस

आंदोलन के समर्थकों के समक्ष प्रजातंत्र बनाम मुक्तितंत्र के प्रश्न को लेकर एक सवाल रखता है, वह कहता है-

व्याख्या: नक्सलबाडी आंदोलन से जुड़े नक्सलवादी क्रांतिकारियों या प्रशासन-प्रतिरोधी वर्ग में सहमति शब्द बर्र के छत्ते की तरह एक निष्कासित शब्द है। सहमति प्रजातांत्रिक संसदीय व्यवस्था या लोकतांत्रिक समझौता परस्त अवसरवादी प्रशासनिक शक्तियों एवं आधुनिक अर्थतंत्र के स्वामियों का शब्द है। यह शब्द नक्सलियों के लिए समकालीन शब्द नहीं है। यह बहुत पुराना शब्द है-पूंजीवादी लोकशक्तियों के द्वारा उछाला गया यह शब्द शोषकों एवं भ्रष्ट सत्ताधीशों/सेठों-साहूकारों-नौकरशाहों के हाथों में एक बीज मंत्र है जिसका प्रयोग करके वे दलितों/निर्बलों और सर्वहारा वर्ग के लोगों को उल्लू बनाते रहे हैं- उनका शोषण करते रहे हैं। वह कहता है यह शब्द बच्चों के बीच तो रुठने-मनाने और मिलने की क्रीड़ा के बीच भला लगता है - पर बालिगों, नौजवानों के बीच इस शब्द का प्रयोग गलत है। यह शब्द वस्तुत: अन्याय, असमानता और शोषण को स्थायित्व प्रदान करने वाला शब्द है। वह नक्ली-आंदोलन का विवेचन करने वाले उसके पक्ष-विपक्ष में अपनी राय देने वालों से कहता है कि वे सहमति शब्द का प्रयोग देश के युवा-मानस के बीच न करें। विशेष पर शोषित, दलित सताए गए युवकों के बीच इसे एक मुहावरे की तरह चालू करने से बचों। जंगल से जिरह करने के बाद उसके साथियों ने उसे यही समझाया कि भूख का एकमात्र इलाज (प्रशमन) एक गहरी नींद है। अर्थात् देश के वन्य-अंचलों में एक तीव्र सशस्त्र आक्रोश के रूप में उदित होने वाले नक्सली आंदोलन के प्ररोधाओ को एक नारगी ही उनके बहुत से उदारपंथी-नर्म मिज़ाज साथियों ने उन्हें समझाया कि वे उग्र-प्रतिरोध और सशस्त्र क्रांति का रास्ता छोड़ कर सर्व सहमति से लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत कोई और शांतिपूर्ण रास्ता अख्तियार करें। उन्होंने भूख से प्रताड़ित होकर सशस्त्र क्रांति के लिए उतारू अपने साथियों की भावना के औचित्य को तो स्वीकार किया। लेकिन उन्हें नक्सली कार्य-पद्धति की दिशा में बढ़ने से रोकते हुए कहा यही-कि भूख का इलाज नींद है। अर्थात स्वतंत्र भारत के वर्तमान प्रजातंत्र में भूख का कोई इलाज नहीं है- केवल पेट में घुटने मोड़कर विसूरते हुए भूखे सो जाना और एक दिन इस तरह सोए-सोए मर जाना ही एकमात्र रास्ता है। लेकिन अपने साथियों को नक्सली सशस्त्र क्रांति के पथ पर प्रेरित करने वाला नक्सली नेता, नक्सली बुद्धीजीवी, कलमजीवी, भाषणजीवी अपने नरम-मिजाज़ साथियों के इस तर्क से सहमत नहीं था। अपने साथियों का विरोध करने के लिए वह सही शब्द तलाशने लगा और विरोध का स्वर तलाशते-तलाशते उसने पाया कि वह साहूकार की बीबी की जांघों में उस शब्द को छोड़ आया है। भूल आया है अर्थात् देश का पूरा दलित वर्ग. पूरा

ग्रामीण अंचल, पूरा शोषित समुदाय या तो महाजन, साहूकार, बनिए का गुलाम बना हुआ है। अथवा उसकी जिंदा रहने के लिए सैक्स की प्राकृतिक आवश्यकता अनिवार्यता उसके हर प्रतिरोध को, हर विरोध को कमजोर कर देती है-नाकाम कर देती है। आजादी के बाद देश के सम्पन्न लोगों ने आम आदमी की सैक्स की भूख और उसकी पैसे की जरूरत का बड़ी चालाकी से फायदा उठाते हुए एक तरह से गुलाम और अशक्त बनाए रखा है।

आधुनिक प्रजातंत्र एवं पूंजीतंत्र के खिलाफ वह दलितवर्गीय चेतना एवं गरीबी, भूखमरी के तीव्रतम आक्रोश को व्यक्त करते हुए कहता है कि उसे अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है। अर्थात, वह नक्सल क्रांति के बाद जो भी राजनैतिक तंत्र, प्रशासन तंत्र या नई व्यवस्था देश में कायम होगी-उसके लिए प्रयत्नशील है, उसका पक्षधर है। लेकिन उसका साथी जिरह करते हुए उससे पूछता है कि इस बात की क्या गारंटी है क्रांति के बाद, रक्तिम सशस्त्र क्रांति के बाद जो दूसरी लोकतांत्रीय सामाजिक व्यवस्था कायम होगी उसमें शोषण नहीं होगा। भ्रष्टाचार पापाचार,कामाचार, अतिचार नहीं होगा। वह कहता है कि कोई भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था हो वहाँ भ्रष्टाचार और भूख सदैव होगी। अर्थात साम्यवाद का माओवाद(माओतन्त्र) तो प्रजातंत्र को ही नकारता है। पेट का ईशारा पाते ही भूख से बिलबिलाते ही नक्सली आंदोलन के ये प्ररोधा फिर दूसरे प्रजातंत्र को भी नष्ट करने के लिए, उसका विरोध करने के लिए उस व्यवस्था से बाहर आकर विपक्ष में खडे हो जाएंगे। वह उनके भूखे चहरों पर टपकते गुस्से को तो वाजिब बताता है लेकिन उसके सशस्त्र विरोध के बारे में शंका प्रस्तुत करता है। वह कहते है कि उनका सशस्त्र प्रतिरोध कहीं उनके लिए आत्मघाती सिद्ध न हो जाए। कहीं बूमरेंग न कर जाए। पूछता है कि उसने गलत क्या कहा है, आखिरकार खाली पेट के अलावा, भूल के अलावा और कौन-सा ऐसा सुरक्षित क्षेत्र इस देश के दलितों के पास है जहाँ खडे होकर वर्ग को। वाम-पंथी शक्तियों को सबसे बडा खतरा दक्षिणापंथी ताकतों से है। उन्हें यह खतरा अपनो से है-बाहर के नहीं अपने ही भीतर के प्रतिरोधियों से है जो उन्हीं के सशस्त्र (नक्सली) आंदोलन के खिलाफ किसी साजिश में शामल है।

विशेष:

1. राजनैतिक विचार-दर्शन की काव्य-चेतना यहाँ काफी प्रखर है। नक्सली आंदोलन का तथ्यपूर्ण वैचारिक पक्ष प्रस्तुत किया गया है। सैक्स का बिंब काफी सटीक बन पडा है।

2. भाषा चलित हिन्दी है। तदभव प्रधान शब्दावली है। मुहावरेदार भाषा में एक-आध देशज प्रयोग अत्यन्त सुन्दर बन पडे हैं।

2. यह एक खुला हुआ सच है कि आदमी-
दाएं हाथ की नैतिकता से
इस कदर मजबूर होता है
कि तमाम उम्र गुजर जाती है मगर गाँड़
सिर्फ, बायाँ हाथ धोता है।
और अब तो हवा भी बुझ चुकी है
और सारे इश्तार उतार लिए गए हैं
जिनमें कल आदमी-
अकाल था। वक्त के
फालतू हिस्सों में
छोड़ी गई पालतू कहानियाँ
देश-प्रेम की हिज्जे भूल चुकी हैं,
और वह सड़क-
समझौता बन गई है
जिस पर खड़े होकर
कल तुमने संसद को
बाहर आने के लिए आवाज़ दी थी
नहीं, अब वहाँ कोई नही है
मतलब की इबारत से होकर
सब से सब व्यवस्था के पक्ष में
चले गए हैं। लेखपाल की
भाषा के लम्बे सुनसान में
जहाँ पालो और बंजर की फर्क
मिट चुका है चन्द खेत
हथकड़ी पहने खड़े हैं।

शब्दार्थ: नैतिकता - मानकों का एक समूह या मूल्य प्रणाली। इश्तहार-सार्वजनिक सूचना। समझौता-परस्पर मेल-मिलाप। इबारत-लिखावट, वाक्यरचना। बंजर-अनुपजाऊ, ऊसर (जैसे-बंजर भूमि)।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तिया कवि 'धूमिल' की कविता 'नक्सलबाडी' से ली गई हैं। कवि दक्षिणपंथी ताकतों और वामपंथी शक्तियों के बीच होने वाले द्वंद्व की प्रकृति का विश्लेषण करते हुए कहता है

व्याख्या: स्वातंत्र्योत्तर लोकतांत्रिक भारत में आमआदमी दक्षिणपंथी ताकतों के शिंकजे में जकड गया है। वह राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, न्यायायिक और नैतिक स्तर पर दक्षिणपंथी ताकतों के हाथ का खिलौना बनकर रह गया है, यह एक सच्चाई है कि हम अपने ही दाएं हाथ से अपना ही गला काट लेते हैं। अपनो का ही हर स्वप्न छीन लेते हैं। जीवन के दैननिदान व्यवहार में दक्षिणपंथी ताकतों से मिलने वाले प्रलोभन एवं आश्वासन इतने प्रभावशाली होते हैं कि हम उनके मोह में पड़कर कहीं न कहीं समझौता करने की भूल कर बैठते हैं। लेकिन यह भी सच्चाई है कि ताउम्र हर मर्द-औरत आबाल-वृद्ध अपना पाखाना बाएं हाथ से ही धोते हैं। कवि माँ.....(गाली) का प्रयोग करते हुए कहता है कि हम सब चूतियां हैं। घोंचू हैं, गधे हैं हम जिन्दगी भर दम तो भरते हैं वामपंथी होने का लेकिन समझौता कर बैठते हैं-दाएं हाथ के साथ। यही हमारी सबसे बडी गलती है-हमारा दुमुँहापन है। कवि कहता है कि हक की लड़ाई के लिए जोशो-खरोश की जो आँधी आम आदमी के दिलों में उमडी थी। विरोध-प्रतिरोध और जनक्रांति की जो हवा एक बदलाव के साथ चलना शुरू हुई थी अब तो वह हवा भी रुक गई है। लोगों का वह जोश भी ठंडा पड गया है। वे सारे इश्तहार, जो दीवारों पर, पेड़ों पर, खंभों पर, गली-कूचों में चिपक गए थे वे अब जोश ठंडा पड़ जाने के कारण उतार लिए गए हैं। जिन इश्ताहारों में कल तक आम आदमी मर-मर कर, अकाल-पीडित, शोषित, उपेक्षित, निर्धन, विवश, अनपढ़ किसान और मजदूर घोषित किया गया था। जिन्हें एकजुट होकर दूषित व्यवस्था का प्रतिरोध करने के लिए साम्यवादी समाज दर्शन एवं राजनैतिक विरोध के तहत संप्रेरित किया गया था वे सारे इश्तहार दक्षिण-पंथी वृत्तियो के साथ समझौता करने के कारण उतार लिए गए है, कल तक वामपंथी शक्तियों ने आम आदमी के लिए जो संघर्ष किया था, जो मुहिम छड़ी थी, जो आंदोलन चलाए थे - जिस द्वन्द्व को रूपायित किया था, अब वे सब केवल गए गुजरे जमाने की कहानियाँ बन कर रह गए हैं। समय के साथ-साथ वे सब किस्से फालतू और व्यर्थ हो गए हैं। अब तो लोगों के पास खाली वख्त है, मरने को कुछ है नहीं बस बैठे-बैठे भूख और गुस्सा पीते रहते हैं। दक्षिणपंथी शक्तियों की साजिश के आगे मूर्ख बन चुके हैं-पराजित हो चुके हैं। अब तो लोग यह भी भूल चुके हैं कि देश-प्रेम या राष्ट्र-धर्म भी कोई चीज है। पेट की भूख, गरीबी, शोषण के आगे राष्ट्र और संस्कृति की बातें एकदम निरसार थोथी और व्यर्थ हो चुकी है। जिस सडक

से सभी वामपंथी शक्तियों के झुंड के नीचे एकत्रित होकर उन्होंने विरोध-प्रतिरोध का स्वर मुखरित किया था अब वह सड़क ही समझौता बन चुकी है। अर्थात समझौतावादी प्रवृति। साजशि के तहत वे अपने संघर्ष और प्रतिरोध की सारी ताकत घुला बैठे हैं। जिस सडक पर अर्थात जिन सिद्न्तों को लेकर देश के संघर्षशील दलित समुदाय ने सर्वदारा किसान मजदूर वर्ग ने माओवाद के झंडे तले सांसदो को बाहर सड़क पर आकर जनता का विश्वास पुन: प्राप्त करने के लिए ललकारा था। वे ही अब देश के इन दक्षिणपंथी सासंदों के साथ मिलकर अपने प्रतिरोध एवं चुनौती के स्वर को प्रभावहीन कर चुकी हैं। वे लोग जो कल तक वाममार्ग की ध्वज उठाकर दक्षिणपंथियों से जूझ रहे थे आज अपने-अपने स्वार्थों की परिपूर्ति की खातिर व्यवस्था के पक्ष में मौन हो गए हैं। लेखपाल अर्थात पटवारी, नम्बरदार या जिले के भू-पैमाईश अधिकारी ने गरीब किसानों की उपजाऊ और परती जमीनों का जो लेखाजोखा प्रस्तुत कर दिया है, जो गलत-सलत हिसाब-किताब सरकारी आंकडों में दर्ज कर दिया है-उसे चुनौती देने, उसे खिलाफ मुहँ खोलने की हिम्मत दक्षिणपंथियों के साथ समझौता कर लेने के कारण ये वामपंथी नुमाइन्दे खो चुके है। सरकारी भू-राजस्व अधिकारियों ने पाली और बंजर भूमि के भेद को भुलाकर लगान आदि निर्धारित करने में समझदारी से काम नहीं लिया है। कुछेक खेत ऐसे है जहाँ फसल खड़ी है लेकिन वे भी एक तरह से हथकडियों में बंद हैं-अर्थात वे भी या तो बंधक पड़े हैं या लगान वसूली के बकाया राशि के एवज में गिरवी रखे हुए हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि नक्सलवाड़ी आंदोलन मूलरूप से किसानों/वन्यजातियों का भूरक्षण एवं अपनी भू-सम्पति के हक की लड़ाई के लिए लड़ा गया आन्दोलन था लेकिन दक्षिणपंथी ताकतों के बहकाने-फुसलाने में आकर इस आन्दोलन के नेता अपने-अपने स्वार्थों की खातिर देश की दक्षिणपंथी ताकतों से समझौता कर बैठे जिसमें गरीब किसान मारा गया है। माओदर्शन पर आधारित क्रांति और आंदोलन को धक्का लगा है।

विशेष

1. माओवाद के उत्थान एवं उसके प्रभावहीन हो निष्क्रिय हो जाने का तथ्यपूर्ण आकलन प्रस्तुत किया गया है।
2. भाषा तद्भव-प्रधान चलित हिन्दी है। मुहावरों का सार्थक प्रयोग किया गया है।

स्व-मूल्यांकन (ग)

प्रिय विद्यार्थियों ! 'धूमिल' की कविता 'नक्सलबाड़ी' के व्याख्या भाग से आपको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसक स्व-मूल्यांकन आप निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करें। यदि आप इस मुल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते हैं साथ ही पाठ का पुनः अध्ययन करें।

1. नक्सलबाडी आंदोलन से जुड़े नक्सलवादी क्रांतिकारियों या प्रशासन-प्रतिरोधी वर्गो में सहमति शब्द बर्र के छत्ते की तरह एक.....शब्द है।
2. कवि कहता है कि कोई भी प्रतांतात्रिक व्यवस्था हो वहाँ भ्रष्टाचार और.....सदैव होगी।
3. .....शक्तियों को सबसे बडा खतरा दक्षिणपंथी ताकतों से है।
4. स्वातन्त्र्योत्तर लोकतांत्रिक भारत में.....दक्षिणपंथी ताकतों के शिकंजें में जकड़ गया है।
5. .....पर आधारित क्रांति और आंदोलन को धक्का लगा है।

4.6 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1. कटघरा 2. अन्तर्मन 3. विजय 4. विवश
5. प्रजातन्त्र 6. मुखौटे 7. सज्जनता

स्व-मूल्यांकन (ख)

1. सही 2. गलत 3. सही 4. सही 5. सही
6. सही 7. गलत

स्व-मूल्यांकन (ग)

1. निष्कासित 2. भूख 3. वाम-पंथी 4. आम आदमी 5. माओदर्शन

4.7 पठनीय पुस्तके

1. धूमिल : संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2023

पाठ्यक्रम में निर्धारित केदारनाथ सिंह की 'अकाल में दूब', 'बुद्ध से' तथा 'रोटी' कविताओं की सप्रसंग व्याख्या

रूपरेखा

5.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
5.2 प्रस्तावना
5.3 अकाल में दूब
स्व-मूल्यांकन (क)
5.4 बुद्ध से
स्व-मूल्यांकन (ख)
5.5 रोटी
स्व-मूल्यांकन (ग)
5.6 उत्तर कुंजी
5.7 पठनीय पुस्तकें

5.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

उद्देश्य: प्रिय विद्यार्थियों! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको केदारनाथ सिंह की 'अकाल में दूब', 'बुद्ध से' तथा 'रोटी' कोविताओं के भावार्थ को समझना है।

अपेक्षित परिणाम: प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन करने के उपरान्त आप केदारनाथ सिंह की 'अकाल में दूब', 'बुद्ध से' तथा 'रोटी' कोविताओं के भावार्थ से पूर्ण रूप से परिचित हो सकेंगे।

5.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों! इस पाठ में केदारनाथ सिंह की 'अकाल में दूब', 'बुद्ध से' तथा 'रोटी' कविताओं की महत्वपूर्ण पंक्तियों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

5.3 अकाल में दूब कविता

1. भयानक सूखा है
पक्षी छोड़कर चले गए हैं
पेड़ों को
बिलों को चोड़कर चले गए है चींटे
चीटियाँ
देहरी और चौखट
पता नहीं काहँ-किधर चले गए हैं
घरों को छोड़कर
भयानक सूखा है
मवेशी खड़े हैं
एक-दूसरे का मुहँ ताकते हुए
कहते हैं पिता
ऐसा अकाल कभी नहीं देखा
ऐसा अकाल कि बस्ती में
दूब तक झुलस जाए
सुना नहीं कभी
दूब मगर मरती नहीं
कहते हैं वे
और हो जाते हैं चुप
निकलता हूँ मैं
दूब की तलाश में
खोजता हूँ परती-पराठ
झाँकता हूँ कुँओं में
छान डालता हूँ गली-चौराहे
मिलती नहीं दूब

मुझे मिलते हैं मुहँ बाए घड़े
बाल्टियाँ लोटे परात
झाँकता हूँ घड़ों में
लोगों की आँखों की कटोरियों में
झाँकता हूँ मैं
मिलती नहीं
मिलती नहीं दूब
अंत में
सारी बस्ती छानकर
लौटता हूँ नराश
लाँघता हूँ कुएं के पास की
सूखी नाली
कि अचानक मुझे दिख जाती है
शीशे के बिखरे हुए टुकड़ों के बीच
एक हरी पत्ती
दूब है
हाँ-हाँ दूब है-
पहचानता हूँ मैं
लौटकर यह खबर
देता हूँ पिता को
अँधेरे में भी
दमक उठता है उनका चेहरा
'है- अभी बहुत कुछ है
अगर बची है दूब...'
बुदबुदाते हैं वे
फिर गहरे विचार में
खो जाते हैं पिता

शब्दार्थ: 1. देहरी - देहलीज, देहली 2. चौखट- द्वार पर लगा हुआ चार लकडियों का ढाँचा जिसमें किवाड के पल्ले लगे रहते हैं। 3. मवेशी-गाय, बैल आदि चौपाया। दूब-बहुतायत में उगने वाली हरे रंग की एक प्रसिद्ध घास, दूर्वा

प्रसंग: 'अकाल में दूब' कविता में कवि ने भुखमरी की अवधि में भी प्राण शक्ति तथा आशा को व्यक्त किया है। प्रस्तुत कविता में अकाल के समय में भी दूब घास सजीव रहती है, जो जिन्दगी की उम्मीद एवं सततरत का प्रतिरूप है। कविता के अन्तर्गत दूब घास को ऐसी शक्ति के रूप में दर्शाया गया है जो अकाल के वक्त भी जन्दा रहने के लिए संघर्षरत है तथा जीविका की प्रत्याशा को स्पष्ट करती हैं।

संक्षिप्त व्याख्या: प्रस्तुत कविता में अकाल के ऐसे भयकर रूप को दर्शाया गया है जहाँ चारों तरफ शुष्क तथा मौत की परछाई छाई हुई है भुखमरी के ऐसे समय में भी दूब घास सजीव रहती है। जो जीवित रहने की आशा की प्रतीक है। कविता में प्राकृतिक जगत के पराक्रम को दिशाया गया है, जो अकाल के दौरान भी जिदगी को प्राणयुक्त रखने के लिए संघर्षरत है। प्रस्तुत कविता में अकाल के समय में भी दूब घास द्वारा भरोसे तथा आशा की सूचना की गई है। कविता यह उद्घाटित करती है कि भूखमरी की अवधि में भी जीविका की उम्मीद निरंतर बनी रहती है। प्रस्तुत कविता में कवि द्वार संवेदना को भी अभिव्यक्त किया गया है, जहाँ कवि अकाल के दौरान दुखी लोगों के लिए फिक्रमंद रहता है। कवि के कहने का आशय है कि जीवन में चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न आए किन्तु उम्मीद का दामन नहीं छोडना चाहिए।

विशेष: प्रस्तुत कविता अकाल के दौरान भी जीवित रहने की उम्मीद और आशा को प्रकट करती है। कविता के अन्तर्गत दूब घास एक ऐसी शक्ति के रूप में उदघाटित होती है जो भूखमरी के अवधि में केवल सजीव ही नहीं रहती अपितु जीविका की प्रत्याशा को दर्शाती है। इसके साथ ही कविता में मानव की साहनुभूति तथा आशा के संचार को भी दिखाया गया है कि जीवन में चाहे कितनी भी मुसीबते आ जाए लेकिन आशा व उम्मीद को बांधे रखना चाहिए।

स्व-मुल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थियों ! अभी तक आपको जो केदारनाथ सिंह की कविता 'अकाल में दूब' के व्याख्या भाग का ज्ञान प्राप्त हुआ उसका स्व मूल्यांकन निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करें. यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नही होते तो इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी गई उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते है साथ ही पाठ का पुनः अध्ययन करें।

1. 'अकाल में दूब' कविता में कवि ने अकाल के समय में प्राण शक्ति तथा.....को व्यक्त किया है।
2. कविता के अन्तर्गत.....को ऐसी शक्ति के रूप में दर्शाया गया है जो अकाल के दौरान भी जिन्दा रहने के लिए संघर्षरत है।
3. कविता में प्राकृतिक जगत के.....को दिखाया गया है।
4. प्रस्तुत कविता में कवि द्वारा मानवीय.....को भी दर्शाया गया है।
5. कवि के कहने का आशय है कि जीवन मे चाहे कितनी भी मुश्किले क्यों न आए किन्तु.....का दामन नहीं छोड़ना चाहिए।

5.4 बुद्ध से

1. **भन्ते, आज सोमवार है**
इस नयी सदी के पहले सप्ताह का
पहला दिन
मैं अपने शहर के लगभग बीचोबीच खड़ा हूँ
और आपसे कुछ कहने के लिए,
शब्द तलाश रहा हूँ
मेरे चारों ओर घना कोहरा है
उतना ही घना जितना कल था
यानी पिछली सदी में
इस कोहरे को एक दिन मैने माँ की आँखों में
देखा था भन्ते
कल वह नब्बे की हो गयी
और उसका बेटा मैं पैंसठ की ओर बढ रहा हूँ
कुछ ऐसा है भन्ते कि पिछले कुछ दिनों से
उसे जब भी देखता हूँ
लगता है थेरीगाथा की वे सबसे बेचैन करने वाली पंक्तियाँ
उसी ने लिखी थी

हालाँकि थेरीगाथछा को वह बिल्कुल नहीं जानती
उसकी झुर्रियों को देखकर लगता तो यह भी है
कि एक शाम जब आप जेतबन से लौट रहे थे
तो उस छोटे से पुरवे में वह मेरी मां ही थी
जिसने आपको भेड़ का दूध और ज्वार की रोटी खिलाई थी
यह मेरा भ्रम भी हो सकता है
पर केई बार लगता है
इस भ्रम में जरा-सा इतिहास
कहीं सटा जरूर है
पर अब कुछ और-
अभी पिछले ही सप्ताह मैं सारनाथ गया था-
वही आपका प्रिय मृगदाव-
और हैरान हो गया यह देखकर
कि वहाँ के सारे हिरन मार डाले गये है
और अब वहाँ सिर्फ एक मादा घड़ियाल है
जो अपने अंडों की तलाश में
हिंडोर रही है रेती
पता तो यह चला भन्ते
कि अंगुलिमाल छुट्टा घूम रहा है शहर में
और सुजाता अपने शहर के
किसी छुतहा अस्पताल में भर्ती है
आनन्द की मुझे कोई खबर नहीं
पर एक दिन एक पुराने ढाबे में
एक पहाडी लड़के को
प्लेंट धोते देख मैं ठिठक गया था भन्ते
उसका नाम आन्द था।

और अब नाम की बात आयी

तो अपनी एक व्याधि का जिक्र करूँ

और वह यह कि मेरा नाम केदारनाथ सिंह है

और मेरे पडोसी का कोई शर्मा

और उसके मित्र का कोई गुप्त

निवेदन है भन्ते कि मैं तंग

आ चुका हूँ-

इस सिंह और शर्मा और गुप्त और प्रकट से

मैने जतन बहुत किये

पर हर बार पाया कि जितना भी धोओ

जितना भी रगड़ो

छुटता ही नहीं है वह त्वचा का दाग ?

भन्ते, क्या यह सिर्फ मेरी त्वचा का दाग है ?

दु:ख है

तो उसका निदान भी होगा ही

पर महाभिषग क्या निर्वाण के अलावा

इसका कोई इलाज नहीं।

शब्दार्थ: 1. कोहरा-कुहरा 2 थेरीगाथा-एक बौद्ध ग्रंथ है जिसका अर्थ है बुजुर्ग महिलाओं के छंद, बड़ी भिक्षुणियों के छंद। 3 जेतवन- जेता का उपवन। 4 मृग-दाव- वह वन जिसमें बहुत से मृग हों 5 व्याधि-रोग, बीमारी 6 निदान-रोग का कारण, रोगनिर्णय 7. महाभिषग - महाभियोग 8 निर्वाण -पीड़ा या दु:ख से मुक्ति पाने की स्थिति।

प्रसंग: प्रस्तुत कविता में कवि ने बुद्ध की धारणा तथा उसके जीवन की अनुभूति को दर्शाया है, कवि बुद्ध की निराशा, जीवन शैली के प्रति उसके गहन अवलोकन को भी स्पष्ट करती है, कविता बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षाओं यथा कष्ट व पीड़ा, व्यथा से मोक्ष का रास्ता, कर्मों के आधार को भी स्पष्ट करती है, कविता के अन्तर्गत बुद्ध के अवलोकन का मनुष्ट जीवन पर पड़े प्रभाव को भी अभिव्यक्त किया गया है।

संक्षिप्त व्याख्या: प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बुद्ध की उदासी को व्यक्त किया है, जो जीवन की नश्वरता तथा वेदना को देखकर व्यथित है। बुद्ध की जीवन के प्रति गहन दृष्टि है, वे सर्वथा जिन्दगी की किठनाइयों तथा पीड़ा को समझने की कोशिश करते हैं। प्रस्तुत कविता के अन्तर्गत बुद्ध के दर्शन के परिणाम को भी दर्शाया गया है। बुद्ध की सीख लोगों को जीवन के कष्टो से मुक्ति तथा शांति हासिल करने में सहायता करती है। कविता में बुद्ध के ज्ञान जिसके अन्तर्गत निराशा के आधार, दुख व पीड़ा से मुक्त के पथ, तथा कर्म के सिद्धांत को भी उदघाटित किया है। प्रस्तुत कविता में बुद्ध के जीवन दर्शन का मनुष्य जीवन पर पडे गंभीर प्रभाव को भी अभिव्यक्त किया है। बुद्ध का ज्ञान लोगों को जिन्दगी के प्रति एक उत्तम दृष्टिकोण को स्वीकारने में सहायता करता है।

विशेष: प्रस्तुत कविता में बुद्ध की जीवन की अनुभूति तथा विचारों का सुन्दर तथा प्रभावशाली चित्रण किया है साथ ही जीवन के कष्ट व निराशा के प्रति बुद्ध की गंभीर दृष्टि का भी परिचय मिलता है।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थियों ! आगे बढ़ने से पहले अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दे और अभी तक आपको जो केदारनाथ सिंह की कविता 'बुद्ध से' के व्याख्या भाग से ज्ञान प्राप्त हुआ है उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करे।

1. बुद्ध से कविता में कवि ने बुद्ध की धारणा तथा जीवन की अनुभूतियों को दर्शाया है। ( )
2. कविता में बुद्ध के दृष्टिकोण का मनुष्य जीवन पर पड़े प्रभाव को अभिव्यक्त नहीं किया है। ( )
3. प्रस्तुत कविता में कवि ने बुद्ध की उदासी को व्यक्त किया है, जो जीवन की नश्वरता तथा वेदना को देखकर व्यथित है। ( )
4. बुद्ध की जीवन के प्रति गहन दृष्टि नहीं हैं। ( )
5. बुद्ध सर्वथा जिन्दगी की पीड़ा व कठिनाई को समझने की कोशिश करते हैं। ( )
6. बुद्ध की शिक्षा लोगों को जीवन के प्रति एक बेहतर दृष्टिकोण को अपनाने में मदद करती है। ( )

5.5 रोटी

1. उसके बारे में कविता करना

हिमाक़त की बात होगी
और वह मैं नहीं करूँगा
मैं सिर्फ आपको आमंत्रित करूँगा
कि आप आएं और मेरे साथ सीधे
उस आग तक चलें
उस चूल्हे तक- जहाँ वह पक रही है
एक अदभुत ताप और गरिमा के साथ
समूची आग को गन्ध में बदलती हुई
दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक चीज
वह पक रही है
और पकना
लौटना नहीं है जड़ों की ओर
वह आगे बढ़ रही है
धीरे-धीरे
झपट्टा मारने को तैयार
वह आगे बढ रही है
उसकी गरमाहट पहुँच रही है आदमी की नींद
और विचारों तक
मुझे विश्वास है
आप उसका सामना कर रहे हैं
मैंने उसका शिकार किया है
मुझे हर बार ऐसा ही लगता है
जब मैं उसे आग से निकलते हुए देखता हूँ
मेरे हाथ खोजने लगते हैं

अपने तीर और धनुष

मेरे हाथ मुझी को खोजने लगते हैं

जब मैं उसे खाना शुरू करता हूँ

मैंने जब भी उसे तोड़ा है

मुझे हर बार वह पहले से ज्यादा स्वादिष्ट लगी है

पहले से ज्यादा गोल

और खूबसूरत

पहले से ज्यादा सूर्ख और पकी हुई

आप विश्वास करें

मैं कविता नहीं कर रहा

सिर्फ आग की ओर इशारा कर रहा हूँ

वह पक रही है

और आप देखेंगे-यह भूख के बारे में

आग का बयान है

जो दीवारों पर लिखा जा राह है

आप देखेंगे

दीवारें धीरे-धीरे

स्वाद में बदल रही हैं।

शब्दार्थ: 1. हिमाकत -मूर्खता 2. आमंत्रित-न्योता देना।

3. अदभुत-आश्चर्यजनक, विचित्र, अनोखा 4. ताप-आँच, गरमी, उष्णता

5. गरिमा -गुरूत्व, महत्त्व 6. आश्चर्यजनक -अंचभा पैदा करने वाला

प्रसंग: कवि केदारनाथ सिंह प्रस्तुत कविता में 'रोटी' के सबंधं में यह कहना चाहते है, कि रोटी को सीर्फ अन्न की आकृति में ही नहीं देखना चाहिए आपुतु उसे एक सभ्यता के रूप में समझना चाहिए। रोटी बनने की विधि तथा उसके माध्यम से मनुष्य जीवन के संघर्ष एवं संतुष्टि को दर्शाती है।

संक्षिप्त व्याख्या: प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहते है कि अगर वह रोटी के विषय में कुछ भी कहते हैं तो वह उनकी मूर्खता व बेवकूफी होगी। रोटी के संबंध में विस्तृत

ब्यौरा देने के स्थान पर वह स्पष्ट आपको उस स्थान का न्यौता देना चाहते हैं जहां वह रोटी जलती हुई आग में पक रही है। यहाँ कवि अग्नि की बात इस कारण भी करते हैं क्योंकि जब संस्कृति की प्रगति हुई तब मनुष्य ने सर्वप्रथम आग की खोज की। प्रस्तुत कविता के अन्तर्गत कवि आग और रोटी के विषय को स्पष्ट करते है।

कवि के अनुसार रोटी का वास्ता मानव की भूख एवं पेट से है तथा जब वह रोटी जलती हुई आग में बनती है तो वह अपने संग अनोखी तपिश तथा प्रतिष्ठा को लिए होती है। रोटी पकते समय सपूर्ण अग्नि को सुगन्ध में परिवर्तित कर देती है। कवि ने रोटी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहा है कि वह संसार की अधिकतम चौंकाने वाली वस्तु है।

प्रस्तुत कविता में रोटी को सिर्फ अन्न के रूप में ही नही दिखाया गया अपितु जिन्दगी के द्वंद्व, संतोष तथा अस्तित्व के समान माना गया है।

स्व-मूल्याकंन (ग)

प्रिय विद्यार्थियों ! आपने केदारनाथ सिंह की कविता 'रोटी' के भावार्थ का अध्ययन किया अब आप उसका स्व-मूल्यांकन निम्नलिखत रिक्त स्थान भरकर करें।

1. 'रोटी' कविता में केदारनाथ सिंह ने रोटी को सिर्फ.....के रूप में, नही उसे संस्कृति के रूप में समझाया है।
2. रोटी बनने की प्रक्रिया तथा उसके माध्यम से मनुष्य जीवन के..... एवं सतुष्टि को दर्शाया है।
3. रोटी कविता में कवि अग्नि की बात इसलिए भी करते है क्योंकि जब संस्कृति की प्रगति हुई तब मनुष्य ने सर्वप्रथम.....की खोज की।
4. प्रस्तुत कविता के अन्तर्गत कवि आग और.....के विषय को स्पष्ट करते हैं।
5. कवि के अनुसार रोटी का सम्बंध मानव की भूख एवं.....से है।
6. रोटी मनुष्य द्वारा.....परिश्रम से पकती है।

5.6 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1. आशा 2. दूब 3. पराक्रम 4. संवेदना 5. उम्मीद

स्व-मूल्यांकन (ख)

1. सही 2. गलत 3. सही 4. गलत 5. सही 6. सही

स्व-मूल्यांकन (ग)

1. अन्न 2. संघर्ष 3. आग 4. रोटी 5. पेट 6. कठोर

5.7 पठनीय पुस्तकें

1. केदारनाथ सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1985

पाठ्यक्रम में निर्धारित केदारनाथ सिंह की 'नमक' कविता की सप्रसंग व्याख्या

रूपरेखा

6.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
6.2 प्रस्तावना
6.3 नमक
स्व-मूल्यांकन (क)
6.4 उत्तर कुंजी
6.5 पठनीय पुस्तके

6.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

उद्देश्य: प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको केदारनाथ सिंह की 'नमक' कविता को समझाना है।

अपेक्षित परिणाम: प्रिय विद्यार्थियों प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात आप केदारनाथ सिंह की 'नमक' कविता से पूर्ण रूप से परिचित हो सकेंगे

6.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ में केदारनाथ सिंह की नमक कविता की संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

6.3 नमक

1. एक शाम शहर से गुज़रते हुए
नकम ने सोचा
मैं क्यों हूँ नमक
और जब कुछ नहीं सूझा
तो वह चुपके से घुस गया एक घर में

घर सुन्दर था
जैसा कि आम तौर पर होता है
अक्तूबर के शुरू में
एक चम्मच में गिरते हुए
नकम ने सोचा
चलो, अब सब ठीक हो जाएगा
फिर ज़रा दम लेने के बाद
वह उठा
चूल्हे के पास तक गया
और धीरे से घुल गया दाल में
सब्जी में
और ठीक समय पर
जब सज गयी मेज
और शुरू हुआ खाना
तो सबसे अधिक खुश था नकम ही
जैसे उसकी जीभ अपनी ही बोटी के
स्वाद का इन्तजार कर रही हो
कि ठीक उसी समय
पुरुष जोकि सबसे अधिक चुप था
धीरे से बोला-
"दाल फीकी है"
"फीकी है?"
स्त्री ने आश्चर्य से पूछा।
"हाँ, फीकी है-
मैं कहता हूँ दला फीकी है"
पुरुष ने लगभग चीखते हुए कहा

अब स्त्री चुप

कुत्ता हैरान

बच्चे एकटक

एक-दूसरे को ताकते हुए

फिर सबसे पहले पुरुष उठा

फिर बारी-बारी मेज़ से उठ गये सब

एक नमक को छोड़कर

दाल में पड़े-पड़े

एक छिलके के नीचे से आँख उठाकर

नकम ने देखा बच्चों की ओर

बच्चें कुत्ते की ओर देख रहे थे

कुत्ता देख रहा था

जाती हुई स्त्री की ओर

न सही दाल

कुछ-न-कुछ फीक़ा ज़रूर है

सब सोच रहे थे

लेकिन वह क्या है ?

नकम को लगा

उस समूचे घर में एक कुत्ते के अलावा

इसे कोई नहीं जानता।

शब्दार्थ: 1. सूझा - ध्यान में आना 2. फीकी-स्वादहीन हो। 3. आश्चर्य-हैरान 4. एकटक-अपलक 5. समूचा-संपूर्ण

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियां केदारनाथ सिंह की कविता 'नकम' से उदधृत की गई है। कविता के अन्तर्गत बताया गया है कि नकम हमारे आहार का एक अनिवार्य तत्व है। भले की नकम एक साधारण वस्तु है, परन्तु फिर भी वह हमारी सभ्यता, अतीत तथा मैत्रीपूर्ण संबंधों के साथ गंभीरता से जुड़ा हुआ है।

संक्षिप्त व्याख्या: प्रस्तुत कविता के अन्तर्गत नकम को भोजन के लिए तो महत्वपूर्ण बताया है परन्तु इसके साथ ही वह सामूहिक बंधन को भी दृढ़ करता है। नकम का लेन-देन मित्रता, स्नेह तथा सहायता का प्रतीक है। कविता में नमक को पुरातन काल से ही व्यवसाय अथवा युद्धों में प्रयोग किए जाने के रूप में दर्शाया है। कवि के अनुसार कविता में नकम को विविध सभ्यता के उत्सवों तथा धार्मिक कार्यों में भी सम्मिलित किया गया है, नकम का इस्तेमाल विभिन्न क्षणों पर भाग्यशाली तथा शुभ माना जाता है। कविता में नकम को जीविका, मरण, द्वंद्व तथा सौहार्दपूर्ण जैसे विविध सांकेतिक अर्थों के साथ भी जोड़ा गया है। नकम की दृढ़ता, पवित्रता अथवा विस्तृत सार्थकता इन प्रतीको का वर्णन करती है।

विशेष: प्रस्तुत कविता नकम को सामान्य वस्तु से कहीं अतिरिक्त दर्शाती है। यह कविता नकम की विशिष्टता, अतीत, सभ्यता तथा सामूहिक संबंधो के मध्य कठिन सबंध को अभिव्यक्त करती है।

स्व-मूल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थियों ! इस अध्ययन से आपको केदारनाथ सिंह की 'नकम' कविता के भावार्थ का ज्ञान प्राप्त हुआ है। अब आप उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें।

1. नकम एक सामान्य वस्तु होने के बावजूद भी हमारी सभ्यता, अतीत तथा सामाजिक संबंधों के साथ गंभीरता से जुड़ा हुआ है। ( )
2. नकम का आदान-प्रदान मित्रता, स्नेह तथा सहायता का प्रतीक नहीं है। ( )
3. कविता में नकम को पुरातन काल से ही व्यवसाय अथवा युद्धों में प्रयोग किए जाने के रूप में दर्शाया है। ( )
4. नमक को विविध उत्सवों तथा धार्मिक कार्यो में भी सम्मिलित किया गया है। ( )
5. नमक कविता में नकम को सामान्य वस्तु से कही अतिरिक्त दर्शाया गया है। ( )

6.4 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1. सही 2. गलत 3. सही 4. सही 5. सही

6.5 पाठनीय पुस्तके

1. केदारनाथ सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन नई-दिल्ली 1985

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : नयी कविता के प्रस्तोता

रूपरेखा

7.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
7.2 प्रस्तावना
7.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : नयी कविता के प्रस्तोता
7.3.1 नयी कविता की प्रमुख प्रवृतियाँ
7.3.1.1 स्व-मूल्यांकन: क
7.3.2 नयी कविता और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
7.3.2.1 स्व-मूल्यांकन: ख
7.4 निष्कर्ष
7.5 स्व-मूल्यांकन: ग
7.6 कठिन शब्द
7.8 उत्तर कुंजी
7.9 अभ्यासार्थ प्रश्न
7.10 पठनीय पुस्तकें

7.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थीयों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित करवाते हुए नयी कविता में निराला के स्थान को स्पष्ट करना है।

अपेक्षित परिणाम: इस पाठ का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात आप नयी कविता की प्रवृत्तियों को समझने के साथ-साथ इस ज्ञान से भी परिचित हो सकेंगे कि निराला नयी कविता के प्रवर्त्तक क्यों कहे जाते हैं।

7.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थीयों ! निराला का व्यक्तित्व प्रतिभा संपन्न रहा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में निराला विद्रोह, क्रान्ति और परिवर्तन के कवि माने जाते हैं। विरोध और

संघर्ष के बावजूद इन्होंने अपनी काव्यधारा को नवीन मार्ग से प्रवाहित किया। निराला के कृतित्व के अनेक पहलू हैं। एक तरफ कवि ने जूही की कली, प्रेयसी, अप्सरा, शेफालिका जैसी शुद्ध सात्विक सौन्दर्य की अवतारणा की तो दूसरी तरफ उसी कवि ने 'कुकुरमुत्ता' जैसी तीखी व्यंग्य प्रधान कविताएं भी लिखीं। एक तरफ 'बादल राग' कविता से क्रान्ति का आह्वान करते हैं तो दूसरी तरफ 'सरोज स्मृति' लिखकर संपूर्ण पाठक वर्ग को भाव विह्वल कर देते हैं।

7.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : नयी कविता के प्रस्तोता

नयी कविता

नयी कविता हिन्दी साहित्य में सन् 1951 के बाद की उन कविताओं को कहा गया जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोध की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है। नयी कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है। नयी कविता में मानव का वह रूप जो दार्शनिक है, वादों से परे है, जो एकांत में प्रकट होता है, जो प्रत्येक स्थिति में जीता है, वही प्रतिष्ठित हुआ है। इस कविता ने लघु मानव और उसके संघर्ष को बार-बार उकेरा है।

सन् 1954 में प्रयोगवाद नाम से असंतुष्टता की गई और प्रयोगवादी कविता को नई कविता का नाम दिया गया। डॉ. जगदीश गुप्त और डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादकत्व में 'नई कविता' नामक पत्रिका प्रकाशित होने लगी। इस प्रकार 'नई कविता' नाम प्रचलित हो गया। प्रयोगवादी कविता और नई कविता दो विभिन्न धाराएं न होकर एक काव्य धारा के दो पड़ाव हैं। नई कविता शुद्ध साहित्यिक आन्दोलन है। यह किसी वाद विशेष से प्रभावित नहीं है।

7.3.1 नयी कविता की प्रमुख प्रवृतियां

1. वादमुक्त

नयी कविता वाद-मुक्ति की कविता है। इससे पहले के कवि भी प्रायः किसी न किसी वाद का सहारा अवश्य लेते थे और यदि कवि वाद की परवाह न करें, किन्तु आलोचक तो उसकी रचना में काव्य से पहले वाद खोजता था, बाद से काव्य की परख होती थी। किन्तु नया कवि किसी भी सिद्धांत, मतवाद, संप्रदाय या दृष्टि के आग्रह् की कट्टरता में फँसने को

तैयार नहीं। संक्षेप में नई कविता कोई वाद नहीं है, जो अपने कथ्य और दृष्टि में सीमित हो। कथ्य की व्यापकता और सृष्टि की उन्मुक्तता नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है।

2. लघु मानव की प्रतिष्ठा

मनुष्यों में व्यक्तिगत भिन्नता होती है, उसमें अच्छाइयाँ भी हैं और बुराइयाँ भी। नयी कविता के कवि को मनुष्य इन सभी रूपों में स्वीकार है। उसका उद्देश्य मनुष्य की समग्रता का चित्रण है। नयी कविता जीवन के प्रति आस्था रखती है। आज की क्षणवादी और लघुमानववादी दृष्टि जीवन-मूल्यों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टि है।

3. घोर वैयक्तिकता

नयी कविता का प्रमुख विषय निजी मान्यताओं, विचारधाराओं एवं अनुभूतियों का चित्रण करना है। यह कविता अहम के भाव से जकड़ी हुई है। वह आत्म-विज्ञापन का घोर समर्थक है। उदाहरण के लिए कुछ पंक्तियां-

"साधारण नगर के

एक साधारण घर में

मेरा जन्म हुआ

बचपन बीता अति साधारण

साधारण खान-पान...

तब मैं एक एकांकी मन

मुझे परीक्षा में विलक्षण श्रेय मिला।"

4. निराशा का भाव

नयी कविता में मनुष्य की असहायता, विवशता, अकेलापन, मानवीय-मूल्यों का विघटन, सामाजिक विषमताओं तथा युद्ध के भयंकर परिणामों का चित्रण किया गया है। इसमें कवि के निराश मन का स्वर उभरा है। कवि अपने चारों तरफ प्रश्न ही प्रश्न अनुभव करता है, किन्तु उनका उत्तर उसके पास नहीं है-

"प्रश्न तो बिखरे यहां हर ओर हैं,

किन्तु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं।"

5. नयी कविता में आस्था और विश्वास

इस कविता में निराशा, अनास्था और अविश्वास के साथ-साथ आशा और विश्वास के स्वर भी सुनाई पड़ते हैं। वस्तुतः आरम्भ में इन कवियों में घोर निराशा दिखाई देती है। लेकिन बाद में यही कवि आशा और विश्वास से परिपूर्ण कविताएं लिखते हैं। आशा का स्वर आगे चलकर स्वस्थता का प्रतीक बन गया। कवि अज्ञेय एक स्थल पर विश्वास करते हुए कहते भी हैं-

"आस्था न काँपे,

मानव फिर मिट्टी का भी देवता हो जाता है।"

6. नयी कविता में नास्तिकता

बौद्धिक एवं वैज्ञानिक युग से संबंधित होने के कारण इस कविता में भावनात्मक दृष्टिकोण से विरोध दिखाई पड़ता है। नए कवि का ईश्वर, भाग्य, मंदिर और अन्य देवी-देवताओं में विश्वास कम है। वह स्वर्ग-नरक का अस्तित्व नहीं मानता।

7. नयी कविता में व्यंग्य

इन कविताओं में कवियों ने आज के युग में व्याप्त विषमताओं का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। व्यंग्यात्मक शैली में जीवन और सभ्यता के चित्रण में कवि को अद्भुत सफलता भी मिली है। श्रीकांत वर्मा ने 'नगरहीन मन' शीर्षक कविता में आज के नागरिक जीवन की स्वार्थपरता, छलकपटपूर्ण जिन्दगी को स्वर दिया है। अज्ञेय की कविता 'सांप' में भी नागरिक सभ्यता पर तीक्ष्ण कटाक्ष है-

"सांप! तुम सभ्य तो हुए नहीं,

नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूछूं ? उत्तर दोगे ?

फिर कैसे सीखा डसना

विष कहां से पाया।"

8. भोगवाद और क्षणवाद

नयी कविता में क्षणवादी विचारधारा ने ही भोगवाद को जन्म दिया। इस कविता में भोगवाद और वासना का मुख्य स्वर है। नया कवि आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अभाव के कारण ''खायो, पियो और मौज उड़ाओ'' सिद्धान्त का पक्षपाती बन गया। इस सिद्धान्त के बहाव में उसने लोक-मर्यादा का उल्लंघन भी किया। वह आत्मिक सौन्दर्य की उपेक्षा कर शारीरिक सौन्दर्य का वरदान मांगता है। इस प्रकार नई कविता कहीं-कहीं समाज में अश्लीलता, अनैतिकता और अराजकता का वातावरण उत्पन्न करती है।

9. भाषा

नए कवियों ने खड़ी बोली के आधुनिक रूप को अनेक रूपों में प्रयुक्त किया है तथा अनेक नई विशेषताओं एवं क्रिया पदों का भी निर्माण किया है। इन्होंने भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि के लिए नवीन प्रतीक योजना, बिम्ब विधान एवं उपमान योजना को भी अपनाया है। प्राकृतिक बिम्ब का एक नवीन उदाहरण दर्शनीय है-

"बूंद टपकी एक नभ से
किसी ने झुक कर झरोखे से
कि जैसे हंस दिया हो!"

10. छंद

नए कवियों ने छंद के बन्धन को स्वीकार न करके मुक्त परम्परा में ही विश्वास रखा है। कहीं लोकगीतों के आधार पर अपने गीतों की रचना की है, कहीं अपने क्षेत्र में नए प्रयोग भी किए हैं। कुछ ऐसी भी कविताएं लिखी हैं जिनमें न लय है न ही गति है, बल्कि पद्य की सी शुष्कता और नीरसता है। कुछ नए कवियों ने रुबाइयों, गज़लों और सॉनेट पद्धति का भी उपयोग किया है।

11. उपमान, प्रतीक एवं बिंब विधान

इन कवियों ने सर्वथा नवीन उपमानों, प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग किया है। अज्ञेय तो पुराने उपमानों से तंग आ गए थे। अतः वे नवीन उपमानों के प्रयोग पर बल देते हैं। नया कवि वैज्ञानिक उपमानों के प्रयोग को महत्त्व देता है। जैसे-

"प्यार का बल्ब फ्यूज हो गया"

"प्यार का नाम लेते ही

बिजली के स्टोव सी

वो एकदम सुर्ख हो जाती है।"

इन कवियों ने प्राकृतिक, वैज्ञानिक, पौराणिक तथा यौन प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया है। कलात्मक प्रतीक का उदाहरण-

"ऊनी रोएंदार लाल-पीले फूलों से

सिर से पांव तक ढका हुआ

मेरी पत्नी की गोद में

छोटा-सा एक गुलदस्ता है।"

नयी कविता के बिम्ब का धरातल भी व्यापक है। इन कवियों ने जीवन, समाज और उससे संबंधित समस्याओं के लिए सार्थक और सटीक बिम्बों की योजना की है। ये बिम्ब कवि कभी मानव जीवन से चुनता है तो कभी प्रकृति से।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नई कविता का प्रत्येक कवि अपनी निजी विशिष्टता रखता है। नए कवियों के लिए प्रधान है सम्प्रेषण, न कि सम्प्रेषण का माध्यम। इस प्रकार हम देखते हैं कि नयी कविता कथ्य और शिल्प-दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। नयी कविता आज के मनुष्य के व्यस्त जीवन का दर्पण और आस-पास की सच्चाई की तस्वीर बनकर उभरी है। नयी कविता के दो तत्त्व प्रमुख हैं-अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि।

7.3.1.1 स्व-मूल्यांकन: क

प्रिय विद्यार्थीयों ! आगे बढनें से पहले अपने अध्ययन को थोडा विश्राम दें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर अब तक प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें।

1. सन् 1951 के बाद की कविता को नयी कविता कहा गया । ( )
2. नयी कविता ने लघु मानव और उसके संघर्ष को बार-बार उकेरा है। ( )
3. नयी कविता वाद का सहारा लेती है। ( )
4. नयी कविता मनुष्य की समग्रता का चित्रण नहीं करती। ( )
5. नयी कविता में मात्रा निराश मन का स्वर उभरा है। ( )

6. नयी कविता में भावनात्मक दृष्टिकोण से विरोध दिखाई पड़ता है। ( )

7. नगरहीन मन कविता के रचनाकार श्रीकांत वर्मा हैं। ( )

8. नए कवियों ने छंद के बन्धन को स्वीकार किया है। ( )

9. अज्ञेय ने पुराने उपमानों का प्रयोग किया है। ( )

10. नए कवियों के लिए प्रधान है सम्प्रेषण । ( )

7.3.2 नई कविता और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

हिन्दी साहित्य में छायावाद के आधारस्तम्भों में से एक प्रयोगवादी और प्रगतिशील चेतना के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हैं। वे एक कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार और कहानीकार थे। उन्होंने हिन्दी काव्य जगत में नई कविता का सूत्रपात किया। परम्परागत काव्य दृष्टि से इतर उन्होंने छंद मुक्त रचनाएं लिखीं। भाषा-शैली में अनेकानेक प्रयोग किए। निराला ने निजी जीवन की विपत्तियों को झेलते हुए स्वयं को साहित्य की साधना में पूरी तरह समर्पित कर दिया और यही कारण है कि वे महाप्राण कहलाए।

नयी कविता का कोई एकांगी चरित्र नहीं है जैसा कि एक समय उसे कुंठा-हताशा-संत्रास-मोहभंग-अकेलेपन आदि से घेरकर मान लिया गया था। साथ ही इस काव्यधारा के केन्द्र में स्थित आलोक-पुरुष (एक समय) निराला माने गए। नई कविता की अधिकांश प्रवृत्तियां निराला के काव्य में मिलती हैं। निराला नई कविता के प्रेरणा स्त्रोत माने जाते हैं।

निराला के काव्य की विशेषताएं

1. व्यक्तिगत सुख-दुख की अभिव्यक्ति

निराला छायावादी कवियों में ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में अपने व्यक्तिगत सुख-दुख की अनुभूतियों को व्यक्त किया है। उनका पूर्ण जीवन दुख, करुणा एवं निराशा के साथ-साथ संघर्ष एवं विषमताओं के साथ बीता। इन्हीं की अभिव्यक्ति उन्होंने अपने काव्य में की है। 'जुही की कली', 'मैं अकेला', 'राम की शक्ति पूजा', 'स्नेह निर्झर बह गया', 'सरोज स्मृति' आदि असंख्य उनकी ऐसी रचनाएं हैं जिनमें व्यक्तिगत सुख-दुखों को सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ पिरोया गया है। उदाहरण-

"स्नेह निर्झर बह गया है

रेत ज्यों तन रह गया है

आम की यह डाल जो सुखी दिखी

कह रही है, "अब यहां पिक या शिखी"

नहीं आते पंक्ति मैं वह हूँ लिखी

नहीं जिसका अर्थ

जीवन ढह गया है।"

2. आत्म गौरव एवं आत्माभिमान

निराला का संपूर्ण काव्य आत्म गौरव एवं आत्म अभिमान का काव्य है। अपने उग्र स्वभाव एवं आत्माभिमान के कारण वह धीरे-धीरे अपने समकालीनों से कटते गए। निर्भय होकर सच्ची बात कहने के कारण उन्होंने साहित्य जगत में अनेक शत्रु बना लिए। इस कारण कई बार उनकी उपेक्षा भी हुई, जिसके कारण उनका आहत अभिमान और अधिक बढ़ गया। वे लिखते हैं-

"दिए हैं मैंने जगत को फूल फल

किया है अपनी प्रभा से चकित चल"

3. प्रगतिशील विचारधारा

निराला केवल छायावादी कवि ही नहीं थे अपितु वे प्रगतिवादी कवि भी थे। उनका काव्य दलित, उपेक्षित और कमजोर वर्ग के प्रति विशेष सहानुभूति रखता है। निराला के हृदय का करुण भाव समाज के उपेक्षित, कमजोर, पीड़ित एवं शोषित वर्गों की रक्षा को अर्पित है। 'विधवा' की पीड़ा उन्हें द्रवित करती है तो भिखारी की दीनता एवं भूख उन्हें करुणा से भर देती है। कड़कड़ाती धूप में इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती मजदूर स्त्री का करुण चित्रण पाठक के मन को अनायास ही छू लेता है।

"वह तोड़ती पत्थर

देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर

देख कर कोई नहीं

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं।"

4. व्यंग्य चित्रण

निराला ने समाज में फैली विकृतियों एवं विद्रूपताओं का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। 'कुकुरमुत्ता' कविता में उनके तीक्ष्ण व्यंग्य को देखा जा सकता है। 'कुकुरमुत्ता'

निम्न एवं कमजोर वर्ग का प्रतिनिधि है और वह पूंजीवादी गुलाब को चुनौती देता हुआ कहता है-

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई तूने खुशबू रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।"

5. मुक्त छंद का प्रयोग

निराला ने छंदों का बन्धन कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपनी ओजमयी वाणी से सिद्ध कर दिया कि काव्य के लिए छंद का बंधन व्यर्थ है। उनकी मुक्त छंद की रचनाओं में एक अपनी लय है, अपना सौन्दर्य है। इन्होंने छंद संबंधी प्राचीन मान्यताओं में आमूलचूल परिवर्तन करके मुक्त छंद की पद्धित का सूत्रपात किया। हिन्दी साहित्य को उनकी यह मौलिक देन है। मुक्त छन्द की महत्ता के संबंध में निराला ने लिखा है-"मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग होना।"

परिमल की भूमिका में निराला ने मुक्त छन्द के विषय में बहुत कुछ लिखा है। उनका कहना है कि मुक्त छन्द का समर्थक उसका प्रवाह ही है। इस कथन के समर्थन में निराला ने 'जुही की कली' की आरम्भिक पंक्तियां उद्धृत की हैं और विवेचना प्रस्तुत की है-

"विजय वन बल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह स्वप्न मग्न अमर कोमल तनु-तरुणी
जुही की कली
युग बन्द किए-शिथिल पत्रांक में।"

निराला का सर्वाधिक विरोध उनके मुक्त काव्य-प्रवर्त्तन को लेकर हुआ और सर्वाधिक प्रसिद्धि भी उसी की वजह से मिली।

6. निराला के काव्य में प्रयोगशीलता

नव या नूतन के प्रति अभूतपूर्व ललक निराला के काव्य में जगह-जगह मिलती है। वे अन्य भाषाओं से शब्द लेकर अपनी कविता में नये प्रयोग करते थे, इसी तरह के प्रयोग, लय, छंद, अलंकार आदि के भी करते थे और अपनी कविता में नयापन लाने की कोशिश करते थे। 'वीणावादिनी वर दें' का वाचक सरस्वती से यही वरदान मांगता है-

"नव गति, नव लय, ताल छंद नव

नवल कंठ, नव जलद-मंद्र श्व

नव नभ के नव विहग वृंद को

नव पर नव स्वर दे।"

'नव स्वर' की इस चाह के कारण ही निराला के काव्य में प्रयोगशीलता की विविध धाराएं देखने को मिलती हैं।

7. सामान्य की प्रतिष्ठा

सामान्य की प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए निराला 'कुकुरमुत्ता' में आ कर सारी काव्य-प्रणाली, शिल्प संगठन और भाषित संरचना की नये सिरे से छानबीन करते हैं। यह छानबीन और खोज, और नया संघटन लगभग पुराने के संपूर्ण अस्वीकार या उसके परित्याग से उपजा है। इस कविता का अन्तिम उद्देश्य है अभिजात पर व्यंग्य और साधारण की सार्थकता। इस कविता में कुकुरमुत्ता गुलाब पर व्यंग्य करता है-

"अबे सुन बे गुलाब, भूल मत जो पाई खुशबु-रंगों-आब,

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट, डाल पर इतरा रहा है कैपीटलिस्ट।"

यहां पर गुलाब पूंजीपतियों का प्रतीक है और कुकुरमुत्ता सर्वहारा अर्थात् गरीब और शोषित वर्ग का प्रतीक है। इन प्रतीकों के माध्यम से निराला ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक वैषम्य का चित्र प्रस्तुत किया है।

7.3.2.1 स्व-मूल्यांकन : ख

प्रिय विद्यार्थियों ! आपने निराला के काव्य की विशेषताओं का अध्ययन किया है। अब आप निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर अपने प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करें। यह स्व-मूल्यांकन आपके अध्ययन को सार्थक करेगा।

1. .....होकर सच्ची बात कहने के कारण निराला ने साहित्य जगत में अनेक शत्रु बना लिये।

2. निराला केवल छायावादी कवि ही नहीं थे अपितु वे.....कवि भी थे।

3. निराला को भिखारी की दीनता एवं भूख.....से भर देती है।

4. कुकुरमुत्ता कविता में.....को देखा जा सकता है।

5. निराल ने.....से सिद्ध कर दिया कि काव्य के लिए छंद का बंधन व्यर्थ है।

6. निराला अन्य भाषाओं से शब्द लेकर अपनी कविता में.....प्रयोग करते थे।

7. कुकुरमुत्ता कविता में..... के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक वैषम्य का चित्र प्रस्तुत हुआ है।

8. निराला का संपूर्ण काव्य आत्म गौरव एवं.....का काव्य है।

7.4 निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निराला के काव्य के शब्द बन्ध के नये प्रयोग इनकी गद्यात्मकता और सपाट अकाव्यात्मकता में से रिसने वाला नये ढंग का कवित्व, भाषा का छिदरा-खुला संघटन, अन्दर तक चीरता हुआ व्यंग्य, उन्मुक्त हास्य और कठोरता के कवच में छिपी अगाध, अप्रत्यक्ष करुणा तथा उपेक्षित के उन्नयन के प्रति गहरी आस्था निराला की रचना सक्षमता और काव्य दृष्टि के इस नये आयाम को अपने सफलतम रूप में हमारे सामने उद्घाटित करती हैं। नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां जैसे वैयक्तिकता, व्यक्तिगत सुख-दुख का वर्णन, निराशा का भाव, व्यंग्य, मुक्त छंद, नवीन उपमान, प्रतीक एवं बिम्ब विधान, लघु मानव की प्रतिष्ठा, पीड़ित, शोषित, अपेक्षित के प्रति सहानुभूति आदि सब निराला के काव्य में स्पष्टता देखने को मिलती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि निराला नयी कविता के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। समस्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि निराला नई कविता के प्रस्तोता अर्थात् प्रवर्तक कवि हैं। हिन्दी साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है।

7.5 स्व-मूल्यांकन: (ग)

प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ के अधययन से आपको नयी कविता तथा निराल के साहित्य की प्रमुख विशेषताओ का ज्ञान प्राप्त हुआ है। इस पाठ से प्राप्त ज्ञान का स्व मूल्यांकन आप निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा करें।

1. डॉ. जगदीश गुप्त और डाक्टर रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादकत्व में कौन-सी पत्रिका प्रकाशित हुई।

(क) चाँद (ख) नई कविता

(ग) माधुरी (घ) सरस्वती

2. इनमें से कौन-सा कथन असत्य है।

(क) नए कवि का ईश्वर, भाग्य को कम मानते थे।

(ख) मंदिर और अन्य देवी-देवताओं पर नए कवियों का विश्वास कम था।

(ग) नयी कविता में भावनात्मक दृष्टिकोण पर बल दिया गया है।

(घ) नए कवि स्वर्ग-नरक का अस्तित्व नहीं मानते थें ।

3. सांप कविता के लेखक कौन हैं ?

1. श्रीकांत वर्मा 2. निराला

3. मुक्तिबोध 4. अज्ञेय

4 नए कवियों ने किस भाषा के आधुनिक रूप को अनेक रूपों में प्रयुक्त किया है।

1. ब्रज 2. अवधी

3. खड़ी बोली 4. अवहठ

5 निराला की कौन-सी रचना उनकी बेटी से सम्बंधित है।

1. जुही की कली 2. सरोज स्मृति

3. मैं अकेला 4. स्नेह निर्झर बह गए

6 कुकुरमुत्ता किस वर्ग का प्रतिनिधि है।

1. निम्न वर्ग 2. उच्च वर्ग

3. मध्य वर्ग 4. लेखक वर्ग

7 किस रचना की भूमिका में निराला ने मुक्त छंद का उल्लेख किया है।

1. जुही की कली 2. परिमल

3. राम की शक्ति पूजा 4. मैं अकेला

8. निराला ने अपनी कविता में क्या लाने का प्रयास किया है।

1. पुरातन परम्परा 2. नयापन

3. सौन्दर्य 4. यश

9. निम्न में से कौन-सा कथन कुकुरमुत्ता कविता के विषय में असत्य है।

1. कुकुरमुत्ता गुलाब पर व्यंग करता है।

2. कविता का उद्देश्य अभिजात पर व्यंग्य और साधारण की सार्थकता है।

3. यह कविता उच्च वर्ग पर व्यंग्य करती है.

4. गुलाब निम्न वर्ग का प्रतीक है।

7.6 कठिन शब्द

1. शेफालिका - नील सिंधुआर का पौधा, निर्गुंडी, निलिका।
2. उन्मुक्त -बंधन रहित, आजाद।
3. वैयक्तिकता - पृथक अस्तित्व, व्यक्ति की अपनी विशेषता।
4. विलक्षण - अलौकिक, असाधारण
5. संत्रास-अत्यधिक भय, भयमिश्रित वेदना का भाव
6. विद्रूपता-विचित्रता, कुरूपता।

7.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1 नयी कविता में निराला का स्थान निर्धारित कीजिए ?

प्र. 2 निराला के काव्य में 'मुक्त छन्द' पर प्रकाश डालिए।

7.8 उत्तर कुंजी

7.3.1.1. 1. सही 2. सही 3. गलत 4. गलत 5. गलत

6. सही 7. सही 8. गलत 9. गलत 10. सही

7.1.1.1 1. निर्भय 2. प्रगतिवादी 3. करूणा 4. तीक्षण व्यंग्य

5. ओजमयी वाणी 6. नये 7. प्रतीकों 8. आत्म अभिमान

7.5.1. 1. नई कविता 2. कविता में भावनात्मक दृष्टिकोण पर बल दिया गया 3. अज्ञेय 4. खड़ी बोली 5. सरोज स्मृति 6. निम्न वर्ग 7. परिमल 8. नयापन 9. गुलाब निम्न वर्ग का प्रतीक है।

7.9 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2020
2. निराला, इन्द्रनाथ मदान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008
3. आत्महन्ता आस्था निराला, डॉ. दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2014
4. कविता के नए प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1982

निराला का काव्य सौन्दर्य

रूपरेखा

8.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
8.2 प्रस्तावना
8.3 निराला का काव्य सौन्दर्य
8.4 निष्कर्ष
8.5 स्व-मूल्यांकन
8.6 कठिन शब्द
8.7 अभ्यासार्थ प्रश्न
8.8 उत्तर कुंजी
8.9 पठनीय पुस्तकें

8.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ का उद्देश्य आपको निराला के काव्य की कलागत विशेषता से अवगत करवाना है।

इस पाठ का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात आपको यह ज्ञात होगा कि निराला छायावाद के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। निराला एक ऐसे केन्द्रबिन्दु का नाम है जिसमें भारतीय संस्कृति वृत्त के नूतन और पुरातन सभी रूप, सभी रंग, स्वर और सारे आकार तिरीभूत होते रहे हैं। उनका जीवन स्वयं अपने आप में एक साहित्य है, जिसमें संघर्षों और वेदनाओं के ऐसे अनगिनत मार्मिक चित्रों की शृंखला सजी हुई है जिन्हें देखकर हम विचार करने लगते हैं कि निराला का जीवन पहले पढ़े या उनका साहित्य।

8.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थीयों ! पिछले पाठ में आपने नयी कविता तथा निराला के स्थान का अध्ययन किया है इस पाठ में आप निराला के काव्य की कलागत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

8.3 निराला का काव्य सौन्दर्य

निराला हिन्दी-साहित्य के एक ऐसे युगान्तकारी कवि हैं, जिनकी रचनाओं में तत्कालीन मानव की पीड़ा, परतन्त्रता एवं परवशता के प्रति उत्पन्न तीव्र आक्रोश की ध्वनि सुनाई पड़ती है। अन्याय एवं असमानता के प्रति विद्रोह की घोषणा है तथा विषमताओं एवं विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने की तीव्र गर्जना सुनाई पड़ती है। ऐसा क्रान्तिकारी कवि एक ओर अपनी ओजस्वी कविता द्वारा ज्वालामुखी का विस्फोट भी करता है, तो दूसरी ओर नारी के दिव्य सौन्दर्य की अलौकिक झांकी प्रस्तुत करता हुआ प्रेम के मर्मस्पर्शी गीत भी गाता है।

निराला छायावादी कवियों में सबसे अधिक विद्रोही, सर्वाधिक उदात्त, जन-जीवन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील तथा जागरुक कवि रहे हैं। उनके काव्य में हृदयवाद, बुद्धिवाद, दार्शनिकता और कवित्व का पुट एक साथ ही विद्यमान है। निराला का विद्रोही स्वर समाज, साहित्य, धर्म और नैतिकता सभी स्तरों पर मुखरित हुआ है। वह हिन्दी के सर्वाधिक प्रगतिशील और निराले कवि हैं। उनके व्यक्तित्व में जहाँ एक और विरोधों का समन्वय है, वहीं दूसरी ओर उनके काव्य में ठीक इसका विरोधाभास है।

निराला के काव्य सौन्दर्य को उनके काव्य की निम्नलिखित विशेषताओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

1. शोषितों के प्रति सहानुभूति

निराला वर्ण तथा वर्ग व्यवस्था को शोषण का तंत्र मानते हैं और वे दलित-उपेक्षित-शोषित वर्ग में रहकर उनकी लड़ाई लड़ना अपना कर्तव्य समझते हैं। वे निस्संकोच निर्भय होकर दो टूक शब्दों में उनकी शोषण-गाथा कहते हैं और मुक्त कंठ से शोषितों के मुख से विरोध के शब्द कहलवाते हैं-

"भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है केपीटलिस्ट"

यही स्वर विधवा, भिक्षुक, दीन, वह तोड़ती पत्थर, मित्र के प्रति, यह है बाजार, मेरे घर के पश्चिम, बापू तुम यदि मुर्गी खाते, 'सड़क के किनारे' आदि कविताओं में मिलता है जनसाधारण के दर्द को देखकर हम आंसू बहा सकते हैं लेकिन उनकी दीन-हीन स्थिति का यथावत चित्रण कविता की भाषा में करना निराला की कलम का कमाल है।

2. आत्माभिव्यक्ति

निराला का काव्य ही उनका जीवन दर्शन है। वह मूलतः कवि थे। जीवन भर कवि-कर्म करते रहे। निराला का संपूर्ण व्यक्तित्व उनकी कविताओं में समाहित है। उनका काव्य पारदर्शी है। उनका जीवन-संघर्ष वस्तुतः उनका रचना-संघर्ष है।

"दुख ही जीवन की कथा रही

क्या कहूँ आज जो नहीं कही।"

जीवन का सुख-दुख, विक्षुब्धि, डूबते-उतरते नैराश्य, अपमान, शारीरिक तथा मानसिक सन्ताप, आशाएँ और विश्वास सब उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देता है।

निराला को अपने जीवन-काल में बहुत विरोधों का सामना करना पड़ा। साहित्य के प्रति ईमानदारी के एवज में उन्हें आरम्भ में समुचित मान-सम्मान भी नहीं मिला। केवल अभाव और अर्थ-संकट का सामना किया। वे यह सब बताने से भी नहीं चूकते-

"जाना तो अर्थागमोपाय

पर रहा सदा संकुचित-काय

लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर

हारता रहा मैं स्वार्थ समर।"

अतः वह अपनी अत्मानुभूति को सबकी अनुभूति बनाकर साहित्य में प्रस्तुत करते हैं। यही उनका रचनात्मक सौन्दर्य है।

3. राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम की भावना

निराला का कृतित्व ही राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत नहीं है, अपितु उनका व्यक्तित्व भी राष्ट्रीयता के ताने-बाने से गुँथा हुआ है। स्वामी विवेकानन्द से आध्यात्मिकता, रामकृष्ण मिशन से अद्वैतवादी भावना तथा गाँधी और तिलक के विद्रोह की खाद पाकर निराला की राष्ट्रीयता अंकुरित और पल्लवित हुई है। तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन की विषमता, अतीत के उज्ज्वल वैभव की गरिमा और भविष्य की मनोहारिणी कल्पना ने उनकी राष्ट्रीय चेतना को गतिशील बनाया है।

राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम का स्वर निराला के काव्य में प्रारम्भ से ही मुखरित रहा है। 'जागो फिर एक बार' कविता में देश प्रेम की भावना ने पर्याप्त विकास पाया है। कवि सम-सामयिक राजनीतिक चेतना को कला एवं दर्शन के माध्यम से व्यक्त करता है। राष्ट्रीय जागरण की कोख में पलने पनपने वाला स्वच्छदतावादी छायावादी कवि

रहस्यात्मकता और राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को साथ-साथ लेकर चला है। सच तो यह है कि राष्ट्रीय जागरण में छायावाद के व्यक्तिवाद को असामाजिक पदों पर भटकने से बचा लिया। निराला अपने युग से निश्चित रूप से प्रभावित हुए हैं-

"जागो फिर एक बार!

सिंहनी की गोद से

छीनता रे शिशु कौन ?

मौन भी क्या रहती वह

रहते प्राण ? रे अज्ञान"

देश का सांस्कृतिक पतन, उसकी राजनीतिक जीर्णावस्था कवि को विह्वल कर देती है और इस तिमिर से पार होने की उसकी महत्वाकांक्षा देश को उत्थान का संदेश देती है।

'महाराज शिवाजी का पत्र' में कवि आपसी फूट का वर्णन कर एकता की भावना जागृत करता है-

"जितनी विरोधी शक्तियों से हम लड़ रहे हैं आपस में सच मानो खर्च है यह, शक्तियों का व्यर्थ ही।"

देश प्रेम की धारा निराला के काव्य में आदि से अन्त तक इसी प्रकार अबाध गति से बहती रही। 'जागो फिर एक बार' तो अपने आप में सर्वोत्कृष्ट और सर्वाधिक सबल रचना है और दूसरी कविता 'महाराज शिवाजी का पत्र में भी उत्थान एवं जागरण के स्वर प्राप्त होते हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि मानवतावाद की विस्तृत विशाल भाव-भूमि पर कवि की राष्ट्रीयता खड़ी है, जो अपने राष्ट्र एवं राष्ट्र के लोगों के लिए सोचती है। उनकी राष्ट्रीयता धार्मिक, साम्प्रदायिक अथवा जातीय संकीर्णता से कोई संबंध नहीं रखती।

4. प्रकृति चित्रण

निराला की सौन्दर्य भावना का एक पक्ष उनके प्रकृति चित्रण से जुड़ा हुआ है। प्रकृति का रूप-सौन्दर्य उनके काव्य सौन्दर्य का सर्वाधिक सशक्त विभाव है-आलंबन के रूप में भी और उद्यीपन के रूप में भी। इसके प्रचुर उदाहरण उनकी कविताओं में विद्यमान हैं। अपने जीवन-दर्शन और विश्व दृष्टि की अभिव्यक्ति में भी निराला ने प्रकृति-सौन्दर्य के चित्रण को माध्यम बनाया है। जैसे-

"अरूण पंख तरूण किरण

खड़ी खोलती है द्वार।"

निराला की 'संध्या सुन्दरी' कविता भी प्रकृति से ही संबंधित है, जिसमें सौन्दर्य के मानवीकरण के माध्यम से प्रकृति के रूप व्यापार पर नारी के रूप व्यापार का आरोप किया गया है-

दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या-सुन्दरी परी-सी

धीरे-धीरे-धीरे

मानवीकरण के साथ-साथ प्रकृति के प्रति कवि के हृदय में कौतूहल भाव भी है। इसी भाव से प्रेरित होकर कवि यमुना से प्रश्न करता है-

यमुने, तेरी इन लहरों में

किन लहरों की आकुल तान।

पथिक प्रिया-सी जाग रही है

किस अतीत के गौरव गान।

निराला के काव्य में प्रकृति-वर्णन के लगभग सभी अंग हैं। कहीं पर वे प्रकृति का उपदेशात्मक चित्रण करते हैं, कहीं पर उसका अलंकारिक चित्रण करते हैं, तो कहीं उसे पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित करते हैं। वे कहीं उसके चेतन स्वरूप को, तो कहीं कोमल एवं रौद्र स्वरूप को और अन्यत्र रहस्यमय स्वरूप को चित्रित करते हैं। प्रकृति उनके लिए मनः शान्ति का भी साधन है तथा क्रोध एवं खीझ की अभिव्यक्ति का भी।

5. नारी की महानता और पवित्रता का वर्णन

नारी को संतों और भक्तों ने वासना की पुतली और मायाविनी के रूप में देखा था। रीतिकाल में नायिका केवल काम-क्रीड़ा का साधन मात्र बनकर रह गई थी। छायावादी कवियों ने नारी के मन की सूक्ष्म गहराइयों की थाह ली। निराला ने नारी के 'शक्ति' रूप की उपासना की। वह उनकी दृष्टि में अबला न रहकर सबला होकर समादृत हुई। नारी की दीनता, निराशा और असहायता का चित्रण करते हुए भी निराला ने उसे प्रेरणा और शक्ति-स्त्रोत के रूप में देखा। वह वासना का विष होकर साधना का अमृत है। 'विधवा' उसे इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी पवित्र और दीप-शिखा-सी शान्त लगती है।

निराला का नारी-चित्रण अपेक्षाकृत सूक्ष्म एवं शीलवान है। उसमें नग्नता एवं स्थूलता कहीं नहीं आ पाई। प्रेम के क्षेत्र में जाति, वर्ण, सामाजिक रीति, नीति, रुढ़ियां और मिथ्य मान्यतायें एवं मर्यादाएं मान्य नहीं हैं।

दोनों हम भिन्न वर्ण, भिन्न जाति, भिन्न रूप।

भिन्न धर्म भाव, पर केवल अपनाव से, प्राणों से एक थे।।

नारी चित्रण में भी स्थूल सौन्दर्य की अपेक्षा उसकी आत्मा के सौन्दर्य का चित्रण ही अधिक किया गया है। नारी के प्रति उनके हृदय में गहरी सहानुभूति है। इनके काव्य में नारी के विविध रूपों का चित्रण हुआ है। कहीं वह जीवन की सहचरी एवं प्रेयसी है और कहीं उन्हें वह प्रकृति में व्याप्त होकर अलौकिक भावों से अभिव्यक्त करती हुई दिखाई देती है। कहीं वह उसके दिव्य दर्शन की झलक पाते हैं तो कहीं उसको लक्षित करके कवि प्रेमोन्माद की अस्फुट मनोवृति का चित्रण करते हैं।

(प्रिय) यामिनी जागी।

अलस पंकज दृग अरुण मुख

तरुण अनुरागी।

खुले केश अशेष शोभा भर रहे

पृष्ठ ग्रीवा बाहु उर पर तर रहे।

6. वेदना, निराशा एवं दुखवाद की स्थिति

वेदना, निराशा, दुखवाद एवं करुणा की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति छायावाद की एक प्रमुख विशेषता है। ये कवि वेदना एवं दुख को जीवन का सर्वस्व एवं उपकारक मानते हैं। निराला ने वेदना एवं निराशा को कई प्रकार से प्रकट किया है-

दिये हैं मैंने जगत को फूल फल,

किया है अपनी प्रभा में चकित चल,

यह अनश्वर था सफल पल्लिवत तल

ठाट जीवन का वही जो ढह गया है।

प्रत्यक्ष रूप से निराला के जीवन की गतिविधि का दिग्दर्शन कराने वाली कविताओं में 'सरोज स्मृति' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कविता के प्रारम्भ में कवि को अपने पिता होने की निरर्थकता की अनुभूति होती है और वह पुत्री के लिए कुछ भी न कर पाने पर आत्म-ग्लानि के साथ लिखता है-

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे, हित कर न सका

जाना तो अर्थागमोपाय,

पर रहा सदा संकुचित काय।

लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर,

हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।

7. रहस्यवाद की भावना

अन्य छायावादी कवियों की भान्ति निराला के काव्य में भी रहस्य लोक के ऊर्ध्व शिखरों को छूने का प्रयास परिलक्षित होता है। उनकी रहस्य चेतना न तो उपनिषद तथा मध्ययुगीन संतों की भान्ति संकीर्णता से ग्रस्त रही है और न ही इनमें भावुकता ही रही है। वे रहस्यवादी के साथ-साथ दार्शनिक भी हैं। उन्होंने रहस्याकुल क्षणों में प्रकृति के भीतर कभी अपनी अलोक सुन्दरी प्रिया के रूप को चित्रित किया है तो कहीं सामान्य मानव अनुभूतियों का दैवीकरण। वे रहस्य रचना के क्षणों में भी पूर्ण भावुक बने रहे हैं-

तुम गन्ध कुसुम कोमल पराग

मैं मृदुगति मलय समीर

तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष

मैं प्रकृति, प्रेम जंजीर

तुम शिव हो, मैं हूँ शक्ति

तुम रघुकुल गौरव रामचन्द्र

मैं सीता अचला भक्ति।

स्व-मूल्यांकन: क

प्रिय विद्यार्थियों ! अभी तक अपने जो निराला के काव्य की सात विशेषताओं का अध्ययन किया है। अब आप निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर इस प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करें। यह स्व-मूल्यांकन आपके अध्ययन को सार्थक करेगा।

1. निराला हिन्दी-साहित्य के एक ऐसे ..... कवि हैं।
2. ..... काव्य में हृदयवाद, बुद्धिवाद, दार्शनिकता और कवित्व का पुट एक साथ ही विद्यमान है।
3. निराला वर्ण तथा वर्ग व्यवस्था को ..... का तंत्र मानते हैं।
4. निराला का ..... ही उनका जीवन दर्शन है।
5. 'जागो फिर एक बार' कविता में ..... की भावना ने पर्याप्त विकास पाया है।
6. 'संध्या सुन्दरी' कविता में मानवीकरण के माध्यम से प्रकृति के रूप व्यापार पर ..... के रूप व्यापार का आरोप किया गया है।
7. निराला का नारी-चित्रण अपेक्षाकृत सूक्ष्म एवं ..... है।
8. नारी के प्रति उनके ..... में गहरी सहानुभूति है।
9. निराला ने वेदना एवं ..... को कई प्रकार से प्रकट किया है।
10. निराला रहस्यवादी के साथ-साथ ..... भी हैं।

8 मुक्त छन्द योजना

निराला न केवल भाव एवं विचारों की दृष्टि से विद्रोही कवि कहलाते हैं, अपितु छन्द की दृष्टि से भी निराला एक क्रान्तिकारी एवं विद्रोही कवि हैं। इन्होंने छन्द संबंधी प्राचीन मान्यताओं में आमूलचूल परिवर्तन करके मुक्त छन्द की पद्धति का श्रीगणेश किया। हिन्दी साहित्य को उनकी यह मौलिक देन है। 'मुक्त छन्द' की महत्ता के संबंध में निराला ने लिखा है-"मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग होना।''

परिमल की भूमिका में निराला ने मुक्त छन्द के विषय में बहुत कुछ लिखा है। उनके कथन का सारांश यह है कि मुक्त छन्द का समर्थक उसका प्रवाह ही है। इस कथन के समर्थन में निराला ने 'जुही की कली' की आरम्भिक पंक्तियां उद्धृत की हैं और विवेचना प्रस्तुत की है-

विजय वन वल्लरी पर

सोती थी सुहाग भरी

स्नेह स्वप्न मग्न अमर कोमल तनु-तरुजी

जुही की कली

युग बन्द किए-शिथिल पत्रांक में।

निराला तो काव्य का विकास छन्द के बन्धन से मुक्ति की स्थिति में मानते हैं, जबकि अन्य लोग इसके घोर विरोधी थे। इसे रबड़ छन्द, केंचुआ छन्द तक कहा गया। किन्तु कवि इससे हतोत्साहित नहीं हुआ। निराला ने छन्दबद्ध रचनाओं का सृजन भी किया है-

एक दिन थम जायेगा रोदन

तुम्हारे प्रेम अंचल में।

लिपट स्मृति बन जायेंगी कुछ कन-

कनक सोंचे नयन-जल में।

9. भाषा

अपने विचारों के अनुसार ही निराला ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपनी भाषा को सर्वत्र भावों के अनुकूल डालने का प्रयत्न किया है। उनके काव्य में विशाल शब्द समूह के दर्शन होते हैं। निराला ने अपने प्रौढ़, सशक्त एवं ओजस्वी भावों को वाणी प्रदान करने के लिए प्रायः ऐसी गुरुता, गम्भीरता एवं प्रौढ़ता से परिपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है जिसमें संस्कृत पदावली का सर्वाधिक महत्त्व तथा संस्कृत के तत्सम शब्दों की बहुलता है।

रावण प्रहार-दुर्वार-विकल-वार-दल-बल,

मूर्छित सुग्रीवागंद-भीषण-गवाक्ष-गय-नल,

वारित सौमित्र भल्लपति-अगणित मल्ल रोध,

गार्जित प्रलयाब्धि क्षुब्ध हनुमान-केवल प्रबोध।

जहाँ निराला जन-जीवन के अनुकूल सरल भावों को अभिव्यक्त करना चाहते हैं, वहां उनकी भाषा भी सरलता एवं व्यावहारिकता से ओतप्रोत होती है। 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' की भाषा इसका उदाहरण है।

जहाँ शोषकों, अत्याचारियों पर व्यंग्य बाणों की वर्षा की है वहाँ उनकी भाषा में अपेक्षाकृत तीखापन, कटुता के अधिक दर्शन होते हैं। कुकुरमुत्ता की भाषा इसका उदाहरण है।

अबे सुन बे गुलाब

भूल मत, गर पाई खुशबू, रंगो-अब

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतरा रहा कैपीटलिस्ट।

निराला ने सर्वत्र भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। अतः निराला ने स्वर, ध्वनि, नाद एवं भाव के अनुकूल सर्वथा शब्द योजना की है।

इन्होंने, फारसी, अरबी, अंग्रेजी तथा हिन्दी के मिश्रित शब्दों का एक साथ प्रयोग किया है।

10. अलंकारों का प्रयोग

निराला ने अपनी अलंकार योजना द्वारा भावों, विचारों, पदार्थों एवं घटनाओं के ऐसे मनोहर, मादक एवं मार्मिक चित्र अंकित किए हैं जो अपनी सरलता एवं स्वाभाविकता के साथ-साथ गतिशीलता एवं प्रभावोपादकता में अन्य कवियों के चित्रण से अधिक महत्त्वपूर्ण जान पड़ते हैं।

(i) **शब्दालंकार :** निराला की कविता में अनुप्रास का विशेषकर छेकानुप्रास एवं कृत्यानुप्रास का प्रयोग प्रायः सर्वत्र पाया जाता है।

कम्पित उनके करुण करो में,

तारक-तारों की सी तान

बता-बता अपने अतीत का,

क्या तू भी गाती है गान।

(ii) **अर्थालंकार :** निराला ने उपमा, रूपक आदि अलंकारों का बहुत ही सफल प्रयोग किया है। उपमा अलंकार इनका सर्वाधिक प्रिय जान पड़ता है।

किसके गूढ़ मर्म में निश्चित,

शशि सा सुख ज्योत्स्ना सा गात।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण छायावादी कवियों ने मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय, अमूर्तीकरण आदि अलंकारों को ग्रहण किया और उनके सफल प्रयोग किए। निराला के काव्य में भी इनके प्रचुर उदाहरण मिलते हैं।

(iii) **मानवीकरण :** निराला ने प्रकृति की वस्तुओं पर चेतना का आरोप करके उनमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श प्राप्त किया है। 'जुही की कली',

सन्धया सुन्दरी, बादल, प्रपात के प्रति, तरंगों के प्रति आदि कविताएँ इसके उदाहरण हैं-

चौंक पड़ी युवती,

चकित चितवन निज चारों ओर फेर,

हेर प्यारे को सेज पास,

नममुखी हँसी, खिली

खेल रंग प्यारे संग।

11. प्रतीक योजना

छायावादी कविता की सबसे बड़ी विशेषता ही यह है कि इसमें प्रतीकों के माध्यम से ही विविध रूपों, भावों, मनोवृत्तियों, आध्यात्मिक संकेतों, प्रेम व्यापारों आदि का अद्भुत और मनोरम वर्णन किया गया है।

निराला ने प्रकृति के उन्मुक्त सौन्दर्य-सिन्धु से अपने सामन्य प्रतीकों का चयन करके विविध रूपों एवं भावों की अभिव्यक्ति की है।

सोती थी,

जाने कही कैसे प्रिय आगमन वह ?

नायक ने चूमे कपोल,

डोल उठी वल्लरी की जैसे लड़ हिंडोल।

यहाँ 'जुही की कली' को नवपरिणीता का प्रतीक बनाकर स्पर्श-लाज के लजाई हुई नवोढ़ा नायिका का अत्यन्त चिताकर्षक सौन्दर्य-चित्र अंकित किया है, ऐसा ही मनोरम चित्र 'वन-बेला', के प्रतीक के रूप में मिलता है।

'बादल राग' कविता में बादल को कई प्रतीकों के रूप में चुना है, 'रास्ते के फूल' कविता में मुरझाये हुए दलित कुसुम को एक अनाथ एवं असहाय व्यक्ति के प्रतीक रूप में अंकित किया है। 'कर्ण' नामक कविता में कर्ण को भी दीन एवं दलित व्यक्ति के प्रतीक के रूप में अंकित किया है। 'कुकुरमुत्ता' तो है ही प्रतीकात्मक।

स्व-मूल्यांकन: ख

प्रिय विद्यार्थीयों ! आगे बढने से पहले अपने अध्ययन को थोडा विश्राम दे और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर अभी तक प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें।

1. निराला ने मुक्त छन्द की पद्धति का श्रीगणेश किया।( )
2. निराला के काव्य में सीमित शब्द समूह के दर्शन होते हैं।( )
3. निराला ने सर्वत्र भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।( )
4. निराला की कविता में अनुप्रास का विशेषकर छेकानुप्रास एवं कृत्यानुप्रास का प्रयोग प्रायः सर्वत्र पाया जाता है।( )
5. निराला का सर्वाधिक प्रिय अलंकार रूपक है।( )
6. निराला ने प्रकृति की वस्तुओं पर जड़ का आरोप किया है।( )
7. निराला ने प्रकृति के उन्मुक्त सौन्दर्य-सिन्धु से अपने सामन्य प्रतीकों का चयन करके विविध रूपों एवं भावों की अभिव्यक्ति की है।( )
8. 'जुही की कली' को 'वन-बेला' का प्रतीक माना है।( )
9. 'कर्ण' नामक कविता में कर्ण को सम्पन्न व्यक्ति के प्रतीक के रूप में अंकित किया है।( )
10. छन्द की दृष्टि से निराला एक क्रान्तिकारी एवं विद्रोही कवि हैं।( )

8.4 निष्कर्ष

निस्सन्देह निराला ने अपनी प्रौढ़ एवं सशक्त रचनाओं द्वारा हिन्दी की स्वच्छन्द काव्य-धारा को नई गति प्रदान की है, नये मोड़ प्रस्तुत किए हैं और नई अभिव्यंजना-शैली दी है। इसी कारण निराला आधुनिक स्वच्छन्द काव्य धारा के शीर्ष स्थान पर सुशोभित हैं। इनकी काव्य साधना में आन्तरिक द्वन्द्व की स्थिति निरन्तर गतिशील रही है। निराला के साहित्य की उदात्तता के कारण ही इन्हें 'महाप्राण' कहा जाता है जो आने वाले कवियों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहेगा।

8.5 स्व-मूल्यांकन (ग)

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ में आपने निराला के काव्य सौन्दय का अध्ययन किया है। अब आप इस पाठ के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन निम्नलिखित बहु-विकल्पीय प्रश्नों द्वारा करें।

1. निराला को राष्ट्रीयता की प्रेरणा किससे मीली?

   1. स्वामी विवेकानन्द 2. गांधी और तिलक

   3. रामकृष्ण मिशन 4 दयानंद सरस्वती

2. 'महाराज शिवाजी का पत्र' में कवि ने क्या वर्णित किया हे ?

   1. कटूता 2. आपसी फूट और एकता की भावना

   3. राष्ट्रीयता 4. प्राकृति चित्रण

3. नारी मन की सूक्षम गहगइयों की थाह किन्न कवियों ने ली है।

   1. प्रगतिवादी 2. रीतीकालीन

   3. छायावादी 4. भक्तिकालीन

4. सरोज स्मृति कविता निराला के किस सम्बन्ध से सम्बन्धित है।

   1. पत्नी 2. बहन

   3. बेटी 4. माता

5. किस रचना की भूमिका में निराला ने मुक्त छन्द की बात की है।

   1. परिमल 2. राम की शक्ति पूजा

   3. कुकुरमुत्ता 4. तुलसीदास

6. निराला का सर्वार्थिक प्रिय अलंकार कौन-सा है।

   1. छेकानुप्रास 2. कृत्यानुप्रास

   3. रूपक 4. उपमा

7. मुरझाये हुए दलित कुसुम को एक अनाथ एक असहाय व्यक्ति के प्रतीक रूप में किस कविता में अंकित किया है ?

   1. बादल राग 2. रास्ते के फूल

   3. कुकुरमुत्ता 4. जुही की कली

8. सन्ध्या सुन्दीर कविता किसकी है ?

   1. प्रसाद 2. निराला

   3. महादेवी वर्मा 4. पंत

8.6 कठिन शब्द

1. तिरीभूत - जो गायब हो गया हो, अदृश्य
2. गौरवान्वित - सम्मानित, गौरवयुक्त
3. दर्शनिकता - मान्यताओं और निहितार्थों पर गौर करना
4. विक्षुबध् - क्षोभ से भरा हुआ, अशांत
5. पत्रांक - पत्र या पत्रिका का अंक, पत्ते की गोद
6. ओजस्वी - शक्तिशाली, तेजस्वी
7. समादृत - जिसका खूब आदर हो, सम्मान हुआ हो
8. उर्ध्व - ऊपर की ओर गया हुआ

8.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1 निराला के काव्य सौन्दर्य की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

प्र. 2 निराला के काव्य में व्यक्त प्रकृति चित्रण को स्पष्ट करें।

प्र. 3 निराला के काव्य में रहस्यवाद की भावना पर विचार करें।

8.8 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन : क

1. युगान्तचकारी 2. निराला 3. शोषण 4. काव्य 5 देश प्रेम 6. नारी 7 शीलवान 8 हृद्य 9 निराशा 10 दार्शनिक

स्व-मूल्यांकन : ख

1. सही 2 गलत 3 सही 4 सही 5 गलत 6 गलत 7 सही 8 गलत 9 गलत 10 सही

स्व-मूल्यांकन : ग

1. गांधी और तिलक 2. आपसी फूट और एकता की भावना 3. छायावादी 4 बेटी 5. परिमल 6. उपमा 7 रास्ते के फूल 8 निराला

8.9 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2020
2. निराला, इन्द्रनाथ मदान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008
3. आत्महन्ता आस्था निराला, डॉ. दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2014
4. कविता के नए प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1982

निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना

रूपरेखा

9.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
9.2 प्रस्तावना
9.3 निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना
9.3.1 वह तोड़ती पत्थर कविता की मूल संवेदना
9.3.1.1 स्व-मूल्यांकन
9.3.2 भिक्षुक कविता की मूल संवेदना
9.3.2.1 स्व-मूल्यांकन
9.3.3 कुकुरमुत्ता कविता की मूल संवेदना
9.3.3.1 स्व-मूल्यांकन
9.4 निष्कर्ष
9.5 कठिन शब्द
9.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
9.7 उत्तर कुंजी
9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक' तथा 'कुकुरमुत्ता' कविताओं की मूल संवेदना से परिचित करवाना है।

प्रस्तुत पाठ का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात् आप पाठ्यक्रम में निर्धारित तीनों कविताओं की मूल संवेदना का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

9.2 प्रस्तावना

निराला का काव्य तत्कालीन परिस्थितियों से मुठभेड़ करता नवनिर्माण का संदेश देता है। मानवतावाद इनका मुख्य स्वर है। इन्होंने मनुष्य ता पर विश्वास नहीं खोया,

कविता को वैयक्तिकता या दर्शन की भूमिका पर ले जाकर आत्मविच्छेद नहीं किया। इनकी काव्य साधना में आन्तरिक द्वन्द्व की स्थिति निरन्तर गतिशील रही है।

9.3 निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना :

(क) वह तोड़ती पत्थर

(ख) भिक्षुक

(ग) कुकुरमुत्ता

संवेदना शब्द वेदना शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाने से बना है। इसका सामान्य अर्थ दुःख या पीड़ा है। किसी दूसरे की वेदना, शोक, दुख, कष्ट या हानि को देखकर मन में उत्पन्न वेदना, दुख या सहानुभूति को संवेदना कहते हैं। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने 'संवेदना' शब्द को परिभाषित किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार : "संवेदना का अर्थ सुख-दुखात्मक अनुभूति ही है, उसमें भी दुखानूभूति से इसका गहरा संबंध है..... संवेदना शब्द अपने वास्तविक या अवास्तविक दुख पर कश्टानुभव के अर्थ में आया है। मतलब यह कि किसी स्थिति को लेकर दुख का अनुभव करना ही संवेदना है"।

मुक्तिबोध के अनुसार : "मानसिक प्रतिक्रिया में संवेदना अन्तर्भूत है, किन्तु उसमें दृष्टी का दृष्टीकोण भी अन्तर्भूत है"।

मूल संवेदना से तात्पर्य किसी कविता की विषय वस्तु और उसके उद्देश्य से होता है। किसी कविता की मुख्य विषय वस्तु क्या है ? वह किस मुद्दे को उठा रही है, उसका उद्देश्य क्या है ? कवि कविता के माध्यम से क्या कहना चाह रहा है, क्या संदेश देना चाहता है ? यह सब बातें उस कविता की मूल संवेदना कहलाती हैं। मूल संवेदना कविता की संपूर्ण विषय वस्तु को सारगर्भित करती है और उसके सार को समझाती है कि कवि कविता के माध्यम से क्या बताना चाहता है।

9.3.1 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की मूल संवेदना :

कवि की संवेदना की पहचान, उसकी ईमानदारी, गैर-ईमानदारी की पकड़ केवल शब्दों की तत्सम-तद्भव प्रकृति के अनुशीलन से नहीं की जा सकती। केवल तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग काव्य में जन-सामान्य की प्रतिष्ठा तब तक नहीं कर सकता, जब तक उन शब्दों में कवि की संवेदना ने अपनी ललक, संसक्ति न भर दी हो। अकिंचन, उपेक्षित को स्थान देने वाली रचना में रचनाकार के संस्कार-शील, तत्सम शब्द-प्रयोग के कारण उस रचना की वस्तुनिष्ठ ता और साधारण के प्रति कवि संवेदना की प्रामाणिकता में संदेह संगत नहीं प्रतीत होता। बहुत संभव है कि संवेदनशील

रचनाकार के उस विशिष्ट प्रयोग में रचनात्मकता का आग्रह हो तथा आभिजात्य के कुछ-कुछ निकट रहने वाली वह शब्दावली अकिंचनता के विरोध में आकर संवेदना की तीव्रता को और भी अधिक उजागर करें।

स्नेह-स्वप्न-मग्न, अमल-कोमलतनु-तरूणी जुही की कली के चित्रांकन के साथ निराला काव्य-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं और कवि की परिवेश के प्रति उन्मुक्त दृष्टी उसे इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ने वाली युवती मज़दूरन के ऊपर कुछ सोचने को विवश कर देती है। क्लासिकल काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करने वाले निराला जन-साधारण से जुड़कर बड़े हल्के रंगों में पत्थर तोड़ती युवती का चित्र निर्मित करते हैं। इस कविता की मूल विशेषता उसमें निहित विपरीत भाव है, जिसे भाषिक संरचना रूपायित करती है। यह विपरीत भाव विपन्नता और सम्पन्नता को लेकर तो है ही, पर कविता की भाव-गंभीरता पत्थर तोड़ती मज़दूरिनी के भरे यौवन और उसके प्रति स्वयं उसकी तटस्थता जो वस्तुतः उसकी दीन स्थिति की विवशता का प्रतिफलन है में निहित है। वैषम्य की व्यंजना कवि आरम्भ से ही करता है :-

"नहीं छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,

श्याम तन भर बंधा यौवन

नत नयन, प्रिय कर्म रत मन

गुरु हथौडा हाथ,

करती बार-बार प्रहार

सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्राकार"।

'वह तोड़ती पत्थर' कविता हिन्दी काव्य जगत के मूर्धन्य कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी की सन् 1935 ई. में लिखी गई एक प्रगतिवादी कविता है। यद्यपि निराला जी छायावाद के प्रतिनिधि कवि थे तथापि उन्होंने छायावाद की रोमानियत से बाहर निकल कर यथार्थ को देखा और युगानुरूप प्रगतिवादी रचनाएं करनी प्रारम्भ कर दी। निर्धन, दुःखी, शोषित मजदूर प्रगतिवादी काव्य के मेरुदंड हैं। शोषित और सर्वहारा वर्ग का यथार्थ चित्रण ही प्रगतिवादी काव्य की मूल प्रवृत्ति रही है।

'वह तोड़ती पत्थर' कविता भी इसी तरह की कविता है। इसमें निराला ने इलाहाबाद के पथ पर भरी दोपहरी में पत्थर तोड़ने वाली मजदूरिनी का यथार्थ चित्रण किया है। वह चित्रण अत्यंत मर्मस्पर्शी है। वह चिलचिलाती धूप में बैठी अपने हथौड़े

से पत्थर पर प्रहार कर रही है। जिस धूप में कोई घर से बाहर नहीं निकलना चाहता उसी धूप में वह हथौड़े से बार-बार प्रहार करके पत्थर तोड़ रही है। वहां किसी प्रकार की कोई छाया नहीं है। और न ही कोई छायादार वृक्ष है जहां थोड़ी देर बैठकर वह आराम कर ले। ऐसे वातावरण में वह बिना किसी से कुछ बोले अपने कर्म में तत्पर है। वह कितनी विवश है कि उसे जीवन में किसी की ओर आंख उठाकर देखने का भी अधिकार नहीं है। उसकी दृष्टी में मार खाकर भी न रो सकने वाली विवशता है। फिर भी वह अपनी मूक भाषा में सब कुछ कह डालती है। जिसे कोई भी व्यक्ति सुन और समझ नहीं पाता है। सर्वहारा वर्ग की यही नियति है। वह दिन रात अथक परिश्रम तो करता है किन्तु उसे अपमान और उपेक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता।

निराला की यह कविता पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पर एक करारी चोट है। कवि ने व्यंग्य किया है कि कहीं बड़ी-बड़ी हवेलियां खाली पड़ी हैं और किसी को छाया भी नसीब नहीं। इस तरह की विरोधी स्थितियों पर इस कविता में बड़ा तीखा व्यंग्य किया गया है जो सभी को झकझोर कर रख देता है और इस सामाजिक असमान व्यवस्था के प्रति जन-साधारण में घृणा उत्पन्न करने पर विवश कर देता है।

9.3.1.1 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! आपने निराला की वह तोड़ती पत्थर कविता की मूल संवेदना का अध्ययन कर लिया है। अब आप अपने इस अध्ययन का स्व-मूल्यांकन निम्नलिखित रिक्त स्थान भरक कर सकते है -

1. .....के पथ पर पत्थर तोड़ने वाली युवती कवि को कुछ सोचने पर विवश कर देती है।
2. .....हथौडा हाथ/करती बार-बार प्रहार/सामने तरू मालिका अट्टालिका, प्राकार।“
3. वह तोडती पत्थर निराल की सन् .....ई. में लिखी गई एक प्रगतिवादी कविता है।
4. निराला ने छायावाद को रोमानियत से बाहर निकल कर यथार्थ को देख और युगानुरूप.....रचनाएं करनी प्रारम्भ कर दी।
5. निर्धन, दु:खी, शोषित मजदूर.....काव्य के मेरूदंड है।
6. .....की सही नियति है। उसे दिन रात परिश्रम करने के पश्चात भी अपमान और उपेक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।
7. वह तोड़ती पत्थर कविता.....अर्थव्यवस्था पर एक करारी चोट है।

9.3.2 (ख) 'भिक्षुक' कविता की मूल संवेदना

भिक्षुक कविता में कवि ने एक भिखारी के अंतर्मन की दशा का वर्णन किया है। यहां भूख जैसी सामान्य आवश्यकता के लिए उसे पश्चाताप करना पड़ता है और दर-दर भटकना पड़ता है। यह सब स्थिति देखकर कवि का हृदय द्रवित हो जाता है। इस कविता में निराला ने भिखारियों की विवशता का चित्रण कर मानवीय संवेदना रखने का भाव व्यक्त किया है। कवि वर्णन करता है कि भिक्षुक जब भूख से व्याकुल हो जाता है और प्यास से उसके होंठ सूखने लगते हैं, तब उसकी स्थिति बड़ी दयनीय बन जाती है।

वह आता

दो टूक कलेजे के करता पश्ताता पथ पर आता

पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा लकुटिया टेक।

कवि वर्णन करता है कि जब भिक्षुक आता दिखाई देता है, तो उसकी दयनीय दशा देखकर हृदय के टुकड़े होने लगते हैं। वह स्वयं भी अपनी करुणाजनक स्थिति से सभी को वेदना से भर देता है। कवि द्वारा यहां एक विवश, बेसहारा, लाचार भिखारी के आगमन का वर्णन किया गया है। भिखारी अपना आत्मसम्मान त्याग कर पश्चाताप करता पथ पर आता है अर्थात वह नहीं चाहता कि वह किसी के सामने हाथ फैलाए लेकिन वह भूख के कारण विवश है।

यहाँ भिखारी की दयनीय अवस्था का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। उसने कई दिनों से भोजन नहीं किया है जिसके कारण पेट और पीठ मिलकर एक हो गए हैं। वह लाठी के सहारे चलता है। बस मुट्ठी भर दाने के लिए वह निकला है जिससे उसकी भूख मिट जाए। वह फटी-पुरानी झोली फैलाता है।

भिखारी को अपना स्वाभिमान त्यागना पड़ता है, जिससे उसके हृदय के दो टुकड़े हो गए हैं। वह अपने भाग्य को कोसता हुआ पथ पर आ रहा है। उसके साथ दो बच्चे भी हैं जो हमेशा अपना हाथ फैलाए रखते हैं। वह बाएं हाथ से अपना पेट मलते हैं और दाएं से किसी की करुण दृष्टी को तरसते हैं कि कोई इस दृश्य को देखकर उन पर दया कर दे।

"साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए

बाएं से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दया-दृष्टी पाने की ओर बढ़ाए।

भूख से सूख ओंठ जब जाते

दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते ?

घूंट आंसुओं के पीकर रह जाते।"

कवि कहता है कि जब उनके होंठ भूख के कारण सूख जाते हैं तो वे दाता यानी जो मनुष्य देने वाले हैं, भाग्य विधाता यानी ईश्वर से कुछ भी नहीं पाते हैं, बल्कि केवल आंसुओं के घूंट पीकर रह जाते हैं।

उनकी इतनी दयनीय स्थिति है कि किसी के द्वारा फेंके गए अवशिष्ट भोजन को वे चाट रहे हैं, भाव यह है कि सड़क पर पड़ी जूठी पत्तलों पर बचा-खुचा थोड़ा-सा भोजन चाटकर वे अपनी भूख मिटाने का प्रयत्न कर रहे हैं और उससे भी दर्दनाक स्थिति यह है कि उस भोजन को भी छीनने के लिए कुत्ते अडिग हैं।

"चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।"

कवि स्पष्ट करना चाहता है कि भिक्षुक की दशा पशुओं से भी हीन है। भिक्षुक के प्रति सांत्वना प्रकट करते हुए कविता की अन्तिम पंक्तियों में निराला कहते हैं कि ठहरो मेरे हृदय में जो भी अमृत है मैं इससे तुम्हें सींच दूंगा। मैं तुम्हारी सहायता करूंगा, परन्तु क्या तुम अभिमन्यु जैसे बन पाओगे अर्थात् जो साहस अभिमन्यु ने परिस्थितियों से उभरने के लिए दिखाया था। वह साहस तुम में भी दिखना चाहिए। तुम्हारे जो भी दुख हैं मैं अपने हृदय में खींच लूंगा अर्थात् जो ये भीख मांगने की प्रथा छोड़ कर तुम्हें भी अपने पैरों पर खडे होने की कोशिश करनी होगी। यह सत्य है कि निराला ने आजीवन गरीबों-दीन-दुखियों, शोषितों की सहायता की। यहां पर कवि ने भिक्षुक को भी अभिमन्यु की तरह संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। तात्पर्य यह है कि कवि भिक्षुक की दीन-हीन दशा को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करता है तथा लोगों के मन में उसके प्रति सहानुभूति एवं करूणा के भाव उत्पन्न करना चाहते हैं।

9.3.2.1 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अधययन को थोड़ा विश्राम देकर भिक्षुक कविता की मूल संवेदना के अध्ययन का स्व-मूल्यांकन निम्नलिखित बहुविकलीपीय प्रश्नों द्वार करें-

1. भिक्षुक कविता में कवि ने किसके अंतर्मन की दशा का वर्णन किया है?

(क) नारी (ख) अयाचक

(घ भिखारी (घ) दाता

2. भिक्षुक को किस सामान्य आवश्यकता के लिए दर-दर भटकना पड़ता हैं?

(क) मकान (ख) भूख

(ग) कपड़े (घ) काम

3. भिक्षुक अपनी कैसी स्थिति से सबको वेदना से भर देता है ?

(क) सुविधा सम्पन्न (ख) प्रेरमापरक

(ग) करूणाजनक (घ) प्रसन्न

4. भिखारी अपना क्या त्यागकर पश्चाताप करता पथ पर आता है।

(क) आत्मसम्मान (ख) धन

(ग) वस्त्र (घ) घर

5. भिखारी सबके सामने क्या फैलता है ?

(क) परना (ख) चादर

(ग) जोली (घ) पर्स

6. भिखारी के साथ उसके कितने बच्चें हैं ?

(क) एक (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार

7. भिक्षुक कविता में भिखारी अपने बाएं हाथ से क्या मलत हैं ?

(क) बाजू (ख) कंदा

(ग) पैर (घ) पेट

8. भिखारी क्या चाटकर अपनी भूख मिटाने का प्रयत्न कर रहा है।?

(क) जूठी पत्तलें (ख) जूठे पतीले

(ग) जूठे गिलास (घ) ढोने

9. भिखारी से खाना छीनने हेतु कौन अडिग है ?

(क) घोड़े (ख) कौवे

(ग) कुत्ते (घ) लोग

10. निराला भिखारी को किसकी तरह बनाना चाहता है।

(क) अभिमन्यु (ख) कर्ण

(ग) अर्जुन (घ) कृष्ण

9.3.3 कुकुरमुत्ता कविता की मूल संवेदना

'कुकुरमुत्ता' स्वतंत्रता पूर्व सन् 1941 में लिखी निराला की बहुचर्चित, सामाजिक व्यंग्यात्मक कविता है, जिसका मूल स्वर प्रगतिवादी है। प्रगतिवादी विचारधारा ऐतिहासिक उपज है। कार्ल मार्क्स ने सामाजिक विषमताओं को एक ऐतिहासिक तथ्य माना है, जिसपर प्रगतिवादियों ने गहन चिंतन किया। 'कुकुरमुत्ता' मूलतः निराला की एक लम्बी कविता है जिसकी आधारभूमि यथार्थवादी है। कविता में द्वितीय विश्वयुद्ध के साथ पनपती हुई सामन्ती-पूंजीवादी व्यवस्था का चित्रण है।

यह कविता दो खण्डों में है-प्रथम खंड में गुलाब पर व्यंग्य करता है, द्वितीय खण्ड़ में नवाब की बेटी 'बहार' को अपनी हमजोली 'गोली' की मां ने बनाया कुकुरमुत्ते का कबाब बहुत पसंद आता है। इस कविता में कुकुरमुत्ता-श्रमिक, सर्वहारा, शोषित वर्ग का प्रतीक है या प्रतिनिधि है और गुलाब सामंती, पूंजीपति, शोषक वर्ग का प्रतीक है।

'कुकुरमुत्ता' निराला की सामाजिक चेतना, प्रगतिवादी तथा प्रयोगशील प्रवृत्ति को निरूपित करने वाली कविता है। कवि ने इस कविता में अपने व्यंग्य का निशाना किसी एक व्यक्ति या वर्ग को नहीं बनाया है बल्कि कभी वे पूंजीपतियों पर व्यंग्य करते हैं, तो कभी थोथे समाजवादियों पर जो व्यर्थ की बात करते हैं। यही नहीं उन्होंने अपने समकालीन साहित्यकारों पर भी व्यंग्य किया है। इस कविता में निराला ने भारतीय एवं पश्चिम संस्कृति के टकराव का चित्रण भी किया है।

कविता की शुरुआत ही-"एक थे नवाब'' इन दो शब्दों की पंक्ति से होती है। कवि इन शब्दों के माध्यम से सामाजिक विशमताओं को पाठक के सामने खड़ा कर देते हैं। प्राचीन काल से हमारा समाज वर्ग व्यवस्था में विभाजित है, इसका आभास भी इन दो शब्दों से होता है। निराला पर मार्क्स के विचारों का प्रभाव था। मार्क्स ने बताया है कि समाज का विकास दास प्रथा से लेकर पूंजीपतियों तक कैसे पहुंचा है। निराला ने इसी पूंजीपति वर्ग का चित्रण इस कविता में किया है और तत्कालीन समाज पर किस प्रकार अपना रौब डालकर उनका शोषण करता रहा है, यह स्पष्ट किया है। इन नवाबों तथा पूंजीपतियों को तत्कालीन सरकार (अंग्रेज) सहायता प्रदान कर रहे थे। इन नवाबों के ठाठ-बाठ के लिए कई नौकर थे। एक तरफ समाज का एक हिस्सा खाने के

लिए तरस रहा है, भूखा मर रहा है, गंदगी में सड़ रहा है और एक तरफ शान-शौकत के लिए बाग-बागिया सजाए जा रहे हैं, देशी पौधों के साथ-साथ विदेशी पौधों को भी लाया जा रहा है-

"फारस से मंगाए थे गुलाब

बड़ी-बाड़ी में लगाए

देशी पौधे भी उगाए"

यह स्थिति भारतीय पूंजीपतियों की मानसिकता को उजागर करती है। कवि एक ओर आरामगाह का चित्रण करते हैं तो दूसरी तरफ हमारे सामने उस माली के गंदे घरों का चित्रण करते हैं जो दिन-रात काम करते हैं उन्हें झोंपड़ियों में रहना पड़ता है और जो दूसरों का खून-चूसते हैं वह आराम से बाग में आरामगाह पर बैठते हैं, आलीशान बंगलों में रहते हैं। इस स्थिति पर क्रोधित होकर कवि कुकुरमुत्ते के माध्यम से पूंजीपतियों के प्रतीक गुलाब को फटकार लगाता है-

"अबे, सुन बे गुलाब,

भूल मत जो पाई खुशबू, रंग-ओ-आब,

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।"

इन पंक्तियों में कवि की आंतरिक संवेदना है जो इस स्थिति को समाप्त करना चाहता है। कुकुरमुत्ता नितांत उपेक्षित एवं सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है। जिसे अपनी हीनता के बोध होने से पूंजीपति जैसे गुलाब से घृणा है। निराला ने कविता में एक जगह अत्यंत तीखे अंदाज में लिखा है-

"रोज पड़ता रहा पानी, तू हरामी खानदानी।"

यहां कवि का विद्रोही रूप सामने आता है। निराला ने जहां-जहां विषमता देखी वहां-वहां आवाज़ उठाई। निराला ने स्थिति को बदलने के लिए 'कुकुरमुत्ता' के माध्यम से जन चेतना लाने का प्रयास किया है। कुकुरमुत्ता भले ही गंदगी में उगा हो पर वह स्वाभिमानी है और सर्वहारा वर्ग के काम आने वाला है।

कविता में निराला ने पूंजीपतियों का पर्दाफाश किया है। कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी है जिसमें शोषकों के प्रति घृणा एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति है। वह स्वयं को कुकुरमुत्ते की भान्ति उपेक्षित व्यक्ति मानते थे इसलिए अपने आक्रोश को गालियों के रूप में भी प्रस्तुत किया है।

कुकुरमुत्ते ने विश्व की हर महत्त्वपूर्ण चीज से अपने को जोड़कर अपनी महत्ता सिद्ध की है-

"दिगंबर का तानपूरा, हसीना का सुर बहार.....

..... हो या युरोपियन"।

कवि ने समाज के उस वर्ग पर भी प्रहार किया है, जो केवल अभिजात्य वर्ग के साहित्य को ही साहित्य मानता है। वे कवि एवं आलोचकों पर कड़ा प्रहार करते हैं। वे कवियों को भी दो वर्गों में रखते हैं-एक इलियट वर्ग के कवि जो गुलाब जैसे शोषक प्रवृत्ति के हैं तथा दूसरे वर्ग के कवि जो निराला जैसे सामान्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले कुकुरमुत्ते जैसे शोषित हैं। निराला समकालीन आलोचकों पर खिन्न थे। उनका यह क्षोभ यहां प्रकट हुआ है-

"कहीं का रोड़ा, कहीं का पत्थर,

टी.एस. इलियट ने जैसे दे मारा

हाथ, कहां, लिख दिया जहां सारा।"

कवि को स्वयं साहित्यिक समाज में शोषण का शिकार होना पड़ा। उनकी सन् 1916 में लिखी कविता 'जुही की कली' सरस्वती पत्रिका से अश्लील कहकर लौटा दी थी। इतना ही नहीं उनके मुक्त छन्द को केंचुआ छन्द, रबड़ छंद कहकर उपेक्षित कर दिया था।

'कुकुरमुत्ता' का सामाजिक अनुशीलन करने पर हमें तत्कालीन समाज की स्थिति का पता चलता है कि किस तरह पूंजीपति वर्ग अपने स्वार्थ हेतु श्रमिकों का शोषण करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'कुकुरमुत्ता' कविता तत्कालीन समाज की स्थिति का दहकता हुआ दस्तावेज है।

9.3.3.1 स्व-मूल्यांकन : ग

प्रिय विदार्थियों ! आपने निराला की वह तोड़ती पत्थर, भिक्षुक और कुकुरमुत्ता तीनों कविताओं का अधययन किया। जिसमें से पहली दो कविताओं का आप स्व मूल्यांकन कर अपने ज्ञान का निरिक्षण भी कर चूके हैं। अब आप निम्न प्रश्नों का उत्तर सही या गलत (सही/गलत) चिह्न द्वारा देकर कुकुरमुत्ता कविता के अध्ययन का मूल्यांकन करें।

1. कुकुरमुत्ता कविता 1942 में लिखी गई हैं। ( )
2. इस कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी है। ( )
3. कार्ल मार्क्स ने सामाजिक विषमताओं को एक एतिहासिक तथ्य माना है।( )
4. कुकुरमुत्ता निराला की एक लघु कविता है। ( )
5. इस कविता में प्रथम विश्वयुद्ध के साथ पनपती हुई सामन्ती-पूंजीवादी व्यवस्था का चित्रण है। ( )
6. यह कविता तीन खण्डों में विभक्त है। ( )
7. कुकुरमुत्ता-श्रमिक, सर्वहारा शोषित वर्ग का प्रतीक है। ( )
8. कवि कुकुरमुत्ता के माध्यम से सर्वहारा के प्रतीक गुलाब को फटकार लगाता है।( )
9. कुकुरमुत्ता गंदगी में उगता है। ( )
10. 'जुही की कली' कविता सरस्वती पत्रिका से अश्लील कहकर लौटा दी गई थी।( )

9.5 कठिन शब्द

1. उदात्तता-अत्यंत अच्छा
2. अन्तभूर्त - भीतर समाया हुआ
3. अकिंचन -अतिनिर्धन, दरिद्र
4. अट्टालिका- किसी ऊँची इमारत का सबसे उपरी कक्ष, कोठा
5. मूर्धन्य-मूर्धा से उच्चरित ध्वनि, सर्वश्रेष्ठ, उच्चतम

9.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1 'भिक्षुक' और 'कुकुरमुत्ता' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

प्र. 2 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के सार पर प्रकाश डालिए।

9.7 उत्तर कुंजी

9.3.1.1. 1. इलाहाबाद 2. गुरू 3. 1935 प्रगतिवादी 5. प्रगतिवादी 6. सर्वहारा वर्ग 7. पूंजीवादी

9.7 उत्तर कुंजी

9.3.1.1. 1. इलाहाबाद 2. गुरू 3. 1935 प्रगतिवादी 5. प्रगतिवादी 6. सर्वहारा वर्ग 7. पूंजीवादी

9.3.2.1. 1. भिखारी 2. भूख 3. करूणाजनक 4. आत्मसम्मान 5. झोली 6. दो 7. पेट 8. जूठी पत्तलें 9. कुत्ते 10. अभिमन्यु

9.3.3.1. 1. गलत 2. सही 3. सही 4. गलत 5. गलत 6. गलत 7. सही 8. गलत 9. सही 10. सही

9.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2020
2. निराला, इन्द्रनाथ मदान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008
3. आत्महन्ता आस्था निराला, डॉ. दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2014
4. कविता के नए प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1982

कुकुरमुत्ता की प्रतीक योजना

रूपरेखा

10.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
10.2 प्रस्तावना
10.3 'कुकुरमुत्ता' की प्रतीक योजना
10.4 स्व-मूल्यांकन: (क)
स्व-मूल्यांकन: (ख)
स्व-मूल्यांकन: (ग)
10.5 निष्कर्ष
10.6 कठिन शब्द
10.7 अभ्यासार्थ प्रश्न
10.8 उत्तर कुंजी
10.9 पठनीय पुस्तकें

10.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको निराला की 'कुकुरमुत्ता' कविता की प्रतीक योजना से परिचित करवाना है।

इस पाठ का अध्ययन करने के उपरांत आप निराला की कविता 'कुकुरमुत्ता' की प्रतीक योजना को समझने में सक्षम होंगे। साथ ही आप यह जान सकेंगे कि छायावादी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें प्रतीकों के माध्यम से ही विविध रूपों, भावों, मनोवृत्तियों, आध्यात्मिक संकेतों, प्रेम व्यापारों आदि का अद्भुत एवं मनोरम वर्णन किया गया है तथा भाव, रूप एवं कर्म संबंधी सौन्दर्य के एक-से-एक अनोखे चित्र अंकित किए गए हैं।

10.2 प्रस्तावना

महाप्राण निराला ने प्रकृति के उन्मुक्त सौन्दर्य-सिन्धु से अपने सामान्य प्रतीकों का चयन करके विविध रूपों एवं भावों की अभिव्यक्ति की है। निराला की अभिव्यक्ति के रूप एवं भाव-दोनों के प्रतीक विद्यमान हैं, क्योंकि जहाँ निराला किसी व्यक्ति या पदार्थ का चित्रण करने के लिए किसी प्रतीक का प्रयोग करते हैं, वहाँ अनायास ही रूप के चित्रण के साथ-साथ किसी-न-किसी भाव का चित्र भी सजीव एवं साकार हो उठता है : जैसे 'जुही की कली' कविता में कवि ने एक सलज्ज नई वधू का रूप-चित्र अंकित करते हुए उसके भावों की भी अत्यन्त मनोरम व्यंजना की है-

सोती थी,

जाने कहो कैसे प्रिय आगमन वह ?

नायक ने चूमे कपोल,

डोल उठी वल्लरी की जैसे लड़ हिंडोल।

ऐसे ही 'कुकुरमुत्ता' में गुलाब को कवि ने शोषक एवं पूंजीपति वर्ग का प्रतीक बनाया है और कुकुरमुत्ता को श्रमिक, कृषक एवं सर्वहारा वर्ग का प्रतीक माना है।

10.3 कुकुरमुत्ता की प्रतीक योजना

'कुकुरमुत्ता' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की एक लम्बी और प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में कवि ने पूंजीवादी सभ्यता पर कुकुरमुत्ता के माध्यम से करारा व्यंग्य किया है। यह कविता स्वतंत्रता पूर्व सन् 1941 में लिखी गई उनकी बहुचर्चित, सामाजिक और व्यंगात्मक कविता है। इस कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी है।

इस कविता में 'गुलाब' और कुकुरमुत्ता की बातचीत है। यह दोनों ही प्रतीक रूप में हैं। गुलाब सामंती पूँजीवादी संस्कृति का प्रतीक है और कुकुरमुत्ता मजदूर, श्रमिक, सर्वहारा, शोषित वर्ग का प्रतीक है। कुकुरमुत्ता के माध्यम से निराला जन-सामान्य और मजदूरी करने वाले तथा किसानों के महत्त्व को प्रकट करते हैं। इस काव्य में प्रगतिवादी विशेषताएं हैं, परन्तु निराला का कुकुरमुत्ता बड़े ही प्रगल्भ रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है। वह अपनी प्रशंसा और महत्त्व बड़े अशिष्ट ढंग से स्थापित करता है। अतएव वह निराला जी द्वारा प्रतिष्ठित आदर्श संस्कृति का प्रतीक नहीं हो सकता। ऐसी दशा में दोनों ही निराला के व्यंग्य के पात्र हैं। न विलासिता में पला गुलाब, न संस्कृतिहीन कुकुरमुत्ता-इनमें से कोई भी मानवता की समामान्य संस्कृति का प्रतिनिधि नहीं है। निराला इस कविता में जहाँ पूंजीवादी संस्कृति पर प्रहार करते हैं, वहां सर्वहारा वर्ग को लेकर अत्यधिक प्रचारवादी प्रवृत्ति पर भी उनका तीखा आक्षेप है।

कुकुरमुत्ता कविता दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में कुकुरमुत्ता गुलाब पर व्यंग्य करता है तथा द्वितीय भाग में साम्यवादी सिद्धान्तों पर प्रहार किया गया है। भाग एक में नवाब के महल तथा उसके सुन्दर बाग का चित्रण है जिसमें फारस से मंगवाये गुलाबों की क्यारियां बनी हैं तथा सुन्दर कृत्रिम पहाड़ियां निर्मित हैं।

दूसरे भाग में बाग में गरीबों के मिट्टी के अधगड़े झोंपड़े हैं। जहां जीवन की बिडम्बनाएँ सहज ही झलक उठती हैं। इन दोनों भागों की योजना को देखकर यह भ्रम उत्पन्न होता है कि यह कविता पूँजीवाद बनाम मार्क्सवाद को केन्द्र में रखकर लिखी गई है या मार्क्सवाद तथा प्रगतिवादी संस्कारों से प्रेरित होकर। यह भ्रम तब और विस्तृत होता है जब कुकुरमुत्ता आम कम्युनिस्टों की भाषा में गुलाब को अश्लील गालियां देता है,

"अबे, सुन बे गुलाब भूल मत जो पायी खुशबु, रंग-ओ-आब,

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट, डाल पर इतरा रहा है कैपीटलिस्ट।"

यहाँ पर गुलाब पूंजीपतियों का प्रतीक है और कुकुरमुत्ता सर्वहारा अर्थात् गरीब और शोषित वर्ग का प्रतीक है। कुकुरमुत्ता गुलाब को ताना मारते हुए कहता है। तूने पूंजीपतियों के समान दूसरों का खून चूसा है तब तुझे यह खुशबू रंग और आभा प्राप्त हुई है। न जाने कितने नौकरों एवं मालियों ने तेरी देखभाल की होगी। इतना होने के बावजूद तेरे में काँटे हैं। तेरे पास जो भी आता है उसे तुझसे कष्ट ही कष्ट मिलता है। तेरा व्यवहार तो उन पूंजीपतियों की तरह है जिनसे कभी किसी को सुख नहीं मिल सकता है। तू बड़े-बड़े लोगों, राजाओं और अमीरों का प्यारा है लेकिन तू कभी साधारण वर्ग के साथ घुल-मिल नहीं सकता अर्थात् उनका प्यारा नहीं हो सकता है। यहाँ कविता में कवि ने गुलाब के माध्यम से पूँजीपतियों के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है।

कुकुरमुत्ता नितांत उपेक्षित सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है जिसे अपनी हीनता के बोध होने से पूँजीपति जैसे गुलाब से घृणा है। निराला ने कविता में एक जगह अत्यंत तीखे स्वर में लिखा है-

"तू हरामी खानदानी रोज पड़ता रहा पानी।"

कुकुरमुत्ता स्वाभिमानी व्यक्ति है जो सिर उठाकर खड़ा है। उसे उगाया नहीं जाता है वह तो स्वयं ही उग जाता है अर्थात् गरीब और शोषित व्यक्ति तो अपने संसाधनों पर ही जीवित हैं। वे कभी किसी का शोषण नहीं करते हैं। कुकुरमुत्ता गुलाब से कहता है तू तो बनावटी है जबकि मैं असली हूँ। कवि यह कहना चाहता है कि पूँजीवाद सामाजिक

व्यवस्था की देन है। यह मानवकृत होने के कारण कृत्रिम है। पूँजीवादी व्यवस्था श्रमिकों व सर्वहारा वर्ग का शोषण कर रही है।

कुकुरमुत्ता अपनी उपयोगिता बताते हुए अपने को कई रूपों में प्रक्षेपित करता है। वह अपने को छाता बताता है, जब दो कुकुरमुत्ता मिला दिए जाएं तो शिव का डमरु बन जाता है, अगर उल्टा कर दिया जाए तो माता यशोदा की मथानी बन जाता है। कुकुरमुत्ता अपने को सर्वव्यापक बताता है। कुकुरमुत्ता के माध्यम से सर्वहारा वर्ग के आत्मसम्मान को अभिव्यक्त किया गया है-

मैं कुकुरमुत्ता हूँ, पर बेन्जाइन वैसे बने

दर्शनशास्त्र जैसे।.....

निराला ने कुकुरमुत्ता के माध्यम से प्रगतिवादियों पर भी व्यंग्य करते हुए कहा है कि बहुत लोग असंगत बातें लिखकर कहीं ईंट कहीं रोड़ा जोड़कर अपने आप को टी. एस. इलियट समझने लगते हैं। निराला अपने साहित्यिक मित्रों से भी अत्यंत खिन्न थे। कविता में भी इस खिन्नता की अभिव्यक्ति की गई है। कवि का कहना है कि गुलाब काँटों से घिरा हुआ है जिसके कारण वह सामान्य वर्ग से कटा हुआ है। कविता में कुकुरमुत्ता शोषित होने के बावजूद स्वाभिमानी प्रतीत होता है। एक दिन नवाब की बेटी 'बहार' ने कुकुरमुत्ता की सब्जी खाई तो उसे बहुत पसंद आई। नवाब ने तुरन्त माली को कुकुरमुत्ता लाने का हुक्म दिया किन्तु माली ने कहा कि अब कुकुरमुत्ता नहीं है। यदि आप कहें तो गुलाब लेकर आऊँ। माली की बात सुनकर नवाब गुस्सा होकर बोले जहाँ गुलाब उगे थे, वहाँ कुकुरमुत्ता उगा दो। माली ने कहा-हुजूर कुकुरमुत्ता उगाया नहीं जा सकता है। उसका कोई बीज नहीं होता वह तो स्वयं उग जाता है-

"गुस्सा आया, कांपने लगे नवाब।

बोले, चल, गुलाब जहां थे, उगा,

सबके साथ हम भी चाहते हैं अब कुकुरमुत्ता।

बोला माली, फरमाएं मआफ़ खता,

कुकुरमुत्ता अब उगाया नहीं उगता।"

कुकुरमुत्ता निराला की सामाजिक चेतना एवं प्रयोगशील प्रकृति को निरूपित करने वाली कविता है। कुकुरमुत्ता में निराला ने अत्यधिक व्यंजक युग-बोधात्मक एवं सामाजिक प्रतीकों का प्रयोग किया है। कुकुरमुत्ता नाम भी प्रतीकात्मक है जो नये युग एवं क्रान्तिकारी सर्वहारा का बोध कराता है। कुकुरमुत्ता में-खाद समाज के सर्वहारा

शोषित वर्ग का प्रतीक है और कैपिटलिस्ट शोषक का प्रतीक है। इन प्रतीकों के माध्यम से निराला ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक वैषम्य का चित्र प्रस्तुत किया है। व्यंजना यह भी है कि अब निम्न शोषित वर्ग संघर्ष के लिए भी तत्पर है। इसी वर्ग की विजय होगी, नेतृत्व इसी को संभालना है।

कविता में अनेक पुष्पों, फलों, गंध और रंगों का विवरण आया है, जो पूँजीपतियों के ऐश्वर्य का प्रतीक है। प्रकृति का मनोरम वर्णन करते हुए निराला जी मुग्ध होकर झरने, पहाड़ी तक का वर्णन अत्यंत सहजता से करते हैं। प्रकृति के समृद्ध वातावरण में कुकुरमुत्ता गंदगी में उगता है। पूँजीपतियों को खरी-खोटी सुनाते हुए कहता है-

"जब पेट में चूहे डंड पेल रहे हों"

तब गुलाब यानी पूँजी किसी काम नहीं आती। बल्कि मजदूर किसान ही काम आते हैं जो समाज में अपनी मेहनत से पहचान बनाते हैं और पूँजीपतियों का भोजन तैयार करते हैं। कुकुरमुत्ता खुद पर अभिमान करता हुआ कहता है-

"शेर भी मुझसे गधा है।"

कुकुरमुत्ता के माध्यम से जन-साधारण और सर्वहारा की अदम्य जीवनी-शक्ति और उसकी अकृत्रिम जीवन-पद्धति का वर्णन किया गया है। कवि ने पूरी निर्ममता से, बिना किसी संकोच के निम्नवर्गीय जीवन के भयावह यथार्थ को उजागर किया है।

"जगह गन्दी, रुका सड़ता हुआ पानी
मोरियों में, जिन्दगी की लत्तरानी
बिलबिलाते कीड़े, बिखरी हड्डियां।"

सर्वहारा, श्रमिकों के जीवन में उन्हें आरामगाह नसीब नहीं होती। वे जिस जगह रहते हैं वहां चारों तरफ गंदगी है। वे न पेटभर खा पाते हैं न चैन से सो पाते हैं। जैसे कुकुरमुत्ता गन्दी जगह उगता है वैसे ही मजदूर या श्रमिक भी गंदी जगह रहते हैं लेकिन अपने स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुँचने देते। जैसे कुकुरमुत्ता अपने को बड़ा एवं गुलाब को छोटा या नीच बताता है। कवि ने माली के घर के माध्यम से सर्वहारा वर्ग के घरों का चित्रण किया है। जहां माली रहता है उस गली में गंदगी है, रहने को ईंट-झोंपड़े हैं। यहां अकेला माली ही नहीं रहता अनेक मजदूर रहते हैं। सबके घरों की यही स्थिति है। सबके परिवार इसी स्थिति में दिन काट रहे हैं।

पूँजीपति न रात को जागकर काम करते हैं और न ही दिन में फिर भी बंगलों में रहते हैं। सेहत न बिगड़े इसलिए बगीचे में घूमते हैं। यह सब शान-शौकत उन श्रमिकों के श्रम सिकरों पर टिकी है जिसका उपभोग पूंजीपति करते हैं।

इस स्थिति को बदलने के लिए निराला ने जनचेतना लाने की कोशिश की है। कुकुरमुत्ता भले ही गंदगी में उगा हो पर वह स्वाभिमानी है और सर्वहारा वर्ग के काम आने वाला है। उसे पता है कि गुलाब दूसरों के बल पर है। एक दिन पानी न दें तो सूख जाएगा-

"कली

जो चटकी अभी

सूखकर कांटा हुई होती कभी।"

शोषकों की सेवा करने में सर्वहारा वर्ग हमेशा लगा रहता है। शोषितों को किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं, ऐसा नहीं है पर न मिले तो भी जी लेता है। यहां कवि ने शोषक और शोषितों के बीच द्वंद्व स्थापित किया है, कुकुरमुत्ता कहता है-

"तू है नकली, मैं हूँ असली

तू है बकरा, मैं हूँ कौलिक।"

कविता में निराला ने पूंजीपतियों का पर्दाफाश किया है। कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी है जिसमें शोषकों के प्रति घृणा एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति है। निराला अपने को कुकुरमुत्ते की भान्ति उपेक्षित व्यक्ति मानते हैं इसलिए अपने आक्रोश को गालियों के रूप में भी प्रस्तुत करते हैं।

निराला ने 'कुकुरमुत्ता' कविता में गुलाब के माध्यम से पूंजीपतियों के दोषों को उजागर किया है। पूंजीपति वर्ग के प्रतीक गुलाब से कवि कहता है कि तुझे तो सुख-सुविधा भरा जीवन मिला है, किन्तु फिर भी तू साधारण जनता के किसी काम न आ सका जब कि मैंने अपने जीवन की लड़ाई खुद लड़ी है। इस जीवन संघर्ष में मैं आत्मसम्मान से सिर ऊंचा करके खड़ा हुआ हूँ।

कवि ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है और कहा है कि दुनिया में श्रमिकों के कारण ही सब कार्य संभव हो पाते हैं। पूँजीपति मानवता का शोषक है जबकि श्रमिक मानव मूल्यों का पोषक है। साधारण व्यक्ति संघर्ष करके बड़ा होता है। गरीब व्यक्ति का जीवन छल कपट से परे होता है। निराला ने सर्वहारा वर्ग को महत्त्व प्राप्त करने के लिए उसे पूंजीपतियों से श्रेष्ठ बताया है।

कविता में समाज के उस वर्ग पर भी प्रहार किया है, जो केवल अभिजात्य वर्ग के साहित्य को ही साहित्य मानता है। वे कवि एवं आलोचकों पर कड़ा प्रहार करते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'कुकुरमुत्ता' कविता तत्कालीन समाज की स्थिति का दहकता हुआ दस्तावेज है।

10.4 स्व-मूल्यांकन (क,ख,ग)

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ में अपने निराला द्वारा रचित कुकुरमुत्ता कविता की प्रतीक योजना का अध्ययन किया। इस अध्ययन से आपका ज्ञान कितना परिपक्ख हुआ उसका मूल्यांकन आप निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर, प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिहन द्वार देकर तथा बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वार कर सकते हैं।

(क) रिक्त स्थान भरें-

1. .....को लेकर आत्याधिक प्रचारवादी प्रवृत्ति पर भी निराला का तीखा आक्षेप है।
2. .....पूंजीपतियों का प्रतीक है।
3. कुकुरमुत्ता गुलाब को ताना देते हुए कहता है, तूने..... के समान दूसरों का खून चूसा है।
4. .....नितांत उपेक्षित सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है।
5. गुलाब.....से घिरा हुआ है जिसके कारण वह सामान्य वर्ग से कहा हुआ है।
4. .....मानवता का शोषक है जबकि.....मानव मूल्यों का पोषक है।

(ख) विद्यार्थियों आपने रिक्त स्थान भरकर तो अपने अध्ययन का मूल्यांकन कर लिया अब आप निम्न प्रश्नो के उत्तर सही या गलत चिन्ह द्वारा देकर इस पाठ से अरिजत ज्ञान का निरिक्षण करें-

1. कुकुरमुत्ता निराला की एक लम्बी कविता है। ( )
2. कुकुरमुत्ता उगया जाता है। ( )
3. माली ने कहा -हुजूर कुकुरमुत्ता उगाया नहीं जा सकता है। ( )
4. कविता में कुकुरमुत्ता स्वय को बड़ा एवं गुलाब को छोटा या नीच बताता है। ( )
5. पूँजीपति दिन-रात जागकर काम करता है इसलिए बंगलों में रहता है। ( )
6. गुलाब दूसरों के बल पर है। ( )
7. शोषकों की सेवा करने में सर्वहारा वर्ग हमेशा लगा रहता है। ( )

(ग) प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ के अध्ययन को अधिक परिपक्व बनाने के लिए अब आप बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा स्व-मूल्यांकन करें । यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते हैं तो निराशा न हो, आप इस पाठ का पुनः अध्ययन कर सकते हैं तथा उत्तर कुंजी की सहायता भी ले सकते हैं ।-

1. कुकुरमुत्ता कविता कब लिखी गई ?

   (क) 1946 (ख) 1941

   (ग) 1942 (घ) 1945

2. कुकुरमुत्ता कविता का मूल स्वर क्या है।

   (क) प्रगतिवादी (ख) छायावादी

   (ग) उत्तर य़ातावादी (घ) प्रयोगवादी

3. कुकुरमुत्ता कविता कितने भागों में विभक्त है।?

   (क) दो (ख) चार

   (ग) तीन (घ) छह

4. कुकुरमुत्ता कविता में नवाब के बाग में कहा से गुलाब मंगवा के लगाए गए हैं।

   (क) कश्मीर (ख) फारस

   (ग) चीन (घ) इंग्लेण्ड

5. गरीबों के मिट्टी के अधगड़े झोंपड़े कुकुरमुत्ता कविता के किस भाग में हैं।?

   (क) दूसरे (ख) तीसरे

   (ग) पाँचवे (घ) चौथे

6. कुकुरमुत्ता स्वंय को क्या लगता है ?

   (क) शिव का डमरू (ख) माता यशोदा की मथानी

   (ख) छाता (घ) मशरूम

7. निराला के अनुसार बहुत लोग असंगत बातें लिखकर स्वंय को क्या समझतै हैं?

   (क) आई.ए.रिचर्डस (ख) टी.एस.इलियट

(ग) लोजाईनस (घ) जान ड्राइडन

8. कुकुरमुत्ता कविता में नवाब की बेटी का क्या नाम है।?

(क) आबिदा (ख) हीना

(ग) गुल (घ) बहार

9. कविता में खाद किसका प्रतीक हैं ?

(क) गुलाब (ख) कुकुरमुत्ता

(ग) सर्वहारा शोषित वर्ग (घ) पूंजीपत्ति

10 कुकुरमुत्ता कविता में किस शैली का प्रयोग हुआ हैं?

(क) वर्णनात्मक (ख) प्रतीकात्मक

(ग) विवरणात्मक (घ) नाटकीय

10.5 निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निराला के युगबोधात्मक एवं सामाजिक प्रतीक जीवन यथार्थ के अत्यधिक निकट हैं और जन-सामान्य इनका क्षेत्र है। निराला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को भली भान्ति देख चुके थे। अनुभूतियों की कटुता के कारण उनके व्यंग्य प्रयोग में तीव्रता आ गई है। कुकुरमुत्ता कविता की संरचना व्यंग्य के धरातल पर हुई है। इसमें पूंजीवादी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है। इस प्रकार निराला ने पूंजीपतियों को अपने आक्रोश का शिकार बनाया है और सामान्य वर्ग की महत्ता का वर्णन किया है। वे कभी पूंजीपतियों पर व्यंग्य करते हैं तो कभी थोथे समाजवादियों पर। उनका व्यंग्य विविधतापूर्ण है।

सारांश यह है कि कवि निराला ने विविध प्रतीकों के द्वारा अपनी हृदयगत अनुभूतियों के बड़े ही मनोहारी चित्र अंकित किये हैं। यद्यपि कवि ने अपनी प्रतीक योजना के लिए विविध प्रकार के अलंकारों का भी उपयोग किया है, तथापि यहाँ अलंकारों का उल्लेख न करके केवल उन प्रतीकों का ही निरूपण किया गया है, जिनके माध्यम से कवि ने अपनी संपूर्ण कविता में किसी-न-किसी भाव या रूप के सौन्दर्य का चित्र अंकित किया है। संक्षेप में यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि कवि की अनुभूति जितनी उत्कृष्ट एवं उदात्त है, उसकी प्रतीक-योजना भी उतनी ही चित्ताकर्षक एवं मार्मिक जान पड़ती है और अपनी इस प्रतीक-योजना के द्वारा कवि ने भावनिरूपण की पद्धति में एक युगान्तकारी परिवर्तन भी प्रस्तुत किया है। निस्सन्देह निराला की

प्रतीक-योजना उन्नत एवं उच्चकोटि की है और इन प्रतीकों के द्वारा कवि के भावों की सशक्त अभिव्यंजना हुई है।

10.6 कठिन शब्द

1. प्रक्षेपित-ऊपर से मिलाई अथवा बिछाई गेई वस्तु
2. दर्शनशास्त्र - प्रकृति और समाज के चिंतन से संबंधित एक शास्त्र या विज्ञान
3 वैषम्य - असमानता
4 उपेक्षित - तिरस्कृत
5 प्रगलभ -वाचाल, उत्साही

10.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1 'कुकुरमुत्ता' कविता में प्रयुक्त प्रतीकों का वर्णन करें।

प्र. 2 'कुकुरमुत्ता' कविता की प्रतीक-योजना पर प्रकाश डालें ।

10.8 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन : क

(1) सर्वहारा वर्ग (2) गुलाब (3) पूंजीपत्तियों (4) कुकुरमुत्ता (5) काँटों (6) पूंजिपत्ति, श्रमिक

स्व-मूल्यांकन : ख

1. सही 2. गलत 3. सही 4. सही 5. गलत 6. सही 7. सही

स्व-मूल्यांकन (ग)

1. 1941 2. प्रतिवादी 3. दो 4. फारस 5. दूसरे 6. छाता 7. टी.एस.इलियट 8. बहार 9. सर्वहारा शोषित वर्ग 10. प्रतीकात्मक

10.9 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2020
2. निराला, इन्द्रनाथ मदान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008
3. आत्महन्ता आस्था निराला, डॉ. दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2014
4. कविता के नए प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1982

अज्ञेय का काव्य-विकास

रूपरेखा

11.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
11.2 प्रस्तावना
11.3 काव्य-प्रतिभा का उन्मेष
    11.3.1 स्व-मूल्यांकन
11.4 अज्ञेय पर अन्य कवियों का प्रभाव
    11.4.1 स्व-मूल्यांकन
11.5 अज्ञेय का काव्य-विकास
    11.5.1 स्व-मूल्यांकन
11.6 कठिन शब्द
11.6 अभ्यास हेतु प्रश्न
11.7 उत्तर कुंजी
11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको अज्ञेय के तिरपन वर्षों की काव्य यात्रा के विभिन्न पड़ावों से परिचित करवाना है।

इस पाठ के अध्ययनोपरांत आप यह ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे कि 1933 में अज्ञेय का पहला कविता संग्रह 'भग्नदूत' निकला। 1986 में अंतिम 'ऐसा कोई घर आपने देखा है' इन तिरपन वर्षों के अन्तराल में उनके चौदह संग्रह निकले। अब उनकी सब कविताएँ 'सदानीरा' शीर्षक से दो खंडों में उपलब्ध हैं।

11.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! अज्ञेय की कविता के चार चरण दिखते हैं। पहला है विद्रोह और हताशा का, दूसरा है अपने भीतर शक्ति-संचय का, तीसरा है बिना किसी आशा के आत्मदान में सार्थकता पाने का और चौथा मानवीय दायित्व-

बोध के साथ-साथ भारतीय अस्मिता की पहचान का है। पहले चरण की रचनाएँ हैं 'चिन्ता' और 'इत्यलम्', दूसरे चरण में आती हैं 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी' और 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', तीसरे में 'अरी ओ करुणा प्रभामय', 'आँगन के पार द्वार' और 'कितनी नावों में कितनी बार', चौथे में 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ', 'सागर-मुद्रा' और 'पहले में सन्नाटा बुनता हूँ' काव्य संग्रह आते हैं। इसके बाद भी अज्ञेय की कविताओं का पाँचवां चरण 'महावृक्ष की छाया में', 'नदी की बाँक पर छाया', 'ऐसा कोई घर देखा है' आदि में लक्षित है जो अस्तित्ववाद और 'ज़ेन' बौद्धधर्म की जापानी विचारधारा से प्रभावित है।

11.3 काव्य-प्रतिभा का उन्मेष

अज्ञेय जी की काव्य-प्रतिभा का उन्मेष 'भूमीरी' नचाते हुए चार वर्ष की अवस्था में ही हो गया। एक दिन भँवरी नचाकर जब वे 'नाचत है भूमि री' बोलकर ताली पीट रहे थे तभी उन्होंने चौंक कर जाना कि जो कुछ वे कह रहे हैं वास्तव में उसका अर्थ उससे अधिक है। 'आत्मनेपद' निबन्ध संग्रह में वह कहते हैं "मेरी भूमीरी नाचती है, सो तो ठीक, लेकिन अरी, भूमि, भी तो नाचती है--नाचत है भूमि री।... इससे आगे शब्द नहीं मिले, पर उसी समय मैंने जाना कि मेरी भँवरी नहीं, भूमि भी नाचती है--सारा विश्व ब्रह्माण्ड भी नाच रहा है।" तब उन्हें लगा कि उन्होंने शब्द-शक्ति को स्वायत्त कर लिया है, वह आभिष्कारक है, स्रष्टा है।

इसके बाद चिढ़ाने के निमित्त वे तुकबन्दी बना लेते थे। लगभग ग्यारहवें वर्श में गंगा पर एक स्तुति लिखी जो गंगा नदी को ही भेंट चढ़ गयी। यह कविता अंग्रेजी में थी। इसकी भाषा पर वह शैले, टेनीसन आदि की गहरी छाप मानते हैं। बाद में मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डेय, श्रीधर पाठक, हरिऔध आदि कवियों की रचनाओं से परिचय हुआ। हरिऔध जी की यशोदा का विलाप पढ़कर इन्होंने मालिनी छन्द में विलाप लिखा था--राधा का, प्रवत्स्यतपति का और वीर वधू का। 'आनन्दबंधु' पत्रिका में छपी एक कविता पर पिताजी के बन्धु रायबहादुर हीरालाल से पुरस्कार मिलने एवं उनके मित्र एवं सहयोगियों की समालोचनाओं से इन्हें बड़ी सहायता मिली। इन्हीं दिनों 'गीतांजलि' से प्रभावित कुछ रहस्यवादी गद्यगीत भी इन्होंने लिखे जो नष्ट हो गये। इनकी पहली कविता लाहौर में कॉलेज पत्रिका में छपी थी जो अब 'चिन्ता' में संकलित है। 'चिन्ता' काव्य संग्रह पर जयशंकर प्रसाद की रचनाओं की गहरी छाया है। इसमें गीत भी हैं और गद्य काव्य भी। ये कविताएँ भी 'भग्नदूत' की तरह बंदीवास के एकान्त में लिखी गयी थीं।

11.3.1 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दे और अभी तक प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन निम्न रिक्त स्थान भरके करें। यदि आप इस मूल्यांकन में सफल नहीं होते तो इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप इस पाठ में दी उत्तर कुंजी की सहायता ले सकते हैं साथ ही पाठ का पुनः अध्ययन भी करे।

1. अज्ञेय की काव्य-प्रतिभा का उन्मेष.....नचाते हुए चार वर्ष की अवस्था में ही हो गया।
2. ग्यारहवें वर्ष में अज्ञेय ने.....पर एक स्तुति लिखी जो गंगा नदी को ही भेंट चढ़ गयी।
3. ..... को यशोदा का विलाप पढ़कर अज्ञेय ने मालिनी छन्द का विलाप लिखा था।
4. .....पत्रिका में छपी एक कविता पर अज्ञेय को पिता के बन्धु रायबहादुर हीरालाल से पुरस्कार मिला।
5. .....से प्रभावित होकर अज्ञेय ने रहस्यवादी गद्यगीत लिखे।
6. अज्ञेय की पहली कविता.....में कालेज पत्रिका में छपी थी।
7. अज्ञेय के चिन्ता काव्य संग्रह पर.....की रचनाओं की गहरी छाया है।
8. चिन्ता काव्य संग्रह की कविताएँ.....की तरह बंदीवास के एकान्त में लिखी गयीं थीं।

11.4 अज्ञेय पर अन्य कवियों का प्रभाव

अज्ञेय की कविता पर प्रभाकर माचवे के अनुसार चार प्रकार के प्रभाव दिखायी देते हैं-

1. अंग्रेज़ी और अमेरिकी कविता का प्रभाव।
2. बंगाली कविता का प्रभाव।
3. हिन्दी के बड़े कवियों जैसे मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद आदि का प्रभाव।
4. जापानी कविता का प्रभाव।

अंग्रेज़ी के कवि ब्राउनिंग और डी. एच. लारेंस उनके प्रिय कवि हैं। अमेरिकी कवियों में वाल्ट विटमैन से लेकर टी. एस. इलियट और एज़रा पाउंड तक उन्होंने पढ़े थे। 'इत्यलम् के आरंभ में ही फ्रेंच कवि बोदलेअर की एक कविता का उद्धरण है। कलकत्त में रहते हुए रवीन्द्रनाथ से लेकर सुधींद्रनाथ दत्त तक की कविताएँ उन्होंने पढ़ी थीं। बुद्धदेव बसु उनके मित्र थे। संस्कृत-प्राकृत, हिन्दी की मध्ययुगीन, रीति कविता और आधुनिकों में मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर पर उन्होंने 'स्मृति लेखा में' लिखा ही है। जापान प्रवास के बाद 'अरी ओ करुणा प्रभामय', 'महावृक्ष की छाया में' तथा 'आँगन के पार द्वार' में न केवल उन्होंने जापानी 'हाइकू' के अनुवाद किये, अपितु जापान की कई बौद्ध कथाओं से वे प्रभावित हुए।

हिन्दी में इतना बहुपठित, बहुत-सी भाषाओं का जानकार, अन्य कवियों की काव्य रचनाओं को आत्मसात् करने वाला दूसरा कवि नहीं मिलता। ज्यों-ज्यों वे देश के बाहर भ्रमण करने लगे, ज्यों-ज्यों उन्होंने अनुवाद कार्य भी अंगीकृत किया। हिन्दी से अंग्रेज़ी में अपनी कविताएँ और औरों की भी उन्होंने अनूदित कीं जिससे उनका मानस-क्षितिज व्यापक होता गया। उनकी काव्य-कला निखरती गयी। उनका शब्द-शिल्प और महीन और मनोहारी बनता गया। उनकी कविता का यह विकास-क्रम उनकी विशेषताएँ समझने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

4.4.1 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विदयार्थियों ! आपने अज्ञेय के काव्य पर अन्य कवियों के प्रभाव का अध्ययन किया हैं, अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिह्न द्वारा देकर प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करें-

1. अज्ञेय की कविता पर प्रभाकर माचवे के अनुसार चार प्रकार के प्रभाव दिखायी देते हैं। ( )
2. अज्ञेय की कविता पर बंगली कविता का प्रभाव है। ( )
3. चिन्ता के आरंभ में ही फ्रेंच कवि बोदलेअर की एक कविता का उद्दहरण है। ( )
4. अज्ञेय के अपनी 'स्मृति लेखा' में रवीन्दारनाथ पर लिखा है ( )
5. जापान की कई बौद्ध कथाओं से अज्ञेय प्रभावति हुए। ( )
6. 'महावृक्ष की छाया' में अज्ञेय ने जापानी हाइकू के अनुवाद किये। ( )

11.5 अज्ञेय का काव्य-विकास

अज्ञेय आरंभ में प्रेम-कविताएँ लिखते थे। 'पूछ लूँ मैं नाम तेरा' से लेकर 'फूल कचनार के/प्रतीक मेरे प्यार के' तक अनेक गीत उनकी आरंभिक कविताओं में मिलते हैं। परन्तु उन्हें इस तरह से प्रयास वाली, तुक पर आश्रित लयबद्ध रचना से इतना जुड़ाव नहीं था। धीरे-धीरे वे मुक्त छन्द की ओर व अन्तिम दिनों में 'वाचिक परम्परा' की ओर मुड़ते गये। एक ओर उनका विद्रोही स्वर जो 'भग्नदूत में' 'मैं वह धनु हूँ, जिसे साधने में प्रत्यंचा टूट गयी है' जैसी रचना लिखवा लेता था तो दूसरी ओर वे अन्तर-मंथन वाली मनोवैज्ञानिक संवेदनाओं की सूक्ष्मता को पकड़ने वाली रचनाएँ करते जाते थे। धीरे-धीरे वे मूर्त से अमूर्त की ओर जाते हुए 'मैं वहाँ हूँ' से लेकर 'ऐसा घर कहीं देखा है' जैसी रचनाएँ लिखने लगे। एक ओर उनका गद्य सामाजिक विषयों पर बौद्धिक, तर्क-संकुल, वाद-विवादात्मक, समीक्षात्मक, विचार सघन गद्य है, दूसरी ओर उनकी कविताएँ अत्यन्त तरल और शब्द से मौन की यात्रा करती हैं। 'भग्नदूत', चिन्ता' और 'इत्यलम्' काव्य संग्रहों को छायावादी प्रभाव की सीमा में देखा जा सकता है।

1. भग्नदूत

इसका प्रकाशन सन् 1933 में हुआ। 'इत्यलम्' के प्रथम खण्ड 'भग्नदूत' में उस नाम की पुस्तक की चुनी हुई कविताएँ हैं। लेखक का अनुरोध है कि ''जो कविताएँ इस चुनाव में नहीं आईं, उनका अस्तित्व नहीं है, ऐसा मान लिया जाये।'' 'भग्नदूत' कवि के किशोर मन पर पड़े किसी गम्भीर आघात का द्योतक है। बहुत बड़े उद्देश्य की प्राप्ति को किशोर मन जितना सरल समझता है उतना सरल नहीं होता। संघर्श के सामने आने पर वह अपने को 'भग्नदूत' मान लेता है। फिर भी कवि का धैर्य टूटता नहीं है, इसलिए एक विश्वास का भाव भी उनके मन में है। यहाँ शृंगार भावना और कत्तर्व्य का द्वन्द्व भी मिलता है। एक ओर 'नूपुर की झंकार' है 'किन्तु उस पार अंधेरे में चिताएँ हैं।' 'भग्नदूत' में अभिव्यक्ति का स्वरूप लगभग छायावादी है। अनुभूति में तो रोमानीपन है ही, भाषा में बनावट अधिक है। कविताओं में 'तुक' का आग्रह अधिक है।

2. चिन्ता

इस काव्य-संकलन का प्रकाशन सन् 1942 में हुआ। 'विश्वप्रिया' और 'एकायन' दो खण्डों में नर-नारी के बीच आकर्षण के चिरन्तन संघर्ष का निरूपण है ''इसमें अज्ञेय पुरुष और स्त्री के परस्पर यौन-सम्बन्ध को पति और पत्नी के सामाजिक सम्बन्ध तक सीमित न कर चिरंतन पुरुष और चिरंतन नारी में 'गतिशील' सम्बन्ध को स्वीकार करने के पक्ष में है।'' चिन्ता का मूल विषय लारेंस की कविताओं तथा उपन्यास कृतियों से प्रभावित है।

'विश्वप्रिया' खण्ड में अज्ञेय का 'पुरुष ' असामान्य तत्त्वों से निर्मित हुआ है 'एकायन' खण्ड में नारी का स्वरूप अंकित किया गया है। इसकी कथा गद्य-पद्यमय है। पुरुष पहले नारी के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर सोचता है कि क्या इसका हृदय भी है या सिर्फ रूप ही रूप है। निकट आने पर पता चलता है कि जिसे वह मात्र रूप समझ बैठा था, उसका हृदय है। तब उसका अहं गलकर बह जाता है और उसे 'विश्वप्रिया' मिलती है। 'एकायन' खण्ड में नारी पुरुष को अपना स्वरूप बताती हुई कहती है कि वह सिर्फ रूप नहीं है, उसमें उत्तप है, दीप्ति है।

3. इत्यलम्

इसमें 'भग्नदूत' की चुनी हुई कविताओं के अतिरिक्त शेष चार भागों में 'बन्दी-स्वप्न', 'हिय हारिल', 'वंचना के दुर्ग', 'मिट्टी की ईहा' शीर्षक के अन्तर्गत समय-समय पर विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली कविताएँ संगृहीत हैं। इसे अज्ञेय का प्रथम समस्त फुटकर कविताओं का संग्रह मान सकते हैं। 'बंदी-स्वप्न' खण्ड में बंदी कवि की आत्मा का रुदन और हाहाकार व्यक्त हुआ है किन्तु इसका एक दूसरा छोर भी मिलता है जहाँ वह घृणा का गान गाता है।

'हिय हारिल' खण्ड में कवि ने सर्वप्रथम अपने विशिष्ट 'रहस्यवाद' का परिचय दिया है। वह नया इसलिए है कि वह ईश्वर की ओर उन्मुख नहीं है। 'कीर' कविता में अकेले साधक की तरह बढ़ने का भाव व्यक्ति हुआ है। 'सूर्यास्त' और 'अन्तिम आलोक' प्रकृतिपरक कविताएँ हैं।

'वंचना के दुर्ग' खण्ड में कवि की यौन कुंठाओं का प्रभाव अत्यन्त ही घनीभूत रूप से प्रकृति पर पड़ता प्रतीत होता है। जीवन के कटु यथार्थ ने कवि को यह अनुभव करने के लिए विवश कर दिया है कि ''चाँदनी सित वंचना है। सत्य तो टुंडे, नग्न, बुच्चे दई मारे पडे हैं।

'मिट्टी की ईहा' खण्ड में कवि की चेतना उसके शीर्षक के अनुरूप ही गूढ़ भाव ग्रहण कर लेती है। कुंठा और घुटन यहाँ भी कवि के व्यक्तित्व का अंग हैं तथा अनास्था और अविश्वास भी परन्तु अब वह अपनी बात स्पष्ट तः नहीं कह कर सूत्रों में व्यक्त करता है।

समग्र रूप से देखने पर 'इत्यलम्' में अहं और कुंठा, बौद्धिकता, षंका, नियति एवं लक्षणवादी दर्शन से युक्त भावनाएँ मिलती हैं।

4. हरी घास पर क्षण भर

यह कविता-संकलन सन् 1949 में प्रकाश में आया। इस संग्रह का अज्ञेय के काव्य-जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः यहीं से वे हिन्दी-संसार में नये काव्य-प्रवर्तक के रूप में विशेष रूप से जमें। उनकी कला पहले की अपेक्षा काफी निखर कर सामने आयी। 'हरी घास पर क्षण भर', 'कलगी बाजरे की', 'नदी के द्वीप' इस संग्रह की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। कवि यहाँ घिसी-घिसाई अलंकार-योजना का कायल नहीं रहा। कवि के बिम्ब एवं प्रतीकों में नयी ताजगी आ गई है। हरी घास स्वयं मुक्त जीवन के आमंत्रण की प्रतीक है। प्रस्तुत संग्रह में अज्ञेय की विचारगत भूमि में एक स्पष्ट फैलाव आ गया है। ऐसा लगता है कि जैसे उनका व्यक्तित्व अहं की घुटन और कुंठा भरे वातावरण से निकलना चाहता है। वस्तुतः ऐसा हो नहीं पाता और पुनः हमें अपने अस्तित्व के संकट से प्रताड़ित और शंकाकुल कवि के अहं की वकालत करने वाले स्वर ही सुनाई पड़ते हैं। इतना अवश्य है कि यहाँ बौद्धिकता की मात्रा अवश्य कम हो गयी है और उसका स्थान एक सहज गीतात्मकता ने ले लिया है, फलतः प्रकृति और प्रणय तथा कतिपय अन्य विषयों से सम्बन्धित कुछ रचनाएँ विशेष सुन्दर बन पड़ी हैं।

'हरी घास पर क्षण भर' संग्रह तक आते-आते अज्ञेय में विकसित व्यक्तिमूलक यथार्थ की ओर उन्मुखता प्रबल होने लगी थी। उसका स्वाभाविक परिणाम दुतरफा रहा है। एक ओर तो उनकी कविता का बाह्य और आभ्यंतर छायावादी पुट से पूर्णतः मुक्त हो सका दूसरी ओर उनकी संवेदनाएँ अधिकाधिक मानव केन्द्रित और यथार्थ हो पाई। इसके फलस्वरूप आधुनिक सभ्यता और नगर-जीवन की घुटन और विषम सामाजिक परिस्थितियों की वर्जनाओं के प्रति कवि का हृदय पूर्वाधिक सजग हुआ। कवि ने उनके बीच संत्रस्त होकर तड़पने वाले व्यक्ति मानव को पहचान लिया।

उभरे व्यक्ति-बोध और मानव के विवेक की क्षमता पर आस्थापूर्ण विश्वास रखने के कारण समाज के बीच--सामाजिक जीवन के बीच--खड़े होने पर भी उसकी कुंठाग्रस्त और वर्जनात्मक परिस्थितियाँ के साथ बेफिक्र प्रवाहित होना वे पसन्द नहीं करते। वर्जनारहित, कुंठामुक्त इकाई के समर्थक कवि इसे स्वीकार नहीं कर सकते हैं। अतः उनकी दृढ़ धारणा है कि 'हम नदी के द्वीप हैं/हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाये।'

5. बावरा अहेरी

इस संग्रह में कवि की 1950 से 1953 तक की कविताएँ संकलित हैं। इसका प्रकाशन सन् 1954 में हुआ। प्रणय और प्रकृति यहाँ भी मुख्य विषय हैं। प्रणय-

सम्बन्धी कविताओं में या तो आत्मनिवेदन है या फिर प्रेयसी के रूप का नयी दृष्टी से युक्त अंकन। प्रकृति-सम्बन्धी कविताओं में कवि अधिक सफल है और प्रकृति के रम्य चित्र उपस्थित हैं। यहाँ संवेदना का विकास हुआ है।

इस काव्य संग्रह में भी प्रेमानुभूति, प्रकृति-सम्बन्धी एवं व्यंग्यात्मक रचनाएँ हैं किन्तु यहाँ कवि की कला में निखार उत्पन्न हो गया है। अनुभूति में एक नवीन आत्म-केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है। कवि 'मौन' के समीप आता जा रहा है क्योंकि वह अनुभूति को अभिव्यक्ति के द्वारा हलका नहीं होने देना चाहता। 'आज तुम शब्द न दो', 'बावरा अहेरी', 'नखशिख', 'देहवल्ली', 'वहाँ रात', 'चाँदनी जी लो' जैसी अनेक प्रभावशाली कविताएँ इस संग्रह में हैं। 'शोशक भैया' में कवि का उद्धत विद्रोही एक नवीन रूप में उपस्थित हुआ है।

कवि में एक नवीन आस्था का उदय हो रहा है। 'यह दीप अकेला' में कवि अपने इस एकान्त विश्वास को प्रकट करता है कि यह दीप अकेला ही गर्व भरा जलता रहेगा। 'कांगड़े की छोरियाँ' लोक गीत की धुन पर एक सफल प्रयोग है। 'झरने के लिए' और 'विज्ञप्ति' कविताओं में एक जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य-संग्रह की अधिकांश कविताएँ मार्मिक एवं प्रभावशाली हैं।

6. इन्द्रधनु रौंदे हुए ये

सन् 1957 में प्रकाशित कुल 58 कविताओं वाले इस काव्य-संग्रह में अज्ञेय के संवेदना एवं शिल्प सम्बन्धी प्रयोगों की छवि परिपक्व रूप में मिलती है। इस दौर में रचना-प्रक्रिया से सम्बन्धित कविताएँ जैसे जितना 'तुम्हारा सच है', 'सर्जन के क्षण', 'मुझे तीन दो शब्द' की बानगी देखते ही बनती है। यहाँ प्रकृति को बिम्ब और अप्रस्तुत योजना के रूप में 'मरु और खेत' 'वैशाख की आँधी', 'दूर्वाचल', 'बर्फ की झील', 'सागर तट की सीपियाँ' में बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

इस संग्रह में ऐतिहासिक चेतना सम्बन्धी कविताएँ--'इतिहास का न्याय' और 'इतिहास की हवा' संकलित हैं। यह बात और है कि पूर्वपरिचित विषयों के ही यहाँ सशक्त चित्र मिलते हैं। उदाहरण के लिए कवि की सामाजिक अनुभूति को अत्यन्त ही सुस्पष्ट एवं प्रभावशाली रूप में 'मैं वहाँ हूँ' कविता में देखा जा सकता है।

7. अरी ओ करुणा प्रभामय

1959 में प्रकाशित इस काव्य-संग्रह को चार खण्डों (रोपयित्री, रूप केकी, एक चीड़ का खाका और द्वारहीन द्वार) में विभाजित किया गया है। इसमें कवि प्रयोग की

नयी दिशा में बढ़ता हुआ स्पष्ट रूप से दिख जाता है। 'रोपयित्री' खण्ड में वह विभिन्न प्रकार के आत्मानुभव व्यक्त करता है। नये कवि के नाम पर 'आत्मस्वीकार' किया गया है कि सत्य तो किसी और का था कवि ने उसमें सन्दर्भ जोड़ दिया है। मधुकोश किसी और ने काट कर लाया था, किन्तु कवि ने उसे अपने लिए निचोड़ लिया, इस प्रकार कवि अपने को आधुनिक मानता है।

'रूप केकी' खण्ड में अधिकांश कविताएँ प्राकृतिक रूपांकन की हैं। अधिकांश कविताएँ छोटे आकार की एवं भावाभिव्यंजित करने वाली हैं। 'मछलियाँ' और 'रश्मि बाण' जैसी प्रतीकात्मक कविताएँ इसी संग्रह में हैं। 'एक चीड़ का खाका' जापानी कविताओं का अनुवाद है, ये कविताएँ विभिन्न जापानी लेखकों की हैं। 'द्वारहीन द्वार' खण्ड में कवि का एक नवीन रहस्यवाद मुखर हुआ है। कवि अब आत्मान्वेशी अधिक हो गया है। संक्षेप में यह संग्रह कई प्रकार के नये प्रयोगों के साथ कवि की बढ़ती हुई रहस्योन्मुखता को रेखांकित करता है।

8. रूपाम्बरा

अज्ञेय में प्रकृति का गहरा भावन है, पर आग्रह नहीं है। प्रकृति काव्य में विशेष रुचि होने के कारण उन्होंने हिन्दी प्रकृति काव्य का एक अच्छा-खासा संकलन 'रूपाम्बरा' (1960) प्रकाशित किया है। भूमिका में कवि के प्रकृति सम्बन्धी दृष्टी कोण का विश्लेशण है। यहाँ निश्चय ही प्रकृति को ले कर एक आधुनिक दृष्टी का प्रतिपादन हुआ है।

आधुनिक कविता में प्रकृति को देखने का ढंग ही नहीं बदला, उस के प्रति मौलिक सम्बन्ध में भी परिवर्तन घटित हुआ है। अज्ञेय ने इस संग्रह का संपादन किया है।

9. आँगन के पार द्वार

इस संकलन में अज्ञेय की सन् 1959 से 1961 तक की रचनाएँ संकलित हैं। इसका प्रकाशन सन् 1961 में हुआ। कवि की इस कृति पर 1964 में साहित्य-अकादमी का पुरस्कार मिला। 'आँगन के पार द्वार' की मुख्य काव्यावस्थाओं का आदि सांचा 'हरी घास पर क्षण भर' से निकाला जा सकता है। 'आँगन के पार द्वार' संग्रह का पहला खण्ड 'अन्तः सलिला' है। इसमें 'भीतर जागा दाता', 'बना दे चितेरे' जैसी कविताओं में मौन में सत्य की अनुभूति का चित्र है। 'चक्रांत शिला' खण्ड में सत्तईस कविताएँ हैं। सभी का विषय लगभग एक-सा ही है। गहन आत्म-चिन्तन के फलस्वरूप कवि यहाँ प्रत्येक चित्र में तत्त्व दर्शन करने लगा है। इसमें बौद्ध दर्शन का प्रभाव भी लक्षित किया जा सकता है।

इस काव्य की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना 'असाध्यवीणा' है। 'हरी घास पर क्षण भर' में कवि ने मौन में कहानी कहने की बात की थी। 'असाध्य वीणा' से निकले विभिन्न स्वर 'मौन' से ही निकल सकते हैं। दर्शक यह समझते हैं कि प्रियंवद (साधक) वीणा पर ही सो गया है, वस्तुतः वह सोया नहीं है, वह अपनी सत्त को उसमें लीन कर देता है। इस प्रकार 'असाध्य वीणा' महामौन का शब्दहीन गान बन जाता है।

विद्यानिवास मिश्र का कहना है कि 'आँगन के पार द्वार' अज्ञेय के कृतित्व का चरम उत्कर्ष नहीं है, पर चरम उत्कर्ष की सबसे ज्वलन्त सम्भावना तो जरूर ही है। आरम्भ से लेकर यदि इस काव्य-संग्रह तक की कविताओं का मूल्यांकन किया जाये तो अज्ञेय की समूची काव्य-यात्रा प्रमुखतः उस आध्यात्मिक संवेदना-प्रज्ञा की तलाश से प्रेरित हुई जान पड़ती है, जिसके और मात्र जिसके सन्दर्भ में ही व्यक्तित्व और विचार, ज्ञान और भावना, आत्मा और सृष्टि की सत्त या वास्तविकता हो सकती है।

10. सुनहले शैवाल

इस संकलन का प्रकाशन सन् 1966 में हुआ। यह एक विशिष्ट प्रकार का संकलन है। विशिष्टता रचनाओं के साथ दिये गये चित्रों (फोटोग्राफ्स) से उत्पन्न की गई है। इसमें चित्रों सहित 44 कविताएँ संकलित हैं जो 'वंचना के दुर्ग', 'मिट्टी की ईहा', 'चिन्ता', 'हिय-हारिल', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये', 'अरी ओ करुणा प्रभामय', 'आँगन के पार द्वार' और 'कितनी नावों मे कितनी बार' काव्य-संकलनों से चुनकर ली गई हैं। इस संकलन की 'नृत्य-स्मृति' 'निवेदन के द्वीप', और 'भोरः आशीः' कविताएँ नयी हैं। चित्रों के कारण सम्भवतः यह संकलन पाठकों के लिए अधिक ग्राह्य हो गया है।

11. पूर्वा

1965 में प्रकाशित 'पूर्वा' अज्ञेय के तीन पूर्व प्रकाशित कविता संग्रहों -- 'भग्नदूत', 'इत्यलम्' और 'हरी घास पर क्षण भर' का समग्र प्रयास है।

12. कितनी नावों में कितनी बार

इस संग्रह में 1962 से लेकर 1966 तक की कविताएँ सम्मिलित की गयी हैं। 'कितनी नावों में कितनी बार' में अज्ञेय ने मनुष्य के प्रति अपनी गहरी संवेदना का एक नया संस्कार दिया है। इस संग्रह में एक युद्ध-सम्बन्धी कविता भी मिलती है, जो पिछले संकलनों में नहीं है। 'कितनी नावों में कितनी बार' की यात्राएँ सिर्फ बाहरी यात्राएँ नहीं हैं। उनका सम्बन्ध कवि की अन्तर्यात्रा से भी रहा है। इस संग्रह के लिए अज्ञेय को ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है।

13. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ

इस संकलन में 1965 से 1968 तक की 54 कविताएँ संकलित हैं। इस संकलन की सात कविताओं को छोड़कर शेष कविताओं को दो उपशीर्षकों में बाँटा गया है -'गूँजेगी आवाज' और 'प्रार्थना का एक प्रकार'। इस संकलन की कविताओं को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। सत्यबोध की कविताएँ, सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति देने वाली कविताएँ, प्रणयानुभूति से सम्बन्धित कविताएँ तथा आत्म-परिचयात्मक कविताएँ। कवि ने यहाँ अपने तेवर बदल दिये हैं। उन्होंने अपने अनुभवों को 'मैं उसे जानता हूँ' कहकर अधिक विश्वसनीयता और प्रौढ़ता की छाप लगायी है।

'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ' के 'गूँजेगी आवाज' खण्ड की कविताएँ देश की वर्तमान परिस्थिति से जुड़ी हुई हैं। 'आजादी के बीस बरस' के अतिरिक्त 'अहं राष्ट्री संगमनी जनानाम्', 'क्योंकि मैं', 'जनपथ राजपथ', 'केले का पेड़', 'देश की कहानी : दादी की ज़बानी' जैसी कविताएँ तीखे व्यंजन की मुद्रा और मुहावरे में चलती हैं, जो अज्ञेय के यहाँ आलोचना और अस्वीकृति का सबसे कठोर रूप है, और उन के रचना-विधान में बाद में विकसित हुआ है। इन कविताओं का मिज़ाज पूरी तरह देशी है। व्यंग्य और सहानुभूति की मिलावट में 'केले का पेड़' इस वर्ग की सबसे सशक्त रचना है। कविता व्यंग्य से आरम्भ होती है और सहानुभूति में पूरी। तत्सम की उदात्तता तद्भव की बराबरी और देशी आत्मीयता में बदल गयी है। यहाँ आकर प्रेम की कविता जैसे 'प्रार्थना का एक प्रकार' बन गयी है।

14. सागर-मुद्रा

इस संकलन में अज्ञेय की सन् 1967 से 1969 तक की 78 कविताएँ संकलित की गई हैं। इस पुस्तक के उत्तर-खण्ड में 'देलोस से एक नाव' उपशीर्शक के अन्तर्गत सोलह कविताएँ संकलित हैं जो संवेदना और शिल्प की दृष्टी से कवि की प्रौढ़ता को व्यंजित करती है। विषय की दृष्टी से इस संकलन की अनेक रचनाओं में काल की

अवधारणा व्यक्त हुई है। कई रचनाओं में कवि की प्रेमानुभूति को वाणी मिली है तथा कवि का विशिष्ट रहस्यवाद व्यंजित हुआ है। प्रकृति के अंकन में कवि जीवनानुभव को टांकने में कुशल है। इस संग्रह की अनेक प्रकृतिपरक रचनाएँ अनुभव के किसी न किसी संदर्भ से जुड़कर विशेष अर्थगर्भित हो गई हैं। 'काल की गदा', 'बालू घड़ी', 'नदी का बहना', 'गजर', 'कालस्थितिः1', 'कालस्थितिः2' कविताओं में कवि की चेतना काल के अस्तित्व से प्रभावित होकर जीवन-मर्म ढूँढ़ने की चेष्टा करती-सी प्रतीत होती है।

'सागर-मुदा' नाम की कविता के ग्यारह खण्डों में सागर की उपस्थिति विद्यमान है। कवि ने इन कविताओं में सागर और सागर तट के माध्यम से अनेक अर्थछवियों का अंकन किया है। इन कविताओं में सागर कहीं तो ब्रह्य का, कहीं चेतना के समुद्र का, कहीं महाकाल का, कहीं विराट् आत्मा का और कहीं विशालता का प्रतीक जान पड़ता है। कवि की रहस्यवादी चेतना भी इन कविताओं के माध्यम से व्यक्त हुई है।

'देलोस से एक नाव' खण्ड की कविताएँ ग्रीक भाषा की एक पुरानी, फटी हुई पुस्तक की कविताओं का हिन्दी रूपांतरण हैं। अनुवाद स्वयं अज्ञेय ने किया है।

15. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ

इस संकलन में अज्ञेय की 1970 से 1973 तक की रचानाएँ संकलित हैं। इस संकलन की कविताओं को तीन उपशीर्षकों के अन्तर्गत बाँटा गया है। 'वन झरने की धार', 'खुले में खड़ा पेड़' और 'नंदा देवी'। कवि की दार्शनिकता विशेष रूप से उभरी है। कवि के भीतर का सत्यान्वेशी मन वस्तु और घटनाओं के पीछे देखने की प्रवृत्त से सम्पन्न रहा है। इस संकलन में उनके सत्यान्वेशण की प्रवृत्त और भी तीव्र हुई-सी प्रतीत होती है। अनेक कविताओं में अस्तित्वबोध, चेतना की विभिन्न स्थितियाँ, देश, काल, जीवन और मृत्यु के संदर्भ में कवि की अनुभूति प्रकट हुई है। इस संकलन में कवि ने 'सागर-मुद्रा' नाम की तीन कविताएँ और जोड़ दी हैं। 'खुले में खड़ा पेड़' खण्ड की अनेक कविताओं में आधुनिक मूल्यों एवं विसंगतियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया गया है। 'हीरो', 'जो पुल बनायेंगे', 'बाबू ने कहा' और 'हम घूम आये शहर ' कविताओं में व्यंग्य की स्थिति देखी जा सकती है।

'नंदादेवी' खण्ड में नंदादेवी का प्राकृतिक सौन्दर्य तो अभिव्यक्त हुआ ही है साथ ही इनके माध्यम से कवि ने अपनी विभिन्न प्रकार की अनुभूतियों को भी वाणी दी है।

16. महावृक्ष के नीचे

1974 से 1976 के बीच प्रवास काल में रचित कविताओं का संग्रह 'महावृक्ष के नीचे' 1980 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में यूरोप में रहते हुए अज्ञेय ने अधिकांश कविताएँ रची हैं। जैसे 'होमोहाइडेल वर्गेसिस', 'सीमांत पर', 'क्लाइस्ट की समाधि पर' 'तीसरा चरण (ह्योएल्डर्लिन के प्रति)' कविताएँ इस दृष्टी से देखी जा सकती हैं। इस संग्रह की सर्वाधिक आकर्षक कविता 'नाच' है जो कवि की रचना-प्रक्रिया को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

17. नदी की बाँक पर छाया

इस संग्रह का प्रकाशन 1981 में हुआ। यह अज्ञेय की 1977 से 1981 के काल में रचित कविताओं का संग्रह है। यहाँ तक पहुँच कर कवि का झुकाव सामाजिक परिदृश्य एवं सामान्य जन की ओर अधिक होता गया है। 'भैंस की पीठ पर', 'उसके चेहरे पर इतिहास', 'उस के पैरों में बिवाइयाँ', 'परती का गीत', 'कहो राम, कबीर' कविताओं में सामान्य उपेक्षित मानव की ओर कवि संवेदनशील दिखाई देता है। 'मैंने पूछा क्या कर रही हो', 'भाषा-माध्यम', 'भाषा-पहचान' कवि-कर्म से जुड़ी कविताएँ हैं। 'इतिहास-बोध' इस संग्रह की महत्वपूर्ण कविता है।

18. ऐसा कोई घर आपने देखा है

इस संग्रह का प्रकाशन-वर्श 1986 है। कुल 41 कविताओं वाले इस संग्रह में अज्ञेय अपनी जीवन-यात्रा के अन्तिम पड़ाव को मानो खुली आँखों से देख रहे हैं। 'कौन खोले द्वार', 'जहाँ सुख है', 'ओ साइयाँ', 'स्वयं जब बोली चिड़िया', 'प्रतीक्षा', 'देहरी पर दीया' जैसी कविताएँ रहस्यपरक सुर में बहुत कुछ कहने की कोशिश करती हैं। मिथकीय घटना और चरित्रों की अभिव्यक्ति 'गांधारी', 'रक्तबीज', 'देवासुर' कविताओं में हुई है। प्रस्तुत संग्रह में अठारह अंतरालों वाली लम्बी कविता 'आर्फेउस' विशेष बन पड़ी है जिसमें पश्चिमी मिथकीय कथा की रचनात्मक प्रस्तुति हुई है।

19. मरुथल

1995 में अज्ञेय का काव्य-संग्रह 'मरुथल' उनके देहावसान के पश्चात् आया। इस संग्रह का वैशिष्ट्य यह है कि इसमें स्वयं कवि द्वारा खींचे गए छायाचित्रों (फोटोज़) को पुस्तक के दाहिने ओर रखा गया है और उस छायाचित्र की मूल आत्मा (संवेदना) के अनुरूप अज्ञेय द्वारा रचित कविता को बाईं ओर स्थान मिला है। कविता के साथ अन्य कलाओं का यह अन्तर्संयोजन 'मरुथल' को विशेष महत्व प्रदान करता है। पहाड़ और झरने, वृक्षों और बादलों के विविध 'मूड्स' को उन्होंने बड़ी ही कुशलता से पकड़ा है।

11.5.1 स्व-मूल्यांकन

विद्यार्थियों । इस पाठ में आपने अज्ञेय के काव्य विकास का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन निम्नलिखित बहुवकिल्पीय प्रश्नो के उत्तर देकर करें–

1. भग्नदूत चिन्ता व इत्यलय काव्य संग्रहों को किस प्रभाव की सीमा में देखा जा सकता है ?

(क) प्रगतिवादी (ख) प्रयोगवादी

(ग) अलागवावादी (घ) छायावादी

2. भग्नदूत का प्रकाशन कब हुआ ?

(क) 1931 (ख) 1935

(ग) 1933 (घ) 1934

3. कौन-सी रचना अज्ञेय के किशोर मन पर पड़े किसी गम्भीर आघात का घोतक हैं ?

(क) भग्नदूत (ख) इत्यलम

(ग) चिता (घ) महावृक्ष की छाया में

4. चिन्ता के 'एकायन' खण्ड में किसका स्वरूप अंकित है ?

(क) पुरुष (ख) बच्चे

(ग) नारी (घ) वृद्ध

5. इत्यलमं के किस खण्ड में कवि ने सर्वप्रथम अपने विशिष्ट रहस्यवाद का परिचय दिया है ?

(क) बन्दी स्वप्न (ख) हिय रिल

(ग) वंचना के दुर्ग (घ) मिट्टी की ईहा

6. कलगी बाजरे की किस काव्य संग्रह में संकलित हैं ?

(क) हरी घास पर क्षण भर (ख) बावरा अहेरी

(ग) इत्यलम् (घ) भग्नदूत

7. अज्ञेय की 1950 से 1953 तक की कविताएं किस संग्रह में संकलित हैं।

(क) इन्द्रधनु रौंदे हु ये (ख) अरी ओ करुणा प्रभामय

(ख) हरी घास पर क्षण भर (घ) बावरा अहेरी

8. 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये' काव्य संग्रह में कितनी कविताएं संकलित हैं ?

(क) 58 (ख) 68

(ग) 48 (घ) 59

9. किस काव्य संग्रह को 'रोपियत्री, रूप केकी, एक चीड़ का खाका और द्वारहीन द्वार चार खण्डों' में विभाजित किया गया है

(क) इत्यलम (ख) भग्नदूत

(ग) अरी ओ करूणा प्रभामय (घ) इन्द्रधनु रौंदे हुए ये

10. 1964 में अज्ञेय की किस कृति पर साहित्य-अकादमी पुरस्कार मिला ?

(क) किनती नावों मे कितनी बार (ख) आँगन के पार द्वार

(ग) हरी घास पर क्षण भर (घ) महावृक्ष के नीचे

11. अज्ञेय को किस संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला ?

(क) कितनी नावों मे किनती बार (ख) आँगन के पार द्वार

(घ) हरी घास पर क्षण भर (घ) महावृक्ष के नीचे

12 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ' में किस समय की रचनाएं हैं ?

(क) 1959-1961 (ख) 1965-1968

(ग) 1967-1969 (घ) 1950-1953

13 'सागर मुद्रा' के 'देलोस से एक नाव' उपशीर्षक के अन्तर्गत कितनी कविताएं संकलित हैं?

(क) 14 (ख) 16

(ग) 18 (घ) 20

14 'पहले मैं सन्नाहा बुनता हँ' संग्रह को कितने उपशीर्षकों में बाँटा गया है ?

(क) चार (ख) तीन

(ग) दो (घ) पाँच

15 'इतिहास-बोध' किस संग्रह की महत्वपूर्ण रचन है ?

(क) महावृक्ष के नीचे (ख) नदी की बाँक पर छाया

(ग) मरूथल (घ) ऐसा कोई घर आपने देखा है।

11.6 कठिन शब्द

1. छायाचित्र - फोटो, तस्वीर

2. पड़ाव - ठहराव

3. परिदृश्य - चारों ओर दिखने

4. सत्यान्वेषण - सत्य की खोज

5. अर्थगर्भित - अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण

6. परिपक्व- प्रौढ, विकसित

11.7 अभ्यास हेतु प्रश्न

प्र. 1 अज्ञेय में काव्य प्रतिभा का उन्मेष कैसे हुआ?

प्र. 2 छायावाद से प्रभावित अज्ञेय के प्रारम्भिक कविता संग्रहों का विवेचन कीजिए।

प्र. 3 नयी कविता के दौर में रचे गये अज्ञेय के कविता संग्रहों का विवेचन कीजिए।

प्र. 4 अज्ञेय की काव्य यात्रा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

11.8 उत्तर कुंजी

11.3.1: 1. भूमीरी 2. गंगा 3. हरिऔध 4. आनन्दबंधु 5 गीतांजलि 6 लाहौर 7 जयशंकर प्रसाद 8 भग्नदूत

11.4.1: 1. सही 2. सही 3. गलत 4. गलत 5. सही 6 सही

11.5.1: 1. छायावादी 2. 1933 3. भग्नदूत 4. नारी 5. हिय हारिल 6. हरि घास पर क्षण भर 7. बावरा अहेरी 8. 58 9. अरी ओ करूणा प्रकामय 10. आँगन के पार द्वार 11. किनती नावों में कितनी बार 12. 1965-1968 13. 16 14. तीन 15. नदी की बाँक पर छाया

11.9 पठनीय पुस्तकें

1. डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी - अज्ञेय कवि
2. डॉ. गंगाप्रसाद विमल - अज्ञेय का रचना-संसार
3. ए. अरविन्दाक्षण - अज्ञेय काव्य में प्राग्बिंब और मिथक
4. प्रभाकर माचवे - अज्ञेय
5. रमेशचन्द्र शाह - अज्ञेयः वागर्थ का वैभव
6. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः एक कृति के बहाने
7. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः चिन्तन और काव्य
8. राजेन्द्र प्रसाद - अज्ञेयः कवि और काव्य
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी - अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या
10. डॉ. सूरजप्रसाद मिश्र - आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व अंकन

अज्ञेय के काव्य में व्यक्ति और समाज

रूपरेखा

12.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

12.2 प्रस्तावना

12.3 व्यक्ति और समाज

12.4 स्व-मूल्यांकन: (क,ख,ग)

12.5 कठिन शब्द

12.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

12.7 उत्तर कुंजी

12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको अज्ञेय के काव्य में व्यक्ति और समाज की नयी संकल्पना और उसके औचित्य से परिचित करवाना है।

इस पाठ का अध्ययन करने के उपरांत आपको यह समझ आएगा कि अज्ञेय के काव्य में व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व और समाहार है। यह द्वन्द्व 'मैं' के स्वाभिमान का नहीं अपितु 'मैं' को बनाये रखते हुए किस प्रकार सामाजिकता को पुष्ट किया जाये, इस आधार का है। अज्ञेय को निरा व्यक्तिवादी या घोर असामाजिक कहने की जो मुहिम चलाई गयी उसका निराकरण भी इस अध्याय के उपरांत कर सकेंगे।

12.2 प्रस्तावना

अज्ञेय की काव्य-संवेदना में पूर्ववर्ती काव्य परम्परा से अलग लक्षणों की पहचान है। इस पहचान के परिणामस्वरूप उन्होंने 'राहों का अन्वेषण' किया है। वैयक्तिकता तक उनका काव्य सीमित नहीं वरन् उसमें स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय के लिए मानव-व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा और सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भी स्थान है। इस रूप में वह एक 'टाइप' या 'ठप्पा' बनकर अपने अस्तित्व को समाप्त नहीं करना चाहते।

दूसरी और समाज से अलग भी नहीं रहना चाहते। दरअसल वह समाज 'से' नहीं वरन् समाज 'में' अलग रहने के अभिलाषी हैं।

12.3 व्यक्ति और समाज

अज्ञेय ने देखा कि राजनीतिक दल चाहे साम्यवादी हो अथवा लोकतान्त्रिक-- पहला, सामाजिक समानता के नाम पर व्यक्ति को दबाता है और दूसरा, पूँजी और सुविधाओं के एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार करता है। परिणामतः अज्ञेय में अपनी अस्मिता का बोध जागृत हुआ। दूसरी ओर, उन्होंने जनसाधारण की पीड़ा को पहचाना। साथ ही उन्हें सामाजिक आचरण की ज़िम्मेदारी का बोध है। इस दृष्टी से इन्द्रधनु रौंदे हुए ये काव्य-संग्रह की कविता 'जितना तुम्हारा सच है' विशिष्ट है, जिसमें स्पष्ट किया गया है कि यदि हम 'व्यष्टि' अपनी मर्यादा 'कत्तव्यों' को निभाते हुए समाज 'समष्टि ' में अभिन्न मन बह सकें तो व्यष्टि-समष्टि का द्वन्द्व ही नहीं रहेगा। हमें इस सच्चाई का भान होना चाहिए कि 'तुम नहीं व्याप सकते; तुम में जो व्यापा है/उसी को निबाहो।' व्यष्टि को समष्टि पर अधिकार या तानाशाही जमाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि एक सीमा तक ही समाज को व्यक्ति आत्मसात् कर सकता है। अज्ञेय को अपनी सीमाओं, मर्यादाओं का ज्ञान है, उस पर भी यह विडम्बना है कि उन्हें आँख मूँदकर व्यक्तिवादी घोशित किया जाता रहा है जबकि वे दूसरे की अतृप्ति को पूर्ण करने के लिए 'मैं तुम्हारा प्रतिभू हूँ' बनकर स्वयं कष्ट भोगते हैं :

तुम्हारे साथ मैंने कष्ट पाया है
यातनाएँ सही हैं
किन्तु तुम्हारे साथ मैं मरा नहीं हूँ
क्योंकि तुमने तुम्हारा शेष कष्ट भोगने के लिए
मुझे चुना :
मैं अपने ही नहीं, तुम्हारे भी सलीब का वाहक हूँ

यहाँ अज्ञेय जीवन-संघर्ष से पस्त होने वाले कुछ लोगों को तृप्ति और पूर्णता प्रदान करने के लिए शपथ लेते हैं और इतना ही नहीं सम्पूर्ण युग की टूटन, विध्वंस की पीड़ा स्वयं लिये हुए हैं।

अज्ञेय व्यक्तित्व को पूर्णता तक पहुँचाते हैं क्योंकि खो देना, देना नहीं होता। जीवन में सब कुछ प्राप्त करते हुए वे समाज को अपनी सम्पूर्णता देते हैं क्योंकि सागर दीढ़-याचक सा सदैव माँगता ही रहा है और व्यष्टि 'लहर' ने उसे सब कुछ दिया है।

वह समाज के थपेड़ों को सहकर भी मुदित भाव से स्वयं को सौंपते हैं क्योंकि सौंपने में ही उन्हें चरम आनन्द और उल्लास मिलता है। इस आनन्द के अतिरिक्त जीवन में उन्हें अन्य किसी चीज़ की चाह नहीं है। इस समाज में ही उन्हें लय मिलेगी या जय, फिर व्यक्तित्व की पराजय कहाँ हुई? इसीलिए उन्होंने : 'सदा बढ़-चढ़ कर दिया है-/जो सदा उन्मुक्त हाथों, मुक्त मन-देता रहा है;/अन्तहीन अकूल अथाह सागर का थपेड़ा/ सदा जिसने समुद्र/छाती पर सहा है/आह! यह उल्लास, यह आनन्द, वह जाने-बहा है'।

अज्ञेय के व्यक्तित्व में सामाजिकता का आग्रह इस सीमा तक समाहित है कि वे समाज में अतृप्त, हारे हुए लोगों को पूर्ण तृप्ति भी प्रदान करते हैं और स्वयं की सिद्धि समाज को सौंपते हैं। साथ ही समाज के दलित, दमित, पीड़ित वर्ग के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। 'मैं वहाँ हूँ' कविता में परस्पर विरोधी स्थितियों को सामने रखकर श्रमरत मानव का जो मार्मिक चित्र खींचा है उसे देखते हुए उन्हें असामाजिक अथवा कोरा व्यक्तिवादी कहना कहाँ तक उचित है :

यह जो मिट्टी गोड़ता है
कोदई खाता है और गेहूँ खिलाता है
उसकी मैं साधना हूँ।
यह जो मिट्टी फोड़ता है
मड़िया में रहता और महलों को बनाता है
उसकी मैं आस्था हूँ
यह जो कज्जल-पुता खानों में उतरता है
पर चमाचम विमानों को आकाश में उड़ाता है
यह जो नंगे बदन, दम साध, पानी में धँसता है
और बाज़ार के लिए पानीदार मोती निकाल लाता है,
यह जो कलम घिसता है
चाकरी करता है, पर सरकार को चलाता है,
उसकी मैं व्यथा हूँ।
यह जो कचरा ढोता है,
यह जो झल्ली लिये फिरता है और बेघरा घूरे पर सोता है,
..... उसकी मैं कथा हूँ।

कवि द्वारा स्वयं को 'सेतु', 'प्रतिभू' कहने से उसे व्यक्तिवादी अथवा अहंवादी मानने का भ्रम होता है लेकिन यह ध्यान देने की बात है कि काव्य का 'मैं' माध्यम होता है, अभिनेय चरित्र होता है। इस तथ्य को स्वीकारने से स्पष्ट है कि अज्ञेय कोरे व्यक्तिवादी या आत्माभिव्यंजक कवि नहीं हैं। उन्हें, निरा व्यक्तिवादी या अहंवादी कहना समझदारी नहीं। खासतौर से 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये' काव्य-संग्रह में कवि चेतना पर सामाजिक आग्रह का दबाव इतना अधिक है कि सर्वाधिक पीड़ित मनुष्य के प्रति अपनी संवेदना के साथ पाठकीय संवेदना को भी जोड़ते हैं :

ओट खड़ी खम्भे के अंधियारे में चेहरे की मुर्दनी छिपाये
थकी उंगलियों से सूजी आँखों से रूखे बाल हटाती
लट की मैली झालर के पीछे से/बोलेगी
दया कीजिये, जेंटिलमैन....

अज्ञेय में सामाजिक बोध संवेदना से छनकर आया है, इसीलिए वे 'महानगर : रात' में अभिजात्य वर्ग के शोषण से पीड़ित मनुष्य की तकलीफ़ को पारदर्शी नज़र से देख लेते हैं। राष्ट्री यता की तूती बजाने और अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द का आडम्बर दिखाने वालों को अज्ञेय 'हवाई यात्रा : ऊँची उड़ान' से सामाजिक यथार्थ के ठोस धरातल पर उतारते हैं और साथ ही महलों में रहने वालों से आग्रह करते हैं कि वे कम से कम षीशों से झांककर ही सही, पर आम आदमी की व्यथा को समझें तो सामाजिक कत्तव्यों का बोध उन्हें हो सकेगा :

अपने उड़न खटोले की खिड़की को खोलो
और पैर रक्खो मिट्टी पर :
खड़ा मिलेगा/वहाँ सामने तुम को
अनपेक्षित प्रतिरूप तुम्हारा
नर, जिस की अनझिप आँखों में नारायण की व्यथा भरी है!

अज्ञेय सामाजिकता की आड़ में नारेबाजी को नहीं, वास्तविकता को प्रश्रय देते हैं उन की समष्टि गत संवेदना साधारण मानव और नारायण में अन्तर नहीं करती और इस प्रकार मानवतावादी होने का परिचय देती है। इसीलिए वे नर की बातें करते हैं उस नर की, जिसकी आँखों में परिस्थितियों की वेदना और व्यथा समाहित है।

अज्ञेय ने स्वयं को अल्पसंख्यक कहा उसका अर्थ यह नहीं कि वे अपने काव्य में अभिजात्य वर्ग, जो अल्पसंख्यक है--का बखान करते हैं वरन् वैयक्तिक वैशिष्ट्य को

महत्त्व देते हुए जनसाधारण की पीड़ा और सामाजिक दायित्व से बेचैन दिखाई देते हैं। इसीलिए उनके काव्य में व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व है और कवि-कर्म से परिचित होने के कारण द्वन्द्व का समाहार भी दृष्टी गोचर होता है। अज्ञेय का व्यक्ति-मन समाज से विछिन्न नहीं। जैसे निर्वैयक्तिकता के लिए व्यक्तित्व की पहचान ज़रूरी है तभी व्यक्तित्व का विलयन किया जा सकता है अर्थात् व्यक्तित्ववान् ही निर्वैक्तिकता के ध्येय को प्राप्त कर सकता है, उसी प्रकार व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति ही समाज में अपना योग दे सकता है।

स्पष्ट है कि मानव सामाजिक प्राणी है। उसकी स्वतन्त्रता यदि उसे व्यक्तित्व प्रदान करती है तो समाज के समक्ष नीति के घेरे में भी बाँधती है और सृजन, क्योंकि दूसरों पर अभिव्यक्ति है अतः व्यक्ति (रचनाकार) का सामाजिक होना स्वयंसिद्ध है। 'अरी ओ करुणा प्रभामय' संग्रह की 'तू-मैं' शीर्षक कविता समाज के प्रति व्यक्ति के इसी उत्तरदायित्व बोध को स्पष्ट करती है :

तू फाड़-फाड़ कर छप्पर चाहे
जिसको-तिसको देता जा
मैं मोती अपने हिय के उन में भरा करूँ।
तू जहाँ कहीं जी करे
घड़े के घड़े अमृत बरसाया कर
मैं उसकी बूँद-बूँद के संचय के हित सौ-सौ बार मरूँ।
तू सुर लोकों के द्वार खोल नित नये
राह पर नन्दन वन कुसुमाता जा-
मैं बार-बार हठ करके यह, अनन्य यह मानव-लोक वरूँ।

यहाँ पर अज्ञेय द्वारा निर्दिष्ट व्यक्ति स्वर्ग लोक और नन्दन वन का प्रलोभन त्याग कर समाज हेतु धरती पर जन्म लेने की असीम लालसा बनाये हुए है जिससे उसकी सामाजिकता सिद्ध होती है।

अज्ञेय-साहित्य में व्यक्ति स्वयं को होम करके या दान करके किसी प्रशंसा का मुखापेक्षी नहीं। वह भीड़ से नहीं; एक अकेले मानव से ही कृतार्थ हो जाता है। उस मानव से जो उसे झूठे सपने से जगाकर दुस्सह सच्चाई में तपने को बाध्य करता है :

तुम्हें नहीं तो किसे और

मैं दूँ। अपने को

(जो भी मैं हूँ ?)

तुम जिसने तोड़ा है

मेरे हर झूठे सपने को।

उनका व्यक्ति समाज 'से' स्वाधीन नहीं; समाज 'में' स्वाधीन होना चाहता है। 'पूर्वा' की कविता 'कितनी शान्ति! कितनी शान्ति!' में वे एकदम स्पष्ट कर देते हैं कि इस संदर्भ में उनमें किसी प्रकार की आत्म-प्रशंसा या अहंकार का भाव नहीं है :

जानता क्या नहीं, निज में बद्ध होकर नहीं निर्वाह?

क्षुद्र नलकी में समाता है कहीं बेथाह

मुक्त जीवन की सक्रिय अभिव्यंजना का तेज-दीप्त प्रवाह!

जानता हूँ। नहीं सकुचा हूँ कभी समवाय को देने स्वयं का दान

विश्वजन की अर्चना में नहीं बाधक था कभी इस व्यष्टि का अभिमान।

यहाँ पर अज्ञेय ने अवचेतन स्तर पर छिपी उस पीड़ा का अनुभव किया है जो उन्हें उन आलोचकों से मिली जिन्होंने अज्ञेय को व्यक्तिवादी ही नहीं; घोर असामाजिक भी करार दिया। प्रश्न यह है क्या गुलाम भारत की पीड़ा से द्रवीभूत जेल जाने वाले वात्स्यायन इतनी सहजता से व्यक्तिवादी कहे जा सकते हैं? कलाकार की भी अपनी एक दुनिया होती है और इसीलिए बाह्य संसार तथा उसके अभ्यन्तर संसार के बीच तनाव की निरन्तरता बनी रहती है, किन्तु यह तनाव ही सृजन की प्रेरणा बनता है इसीलिए प्रयोगशील कवियों में व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व निर्माणकारी है, विध्वंसकारी नहीं किन्तु आलोचकों ने प्रयोगशील काव्य को नितान्त वैयक्तिक तथा अहम् का पोशक ही माना है परिणामस्वरूप, प्रयोगशील काव्य के प्रवर्त्तक--अज्ञेय इस आक्षेप के सर्वाधिक शिकार हुए हैं जबकि स्पष्ट है कि उनका अवचेतन ही नहीं चेतन भी इस तथ्य से पूर्णतः अवगत है कि समूह की अर्चना में व्यक्ति का मन कभी बाधा उत्पन्न नहीं करता।

अज्ञेय सामूहिक विकास के लिए व्यक्तित्व का विलयन ज़रूरी मानते हैं, साथ ही समाज की भी नैतिक ज़िम्मेदारी बताते हैं कि वह ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे, जिससे व्यक्तित्व का विकास हो और इस प्रकार वह एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व के साथ अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सके। स्वाधीन कर्मी उत्तरदायित्व का अनुभव कर

मानव कल्याण के पथ पर चलते हुए प्रकट होने वाले दुखों को भोगकर भी बार-बार इस लोक का वरण करना चाहता है। 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये' की कविता 'देना जीवन' में यही आकांक्षा है कि व्यक्ति स्वयं का ही होकर न रह जाये :

सुख, दुख, तड़पन
जो भी देना इतना भर-भर
एक अहं में वह न समाय-
एक ज़िन्दगी एक मरण का घेरा जिसको बाँध न पाय
बच रहने की प्यास मिटा दे जो इसलिये अमर कर जाय।

अकारण नहीं कि अज्ञेय ने व्यक्ति के साथ समाज को विस्मृत नहीं किया, किन्तु व्यक्ति की स्वाधीनता को तिलांजलि दिलाकर व्यक्ति से यह उम्मीद नहीं रखी जा सकती कि वह सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकेगा, क्योंकि इसके लिए आत्मप्रत्यभिज्ञा वाला मनुष्य होना चाहिए। यदि समाज व्यक्ति को साँचे ढली इकाई बनाना चाहता है तो ऐसा समाज उनकी दृष्टी में घृणित है। 'अरी ओ करुणा प्रभामय' की कविता 'नया कवि : आत्मोपदेश' से स्पष्ट है कि मानव-कल्याण के मार्ग पर अकेले चलने वाले पथिक को समाज उपेक्षा की दृष्टी से न देखे :

भीड़ का मत हो, डटा रह, मगर
दिग्वद् पान्थ के समुदाय से तू
अकेला मत छूट
एकाकियों की राह?
वह भी है
मगर तब जब कि वह
सब के लिए तोड़ी गयी हो
अकेला निर्वाण?
वह भी है
अगर उसकी चाह
सभी के कल्याण के हित
स्वेच्छया छोड़ी गयी हो।

स्पष्ट है कि सामुदायिक हित हेतु यदि व्यक्ति अकेला पड़ भी जाता है तो अज्ञेय-निर्मित व्यक्ति को कोई गिला-शिकवा नहीं, क्योंकि उनके लिए निर्वाण का रूप ऐसा भी हो सकता है। 'नदी की बाँक पर छाया' की कविता 'परती का जीवन' में अज्ञेय ने महान् रचना-कर्म के लिए परम्परागत राजपथ को छोड़कर पगडण्डियों को खोजने और उन पर चलने की बात कही :

सब खेतों में
लीकें पड़ी हुई हैं
(डाल गये हैं लोग)
जिन्हें गोड़ता है समाज
उन लीकों की पूजा होती है
मैं अनदेखा
सहज
अनपुजी परती तोड़ रहा हूँ
ऐसे कामों का अपना ही सुख हैः
वह सुख अपनी रचना है
और वही है उसका पुरस्कार।

अज्ञेय जिस विशिष्ट समाज की चर्चा करते हैं, उसे साधारण अर्थ के समाज से अलगाने के लिए 'सामाजिक परिवृत्त' कहना अधिक उपयुक्त मानते हैं जिसका अर्थ आचरण और अनुभूति की समानता है। इसी अनुभूति के आधार पर 'इत्यलम्' में 'बन्दी-स्वप्न' खण्ड का बन्दी व्यक्ति 'दिवाकर के प्रति दीप' जलाने का साहस कर बैठता है :

ज्योति तुम्हारी अक्षय है पर
जला-जलाकर नहीं बनी है-
और इधर यह शिखा कम्पमय-
यह मेरी कितनी अपनी है!
मैं मिट्टी हूँ, पर तुम होओ धन्य इसे अपनाकर !
यह लो मेरी ज्योति, दिवाकर :

तिल-तिल जलकर संवेदना का विकास होने पर ही द्रवीभूत हृदय यह कहने की हिम्मत जुटा सकता है। समाज निःसन्देह अक्षय हो परन्तु अनुभूति और संवेदना का धनी व्यक्ति तृणवत् रूप में भी उस मिट्टी में पलने वाले समुदाय को अमोल निधि देता है।

अज्ञेय के लिए समाज--मानव और मानवेतर (पशु, पक्षी, प्रकृति) के साथ एक अभ्यन्तर जगत् (निजी मन की यथार्थता) का भी है। यायावरी मन जब बरसों प्राकृतिक गोद में दुलार पाता है तो उसे अपना सहभोक्ता भी मान सकता है और ऐसा होना स्वाभाविक ही है। यही कारण है कि उनकी समाज परिकल्पना में आत्मगत तत्व अपनी पहचान बनाये रखता है, जिसे इत्यलम्' संग्रह के 'हिय-हारिल' खण्ड की 'रहस्यवाद' कविता में देखा जा सकता है :

मैं भी एक प्रवाह में हूँ-
लेकिन मेरा रहस्यवाद ईश्वर की ओर उनमुख नहीं,
मैं उस असीम शक्ति से
सम्बन्ध जोड़ना चाहता हूँ-
अभिभूत होना चाहता हूँ-
जो मेरे भीतर है।
शक्ति असीम है
मैं शक्ति का एक अणु हूँ
मैं भी असीम हूँ।

यहाँ पर अज्ञेय पूर्ववर्ती काव्यधाराओं की भाँति परमशक्ति की असीमता स्वीकारते हैं, किन्तु अपनी निजता के स्तर पर असीम-अंशी का स्वयं को अंश मानते हुए व्यक्ति को भी असीम मानते हैं, लेकिन उस सर्वसत्त की खोज से पूर्व व्यक्ति स्वयं को जाने और खोजे इस बात का आह्वान भी करते हैं। इस बाह्य और अभ्यन्तर जगत् के सान्निध्य के कारण सामाजिक और व्यक्तिगत चेहरे में जितनी समानता होगी उतना ही व्यक्ति सन्तुलित और नीतिवान् है, तभी वह 'वंचना के दुर्ग' के बीच 'मुक्त है आकाश' देखने में समर्थ होता है :

कब तलक यह आत्म-संचय की कृपणता! यह
घुमड़ता त्रास!

दानकर दो खुले कर से,

खुले उर से होम कर दो स्वयं को

समिधा बनाकर!

अज्ञेय साहित्य में आत्मदान की महत्त निर्विवाद रूप से दृष्टीगोचर होती है। दरअसल मानव सामाजिक होने के नाते समाज से अलग नहीं हो सकता। दोनों के सूत्र परस्पराबद्ध हैं। समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए? व्यक्ति का समाज के प्रति आदर्श रूप और समाज का व्यक्ति के प्रति क्या कत्तर्व्य है? इस विषय पर अज्ञेय ने गहन चिन्तन किया है। अज्ञेय का व्यक्ति मन मछली रूप में चहुँ ओर से समाज रूपी सागर से घिरा हुआ है और इस विशाल भीड़ में स्वयं की पहचान ही व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाती है। समाज और व्यक्ति के

सम्बन्ध को 'अन्तरा' अन्तःप्रक्रिया के इस उद्धरण में समाहित किया जा सकता है, 'मेरा बल इस पर होगा कि मानव कैसे व्यक्तित्व को बनाये रखते हुए समष्टि कल्याण का प्रयत्न करे। क्योंकि मानव का एक स्वतन्त्र व्यक्ति है, इसलिए सामाजिक आचरण की जिम्मेदारी उस पर आ जाती है।' स्पष्ट है कि समूह से उनका सम्बन्ध सप्राण और अटूट है। व्यक्तित्व पर प्रश्रय तो है, किन्तु व्यक्ति स्वाधीन होने के नाते जिस उत्तरदायित्व को वहन करने का दम भरेगा वह अन्ततः समाज के प्रति ही होगा।

12.4 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ में आपने अज्ञेय के काव्य में व्यक्ति और समाज का अध्ययन किया है। अब आप निम्न स्व-मूल्यांकन क, ख, ग के अन्तर्गत अपने अध्ययन का मूल्यांकन कर सकते हैं। इस मूल्यांकन से यदि आपको निराशा मिलती है तो घबराएं नहीं, आप उत्तरी कुंजी की सहायता ले सकते हैं और पाठ का पुनः अध्ययन कर अपने ज्ञान को परिपक्व बना सकते हैं-

स्व-मूल्यांकन : क - रिक्त स्थान भरो

1. अज्ञेय में अपनी अस्मिता का बोध जागृत हुआ, दुसरी और, उन्होंने..... की पीड़ा को पहचाना।
2. अज्ञेय को अपनी सीमाओं का ज्ञान हैं फिर भी उन्हें आँख मूँदकर..... घोषित किया जाता रहा है।
3. .....के अतिरिक्त जीवन में उन्हें अन्य किसी चीज की चाह नहीं है।

4. अनेक द्वारा स्वंय को 'सेतु', 'प्रतिभू' कहने से उसे.....अथवा..... मनाने का भ्रम होता है।

5. .....काव्य-संग्रह में कवि चेतना पर सामाजिक आग्रह का दबाव इतना है कि वह पीडित मनुष्य के अपनी संवेदना के साथ पाठीकय संवेदना भी जोड़ते है।

6. समीष्टिगत संवेदना साधारण मानव और.....में अन्तर नहीं करती।

7. अज्ञेय के अनुसार तिल-तिल जलकर संवेदना का विकास होने पर ही.....कहने की हिम्मत जुटा सकता है।

8. अज्ञेय के लिए समाज-मानव और मानवेत्तर के साथ एक.....जगत का भी है।

9. अज्ञेय का व्यक्ति मन.....रूप में चहुँ ओर से समाज रूपी सागर से घिरा हुआ है।

स्व-मूल्यांकन: ख सही या गलत चिह्न द्वारा प्रश्नों के उत्तर दें

1. व्यष्टि को समाष्टि पर अधिकार या तानाशाही जमाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए ( )

2. अज्ञेय व्यक्तित्व को पूर्णता तक पहुँचाते हैं क्योंकि खो देना, देना ही होता है। ( )

3. अज्ञेय को सौंपने में ही चरम आनन्द और उल्लास मिलता है। ( )

4. 'मैं वहाँ हूं' कविता में परम्पर विरोधी स्थितियों को सामने रखकर श्रमरत मानव का चित्र खींचा गया है। ( )

5. अज्ञेय में सामाजिक बोध संवेदना से छनकर नहीं आया है। ( )

6. अज्ञेय-साहित्य में व्यक्ति भीड़ से नहीं, एक अकेले मानव से ही कृतार्थ हो जाता है। ( )

7. अज्ञेय का व्यक्ति समाज में स्वाधीन नहीं, समाज से स्वाधीन होना चाहता है। ( )

8. अज्ञेय सामूहिक विकास के लिए व्यक्तित्व का विलयन जरूरी नहीं मानते हैं। ( )

9. अज्ञेय साहित्य में आत्मदान की महत्ता निर्विवाद रूप से दृष्टिगोचर होती है। ( )

स्व-मूल्यांकन : ग बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'जितना तुम्हारा सच है' कविता किस काव्य-संग्रह में संकलित है ?

   (क) भग्नदूत (ख) अरी ओ करूणा प्रभामय

   (ग) इत्यलम् (घ) इन्द्रधनु रौंदे हुए थे

2. कौन दीठ-याचक सा सदैव माँगता ही रहा है ?

   (क) झरना (ख) लहर

   (ग) सागर (घ) बूँद

3. यह जो मिट्टी गोड़ता है /कोदई खाता है और गेहूँ खिलाता है / उसकी मैं साधना हूँ। ये पंक्तियां अज्ञेय की किस कविता से ली गेई हैं?

   (क्) मैं तुम्हारा प्रतिभू हूँ (ख) नदी की बाँक पर चाया

   (ख) देना जीवन (घ) मैं वहाँ हूँ

4. राष्ट्रीयता की तूती बजाने और अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द का आडम्बर दिखान वालों को अज्ञेय किस कविता से सामाजिक यथार्थ के ठोस धरातल पर उतारते हैं ?

   (क) हवाई यात्रा: ऊँची उड़ान (ख) देना जीवन

   (ख) मैं तुम्हारा प्रतिभू हूँ (घ) मैं वहाँ हूँ

5. तू-मैं कविता किस संग्रह की है ?

   (क) अरी ओ करुणा प्रभामय (ख) इन्द्रधनु रौंदे हुए ये

   (ख) पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (घ) नदी की बाँक पर छाया

6. कितनी शांति! कितनी शांति किस काव्य-संग्रह की कविता है ?

   (क्) मरूथल (ख) पूर्वा

   (ग) सागर-मुद्रा (घ) रूपाम्बरा

7. देना जीवन कविता के काव्य संग्रह का शीर्षक क्या है ?

   (क्) सागर-मुद्रा (ख) पूर्वा

   (ग) इन्द्रधुन रौंदे हुए ये (घ) रूपाम्बरा

8. नया कवि: आत्मोपदेश किस संग्रह की कविता है ?

(क) मरूथ (ख) इन्द्रधनु रौंदे हुए ये

(ग) अरी ओ करूणा प्रभामय (घ) इत्यलम्

9. परती का जीवन कविता के काव्य-संक्ह का शीर्षक क्या है?

(क) नदी की बाँक पर छाया (ख) मरूथल

(ख) (ग) पूर्वा (घ) सागर-मुद्रा

10. इत्यलम् के किस खण्ड में व्यक्ति दिवाकर के प्रति दीप जलाने का साहस कर बैठता है?

(क) हिरा-हारिल (ख) वचना के दुर्ग

(ख) मिट्टी की ईहा (घ) बन्दी-स्वप्न

12.5 कठिन शब्द

1. सन्निधरा -निकटता
2. तृणवत- तिनके के बराबर
3. आत्मप्रत्येभिज्ञा -अपने आप को जानना या पहचानना
4. विध्वांसकारी -बर्बाद करने वाला

12.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

प्र. 1 अज्ञेय के संदर्भ में व्यक्ति और व्यक्तित्व की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2 अज्ञेय की कविता में व्यक्ति का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

प्र. 3 अज्ञेय की कविता में समाज का चित्रण कीजिए।

प्र. 4 अज्ञेय की कविता में व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध स्थापित कीजिए।

12.7 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन : क

1. जनसाधारण 2. व्यक्तिवादी 3. आनन्द 4. व्यक्तिवादी, अहंवादी 5. इन्द्रधनु रौंदे हुए ये 6. नरायण 7. द्रवीभूत हृदय 8. अभ्यन्तर 9 मछली

स्व-मूल्यांकन : ख

1 सही 2 गलत 3 सही 4 सही 5 गलत 5 सही 7 गलत 8 गलत 9 सही

स्व-मूल्यांकन : ग

1. इन्द्रधनु रेंदे हुए ये 2. सागर 3. मैं वहाँ हूँ 4. हवाई यात्रा: ऊंची उडान 5. अरी ओ करूणा प्रभामय 6. पूर्वा 7. इन्द्रधनु रौंदे हुए ये 8. अरी ओ करूणा प्रभामय 9. नदी भी बाँक पर छाया 10. बन्दी-स्वप्न

12.8 पठनीय पुस्तकें

1. डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी - अज्ञेय कवि
2. डॉ. गंगाप्रसाद विमल -अज्ञेय का रचना-संसार
3. ए. अरविन्दाक्षण - अज्ञेय काव्य में प्राग्बिंब और मिथक
4. प्रभाकर माचवे - अज्ञेय
5. रमेशचन्द्र शाह - अज्ञेयः वागर्थ का वैभव
6. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः एक कृति के बहाने
7. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः चिन्तन और काव्य
8. राजेन्द्र प्रसाद - अज्ञेयः कवि और काव्य
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी - अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या
10. डॉ. सूरजप्रसाद मिश्र - आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व अंकन

निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना

रूपरेखा

13.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
13.2 प्रस्तावना
13.3 संवेदना का अभिप्राय
13.4 संवेदनागत परिवर्तन के कारण
स्व-मूल्यांकन:क
13.5 'यह दीप अकेला' कविता की मूल संवेदना
13.6 'कलगी बाजरे की' कविता की मूल संवेदना
स्व-मूल्यांकन: ख
13.7 'शब्द और सत्य' कविता की मूल संवेदना
13.8 'नदी के द्वीप' कविता की मूल संवेदना
स्व-मूल्यांकन: ग
13.9 कठिन शब्द
13.10 अभ्यास हेतु प्रश्न
13.11 उत्तर कुंजी
13.12 पठनीय पुस्तकें

13.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की चार कविताओं की मूल संवेदना से परिचित करवाना है।

इस पाठ के अध्ययन पश्चात् आप यह ज्ञान प्राप्त कर लेंगे कि संवेदना सापेक्ष होने के कारण परिवर्तनशील है, अतः युग की आधुनिकता के साथ संवेदना भी आधुनिक होती है। संवेदना में परिवर्तन किन कारणों से होता है? उन परिवर्तनों ने आधुनिक साहित्य लेखन को किस प्रकार प्रभावित किया है? साथ ही इन सभी पहलुओं की दृष्टी से निर्धारित कविताओं की मूल संवेदना से अवगत होंगे।

13.2 प्रस्तावना

अज्ञेय के लिए संवेदना का विस्तार उनके लेखकीय कर्म की चुनौती है अर्थात् वे मानते हैं कि साहित्य अप्रत्यक्ष ही सही--समाज की संवेदना को बदलता है। संवेदना में बदलाव का अभिप्राय साहित्य द्वारा प्रभावित होना है इसी को उन्होंने संस्कारित होना कहा है।

13.3 संवेदना का अभिप्राय

कवि की संवेदना का निष्पक्ष आकलन करने के लिए ज़रूरी है कि पाठक रचना में से उभरने वाली बातों और वर्णय-विषय के आधार पर संवेदना के विविध आयामों का अध्ययन करे। कवि संवेदना को ठीक-ठीक समझने के लिए आवश्यक है कि पाठक कवि के अन्तर्मन को जाँचने की चेष्टा करे, क्योंकि समाज के स्थूल और बाह्य तर्कों के आधार पर किसी भी रचनाकार और उसकी रचना का विश्लेषण समाजशास्त्र या राजनीतिक तत्त्व के आधार पर तो हो सकता है, साहित्य रूप में नहीं। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि कवि अपने अन्तर्मन को चेतनात्मक स्तर पर लाकर विचार या चिन्तन को इस प्रकार अभिव्यक्ति दे कि वह पाठकीय संवेदना को छूकर बोल उठे।

सामान्य तौर पर वेदन, संवेदन या संवेदना शब्द का अर्थ होता है--ज्ञान अथवा अनुभूति। संवेदन शब्द के मूल में 'वेद' शब्द है जिसका अर्थ भी ज्ञान ही होता है। उसी से बना 'वेदन' शब्द ज्ञान अथवा बोध-प्राप्ति की क्रिया को कहते हैं। विद् से वेद, वेद से वेदन और वेदन से संवेदन शब्द बना है। प्रत्येक शब्द में मूल धातु विद् से जुड़ा हुआ अर्थ सम्मिलित है। संवेदनीय, संवेद्य, संवेदित आदि शब्दों के प्रयोग संवेदन शब्द से निकले हैं। यदि संवेदन का उपर्युक्त अर्थ ही ग्रहण किया जाये तो 'संवेदनीय' का अर्थ होगा, अनुभव करने योग्य अथवा बोध कराने योग्य। 'संवेद्य' अनुभवगम्य का पर्याय होगा और 'संवेदित' अनुभव किया हुआ या बोध किया हुआ।

अंग्रेजी में संवेदन के करीब पड़ने वाले शब्द हैं, सेन्सेशन, फीलिंग, सेंसिटिविटी, सेंसिबिलिटी अथवा सिम्पैथी या फेलो फीलिंग। इसके अतिरिक्त इसे 'एक्ट ऑर प्रोसेस ऑफ एक्सपीयरेंसिंग' का पर्याय माना जाता है। अंग्रेजी पर्याय के अनुसार संवेदन शब्द के अन्तर्गत इन्द्रियानुभव, भावानुभव, सहानुभूति, अनुभव-प्राप्ति की प्रक्रिया आदि का समाहार हो जाता है।

साधारणतया संवेदना शब्द को अंग्रेजी के 'सेंसबिलिटी' के माध्यम से समझाने की चेष्टा की जाती है जबकि संवेदना शब्द का अर्थ संभवतः 'सेंसिबिलिटी' से अधिक गहरा एवं व्यापक है। संस्कृत के 'विद्' से व्युत्पन्न होने के कारण इसका अर्थ अंग्रेजी

शब्द सेंसेशन तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि ज्ञान, समझ, नॉलेज भी इसी की सीमा में आ जाते हैं। इस प्रकार एक सीमा तक बौद्धिक चेतना भी 'संवेदना' शब्द के अर्थ में समाहित है। इस रूप में किसी की संवेदना का अर्थ उससे इतर के साथ उसकी सम्बन्ध-चेतना है या कहें कि संवेदना मूलतः 'मम' और 'ममेतर' की सम्बन्ध-चेतना है और यह एक सुखद जानकारी है कि कवि अज्ञेय भी 'संवेदना' के अर्थ को इसी रूप में ग्रहण करते हैं ''संवेदना वह यन्त्र है जिनके सहारे जीव-व्यष्टि अपने से इतर सब कुछ के साथ सम्बन्ध जोड़ती है--वह सम्बन्ध एक साथ ही एकता का भी है और भिन्नता का भी क्योंकि उसके सहारे जहाँ जीव-व्यष्टि अपने से इतर जगत् को पहचानती है वहाँ उससे अपने को अलग भी करती है।'' इन पंक्तियों में 'जीव' के स्थान पर 'कवि' शब्द रख दिया जाये तो 'काव्य संवेदना' का अभिप्राय हमारे आगे स्पष्ट हो जाता है।

साहित्यकार को अनुभव और अनुभूति के स्तर पर कुछ गहराये, कुछ परचाये और पाठक कृति के प्रयाण के बाद कुछ बदल जाये, कृति पढ़ने से पूर्व वह जो था वह कृति पढ़ने के पश्चात् न रहे, कुछ नया उसे छुये वही संवेदना है। साहित्यकार को रचना के स्तर पर सृजन हेतु उत्प्रेरित करने वाली और पाठक को सम्प्रेषण के स्तर पर संस्कारित करने की अनुभूति का नाम संवेदना है। इस साझे की प्रक्रिया के कारण ही संवेदना की समस्याएँ और परिवर्तन के कारण सामान्यतः वही हैं जो सम्प्रेषण के हैं। अज्ञेय के लिए संवेदना ही आधुनिक संवेदना भी होती है। 'आधुनिक हिन्दी साहित्य' में संगृहीत 'साहित्य-बोध : आधुनिकता के तत्व' निबन्ध में वह संवेदना के सहारे आत्म के बाहर सबके साथ सम्बन्ध बनाते हैं। अपने से इतर के साथ सम्बन्ध जोड़ने का अर्थ हुआ कि मानवीय संवेदना अपने विस्तार के साथ नये-नये क्षेत्रों से सम्बन्ध जोड़ती हुई नैतिक बोध से जुड़ जाती है।

13.4 संवेदनागत परिवर्तन के कारण

अज्ञेय के समक्ष संवेदनागत समस्याएँ तीन उठी हैं--विज्ञान ने ईश्वर को अपदस्थ कर मनुष्य को वहाँ प्रतिष्ठापित किया, प्रकृति की नवीन परिकल्पना से मानव भी पशु और यन्त्र बन गया है। दूसरे, नैतिकता सापेक्ष होती है, रचना और गति किस तत्व की है वह तत्व संदिग्ध होने के कारण नैतिकता भी संदिग्ध हो गयी। तीसरे, संचार साधनों की प्रगति से विज्ञान की दुनिया की अयथार्थता ने यथार्थ को सन्देहास्पद बना दिया। इन सब परिवर्तनों से जीवन-दर्शन बदला और संवेदना में परिवर्तन ज़रूरी हो गया।

गुलाम भारत के समक्ष एक निश्चित लक्ष्य था--आज़ादी। परिणामतः सामाजिक एकता विद्यमान थी, किन्तु आज़ादी मिलने के बाद नये लक्ष्य को पाने की फिर कोई

एक निश्चित दिशा न रही। सर्वसाधारण में यह धारणा बन गयी कि स्वतन्त्रता उसका अपना और केवल उसी का अधिकार है और वही उसका उपभोक्ता है। राजनीतिक संगठनों ने अपने स्वार्थ की नदी में जनकल्याण के वायदों को डुबो दिया। चीन और पाक आक्रमणों से मानव की रही-सही हिम्मत ज़वाब दे गयी। चारों ओर मूल्य-संक्रान्ति का मकड़-जाल नैतिक मूल्यों को ग्रसित करने लगा। ऐसे माहौल में वैयक्तिक चेतना प्रबल होती जा रही थी, दूसरी ओर साहित्यकार सामाजिक दायित्व-बोध की प्रबल अनिवार्यता से पीड़ित होने लगा। इन सब के साथ दो विश्वयुद्धों की विभीषिका में झुलसे मानव को तीसरे महायुद्ध की आशंका भी भय और अनास्था के पाटों के बीच पीसे जा रही थी। राजनीतिक और सामाजिक धरातल पर इन परिस्थितियों के विघटनकारी परिवेश के कारण साहित्यकार की संवेदनाएँ उलझती गयीं, परिणामस्वरूप पूर्व प्रचलित साहित्यिक अन्तर्वस्तु की अवहेलना अनिवार्य हो गयी।

अब भक्त-कवियों की भाँति न तो समस्याओं के समाधान हेतु ईश्वर को धरती पर उतारने का आह्वान किया जा सकता था, क्योंकि विज्ञान ने ईश्वर को नकार दिया। रीतिकवियों के समान राज-प्रशस्ति के गीत भी वांछनीय न रहे क्योंकि अंग्रेज़ सरकार, साहित्यकार के लिए घृणा की पात्र थी और स्वतन्त्र भारत की सरकार कर्त्तव्यच्युत। इसके साथ ही आधुनिक कवियों की भाँति समकालीन रचनाकार प्रकृति को प्रेयसी नहीं मान सका, क्योंकि उसका हृदय अपने युग के संत्रास से अभिशप्त था। नये यथार्थ-बोध से प्रयोगवाद और प्रगतिवाद सामने आया और स्वप्न-भंग की स्थिति नयी कविता के केन्द्र में आ गयी।

संवेदनागत परिवर्तन को जाँचने के बावजूद अभिव्यक्तिगत परिवर्तन बनावटी हो सकता है--मुख्य बात है संवेदना को अनुभूति के स्तर पर आत्मसात् करना। अपनी ही अस्मित चिता पर सर्जक स्वयं को जलाये तभी बात बनती है अन्यथा नये संवेदन और तदनुरूप नये सम्प्रेशण की चुनौतियों को ठीक-ठीक पहचाने बिना केवल नयी पद्धतियों का मोह अराजक मुहावरेबाज़ी के सिवाय कुछ नहीं रहता, लेकिन संवेदनागत परिवर्तन जब रचनाकार के भीतर घटित होता है तो गहरी एकात्मकता और सम्पृक्ति देखने को मिलती है। संवेदना से अनछुआ कवि, शिल्प के नये प्रयोगों से तत्कालीन समाज में पानी में फेंके कंकड़ की भाँति हलचल तो मचा सकता है, किन्तु जल्दी ही स्पन्दनहीन भी हो जाता है। यदि कवि संवेदना से जुड़ा हुआ है तो संवेदनाजनित अनुभूति पुरानी नहीं होती क्योंकि उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति बनकर स्पन्दित होती रहती है।

संवेदना में परिवर्तन ऐतिहासिक काल-क्रम के अधीन नहीं है, अतः परिस्थितियों में क्रमशः आते गये परिवर्तनों और उनसे पैदा होने वाली आवश्यकताओं के अनुरूप संवेदना का स्वरूप बदलता रहता है। अज्ञेय के अनुसार संवेदना जैविक नहीं होती, क्योंकि तब तो मानवीय संवेदना का प्रश्न ही नहीं उठता, किन्तु संवेदना का सम्बन्ध सांस्कृतिक

बोध के साथ है जो अनुक्षण परिवर्तनीय है। उनके अनुसार संवेदना बाहरी स्तर पर जितनी सतही होती है, उतनी गहरी भी। इन सभी समस्याओं से जूझते हुए क्या रचनाकार रचना के माध्यम से समाज के संवेदन को छूता है? अर्थात् क्या साहित्य का धर्म समाज को परिवर्तित करना है? और यदि हाँ तो साहित्य की दृष्टी से ऐसी रचना किस काटि में आनी चाहिए? ऐसे प्रश्न संवेदना द्वारा मानव को संस्कारित करने या संस्कारवान् होने की क्रिया के साथ उठ खड़े होते हैं।

मानवीय संवेदना में व्यापक एवं सूक्ष्म स्तर पर परिवर्तन होना ही युग-परिवर्तन होना है क्योंकि "जीवन का स्रोत घटना का स्रोत नहीं है--वह चेतना का स्रोत है।" और इसी आधार पर हम इतिहास के किसी भी युग को बखूबी समझ सकते हैं--अन्यथा इतिहास मात्र घटना-क्रम ही होकर रह जायेगा। यही बात काव्य-क्षेत्र में भी है। किसी भी काव्य-युग को अथवा किसी विशिष्ट कवि को समझने के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि विभिन्न चेतना-स्रोतों के उन प्रभावों का भी अध्ययन किया जाये तो उसने ग्रहण किये हैं।

अज्ञेय की काव्य-यात्रा मात्र उनके शैल्पिक विकास की ही यात्रा नहीं है। वह एक स्वस्थ एवं उन्मुक्त कवि-मनीशी की अनवरत यात्रा है जो सभी ग्राह्य प्रभावों को निरन्तर सहज रूप से ग्रहण करती, आत्मसात् करती और इस प्रकार अपने को परिष्कृत, ताजा एवं पूर्ण करती चलती है।

अज्ञेय हिन्दी के प्रथम समर्थ कवि हैं जिन्होंने अपनी संवेदना को विज्ञान के अधुनातन षोधों एवं दर्शन की समस्त-पूर्वी और पश्चिमी-परम्परा से निरन्तर संस्कारित किया है और इस प्रभाव-ग्रहण को मुक्त मन से स्वीकार भी किया है।

स्व-मूल्यांकन : (क)

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को थोडा विश्राम दे और अभी तक प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करें -

1. कवि संवेदना को समझने के लिए आवश्यक है कि पाठक कवि के..... को जाँचने की चेष्टा करे।
2. संवेदना शब्द के मूल में 'वेद' शब्द है जिसका अर्थ भी.....ही होता है।
3. .....अनुभवगम्य की पर्याय होगा और.....अनुभव किया हुआ या बोध किया हुआ।
4. साधारणतया संवेदना शब्द को अंग्रेजी के.....के माध्यम से समझाने को चेष्टा की जाती है।
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य में संगृहीत.....निबन्ध में अज्ञेय संवेदना के सहारे आत्म के बाहर सबके साथ सम्बन्ध बनाते हैं।
6. अज्ञेय के समक्ष संवेदनागत समस्याएं.....उठी हैं।
7. गुलाम भारत के समक्ष एक निश्चित लक्ष्य था.....।
8. संवेदनागत परिवर्तन को जाँचने के बावजूद.....परिवर्तन बनावटी हो सकता है।
9. संवेदना में परिवर्तन.....काल-क्रम के अधीन नहीं है।
10. जीवन का स्रोत घटना का स्रोत नहीं है-वह.....का स्रोत है।

13.5 'यह दीप अकेला' कविता की संवेदना

अज्ञेय समाज को महत्त्व देते हैं किन्तु व्यक्ति की अपेक्षा करके नहीं व्यक्ति चाहे 'लघु मानव' ही क्यों न हो उसकी सुरक्षा तथा उसके स्वतन्त्र विकास के वे पक्षधर हैं। वे 'आडम्बरों से सुशोभित समाज के बदले कुंठा-रहित इकाई' या अकेले व्यक्ति को अच्छा समझते हैं। समाज में कभी-कभी थोड़े चतुर और प्रभावशाली व्यक्ति सत्त से जुड़ जाते हैं और सारे समाज को एक ढांचे में ढाल लेना चाहते हैं। इससे व्यक्ति का स्वतन्त्र विकास रुक जाता है। कवि ऐसे समाज का विरोध करता है।

कवि को अकेले दीपक की आस्था में विश्वास है, जो अकेला होने पर भी, लघु होने पर भी कभी काँपता नहीं। वह अपनी तुलना स्नेह से भरे हुए उस दीपक से करता है जो अकेला है किन्तु अकेला होने पर भी गर्व से भरा है। दीपक अकेलेपन में भी सुशोभित है, सार्थक है। उसके व्यक्तित्व को नश्ट करने की आवश्यकता नहीं है किन्तु यदि आवश्यक हो तो इसे पंक्ति को या समूह को दिया जा सकता है। अकेले दीपक

को गौरव देकर कवि जिस व्यक्तिवाद को प्रश्रय देता है वह मानवतावादी है किन्तु उसे पंक्ति को देने की इच्छा व्यक्त करके वह उसे समाज से जोड़ देना चाहता है। कवि का लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना से है, जिसमें व्यक्ति का महत्त्व होगा, व्यक्ति अपने अस्तित्व पर, अपनी स्वतन्त्रता पर गर्व कर सकेगा। व्यक्ति से उसकी अपेक्षा है कि यदि आवश्यकता हो तो वह समाज के हित के लिए अपने को उत्सर्ग करने के लिए प्रस्तुत रहे। इस प्रकार अज्ञेय की कल्पना के समाज में व्यक्ति और समाज दोनों का महत्त्व होगा।

व्यक्ति-वैशिष्ट्य अज्ञेय की किसी भी कविता में घोर व्यक्तिवादी स्तर पर प्रकट नहीं होता, बल्कि समाज की एक दायित्ववान, जागरुक, जीवन्त इकाई के रूप में ही उपस्थित होता है। यह अवश्य है कि व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों में व्यक्ति की सुरक्षा, कल्याण, स्वतन्त्रता, आत्म विकास के लिए सामाजिक नियमों की अच्छाई-बुराई का नाप अज्ञेय मानते हैं, क्योंकि अन्यथा सारी सामाजिकता कुछ थोड़े से लोगों की ही स्वार्थ-सिद्धि का मायाजाल बनकर रह जाती है। व्यक्ति के स्वतन्त्र, सम्पन्न एवं समृद्ध व्यक्तित्व का आग्रह एक प्रकार से समाज को अधिक चैतन्यपूर्ण, स्पन्दनशील और व्यक्तिवान बनाने का ही आग्रह है। सभी सर्जनात्मक कार्य व्यक्ति के माध्यम से ही संभव होते हैं, फिर वह काव्य हो, ('यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा ?'), सत्य की उपलब्धि हो, (पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लायेगा ?') या विचार-क्रान्ति हो ('यह समिधा : ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा।') यह सब 'अद्वितीय', 'अकेला स्नेह-भरा', 'गर्व-भरा', 'मदमाता' दीप ही कर सकता है। अगर 'गर्व' नहीं है तो अपने व्यक्तित्व की पहचान नहीं है, अतः प्रभाव भी नहीं है। यह दीप स्नेह भरा भी है, क्योंकि सिवाय स्नेह के 'विसर्जन' के समष्टि का हित संभव नहीं है। इस प्राणवान, समर्थ, सर्जनशील व्यक्तित्व का इससे अधिक सशक्त वर्णन क्या हो सकता है कि-

यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस : जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय,
यह अंकुर : फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय

इस अकेले स्नेह-भरे मदमाते दीप की यह अपराजित आस्था और समाज की अंधाधुंध टीका-टिप्पणियों के अंधकार में अपनापे से भक्त की भाँति लौ लगाना और यह कहना कि-

यह वह विश्वास नहीं, जो अपनी लघुता में भी काँपा;

यह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा,

कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुंधआते कडुवे तम में,

यह सदा-द्रवित, चिर जागरुक, अनुरक्त-नेत्र,

उल्लम्ब-बाहु, यह चिर अखण्ड अपनापा।

जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय।

और इस व्यक्तित्व को आकांक्षा यही है कि-'इसको भक्ति को दे दो।' अज्ञेय की वस्तुतः यह कविता समाज और व्यक्ति के सम्बन्धों की सच्ची व्याख्या करती है। 'नदी के द्वीप' कविता व्यक्ति की सीमाओं का संकेत करती है और 'यह दीप अकेला' उसकी शक्ति एवं समाज-सुपृक्ति का गहरा बोध कराने में समर्थ है।

उपन्यास 'नदी के द्वीप' में भुवन द्वारा गौरा को लिखे गये पत्र में अज्ञेय की व्यक्ति सम्बन्धी मान्यता स्पष्ट होती है : ''व्यक्ति का स्वतन्त्र विकास जब तक पूरा नहीं हो जाता, तब तक उसे इकाई से बाहर प्रसृत करने का प्रश्न ही नहीं उठता, वह प्रश्न तभी उठना चाहिए, जब उसके बिना विकास के मार्ग न हों।'' इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अज्ञेय की दृष्टी में स्वतन्त्र विकास के पश्चात् की स्थिति 'इकाई से बाहर प्रसृत' होना ही है।

इसी कारण यह आकस्मिक नहीं लगता कि 'नदी के द्वीप' की भाँति अपने को अलग रखने वाला कवि भी अपने को सहज भाव से पंक्तिबद्ध कर देता है :

यह दीप अकेला स्नेह भरा

है गर्व-भरा मदमाता पर

इसको भी पंक्ति दे दो।

यह कविता अज्ञेय के व्यक्तिवाद--अधिक स्पष्ट शब्दों में कहें तो वैयक्तिकतामूलक मानववाद को समझने की कुंजी है और यह भी कि यह धारणा किसी पश्चिमी दर्शन से प्रभावित न होकर मूलतः देशज विचार पद्धति से ही संस्कारित है। पुराणों में वर्णित 'तप' प्रकारान्तर से स्वतन्त्र आन्तरिक विकास की ही प्रक्रिया है जिसके पश्चात् तपस्वी का जीवन 'ममेतर' को समर्पित रहता है। स्वयं कुण्ठा मुक्त हुए बिना दूसरों को कुण्ठारहित करना कहाँ सम्भव है ?

13.6 'कलगी बाजरे की' कविता की मूल संवेदना

छायावादी काव्य रोमैंटिक काव्य मात्र नहीं है, उसमें रोमैंटिसिज़्म के तत्त्वों का कुशल उपयोग हुआ है। प्रगतिवाद ने भौतिकवादी दर्शन से प्रेरणा लेकर सजग रूप में छायावादी काव्य की रोमैंटिक वृत्त का विरोध किया, पर मूलतः प्रगतिवाद स्वयं भावावेश का काव्य था।

अज्ञेय ने प्रगतिवादी आन्दोलन को निकट से देखा-समझा था, और उन्होंने प्रयोगवादी अभियान में केवल विषयवस्तु पर नहीं, आन्तरिक सम्बन्धों को बदलने पर बल दिया। अपने विरोध या विद्रोह को भी उन्होंने ठण्डे भाव से ही व्यक्त किया :

अगर मैं तुमको
ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुंई,
टटकी कली चम्पे की
वग़ैरह, तो
यह नहीं कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।
बल्कि केवल यही :
ये उपमान मैले हो गये हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।

'वग़ैरह' का हलका और ठण्डा तिरस्कार समूचे अंश को भावात्मक स्तर पर एक साथ बांधता है। प्रगतिवादी कवि इस बात को बिना ललकारे हुए नहीं कह सकता था। रोमैंटिसिज़्म से अलग मिज़ाज के ठण्डेपन का यह आभास पहली बार अज्ञेय में मिलता है, इसीलिए अज्ञेय रोमैंटिसिज़्म विरोधी नहीं, ग़ैर रोमैंटिक हैं।

अज्ञेय एक ऐसे प्रेमी और रचनाकार हैं जिन्होंने प्रिय की स्वाधीनता को निज की स्वत्व कुप्पियों में भरना नहीं जाना। वह प्रेम में अधिकार नहीं वरन् समर्पण चाहते हैं। उन्हें खुले में खड़े पेड़ की तरह स्वाधीनता पसन्द है। संभवतः यही कारण है कि वह किसी ठप्पाई मानसिकता में विश्वास नहीं करते। उन्हें न ठप्पे से निर्मित कला पसन्द है और न ही रुढ़ हो चुकी संवेदना या भाषा उनके इस समग्र वैचारिक बोध का

परिणाम है 'कलगी बाजरे की' कविता। स्त्री देह के लिए संगमरमरी मूरत, चौदहवीं का चाँद, खंजन नयन, मीन नयन जैसे प्रयोग रूढ़ होकर कोई नवीन भाव जगाने में सक्षम नहीं रहे हैं। प्रेम और प्रिय की जो परिकल्पना अज्ञेय के यहाँ है उसकी काव्यात्मक परिणति का सशक्त उदाहरण विवेच्य कविता है। इसीलिए कवि को संदेह है कि कहीं उसकी प्रियतमा परम्परागत उपमानों प्रतीकों का प्रयोग स्वयं के लिए होता न देख यह समझने की गलती न कर दे कि कवि उसे प्रेम नहीं करता है या उसके प्रेम में कोई खोट है। वर्तमान में जैसे 'थैंक्यू', 'सॉरी', 'आई लव यू' जैसे शब्दों से संवेदना और भावों ने अपना पल्ला झाड़ लिया है वैसे ही अज्ञेय मानते हैं परम्परागत खासतौर से रीतकालीन या छायावादी ढंग की प्रेमाभिव्यक्ति उनके सरोकारों पर खरी नहीं उतरती इसीलिए वह अपनी नायिका को 'कलगी बाजरे की' या 'हरी बिछली घास कहना अधिक प्रासंगिक समझते हैं। इन दोनों उपमानों से स्पष्ट है कि अज्ञेय के लिए प्रेमिका (स्त्री) सामान्य होने के बावजूद कितने विराट् व्यक्तित्व की धनी है। ये सम्बोधन प्रिय के प्रति प्रेमी के अगाध प्रेम, समर्पण एवं निष्ठा के प्रतिबिम्ब हैं।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थीयों ! आपने अज्ञेय द्वारा रचित 'यह दीप अकेला' और 'कलगी बाजरे की' दो रचनाओं का अधययन किया है। अब आप इस अध्ययन को निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिह्न द्वारा देकर अपने ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें-

1. अज्ञेय आडम्बरो से सुशोभित समाज के बदले कुंठा-रहित इकाई या अकेले व्यक्ति को अच्छा समझते हैं । ( )
2. अज्ञेय अपनी तुलना स्नेह हीन दीपक से करता है ( )
3. कवि का लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना से है, जिसमें व्यक्ति का महत्व नहीं होगा। ( )
4. सभी सर्जनात्मक कार्य व्यक्ति के माध्यम से ही संभव होते हैं। ( )
5. 'नदी के द्वीप' कविता व्यक्ति की सीमाओं का संकेत करती है। ( )
6. यह दीप अकेला समाज-सुपृक्ति का गहरा बोध कराने में असमर्थ है। ( )
7. अज्ञेय प्रेम में अधिकार चाहते हैं। ( )
8. प्रेम और प्रिय की जो परिकल्पना अज्ञेय के यहाँ हैं उसकी काव्यात्मक परिणति का सशक्त उदाहरण 'कलगी बाजरे की' कविता है। ( )

9. रीतकालीन या छायावादी ढंग की प्रेमाभिव्यक्ति अज्ञेय के सरोकारो पर खरी उतरती है। ( )

10. अज्ञेय के लिए प्रेमिका (स्त्री) सामान्य होने के बावजूद विराह् व्यक्तित्व की धनी है। ( )

13.7 'शब्द और सत्य' कविता की मूल संवेदना

अज्ञेय एक ऐसे रचनाकार हैं जो समस्त रचना-कर्म में शब्द और सत्य की परस्पर पूरकता पर सर्वाधिक ध्यान देते हैं। रचना प्रक्रिया के तीन पड़ावों मसलन अनुभूति, तनाव और अभिव्यक्ति से प्रत्येक रचनाकार गुजरता है। समस्या यह है कि ये तीनों पड़ाव विकास की प्रक्रिया में बदल जाते हैं जिसके कारण लेखक को बार-बार शंका होने लगती है कि जो और जिस रूप में वह अभिव्यक्त करना चाहता है, वह नहीं हो पा रहा। 'अरी ओ करुणा 'प्रभामय' काव्य-संग्रह की कविता 'शब्द और सत्य' कवि-कर्म से जुड़ी इसी बेचैनी को सामने रखती है :

यह नहीं कि मैंने सत्य नहीं पाया था

यह नहीं कि मुझको शब्द अचानक कभी-कभी मिलता है :

दोनों जब-तब सम्मुख आते ही रहते हैं।

प्रश्न यही रहता है :

दोनों जो अपने बीच दीवार बनाये रहते हैं

मैं कब, कैसे उन के अनदेखे

उस में सेंध लगा दूँ

या भर कर विस्फोटक

उसे उड़ा दूँ।

इस प्रकार सृजन-प्रक्रिया के अन्तर्गत अनुभूतियों के भावन से लेकर उस प्रक्रिया तक का जिक्र होता है, जिसमें सर्जक एक अभ्यन्तर तनाव की उपस्थिति के बीच उस तनाव से मुक्ति की भी चेष्टा करता है जिसका

माध्यम अभिव्यक्ति है। कवि को ऐसी अनुभूति तो होती ही रहती है जो कविता का विषय बन सके किन्तु समस्या यह है कि उस अनुभूति को उसी रूप में वांछित शब्दों में कैसे अभिव्यक्त किया जाए।

प्राचीन आचार्यों ने कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रतिभा को नैसर्गिक मानते हुए दैव-कृपा कहा किन्तु अज्ञेय ने प्रतिभा को सज्ञान कहा। सज्ञान न होने पर प्रतिभा में कमी आती है ऐसा वह मानते हैं। कवि को विषय कैसे सूझता है, यह प्रतिभा पर निर्भर करता है। विषय पकड़ में है लेकिन यह न जान सकें कि अभिव्यक्त क्या करना चाहते हैं तब प्रतिभा का दायित्व बढ़ जाता है। इसी प्रतिभा को 'अभ्यन्तर तनाव की स्थिति' कहा गया है जो इस कविता की केन्द्रीय संवेदना बनकर प्रस्तुत हुआ है।

कवि को समझ नहीं आता कि वह प्राप्त विषय अथवा अनुभूति के आधार पर अभिव्यक्ति के कौन-से साधन अपनाये। इस पीड़ा से ही कवि के अन्तर्मन में रचना जन्म लेती है किन्तु अभिव्यक्ति के साधन जिन्हें कविता में 'शब्द' कहा गया है सटीक रूप में नहीं मिल पाते। कवि-मन के भीतर भावों की अभिव्यक्ति और बाहरी स्तर पर उनका अभिव्यक्त न होना पाना जिसे कविता में 'सत्य' कहा गया है, का तनाव ही 'शब्द और सत्य' कविता की मूल संवंदना है।

अनुभूति या तनाव का होना ही रचना नहीं है। रचना तभी संभव है जब प्राप्त सत्य की अभिव्यक्ति के अनुरूप अभिव्यक्ति के माध्यम अर्थात् उचित शब्द मिले :

कवि जो होंगे हों, जो कुछ करते हैं करें,
प्रयोजन बस मेरा इतना है-
ये दोनों जो
सदा एक-दूसरे से तन कर रहते हैं,
कब, कैसे किस आलोक-स्फुरण में
इन्हें मिला दूँ-
दोनों जो हैं बन्धु, सखा, चिर सहचर मेरे।

तनाव से मुक्ति के प्रयत्न में कवि रचना करता है किन्तु मुक्ति प्रयत्न लक्ष्य नहीं होती। यही कारण है कि एक बार सृजन-पीड़ा से मुक्त होकर सर्जक पूर्व भाव की उसी पीड़ा में पुनः नहीं आ सकता। इस प्रकार भाव, विचार के अनुसार पीड़ा का रूप बदलता रहता है। उस परिवर्तित रूप के कारण सफल अभिव्यक्ति अर्थात् अनुभूति के अनुरूप शाब्दिक अभिव्यक्ति के कुशल प्रयोग का अभाव सर्जक के भीतर तनाव की एक सतत धारा प्रवाहित करता रहता है जिसे 'शब्द और सत्य' कविता में बुना गया है। सत्य के अनुरूप शब्द का सार्थक प्रयोग ही सर्जक की योग्यता की कसौटी है।

13.8 'नदी के द्वीप' कविता की मूल संवेदना

'नदी के द्वीप' कविता प्रायः व्यर्थ ही कटु आलोचना का कारण बनी है। इसका मूल कारण उसके प्रतीकों को सतही स्तर पर ग्रहण करने में निहित है। यहाँ व्यक्ति की सीमा का आख्यान है। द्वीप की सार्थकता द्वीप होकर रहने में ही है, द्वीप जब अपनी नियति से विद्रोह करता है, तब उसकी वैयक्तिक सार्थकता नष्ट होती है और वह अनुपयोगी भी होता है। व्यक्ति को चाहिए, वह अपने आत्म-संस्कार के लिए उद्यत रहे, जीवन (तरंग) से जो दाय मिलता है, उसको स्वीकार करे, उसके परिष्कार के लिए भी तैयार रहे। परन्तु काल-प्रवाह (नदी) की धारा को वह रोक नहीं सकता। जीवन में आस्था एवं प्रेम में विश्वास रखने वाला व्यक्ति इसी सीमा को स्वीकार कर चलेगा। केवल इस सीमित रूप में ही वह कविता मार्मिक हो उठती है। यह कविता अज्ञेय के क्रान्ति विद्रोह आदि के सम्बन्ध में वैचारिक बदलाव की सूचक है।

द्वन्द्व की परिणति कवि को निष्क्रिय नियतिवादिता में ले जाती है। वह सोचने लगता है कि उसकी नियति ही यही है। वह नदी के द्वीप की तरह अलग पड़ा है। द्वीप की नियति और उसकी नियति एक ही है :

किन्तु हम हैं द्वीप।

हम धारा नहीं हैं।

स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।

किन्तु हम बहते नहीं हैं क्योंकि बहना रेत होना है।

हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं

पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ठहरेंगे। सहेंगे।

बह जायेंगे।

'धारा' से समूह के साथ चलने का बोध देता है और द्वीपवत् स्थिति से एकाकीपन में पड़े रहने का। जो व्यक्ति द्वीप की स्थिति में पड़ा हुआ है वह भला विद्रोह कैसे कर सकेगा। धारा स्थिति-विशेष को नहीं स्वीकारती किन्तु द्वीप को तो स्वीकारना ही होगा इसलिए परिस्थिति के प्रति उसका स्थिर समर्पण है। द्वीप बहता नहीं किन्तु यदि बहने की चेष्टा करेगा, भावुकता में आकर अपनी नियति के विरूद्ध चल पड़ेगा तो फिर वह टिक नहीं सकेगा। उसके पैर उखड़ जायेंगे, वह बह जायेगा और अन्ततः उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जायेगा। चूर्ण होकर भी द्वीप धारा नहीं बन पायेगा--ऐसी धारा जो अपने मार्ग में आने वाले अवरोधों को तोड़ देती है। अतः द्वीप कुछ न करने

के प्रति कृत-संकल्प है। इस प्रकार कवि का हारा हुआ 'उद्वत विद्रोही' द्वीप की स्थिति से जुड़कर निष्क्रिय नियतिवादिता में शरण लेता है।

'नदी के द्वीप' कविता में यह संकेत भी मिलता है कि कवि की नियतिवादिता स्थिर रहने वाली नहीं है। यदि किसी कारण से अथवा 'दूसरों के किसी स्वैराचार से या अतिचार से नदी उमड़ पड़े और वह कर्मनाशा और कीर्तिनाशा, काल-प्रवाहिनी बन जाये' तो यह स्थिति भी कवि को स्वीकार है। 'उसी में रेत होकर फिर से छनने, जमने और कहीं न कहीं पैर टेकने, खड़ा होने' का विश्वास उसमें जगता है।

एक दूसरे स्तर पर यह नदी संस्कृति की है और द्वीप आधुनिकता का। नदी परम्परा की भी है और द्वीप ज्ञान-विज्ञान को रूपायित करता है। संस्कृति का पूर्ण त्याग कर आधुनिक नहीं हुआ जा सकता और परम्पराओं के संवेदनशील भावुकता भरे प्रवाह के बीच नवीन वैज्ञानिक चेतना के द्वीप को सान्निध्य प्राप्त हो जाये तो ऐसी स्थिति में नदी और द्वीप अपने-अपने आस्तित्व को बनाये रखते हुए भी एक-दूसरे को सुदृढ़ता ही प्रदान करेंगे। इस प्रकार 'नदी के द्वीप' कविता संवेदना के बहुवर्ती अर्थों को रूपायित करती है।

स्व-मूल्यांकन : ग

प्रिय विद्यार्थीयों ! अज्ञेय द्वारा रचित 'शब्द और सत्य' तथा 'नदी के द्वीप' दोनों कविताओं की मूल संवेदना का अध्ययन तो आप कर चुके हैं। अब आप इस अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का निरिक्षण निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्न द्वारा करें-

1. 'शब्द और सत्य' किस काव्य-संग्रह की कविता है ?

   (क्) इत्यलम (ख) अरी ओ करुणा प्रभामय

   (ग) भग्नदूत (घ) इन्द्रधनु रौंदे हुए ये

2. अभ्यन्तर तनाव की स्थिति किसे कहा जाता है?

   (क) नैसर्गिक (ख) दैव-कृपा

   (ग) सज्ञान (घ) प्रतिभा

3. कवि-मन भीतर भावों की अभिव्यिक्त और बाहरी स्तर पर अभिव्यक्त न हो पाना, कविता में क्या कहलाता है ?

   (क) शब्द (ख) ज्ञान

   (ग) प्रतिभा (घ) सत्य

4. रचना के लिए किसी आवश्यकता होती है ?

(क) अभिव्यक्ति के अनुरूप उचित शब्द

(ख) अनुभूति

(ख) तनाव

(घ) प्रतिभा

5. सत्य के अनुरूप शब्द का सार्थक प्रयोग किस की योग्यता की कसौटी हैं ?

(क) पाठक (ख) सर्जक

(ग) श्रोता (घ) दर्शक

6. द्वीप जन अपनी नियति से विद्रोह करता है तब किसकी वैयक्तिक सार्थकता नष्ट होती है ?

(क) द्वीप (ख) नदी

(ग) तरंग (घ) काल-प्रवाह

7. 'हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं' किस कविता की पंक्ति है ?

(क) देना जीवन (ख) परती का जीवन

(ख) नदी के द्वीप (घ) शब्द और सत्य

8. 'नदी के द्वीप' कविता में द्वीप किसका प्रतीक है ?

(क) आधुनिकता (ख) परम्परा

(ग) संस्कृति (घ) भावुकता

9. 'नदी के द्वीप' कविता में नदी किसका प्रतीक है ?

(क) मन (ख) संस्कृति

(ग) वैज्ञानिक चेतना (घ) ज्ञान

13.9 कठिन शब्द

1. आकलन -अनुमान
2. वेदन -उग्र या बहुत कष्टदायक, पीड़ा
3. अनुभवगम्य-जिसे अनुभव किया जा सके
4. इन्द्रियानुभवं -इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान

5 प्रयाण -प्रस्थान, यात्रा

6. उत्प्रेरित -उत्साहित, क्रियाशील

7. इतर-अन्य, कोई और, भिन्न

8. अपदस्थ-पद से हटाया हुआ, बरख़ास्त, पदच्युत

9. आडम्बर -दिखावा

13.10 अभ्यास हेतु प्रश्न

प्र. 1 संवेदना की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2 संवेदना के जटिल होने के कारण बताइए।

प्र. 3 संवेदना परिवर्तन के कारण बताइए।

प्र. 4 अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

प्र. 5 अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

प्र. 6 अज्ञेय की कविता 'शब्द और सत्य' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

प्र. 7 अज्ञेय की कविता 'नदी के द्वीप' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

13.11 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन : (क)

1. अन्तर्मन 2. ज्ञान 3. संवेध, संवेदित 4. संसबिलिटी 5. साहित्य-बोध : आधुनिकता के तत्व 6. तीन 7. आज़ादी 8. अभिव्यक्तिगत 9. ऐतिहासिक 10. चेतना

स्व-मूल्यांकन : (ख)

1. सही 2. गलत 3. गलत 4. सही 5. सही 6 गलत 7 गलत 8 सही 9 गलत 10 सही

स्व-मूल्यांकन : (ग)

1. अरी ओ करूणा प्रभामय 2. प्रतिभा 3. सत्य 4. अभिव्यक्ति के अनुरूप उचित शब्द 5. सर्जक 6. द्वीप 7 नदी के द्वीप 8 आधुनिकता 9. संस्कृति

13.12 पठनीय पुस्तकें

1. डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी - अज्ञेय कवि
2. डॉ. गंगाप्रसाद विमल - अज्ञेय का रचना-संसार
3. ए. अरविन्दाक्षण - अज्ञेय काव्य में प्राग्बिंब और मिथक

4. प्रभाकर माचवे - अज्ञेय
5. रमेशचन्द्र शाह - अज्ञेयः वागर्थ का वैभव
6. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः एक कृति के बहाने
7. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः चिन्तन और काव्य
8. राजेन्द्र प्रसाद - अज्ञेयः कवि और काव्य
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी - अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या
10. डॉ. सूरजप्रसाद मिश्र - आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व अंकन

निर्धारित कविताओं का शिल्पगत सौन्दर्य

रूपरेखा

14.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
14.2 प्रस्तावना
14.3 काव्य शिल्प में परिवर्तन के कारण
14.4 अज्ञेय का काव्य शिल्प
स्व-मूल्यांकन : क
14.5 'यह दीप अकेला' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य
14.6 'कलगी बाजरे की' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य
स्व-मूल्यांकन : ख
14.7 'शब्द और सत्य' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य
14.8 'नदी के द्वीप' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य
स्व-मूल्यांकन : ग
14.9 कठिन शब्द
14.10 अभ्यास हेतु प्रश्न
14.11 उत्तर कुंजी
14.12 पठनीय पुस्तकें

14.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको पाठ्यक्रम में निर्धारित अज्ञेय की कविताओं के शिल्पगत सौंदर्य से परिचित करवाना है।

इस पाठ का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात आप यह ज्ञान अर्जित कर सकेंगे कि वस्तु के साथ शिल्प का अविभाज्य सम्बन्ध है। संवेदन-तत्त्वों को शिल्प ही रूपाकार प्रदान करता है तथा उन्हें ग्राह्य एवं प्रभावशाली बनाता है। यद्यपि वस्तु को शिल्प का स्थानापन्न नहीं माना जा सकता तथापि अज्ञेय के अनुसार 'वस्तु को शिल्प से अलग

नहीं किया जा सकता।' किसी भी रचना का शिल्प और तन्त्र भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना की वह वस्तु जिसका संप्रेशण होना है। विशिष्ट वस्तु अपने संप्रेशण के लिए विशिष्ट शिल्प की अपेक्षा रखती है।

14.2 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! अनुभूति को जिन उपकरणों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है, उन सब का सामूहिक रूप शिल्प है। शिल्प-विधान अनुभूति सापेक्ष होता है और अनुभूतियाँ परिस्थितियों तथा व्यक्तित्व के सापेक्ष। इस चक्र के कारण परिस्थिति और व्यक्तित्व का परिवर्तन अनुभूतियों को प्रभावित करता है और प्रभावित अनुभूतियों के अनुरूप शिल्प भी अपना स्वरूप परिवर्तित करने को बाध्य हो जाता है। यही कारण है कि अज्ञेय के काव्य-शिल्प में परिवर्तनशील नवीनता अक्षुण्ण बनी रहती है क्योंकि समसामयिक परिस्थितियों और उनके स्वयं के विचारों और व्यक्तित्व में गतिशीलता है, नवीन संवेदनाओं को ग्रहण करने की प्रवृत्त है।

14.3 काव्य शिल्प में परिवर्तन के कारण

शिल्प सिर्फ रूपाकार या 'फार्म' नहीं है यह उससे अधिक है इसलिए अज्ञेय समेत प्रायः सभी नये कवियों ने शिल्प को पहले के कवियों की तुलना में कहीं अधिक महत्त्व दिया है। एक प्रकार से कथा में जो शैली है वही काव्य में शिल्प है। पूर्ववर्ती कविता का आख्यानक रूप शैली से जुड़े, यह उस दौर की कविता के लिए स्वाभाविक था, किन्तु परवर्ती काल में कविता के बदले तेवर के साथ कविता कहने और रचने का ढंग भी बदला जिससे शिल्प महत्त्वपूर्ण हो उठा। सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्री-व-अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तन शिल्प-विधान में भी दुर्बोधता के कारण बने। इसके अलावा संवेदना के अनुरूप इन कवियों को रस, छन्द की परम्परागत धारणा को त्याग कर उपमान, प्रतीक, बिम्ब के परम्परागत बासनों को माजना पड़ा। इसके साथ ही विविध सैद्धान्तिक चिन्तन--मनोविज्ञान, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद के चलते मानवीय संत्रास और अकेलेपन के अहसास से संवेदना का पुराना ढांचा ढह गया और भावानुरूप परिवर्तित शिल्प की आवश्यकता हुई। इन सबसे कवि के मन पर इतनी गहरी छाप पड़ी कि वह उसे सीधे-सीधे व्यक्त करने में असमर्थ है। वह केवल एक संकेत देता है जिससे पाठक आगे बढ़कर उसे देख सकें। इन सभी परिवर्तनों के कारण कवि-दृष्टी का विकास और परिवर्तन हुआ और उसकी संवेदना में गहराई आयी, जिससे अभिव्यक्ति के परम्परागत साधन पुराने पड़ गये। संवेदना के आयामों में नवीनीकरण के कारण न तो भारतेन्दु युगीन खड़ी बोली की शैशवावस्था वाला शिल्प वांछनीय रहा और न ही द्विवेदी युग

का वर्णन प्रधान इतिवृत्तत्मक शिल्प ही अभीष्ट था। छायावाद का अभिजात्यवादी, जनसाधारण से दूरी रखने वाला शिल्प भी प्रयोगशील संवेदना को अभिव्यक्त देने में असमर्थ था। इन पूर्व-प्रचलित शिल्प-विधान की असंगति के कारण प्रयोगशील कविता ने शिल्प के क्षेत्र में नवीन प्रयोग किये।

14.4 अज्ञेय का काव्य शिल्प

अज्ञेय का साहित्य सुव्यवस्थित और तर्काश्रित है, ज़ाहिर है उनके लिए क्या हुआ मात्र नहीं, बल्कि 'कैसे' और 'किस क्रम में' हुआ की यात्रा महत्त्वपूर्ण हो जाती है इसीलिए अज्ञेय के काव्य में शिल्प से अलग काव्यानुभूति नहीं है। अज्ञेय की सृजन-प्रक्रिया, संवेदना, शिल्प--सभी परिवर्तनों के मूल में एक कारण आधारभूत रूप में मिलता है कि अधिसंख्य समस्याएँ, श्रुत से पठित परम्परा की ओर अग्रसरण से हुई हैं। मुद्रित रूप के कारण कविता की मूल संरचना में परिवर्तन सरल हो गया और इन सबके साथ श्रोता से पाठक बनते ही पाठक सहृदय का काव्य-संस्कार छोड़ बैठा। मुद्रण प्रणाली से आये परिवर्तन को 'सागर-मुद्रा' की कविता 'ग्रीष्म की रात' में समझा जा सकता है। इस कविता का मर्म वाचिक परम्परा के माध्यम से बेध पाना दुष्प्राप्य है, क्योंकि बिम्बाधिक्य ठहराव की माँग करता है जो पाठक द्वारा पढ़ते हुए ही लाया जा सकता है :

कोयल ने टेरा : कुहू !

कि पपीहे ने पलटा : कहाँ ?

कसैली आँखें : मटमैला सवेरा।

यहाँ बिम्बों की प्रचुरता के साथ विविध चिह्नों का प्रयोग वाचिक पद्धति से ग्रहण करना क्लिष्ट है, क्योंकि वक्ता वाचन करते समय काव्यास्वाद के बीच हस्तक्षेप करते हुए यह तो नहीं बता सकता कि सेमीकॉलन, कॉलन, पूर्ण विराम और प्रश्नवाचक अपना कहाँ स्थान रखते हैं?

स्व-मूल्यांकन : क

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ से अभी तक आपने जो अज्ञेय के काव्य शिल्प का अध्ययन किया, उसका स्व-मूल्यांकन आप निम्न दिए अभ्यास (सही/गलत) द्वारा करें-

1. एक प्रकार से कथा में जो शैली है वही काव्य में शिल्प है। ( )
2. सामाजिक,राजनीतिक, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तन शिल्प-विधान में भी दुर्बोधता के कारण बने। ( )

3. संवेदन में नवीनीकरण के कारण भारतेन्द्रु युगीन खड़ी बोली की शैशवावस्था वाला शिल्प वांछनीय रहा। ( )

4. छायावाद का अभिजात्यवादी शिल्प भी प्रयोगशील संवेदना को अभिव्यक्ति देने में समर्थ था। ( )

5. अज्ञेय का साहित्य सुव्यवस्थित और तर्काश्रित है। ( )

6. अज्ञेय के काव्य में शिल्प से अलग काव्यानुभूति है। ( )

7. मुद्रित रूप के कारण कविता की मूल संरचना में परिवर्तन सरल हो गया। ( )

8. मुद्रण प्रणाली से आऐ परिवर्तन को 'सागर-मुद्रा' की कविता 'ग्रीष्म की रात' में समझा जा सकता है। ( )

9. वक्ता वाचन के समय बता सकता है कि सेमीकॉलन, कॉलन, पूर्ण विराम और प्रश्नवाचक अपना स्थान कहाँ रखते हैं। ( )

14.5 'यह दीप अकेला' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य

साहित्य क्योंकि अनुभव का सम्प्रेषण करता है और अनुभव विशिष्ट होने के कारण अकथनीय है, अतः मौन ही अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम हो सकता है। 'नदी के द्वीप' उपन्यास में गौरा गहन अनुभूति लिखने में स्वयं को असमर्थ पाती है, "शब्द अधूरे हैं, उच्चारण माँगते हैं : लेकिन शब्दों के अन्तराल, पदों वाक्यों की यति में उस यति के मौन में एक शक्ति है जो उच्चारण के अधूरेपन को ढक लेती है, सम्पूर्णता देती है"।

भाषा को अपर्याप्त पाकर अज्ञेय विराम संकेतों, आड़ी-तिरछी लकीरों, छोटे-बड़े टाइपों से और पंक्ति के मध्य अन्तराल से कविता रचने लगे। कविता पहले शब्द से बनती थी अब कॉमा, फुलस्टॉप से बनने लगी। अज्ञेय ने निबन्ध संग्रह 'आलवाल' में लिखा है "कवि शब्दों का न केवल भरपूर सार्थक प्रयोग करता है--बल्कि कभी-कभी शब्दों या वर्णों का उपयोग न करके ही अर्थ की वृद्धि करता है--यानी शब्दों का ही अर्थगर्भ उपयोग नहीं, अथगर्भ मौन का भी उपयोग करता है।" इसी अर्थगर्भ मौन के कारण कविता शब्दों के बीच की नीरवता में भी होती है। जैसे हम भावों की अतिशयता में मौन हो जाते हैं और दूसरा पक्ष उस मौन से उत्पन्न भाव को समझा जाता है, उसी प्रकार कवि के शब्दगत मौन से पाठक अर्थ को पकड़ लेता है। इस कारण अज्ञेय मौन को निर्जीव नहीं मानते और 'चुप की दहाड़' सुन लेते हैं। उन्हें 'सन्नाटे में भी शोर ' सुनाई देता है, लेकिन यह शोर अनेक स्तरीय और अर्थगर्भित होता है।

अज्ञेय की मौन-भाषा में प्रयुक्त सांकेतिक चिह्नों में विसर्ग (:) का प्रयोग पूर्व कथन की व्याख्या के लिए, एक ही वर्णय विषय की अलग-अलग विशेषता गिनाने के लिए किया गया है। विसर्ग का प्रयोग कथन पर बल देने के प्रयोजन से विसर्ग के बाद के कथन के लिए होता है। विसर्ग के माध्यम से एक कथन स्वतः पूर्ण होता है। अधिकांशतः नयी कविता के संग्रहों में इसके प्रयोग लक्षित होते हैं, किन्तु प्रथम प्रयास 'हरी घास पर क्षण भर' की कविता 'शरद' में मिलता है। पूर्व कथन की व्याख्या के लिए विसर्ग का प्रयोग 'बावरा अहेरी' की कविता 'यह दीप अकेला' में हुआ है :

यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा ?
यह पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लायेगा ?
यह समिधा : ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा।
यह अद्‌वितीय : यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा,
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।
यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस : जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय
यह अंकुर : फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय,
यह प्रकृत, स्वयम्भू, ब्रह्मा, अयुतः
इस को भी शक्ति को दे दो।

यहाँ विसर्ग से पूर्व कथन की व्याख्या विसर्ग चिह्न के बाद में की गयी है और प्रत्येक प्रयोग स्वयं में पूर्ण है। जन है जो गीत गाता है। पनडुब्बा मोती लाता है। समिधा आग लगाती है। दीप स्नेह और गर्व भरा है। मधु जो न जाने कितने लम्बे काल के मौन का युग संचय है। गोरस जीवन रूपी कामधेनु का अमृत पय है। अंकुर जो धरा की छाती फाड़कर सूर्य की ओर ताकता है। प्रकृत स्वयम्भू ब्रह्म अयुत जिसे शक्ति को दिया जाता है।

इस कविता की शैल्पिक विशेषता यह भी है इस के अन्तिम बन्ध में तद्‌भव और संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली का मिश्रित प्रयोग हुआ है। साथ ही दीप की विशेषताओं को व्यक्त करने वाले विशेषणों से अकेले दीपक के विराट अस्तित्व को कवि ने रूपायित किया है :

यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,

यह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा;

कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़वे तम में

यह सदा द्रवित, चिर जागरूक, अनुरक्त नेत्र।

उल्लम्ब-बाहु, यह चिर अखंड अपनापा।

जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय, इस को भी भक्ति को दे दो;

'धुँधुआते कड़वे तम', 'चिर अखंड अपनापा' जैसे तद्भव शब्दों को 'अनुरक्त नेत्र', 'उल्लम्ब बाहु' संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों के साथ रखने से अज्ञेय का यह दीप अकेला क्यों है इसे इसके विशेषणों से स्पष्ट किया गया है। दरअसल इसी वैशिष्ट्य के कारण कवि का यह दीप अकेला बेशक है किन्तु एकाकी नहीं है। यह दीप अकेलेपन का नहीं वरन् अपनी अनुपम विशेषताओं के कारण विशिष्ट (अकेला) है। जिसकी पहचान हजारों-लाखों के बीच की जा सकती है।

14.6 'कलगी बाजरे की' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य

अज्ञेय हिन्दी के प्रथम कवि-समीक्षक हैं जिन्होंने काव्य-भाषा पर इतनी गहराई से विचार किया है और यह विचार जहाँ पश्चिमी भाषावादी आलोचकों के समकक्ष है वहीं भारतीय काव्य-परम्परा की शब्द-शक्तियों की मूल

धारणा के आधार पर संक्रमणकालीन स्थितियों में हिन्दी भाषा को एक नयी अर्थवत्त देने की पेशकश की गयी है।

इस सन्दर्भ में देखने पर यह अस्वाभाविक नहीं लगता कि अज्ञेय प्रारम्भ से ही नयी प्रतीक-योजना और नये उपमानों की स्थापना पर जोर देते रहे हैं। जिस प्रकार शब्द अधिक प्रयोग से घिस जाता है और उसे नया संस्कार देना पड़ता है वैसा ही प्रतीकों के साथ है क्यांकि शब्द भी अन्ततोगत्वा प्रतीकधर्मी ही होता है कि अज्ञेय ने पुराने प्रतीकों की शक्तिहीनता को पहचाना और नये प्रतीकों की खोज की :

अगर मैं तुमको

ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुंई,

टटकी कली चम्पे की

वग़ैरह, तो

यह नहीं कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही :

ये उपमान मैले हो गये हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।

कभी बासन घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

अज्ञेय बोधगम्यता को आवश्यक मानते हैं और उनके सभी प्रतीक बोधगम्य हैं प्रतीकवादी कवियों की तरह बुद्धि का तिरस्कार अज्ञेय के यहाँ नहीं है। नयी प्रतीक-योजना पर बल देने का तात्पर्य प्रतीकवादी हो जाना नहीं क्योंकि युगानुकूल प्रतीक खोजने का कार्य तो सभी समर्थ कवि करते ही आये हैं। अज्ञेय भी इसी पृष्ठभूमि के आधार पर नये प्रतीकों की खोज करना चाहते हैं जो नयी संवेदना और परिवर्तनशील युग को अभिव्यक्ति दे सके। इसी कारण जब वे अपनी प्रेमिका को 'बिछली घास' या 'कलगी छरहरी बाजरे की' कहते हैं तो उसका स्पश्टीकरण भी देते हैं :

आज हम शहरातियों को

पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से

सृष्टि के विस्तार का-ऐश्वर्य का-

औदार्य का-

कहीं सच्चा, कहीं प्यारा

एक प्रतीक

या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर

दोलती कलगी अकेली

बाजरे की।

यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि अज्ञेय की यह प्रतीक-योजना जहाँ ताज़ा है, वहाँ रूमानी कुहरे से भी मुक्त तथा अधिक स्वस्थ है। वास्तव में यदि काव्य उन्हीं घिसे-पुराने प्रतीकों के आधार पर ही चलता जायेगा तो निश्चय ही मृतवत् हो जायेगा क्योंकि जनमानस के परिवर्तन के साथ-साथ उसकी परिवर्तित संवेदना का पुराने प्रतीक वहन नहीं कर पाते और तब जनमानस उस साहित्य के साथ रागात्मक सम्बन्ध भी

स्थापित नहीं कर पाता। इस सम्बन्ध में अज्ञेय का यह वक्तव्य द्रष्टव्य है : "कोई भी स्वस्थ काव्य-साहित्य प्रतीकों की, नये प्रतीकों की सृष्टि करता है, और जब वैसा करना बन्द कर देता है तब जड़ हो जाता है।

अज्ञेय प्रतीक को काव्य में सत्यान्वेषण का साधन मानते हैं। उलझी हुई, अस्पष्ट एवं रहस्यात्मक अनुभूति को स्पष्ट करने में प्रतीक-योजना जितनी सहायक हो सकती है उतना अन्य काव्यांग नहीं। वास्तव में गहरी एवं व्यापक अनुभूति को जितने प्रभावी स्तर पर प्रतीक-योजना के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सकता है, उतना अन्य प्रकार से नहीं। ज़रूरी यह है कि उस प्रतीक को उस स्तर पर तो प्रतिष्ठित करना ही होता है जहाँ वह सभी का प्रतीक बन सके--संवेद्य हो सके। मात्र चमत्कार-सृष्टि एवं व्यक्ति-वैचित्र्य के लिए प्रतीक-योजना निश्चय ही स्वस्थ मनोवृत्त नहीं है। अतः यहाँ फिर स्पष्ट हो जाता है कि 'प्रतीकवादी' होना अपने आप में कोई उपलब्धि नहीं है। प्रतीक भी अन्ततोगत्वा साधन ही है।

अज्ञेय की काव्य-भाषा में बोलचाल की शब्दावली को महत्व मिलने के कारण मुहावरेदार शब्दावली का प्रयोग हुआ है। मुहावरों के प्रयोग से कविता सामान्य पाठक में सहजता से उतरती जाती है और भाषा की लाक्षणिकता से अर्थ विशिष्ट हो जाता है। अज्ञेय मुहावरों का ज्यों का त्यों प्रयोग भी करते हैं किन्तु अधिकांशतः काव्य-भाषा का हिस्सा होने के कारण मुहावरों में या तो शब्द विपर्यय हो गया है या वे सर्वथा परिवर्तित हो गये हैं। प्रस्तुत कविता में शब्द विपर्यय का उदाहरण मिलता है :

देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच

कभी बासन घिसने से मुलम्मा छूट जाता है

मूल मुहावरा 'कूच करना' तथा 'मुलम्मा छूटना' है किन्तु यहाँ शब्द विपर्यय के कारण ये दोनों पंक्तियाँ नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उद्धृत की जाती रही हैं।

स्व-मूल्यांकन : ख

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम देकर 'यह दीप अकेला' और 'कलगी बाजरे की' कविताओं के शिल्पगत अध्ययन का मूल्यांकन निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करें-

1. .....ही अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम हो सकता है।
2. कविता पहले.....से बनती थी अब कॉमा, फुलस्टॉप से बनने लगी।

3. अज्ञेय ने निबन्ध संग्रह.....में लिखा है, "कवि शब्दों का ही अर्थगर्भ उपयोग नहीं, अर्थगर्भ मौन का भी उपयोग करता है।"

4. अज्ञेय मौन को.....नहीं मानते और 'चुप की दहाड़' सुन लेते हैं।

5. पूर्व कथन की व्याख्या के लिए विसर्ग का प्रयोग बावरा अहेरी की कविता.....में हुआ है।

6. गोरस जीवन रूपी.....का अमृत पय है।

7. अज्ञेय ने पुराने प्रतीकों की.....को पहचाना और नये प्रतीकों की खोज की।

8. प्रतीकवादी कवियों की तरह.....का तिरस्कार अज्ञेय के यहाँ नहीं है।

9. यदि काव्य उन्हीं घिसे-पुराने प्रतीकों के आधार पर ही चलता जायेगा तो निश्चय ही.....हो जायेगा।

10. अज्ञेय प्रतीक को काव्य में.....का साधन मानते हैं।

14.7 शब्द और सत्य कविता का शिल्पगत सौन्दर्य

अज्ञेय काव्य-भाषा की परख की कसौटी भी मूलतः शब्द-प्रयोग को ही मानते हैं। वे अपनी मान्यता पर खरे उतरे हैं। शब्द-प्रयोग में जितनी सजगता अज्ञेय ने दिखाई है वह प्रशंसनीय है। उनकी भाषा को शब्द-प्रयोग की कसौटी पर कसें तो हम पाते हैं कि कवि अज्ञेय शब्द और अर्थ के निष्ठावान साधक हैं। वे अनुभूति को अभिव्यक्ति में बदलने के लिए 'आलोक-स्फुरण' की तलाश में रहते हैं ताकि अनुभूति के सत्य को शब्द में उतार सकें। वे पाते हैं कि शब्द और सत्य आपस में एक दूसरे से तने रहते हैं किन्तु उनकी चेष्टा शब्द और सत्य के बीच की दूरी को मिटा देने की रहती है क्योंकि ये दोनों एक-दूसरे से तनकर रहते हैं :

यह नहीं कि मैंने सत्य नहीं पाया था

यह नहीं कि मुझको शब्द अचानक कभी-कभी मिलता है :

दोनों जब-तब सम्मुख आते ही रहते हैं।

प्रश्न यही रहता है :

दोनों जो अपने बीच दीवार बनाये रहते हैं

मैं कब, कैसे उन के अनदेखे

उस में सेंध लगा दूँ

या भर कर विस्फोटक

उसे उड़ा दूँ।

कवि के लिए वही प्रयत्न सार्थक है जिससे शब्द और सत्य या शब्द और अनुभूतियाँ एक दूसरे से जुड़ सकें। शिल्प की सार्थकता भी तभी घटित होती है। इस प्रकार भाषा की प्रयोगशीलता संवेदना एवं शिल्प की प्रयोगशीलता को अधिकांशतः अपने में समेट लेती है। अज्ञेय का यह कथन संगत लगता है : "जिन्होंने शब्द को नया कुछ नहीं दिया है, वे लीक पीटने वाले से अधिक कुछ नहीं हैं-भले ही जो लीक वे पीट रहे हैं वह अधिक पुरानी न हो। इस प्रकार अज्ञेय भाषा को कसौटी बनाकर काव्य-मूल्यांकन की प्रणाली का प्रवेश हिन्दी में करा देते हैं।

अज्ञेय के लिए भाषा साहित्यकार के मौलिक कर्म की आधारभूत कसौटी हैं। उनके लिए भाषा स्वान्तः अभिव्यक्ति का पर्याय नहीं, बल्कि साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण का केन्द्र बिन्दु है। उन्होंने अनुभव में भाषा की तलाश की है। उनकी भाषा अपने स्थापन्न या विचलन को सहन नहीं करती। वह क्रमों की अटलबद्धता से जूझती है। वहाँ शब्दों के पर्याय की संभावना नहीं है। कविता निश्चित और निर्धारित शब्दों का चमत्कारपूर्ण प्रयोग नहीं है वरन् अनुभूति की माँग के अनुसार स्वाभाविक और निरायास शब्द योजना से ही काव्य मर्म का काव्य शिल्प के साथ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध घटित होता है। जो इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते उन कवियों पर व्यंग्य करते हुए अज्ञेय टिप्पणी करते हैं :

कवि जो होंगे हों, जो कुछ करते हैं करें,

प्रयोजन बस मेरा इतना है-

ये दोनों जो

सदा एक-दूसरे से तन कर रहते हैं,

कब, कैसे किस आलोक-स्फुरण में

इन्हें मिला दूँ-

दोनों जो हैं बन्धु, सखा, चिर सहचर मेरे।

स्पष्ट है कि कविता शब्दों की बाजीगरी नहीं वरन् सत्य/अनुभव/संवेदना/काव्य मर्म के साथ शब्द/भाषा/शिल्प का चिर सहचर सम्बन्ध है।

'शब्द और सत्य' दो अनुच्छेदों में विभक्त ऐसी कविता है जिसमें विसर्ग(:) चिह्न का प्रयोग प्रश्न और प्रयोजन की व्याख्या के लिए किया गया है। जाने हुए ही नहीं;

पहचाने हुए सत्य की अभिव्यक्ति विशेष प्रकार की भाषा की माँग करती है क्योंकि काव्य में नया अर्थ भरना ही सत्यानुभूति है। यह नया अर्थ कैसे भरा जाये यही कर्म-कर्म की जटिलता है। शब्द भी हैं और सत्य भी लेकिन अनुभूति की भट्टी में तपाकर कंचन किये सत्य के लिए जानी-पहचानी भाषा बहुत काम देने वाली नहीं होती। इसी प्रकार शब्द को केन्द्र में लाने के लिए यथार्थ का तकाजा भी कृत्रिमता से कोसों दूर रहने की ज़रूरत का अहसास कराता है।

14.8 'नदी के द्वीप' कविता का शिल्पगत सौन्दर्य

'हरी घास पर क्षण भर' काव्य-संग्रह नयी कविता का उद्घोष करता है। प्रयोगों के अन्वेषक अज्ञेय इस संग्रह तक आते-आते परिवर्तित संवेदना के अनुरूप शिल्प के नये फ्रेम को बनाने में गतिशील दिखाई देते हैं। प्रस्तुत कविता इस बात का प्रमाण है। परम्परागत अलंकार मोह से यहाँ कवि ने पूरी तरह छुट्टी पा ली है। अनेकधर्मी अर्थ व्यंजना के अनुरूप बिम्ब से प्रतीकों का काम लेना अज्ञेय के काव्य शिल्प को वैशिष्ट्य प्रदान करता है। प्रस्तुत संग्रह में शीर्षक कविता के अतिरिक्त 'कलगी बाजरे की' तथा 'नदी के द्वीप' के अभिव्यंजना-शिल्प ने नयी कविता को सुदृढ़ता प्रदान की। संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली से युक्त 'नदी के द्वीप' कविता एक मॉडल के तौर पर देखी जा सकती है :

हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाये।

वह हमें आकार देती है।

हमारे कोण, गलियाँ, अन्तरीप, उभार, सैकत-कूल

सब गोलाइयाँ उस की गढ़ी हैं।

माँ है वह। है, इसी से हम बने हैं।

भारतीय परम्परा और आस्था के अनुसार नदी को माँ कवि भी स्वीकार करते हैं। शिशु-जन्म की भाँति वह द्वीप को भी गढ़ती है। नदी और द्वीप के सम्बन्ध को यह कविता ओजपूर्ण शब्दावली में दर्शाती है। यह अभिव्यक्ति स्वयं में विरल है :

हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड़ में।

वह वृहद् भूखड़ से हम को मिलाती है।

और वह भूखंड अपना पितर है।

संस्कृति और परम्परा की नदी के प्रति इस प्रकार का आदर-भाव संस्कृतनिष्ठ शब्दावली में व्यंजित हुआ है। इस आदर में कमी आने पर नदी के रौद्र रूप की अभिव्यंजना भी ओज गुण के साथ कठोर वर्ण योजना के माध्यम से हुई है :

तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से, अतिचार से,

तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे-

यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल प्रवाहिनी बन जाये-

इस कविता की प्रतीक योजना अनेकार्थ है। नदी प्रतीक है समाज, संस्कृति, परम्परा और गौरवशाली अतीत का जबकि द्वीप व्यक्ति, आधुनिक सभ्यता, वैज्ञानिक बौद्धिक दृष्टी कोण है। इन दोनों के बीच सामंजस्य प्रत्येक युग की अनिवार्यता होती है। जिसे अज्ञेय ने नवीन शैल्पिक विधान से सार्थक किया है।

स्व-मूल्यांकन : ग

प्रिय विद्यार्थीयों ! आपने 'शब्द और सत्य' तथा 'नदी के द्वीप' कविताओं के शिल्पगत सौन्दर्य का अध्ययन किया है। अब आप निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा अध्ययन का स्व मूल्यांकन कर अपने ज्ञान को परिपक्व बना सकते हैं-

1. अज्ञेय काव्य-भाषा की परख की कसौटी किसे मानते हैं?

   (क) व्याकरण (ख) मुहावरे

   (ग) भाव (घ) शब्द-प्रयोग

2. 'जिन्होंने शब्द को नया कुछ नहीं दिया है, वे लीक पीटने वाले से अधिक कुछ नहीं हैं'। यह कथन किसका है?

   (क) निराला (ख) धूमिल

   (ग) अज्ञेय (घ) धर्मवीर भारती

3. अज्ञेय के लिए साहित्याकर के मौलिक कर्म की आधारभूत कसौटी क्या है ?

   (क) भाव (ख) भाषा

   (ग) घटना (घ) विषय-वस्तु

4. 'शब्द और सत्य' कविता में किस चिहन का प्रयोग प्रश्न और प्रयोजन की व्याख्या के लिए किया गया है?

   (क) विराम (ख) विसर्ग

   (ग) प्रश्न (घ) कोष्ठक

5. काव्य में नया अर्थ भरना क्या है ?

(क) सत्यानुभूति (ख) कल्पना

(ग) श्रम (घ) कर्म

6. नदी के द्वीप कविता किस संग्रह की है ?

(क) भग्नदूत (ख) हरी घास पर क्षण भर

(ग) इत्यलम् (घ) इन्द्रधनु रौंदे हुए ये

14.9 कठिन शब्द

1. अभीष्ट - चाहा हुआ, वांछित
2. तर्काश्रित - तर्क प्रधान
3. गर्म - किसी बात के अन्दर छिपा हुआ तत्व
4. दुष्प्राय - जो सरलता से प्राप्त न हो
5. अर्थगर्भ - जिसमें विशिष्ट अर्थ निहित हो, अर्थपूर्ण
6. कूच - प्रस्थान करना, चले जाना
7. निरायास -आसान, बिना मेहनत किए।

14.10 अभ्यास हेतु प्रश्न

प्र. 1 शिल्प की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2 शिल्प परिवर्तन के कारण बताइए।

प्र. 3 अज्ञेय के अनुसार काव्य शिल्प में परिवर्तन की अनिवार्यता स्पष्ट कीजिए।

प्र. 4 अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' के शिल्पगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

प्र. 5 अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' के शिल्पगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

प्र. 6 अज्ञेय की कविता 'शब्द और सत्य' के शिल्पगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

प्र. 7 अज्ञेय की कविता 'नदी के द्वीप' के शिल्पगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

14.11 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन : क

1. सही 2. सही 3. गलत 4. गलत 5. सही 6. गलत 7 सही 8. सही 9 गलत

स्व-मूल्यांकन : ख

1. मौन 2. शब्द 3. आलवाल 4. निर्जीव 5. यह दीप अकेला 6. कामधेनु 7. शाक्तिहीनता 8. बुद्धि 9. मृतवत् 10 सत्यान्वेषण

स्व-मूल्यांकन : ग

1. शब्द-प्रयोग 2. अज्ञेय 3. भाषा 4.विसर्ग 5. सत्यानुभूति 6. हरी गास पर क्षण भर

14.12 संदर्भ ग्रन्थ/सहायक पुस्तकें

1. डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी - अज्ञेय कवि
2. डॉ. गंगाप्रसाद विमल - अज्ञेय का रचना-संसार
3. ए. अरविन्दाक्षण - अज्ञेय काव्य में प्राग्बिंब और मिथक
4. प्रभाकर माचवे - अज्ञेय
5. रमेशचन्द्र शाह - अज्ञेयः वागर्थ का वैभव
6. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः एक कृति के बहाने
7. डॉ. रजनी बाला - अज्ञेयः चिन्तन और काव्य
8. राजेन्द्र प्रसाद - अज्ञेयः कवि और काव्य
9. रामस्वरूप चतुर्वेदी - अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या
10. डॉ. सूरजप्रसाद मिश्र - आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्व अंकन

जनवादी कवि धूमिल

रूपरेखा

15.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
15.2 प्रस्तावना
15.3 धूमिल के रचना संसार की वैचारिकी
15.3.1 धूमिल के काव्य की पृष्ठभूमि
15.3.2 जनवाद और धूमिल
15.3.3 स्व-मूल्यांकन : क
15.4 धूमिल का रचना संसार
15.4.1 धूमिल की कविता का कथ्य (एक)
15.4.2 धूमिल की कविता का कथ्य (दो)
15.4.3 स्व-मूल्यांकन : ख
15.5 धूमिल और समकालीन कवि
15.5.1 स्व-मूल्यांकन : ग
15.6 सारांश
15.7 कठिन शब्द
15.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
15.9 उत्तर कुंजी
15.10 पठनीय पुस्तकें

15.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको-

- साठोत्तरी कविता से परिचित करवाना ।
- जनवादी कविता को समझना।

- धूमिल की कविता की अंतर्वस्तु से परिचित करवाना।
- धूमिल के समकालीन कवियों का परिचय देना तथा
- धूमिल के रचना संसार का ज्ञान देना है।

धूमिल की कविता की अंतर्वस्तु पर आधारित इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको जनवादी कवियों में धूमिल की भूमिका स्पष्ट हो जाएगी|

15.2 प्रस्तावना

धूमिल हिंदी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। मुक्तिबोध के बाद की पीढ़ी में धूमिल सर्वाधिक चर्चित कवि रहे हैं। साठोत्तरी कविता में धूमिल अपनी सपाटबयानी के कारण चर्चित रहे हैं। भाषा के मुहावरे और भंगिमा के कारण धूमिल हिंदी कविता में अपनी अलग पहचान रखते हैं। जनवाद अपनी पूरे तेवर में धूमिल की कविता में अभिव्यक्त हुआ है। मध्यमवर्ग और सत्ता-व्यवस्था का यथार्थ धूमिल की कविता की केंद्रीय विशेषता है।

15.3 धूमिल के रचना संसार की वैचारिकी

15.3.1 धूमिल के काव्य की पृष्ठभूमि

बंगाल के नक्सलबाड़ी में जनता ने सरकार के खिलाफ एक आंदोलन किया। इस आंदोलन की विशेषता यह थी कि यह स्वतंत्र भारत का पहला बड़ा वैचारिक आंदोलन था। यह आंदोलन सत्ता और व्यवस्था के विरुद्ध, उसके विरोध में निर्मित हुआ था। स्वतंत्रता से पूर्व विरोध का स्वर औपनिवेशिक था किंतु इसमें अपनी ही व्यवस्था के प्रति आक्रोश था, विरोध था। इस आंदोलन के मूल में भूख, अभाव तो था ही, साथ ही गहरी वैचारिक दृष्टि भी थी। जनता की भागीदारी को, उसकी संचेतना को मजबूत करना भी इस आंदोलन का उद्देश्य था। इसीलिए व्यवस्था के प्रति जनता की जागरूकता और आंदोलन इसके केंद्र बने।

नक्सलबाड़ी साहित्यिक आंदोलन न था, राजनीतिक व सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन था। बावजूद इस आंदोलन ने साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया। जनवादी दृष्टि के विकास में नक्सलबाड़ी आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी की एक पूरी पीढ़ी राजकमल चौधरी, धूमिल, चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल जनवादी लेखकों में मुख्य रहे हैं।

15.3.2 जनवाद और धूमिल

प्रश्न है कि जनवादी दृष्टि क्या है? हर सचेत साहित्य जनता की बात करता है। किंतु जनवादी साहित्य जनता के भीतर चेतना जागृत करने का क्रियाशील माध्यम है। जनवाद अब लेखक के स्तर से व्याख्यायित करने की चीज नहीं रह गयी, अपितु वह जनता के बोध के स्तर पर जाने की चेतना है। जनवाद एक दृष्टि है, जिसके मूल में वैश्विक गति है। जनवादी आलोचक रामनारायण शुक्ल ने लिखा है- 'जनवादी दृष्टि अतीत की अपेक्षा वर्तमान को अधिक महत्व देती है और निश्चित निर्देश में युग को बदलने के प्रति कटिबद्ध होती है'। यानी जनवाद के मूल में है- वर्तमान केंद्रित दृष्टि और युग को बदलना। प्रगतिशील आंदोलन के केंद्र में वैचारिक दृष्टि थी। जनवाद के केंद्र में जनजागरण है। प्रगतिशील आंदोलन के केंद्र में जनता उद्दीपन है, जनवाद के केंद्र में जनता आलंबन...और कुछ स्थितियों में आश्रय। जनवाद के केंद्र में इसीलिए जनता के बीच जाना, उन्हें जागरूक करना और उनकी संवेदना के आलोक में साहित्यिक-सांस्कृतिक सौंदर्यबोध को जागृत करना मुख्य होता है।

हिंदी साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन और उसकी वैचारिकता सन 1936 के आसपास शुरू हो गयी थी। प्रेमचंद के बाद के साहित्य पर वैचारिक आग्रह स्पष्ट है। कला में यथार्थ का रूपांतरण महज वैचारिक आवेग तक सीमित नहीं होता। किन्तु बाद के दिनों में प्रगतिशीलता और वैचारिकता को अन्योन्याश्रित समझ लिया गया। यह आधुनिकता की अपनी तर्क-शैली है। 1950-60 तक प्रगतिशील जीवन दृष्टि कोरे वैचारिक नारों में बद्ध हो चली थी। जनवादी आंदोलनों से इस तथ्य को समझा। इसीलिए जनवाद का एक सिरा वैचारिकी में रहता है तो दूसरा सिरा आंदोलन में। सूत्र रूप में समझें तो यह प्रगतिशील दृष्टि के केंद्र में वैचारिक आग्रह है और जनवाद के केंद्र में विचार के साथ ही आंदोलन भी। ऐसा नहीं है कि जनवाद बिना प्रगतिशीलता के आ जाये हां, किन्तु जनवाद प्रगतिशीलता का अगला कदम अवश्य है। प्रगतिशीलता एक वैचारिक दृष्टि है और जनवाद परिवर्तनमूलक चेतना। जनवादी कलाकार और रचनाकार इसीलिए जीवन की अविराम गतियों का प्रवक्ता होता है और प्रगतिशील कलाकार जीवन की विस्तारक वैचारिक दृष्टि का अन्वेषक।

धूमिल का वैचारिक संबंध नक्सलबाड़ी आंदोलन, एलेन गिन्सबर्ग की बीट पीढ़ी आंदोलन व राजकमल चौधरी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व से था। सत्ता-व्यवस्था की असंगतियों की खोज व उन पर व्यंग्यात्मक प्रहार जनवादी साहित्यकार के केंद्र में होता ही है। धूमिल की कविता के केंद्र में भी सत्ता-व्यवस्था के अंतर्विरोध कम नहीं हैं। संसद से सड़क तक धूमिल की कविता का केंद्रीय विषय रहा है।

धूमिल वास्तविक अर्थों में जनवादी कवि रहे हैं। स्वतंत्रता पश्चात भारतीय समाज की दशा और दिशा को इतने तीखे शब्दों में हिंदी कविता में कुछ ही रचनाकार चित्रित कर सके हैं। सत्ता-व्यवस्था की असंगतियों पर प्रहार, जनता का मोहभंग, सामाजिक पाखंड और मध्यम वर्ग के अंतर्विरोधों पर धूमिल की कविता केंद्रित रही है।

15.3.3 स्व-मूल्यांकन : क

प्रिय विदायर्थियों ! अपने इस पाठ में तक धूमिल के काव्य की पृष्ठभूमि और जनवाद तथा धूमिल को जो अध्ययन किया है उसका स्व मूल्यांकन निम्न बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा करें–

1. स्वतंत्र भारत में सत्ता और व्यवस्था के विरूद्ध जतना द्वार प्रदान आंदोलन कहा हुआ

   (क) बिहार (ख) बंगाल

   (ग) उत्तराखंड (घ) उत्तर प्रदेश

2. निम्न में से कौन जनवादी कवि नहीं है?

   (क) धूमिल (ख) मंगलेश डबराल

   (ग) प्रसाद (घ) चंद्रकांत

3. कौन-सा साहित्य जनता के भीतर चेतना जागृत करने का क्रियाशील माध्यम है ?

   (क) व्यक्तिवादी (ख) आदर्शविदी

   (ग) यथार्थवादी (घ) जनवादी

4. रामनारायण शुक्ल किस प्रवृत्ति के आलोचक हैं ?

   (क) व्यक्तिवादी (ख) छायावादी

   (ग) जनवादी (घ) प्रयोगवादी

5. हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन और उसकी वैचारिकता कब आरम्भ हुई ?

   (क) 1931 के आसपास (ख) 1936 के आसपास

   (ख) 1940 के आसपास (घ) 1932 के आसपास

6. 'संसद से सड़क तक' किसकी रचना है?

(क) मुक्तिबोध (ख) अज्ञेय

(ग) धूमिल (घ) निराला

15.4 धूमिल का रचना संसार

छात्रों, अभी तक हमने धूमिल की कविता की वैचारिकी का अध्ययन किया। हमने अध्ययन किया कि धूमिल की कविता पर जनवादी आंदोलन का प्रभाव किस रूप में पड़ा है। अब हम धूमिल की कविता के रचना संसार को समझने का प्रयास करेंगे।

15.4.1 धूमिल की कविता का कथ्य

धूमिल साठोत्तरी कविता के सर्वाधिक चर्चित कवियों में से एक रहे हैं। धूमिल की कविता अपने तेवर व मिजाज में दूसरे कवियों से अलग हो जाती है। संसद से सड़क तक (1972 ई), कल सुनना मुझे और सुदामा पांडेय का लोकतंत्र (1983) इनके चर्चित कविता संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त 'बांसुरी जल गई' नामक एक गीत संग्रह भी धूमिल ने लिखा था। साथ ही कुछ कहानियाँ और वैचारिक लेख भी धूमिल ने लिखे थे। किन्तु धूमिल की प्रसिद्धि का आधार उनकी कविताएँ ही रही हैं।

धूमिल सत्ता की चालाकी और मध्यम वर्ग के अंतर्विरोधों को साथ-साथ दिखाते चलते हैं। 'जनतंत्र के सूर्योदय में' कविता की कुछ पंक्तियों को देखें-

रक्तपात-

कहीं नहीं होगा

सिर्फ, एक पत्ती टूटेगी।

एक कन्धा झुक जाएगा!

फड़कती भुजाओं और

सिसकती हुई आँखों को

एक साथ लाल फीतों में लपेटकर

वे रख देंगे

काले दराजों के निश्छल एकांत में

जहाँ रात में

संविधान की धाराएँ

नाराज आदमी की परछाई को

देश के नक्शे में

बदल देती हैं ”’

अखबारों की धूप और

वनस्पतियों के हरे मुहावरे

तुम्हें तसल्ली देंगे

और जलते हुए जनतंत्र के सूर्योदय में

शरीक होने के लिए

तुम, चुपचाप अपनी दिनचर्या का

पिछला दरवाजा खोलकर

बाहर आ जाओगे

जहाँ घास की नोक पर

थरथराती हुई ओस की एक बूँद

झड़ पड़ने के लिए

तुम्हारी सहमति का इंतजार

कर रही है।

ध्यान से देखें तो कविता दो स्तरों पर बंटी हुई दिखेगी। रक्तपात हुए बिना कंधे का झुक जाना व फड़कती भुजाओं को काले दराजों के निश्चल एकांत में रख देने से कवि ने जनतंत्र की जटिल बनावट का एक संकेत कर दिया है। किन्तु कविता के अंत में जलते हुए जनतंत्र में शामिल भी कर लेते हैं। एक ओर निराशा है तो दूसरी ओर आशा की किरण भी। यह सच्चे जनवादी कवि की पहचान है।

अकाल-दर्शन धूमिल की वैचारिकी को समझने के कुछ सूत्र देती है। कविता की कुछ पंक्तियों को देखें-

.... और सहसा मैंने पाया कि मैं खुद अपने सवालों के/सामने खड़ा हूँ और/उस मुहावरे को समझ गया हूँ/जो आजादी और गांधी के नाम पर चल रहा है/जिससे न भूख मिट रही है, न मौसम/बदल रहा है।/लोग बिलबिला रहे हैं (पेड़ों को नंगा करते हुए)/ पत्ते और छाल?/ खा रहे हैं/मर रहे हैं, दान/कर रहे हैं।/....अकाल को सोहर की तरह

गा रहे हैं।..../ मैंने जब भी उनसे कहा है देश शासन और राशन.../उन्होंने मुझे टोक दिया है/अक्सर, वे मुझे अपराध के असली मुकाम पर/अँगुली रखने से मना करते हैं/ जिनका आधे से ज्यादा शरीर/भेड़ियों ने खा लिया है/वे इस जंगल की सराहना करते हैं।'' अकाल- दर्शन धूमिल की बाद की कविताओं के लिए एक प्रस्थान रचती है। अकाल को सोहर की तरह गाना और भेड़िया तंत्र की सराहना करना जनता की अपनी दिशाहीनता का सूचक ही समझना चाहिए। धूमिल बराबर जनता को सचेत करते चलते हैं। लेकिन कवि अपने (बुद्धिजीवी) वर्ग के अंतर्विरोधों को भी उजागर करना नहीं भूलता। 'एकांत-कथा' की पंक्तियों में वह लिखता है-

मेरी दृष्टि जब भी कभी
जिंदगी के काले कोनों में पड़ी है
मैंने वहां देखी है-
एक अन्धी ढलान
बैलगाड़ियों को पीठ पर लादकर
खड़ी है...
वैसे यह सच है-
जब
सड़कों में होता हूँ
बहसों में होता हूँ
रह-रह चहकता हूँ
लेकिन हर बार वापस घर लौटकर
कमरे के अपने एकांत में
जूते के निकाले हुए पाँव-सा
महकता हूँ।

धूमिल अपने वर्गीय अंतर्विरोधों के प्रति सजग हैं। एक जनवादी कवि के लिए आवश्यक है कि वह अपने (वर्गीय) अंतर्विरोध के प्रति सजग रहे। 'शांति-पाठ' कविता की इन पंक्तियों को देखें-

मेरा गुस्सा-

जनमत की चढ़ी हुई नदी में

एक सड़ा हुआ काठ है।

लन्दन और न्यूयार्क के घुंडीदार तसमों में

डमरू की तरह बजता हुआ मेरा चरित्र

अंग्रेजी का 8 है।

15.4.2 धूमिल की कविता का कथ्य (दो)

धूमिल को मोहभंग का कवि कहा गया है। स्वतंत्रता के बाद युवाओं के सपने तिल-तिल कर मरते जा रहे थे। जनतंत्र एक वाग्विलास की चीज बनकर रह गया था। एक सचेत कवि के रूप में धूमिल अपने कवि-कर्म के प्रति सजग हैं। धूमिल ने 'पटकथा' कविता में लिखा है-

इस तरह जो था उसे मैंने

जी भरकर प्यार किया

और जो नहीं था

उसका इंतजार किया।

किन्तु आशाएं पूरी न हुईं।

फिर कवि लिखता है-

मैं अपनी सम्मोहित बुद्धि के नीचे

उसी लोकनायक को

बार-बार चुनता रहा

जिसके पास हर शंका और

हर सवाल का

एक ही जवाब था

यानी की कोट के बटन-होल में

महकता हुआ एक फूल

गुलाब का।

””

मैंने भी इस देश को

एक जवान आदमी की

रंगीन इच्छाओं की पूरी गहराई से

प्यार किया था

मगर अब, अतीत में अपना चेहरा

देखने के लिए

शीशे की धूल झाड़ना बेकार है

उसकी पालिश उतर चुकी है

अब उसके दोनों ओर सिर्फ

दीवार है

पटकथा कविता की ये पंक्तियां सपने के टूटने के सूचक हैं। इसी मोहभंग और सचेत दायित्व के बीच धूमिल की अकाल-दर्शन, शान्ति पाठ, शहर में सूर्यास्त, प्रौढ़ शिक्षा, मोचीराम, पतझड़, कवि 1970, मुनासिब कार्यवाई, भाषा की रात और पटकथा कविता को गहराई से पढ़ा जा सकता है। धूमिल की प्रसिद्ध कविता नक्सलबाड़ी में एक सार्थक वक्तव्य रचा गया है-'मुझे अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है'। यह धूमिल की अपनी सचेत दृष्टि की निष्पत्ति है। पटकथा कविता में धूमिल लिखते हैं-'भूख से तनी हुई मुट्ठी का नाम नक्सलबाड़ी है'। कई बार धूमिल की कविता में अतिरेकवादी वक्तव्य भी हमें देखने को मिल जाएंगे। दरअसल धूमिल के यहाँ सार्थक वक्तव्य और अतिरेकवादी कथन दोनों पर्याप्त मात्रा में मिल जायेंगे।

जनवादी चेतना और विचारों का व्यवहार से संबंध न होने के कारण धूमिल कहीं उतेजक तो कहीं निराशावादी हो जाते हैं। बदलने की जरूरत उन्होंने महसूस की, लेकिन उन्होंने देखा कि तमाम लोग उनके विरुद्ध हैं। इससे कवि को खींझ होती है- 'मैंने एक-एक को परख लिया है' मैंने जिसकी पूँछ, उठाई है-'वे सब के सब तिजोरियों के, दुभाषिये हैं, वे वकील हैं, वे वैज्ञानिक हैं, अध्यापक हैं, नेता हैं, दार्शनिक हैं, लेखक हैं, कवि हैं, कलाकार हैं, यानी कि - कानून की भाषा बोलता हुआ, अपराधियों का एक संयुक्त परिवार है। प्रश्न है कि क्या सभी वर्गों को तिजोरियों के दुभाषिये कहा जा सकता है? जनवादी क्रांति के दमन निमित्त मार्शल लॉ और जुलूस मुक्तिबोध की अंधेरे में कविता में भी है। लेकिन मुक्तिबोध क्रांतिकारी नायक की संभावना के प्रति सतर्क हैं। धूमिल की 'पटकथा' कविता का अंत इस वक्तव्य से होता है... 'सारा का सारा देश

पहले की तरह आज भी मेरा कारागार है'। इसे वर्गीय पराधीनता और टूटते हुए दिल के एहसास के सिवा और क्या कहा जा सकता है।

15.4.3 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दे और अभी तक प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर करें-

1. धूमिल.....कविता के सर्वाधिक चर्चित कवियों में से एक रहे हैं।
2. 'बांसुरी जल गई' नामक एक गीत संग्रह भी.....ने लिखा है।
3. धूमिल सत्ता की चालाकी और.....के अंतर्विरोधों को साथ-साथ दिखाते चलते हैं।
4. .....धूमिल की वैचारिकी को समझने के कुछ सूत्र देती हैं।
5. .....को मोहभंग का कवि कहा गया है।
6. स्वतंत्रता के बाद.....एक वाग्विलास की चीज बनकर रह गया था।
7. भूख से तनी हुई मुट्ठी का नाम .....हैं।
8. .....क्रांतिकारी नायक की संभावना के प्रति सतर्क हैं।
9. जुलूस मुक्तिबोध की.....कविता में भी है।
10. सारा का सारा देश पहले की तरह आज भी मेरा.....है।

15.5 धूमिल के समकालीन कवि

धूमिल साठोत्तरी हिंदी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। धूमिल के ऊपर उनके समकालीन राजकमल चौधरी का बहुत प्रभाव पड़ा है। राजकमल चौधरी के अतिरिक्त लीलाधर जगूड़ी, चंद्रकांत देवताले, अरुण कमल आदि कवि भी जनवादी धरा के महत्वपूर्ण कवि रहे हैं। किन्तु धूमिल की व्यंग्यधर्मिता इनके पास नहीं है। धूमिल की ताकत उनके भाषा, मुहावरे और व्यंग्य हैं। राजकमल चौधरी की प्रतिभा धूमिल से कम नहीं है, किन्तु राजकमल चौधरी की कविता जटिल बिम्ब विधान से आक्रांत है। इस दृष्टि से धूमिल अपने मुहावरे के कारण अपने समकालीन कवियों से अलग हो जाते हैं।

15.5.1 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थियों ! धूमिल के समकालीन कवि अंश का अध्ययन करने के पश्चात इस ज्ञान का स्व-मूल्यांकन निम्न प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिह्न द्वारा देकर अपने अध्ययन को सार्थक करें-

1. धूमिल साठोत्तरी हिन्दी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। ( )
2. धूमिल पर राजकमल चौधरी का बहुत प्रभाव पड़ा है। ( )
3. लीलाधरी जगूड़ी, चंद्रकांत देवताले, अरूण कमल आदि प्रयोगवाद के महत्वपूर्ण कवि रहे हैं। ( )
4. धूमिल की कविता जटिल बिम्ब विधान से आक्रांत है। ( )
5. राजकमल चौधरी की व्यंग्यधर्मिता धूमिल के पास नहीं है। ( )
6. धूमिल अपने मुहावरे के कारण अपने समकालीन कवियों से अलग हो जाते हैं। ( )

15.6 सारांश

धूमिल सच्चे अर्थों में एक जनवादी कवि हैं। जनवादी कवि की विशेषता यह होती है कि वह जनपक्षधर होता है। उसकी कविता जनाक्रोश से उपजती ही नहीं है, अपितु जन-आकांक्षा से युक्त भी होती है। जनवादी कवि जीवनानुभवों को अर्थात चेतना की गत्यात्मकता और जटिल आंदोलनों को कलात्मक रूप देता है। वस्तु को अर्थ और रूप देने की प्रक्रिया सपाट नहीं होती, बल्कि पर्याप्त द्वंद्वपूर्ण और जटिल होती है। धूमिल को अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है। आखिर ऐसा क्यों? धूमिल कहते हैं -'...जनतंत्र, जिसकी रोज सैकड़ों बार हत्या होती है और हर बार, वह भेड़ियों की जुबान पर जिंदा हैं (शहर में सूर्यास्त)। धूमिल के लिए मौजूदा जनतंत्र भेड़ियों का तंत्र है, मतलब शोषण और दमन का तंत्र है। धूमिल की कविता इस भेड़ तंत्र में जनतंत्र की तलाश की कविता है।

15.7 कठिन शब्द

1. नक्सलबाड़ी- बंगाल का एक स्थान। नक्सलबाड़ी आंदोलन का उद्गम स्थल
2. जनवाद-जनता हेतु प्रतिबद्ध विचारधारा
3. सम्मोहन-किसी विचार व व्यक्ति के प्रभाव में होना
4. सचेत- चेतनायुक्त
5. निश्छल- बिना छल के, सरल

15.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1 धूमिल की भाषा पर विचार करें।

प्र. 2 जनवादी कवि के रूप में धूमिल की कविता का मूल्यांकन करें।

15.9 उत्तर कुंजी

15.3.3 स्व-मूल्यांकन : 1. बंगाल 2. प्रसाद 3. जनवादी 4. उनवादी 5. 1936 के आस-पास 6. धूमिल

15.4.3 स्व-मूल्यांकन : 1. साठोत्तरी 2. धूमिल 3. मध्यम वर्ग 4. अकाल-दर्शन 5. धूमिल 6. जनतंत्र 7. नक्सलबाडी 8. मुक्तिबोध 9. अंधेरे में 10. कारागार

15.5.1 स्व-मूल्यांकन : 1. सही 2. सही 3. गलत 4. गलत 5. गलत 6. सही

15.10 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का आधुनिक इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, नईदिल्ली, 2007
2. संसद से सड़क तक, धूमिल, राजकमल प्रकाशन,1972
3. जनवादी समझ और साहित्य, रामनारायण शुक्ल, बनारस विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1985

धूमिल की काव्यकला

रूपरेखा

16.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
16.2 प्रस्तावना
16.3 धूमिल की कविता
    16.3.1 धूमिल की कविता के वर्णय विषय
    16.3.2 धूमिल की कविता-कला के स्रोत
    16.3.3 स्व-मूल्यांकन
16.4 धूमिल कविता की बिम्ब योजना
    16.4.1 धूमिल के बिम्ब
    16.4.2 धूमिल द्वारा नए बिम्ब प्रयोग
    16.4.3 स्व-मूल्यांकन
16.5 धूमिल की प्रतीक योजना व व्यंग्यार्थ
    16.5.1 सपाटबयानी और धूमिल
    16.5.2 धूमिल कविता की व्यंग्य योजना
    16.5.3 स्व-मूल्यांकन
16.6 सारांश
16.7 कठिन शब्द
16.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
16.9 उत्तर कुंजी
16.9 पठनीय पुस्तकें

16.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ का उद्देश्य आपको धूमिल की कलागत विशेषताओं का ज्ञान देना है।

इस आलेख को पढ़ने के पश्चात आप-

- कविता और समाज के अंतर्संबंधों को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।
- साठोत्तरी कविता की मुख्य विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- धूमिल की कविता की अंतर्वस्तु को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।
- धूमिल की काव्य कला से परिचित हो सकेंगे।
- धूमिल की कविता की वैचारिक को समझ सकेंगे।

16.2 प्रस्तावना

धूमिल मोहभंग आंदोलन के कवि हैं। यह मोहभंग सत्ता, व्यवस्था और वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के प्रति है। लेकिन बात इतनी ही नहीं है। धूमिल की कविता मध्यम वर्गीय चरित्र के अवसरवाद को भी बखूबी पकड़ते चलती है। जिस व्यवस्था में व्यक्ति रचनात्मक न हो सके, वह व्यवस्था त्याज्य है। धूमिल बार-बार संसद की भूमिका को रेखांकित करते हैं। कारण यह है कि धूमिल क्रियापरक शक्तियों की भूमिका व उनके इरादे उजागर कर देना चाहते हैं। वह यह दिखाना चाहते हैं कि समाज की क्रियाओं को प्रभावित करने वाली संस्थाएं भी अपनी भूमिका से कट चुकी हैं। इसलिए धूमिल की कविता में निराशा के स्वर भी उजागर हो उठते हैं। ऐसे समय में मजदूर व किसान की श्रमिक चेतना ही एक विश्वास जगाती है। (देखें- मोचीराम व अन्य कविता)।

धूमिल की कविता का स्वर मुख्यतः आवेगात्मक है। आवेगात्मक कविता में कई बार शब्द भदेसपन से युक्त हो जाते हैं। धूमिल कई बार अराजक -से दिखने लगते हैं। बावजूद बड़े स्तर पर उनकी कविता में लोक जीवन के ठोस एवं रचनात्मक चित्र बिखरे पड़े हैं। इन चित्रों को व्यापक संदर्भों से जोड़कर ही धूमिल की कविता के केन्द्रीयभूत तत्वों को समझा जा सकता है।

16.3 धूमिल की कविता

16.3.1 धूमिल की कविता के वर्णय विषय

धूमिल की कविताओं के वर्णय विषय सत्ता और लोक तक फैले हुए हैं। अकारण नहीं है कि धूमिल की कविताओं का प्रथम संग्रह 'संसद से सड़क तक' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। अकाल- दर्शन, शांति-पाठ, उस औरत की बगल में लेटकर, मोचीराम, प्रौढ़ शिक्षा, मकान, शहर का व्याकरण व शहर में सूर्यास्त, कवि 1970, नक्सलबाड़ी, कुत्ता, मुनासिब कारवाई व पटकथा शीर्षक कविताओं के माध्यम से हम धूमिल के विषय के वैविध्य को समझ सकते हैं। किंतु इन सब कविताओं में धूमिल का कहना, अप्रस्तुत योजना, व्यंग्य व लोकधर्मी चेतना समान भाव से उपस्थित है। धूमिल की कई कविताएं सत्ता व व्यवस्था के बीच व्यक्ति के निष्क्रिय व क्रियाहीन मनोवृत्ति में ढलते जाने की कहानी कहती हैं। कविता शीर्षक कविता की पंक्ति देखें-

उसे मालूम है कि शब्दों के पीछे
कितने चेहरे नंगे हो चुके हैं
और हत्या अब लोगों की रुचि नहीं-
आदत बन चुकी है

यानी लोगों की मनोवृत्ति अब आदत बन चुकी है। लेकिन इस मनोवृत्ति के कारक तत्वों की तलाश की बजाय धूमिल क्रिया के बाद की उद्घोषणा रचते कवि बनकर सामने आते हैं। इसी कविता की कुछ पंक्तियों को देखें-

एक सम्पूर्ण स्त्री होने के पहले ही
गर्भाधान की क्रिया से गुजरते हुए
उसने जाना कि प्यार
घनी आबादीवाली बस्तियों में
मकान की तलाश है
लगातार बारिश में भींगते हुए
उसने जाना कि हर लड़की
तीसरे गर्भपात के बाद
धर्मशाला हो जाती है और कविता
हर तीसरे पाठ के बाद

इसी प्रकार धूमिल की कुछ उद्घोषणाएं भी बहुचर्चित रही हैं। कुछ उदाहरण देखें-

जनता क्या है?/एक शब्द...सिर्फ एक शब्द हैः/कुहरा और कीचड़ और काँच से/बना हुआ.../एक भेड़ है/जो दूसरों की ठंढ के लिए/अपनी पीठ पर/ऊन की फसल ढो रही है'

.....

ऐसा जनतंत्र है जिसमें/जिंदा रहने के लिए/घोड़े और घास को/एक-जैसी छूट है/ कैसी विडंबना है/कैसा झूठ है/दरअसल, अपने यहाँ जनतंत्र/एक ऐसा तमाशा ही/जिसकी जान/मदारी की भाषा है।'.....' कायरता के चेहरे पर/सबसे ज्यादा रक्त है।/जिसके पास थाली है/हर भूखा आदमी/उसके लिए, सबसे भद्दी/गाली है।' ..... 'मगर बेकार.....मैंने जिसकी पूँछ/उठाई है उसको मादा/पाया है।'

इस प्रकार धूमिल की कविता का स्वर उद्घोषणा मूलक है। उनके वर्णय विषय विविध मनोवृत्तियो से युक्त हैं, जिसे वे अपने विशिष्ट कहन शैली में उद्घाटित करते हैं।

16.3.2 धूमिल की कविता-कला के स्रोत

कला और जीवन अविभाज्य हैं। कला का मूल स्रोत जीवन है। जीवन के राग-रेशे से पगी कविता व साहित्य ही सच्ची कला को जन्म देते हैं। हर जनवादी व सच्चा कलाकार जीवन से अपनी ऊर्जा ग्रहण करता है। जीवन की ताकत से हीन कला कोरे अमूर्तन के घेरे में सिमट कर रह जाती हैं। धूमिल की कला का श्रोत भी जन-जीवन है। जन-जीवन की आशा-निराशाएं व उनसे उपजी भंगिमाएं ही धूमिल की कविता को नया तेवर देती हैं।

धूमिल भंगिमा के कवि हैं। यह भंगिमा उन्होंने लोक से ग्रहण की है। इसलिए उनकी कविताओं में लोक भाषा, लोक भंगिमा व लोक के मुहावरे बखूबी प्रयोग में आते हैं। कई बार वे ग्रामीण मन के कवि दिखने लगते हैं। किंतु धूमिल का लोक मन गांव व शहर दोनों में समान रूप से संचरणशील रहा है। धूमिल की लोक भंगिमा को कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है।

... हर लड़की/तीसरे गर्भपात के बाद/धर्मशाला हो जाती है (कविता).... हवा से फड़फड़ाते हुए हिंदुस्तान के नक्शे पर/गाय ने गोबर कर दिया है (बीस साल बाद)। ..... यह जानकर कि तुम्हारी मातृभाषा/उस महरी की तरह है, जो/महाजन के साथ रात-भर/सोने के लिए/एक साड़ी पर राजी है। (जनतंत्र के सूर्योदय में)। .....'बच्चे तो बेकारी के दिनों की बरकत हैं' (अकाल-दर्शन)। ..... युवकों को आत्महत्या के लिए रोजगार दफ्तर भेजकर/ पंचवर्षीय योजनाओं की सख्त चट्टान को/कागज से काट रहा हूँ।' (शांति-पाठ)।.... उनकी

जांघों की हरकत/पाला लगी मटर की तरह/मुर्झा गयी है उनकी आंखों की सेहत/दीवार खा गई है (उस औरत की बगल में लेटकर).... मासिक धर्म रुकते ही सुहागिन औरतें/ सोहर की पंक्तियों का रस/(चमड़े की निर्जनता को गीला करने के लिए)/नए सिरे से सोखने लगती हैं/जांघों में बढ़ती हुई लालच से/भविष्य के रंगीन सपनों को/जोखने लगती हैं (राजकमल चौधरी के लिए ..... बाबूजी! सच कहूँ-मेरी निगाह में/न कोई छोटा है/न कोई बड़ा है/मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है/जो मेरे सामने/मरम्मत के लिए खड़ा है (मोचीराम)। ..... इस देश की मिट्टी में/अपने जाँगर का सुख तलाशना/अन्धी लड़की की आंखों में/उससे सहवास का सुख तलाशना है' (पतछड़)। ..... मैं झेंपता हूँ/ और धूमिल होने से बचने लगता हूँ/यानि बाहर का 'दुर-दुर'/और भीतर का बिल-बिल होने से/बचने लगता हूँ (कवि 1970) .... वह निहाल-तोंदियल/कैसा मगन है/हुचुर-हुचुर हँस रहा है (भाषा की रात)।

इस प्रकार के ढेरों प्रयोग धूमिल की कविता में भरे पड़े हैं। धूमिल लोकधर्मी चेतना के कवि हैं। वे लोक से ही मुहावरे उठाते हैं और लोक चेतना को ही तीव्र करते हैं।

16.3.3 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को कुछ क्षणों का विश्राम दे और इस पाठ से आपको जो धूमिल-कविता के वर्णय विषय व कला के स्रोत का ज्ञान प्राप्त हुआ उसका स्व मूल्यांकन निम्न प्रश्नों के उत्तर सही या गलत चिहन द्वारा देकर करें। यह स्व मूल्यांकन आपके ज्ञान को परिपक्व बनाएगा।

1. धूमिल को कविताओं के वर्णय-विषय सत्ता और लोक तक फैले हुए हैं। ( )
2. धूमिल का दूसरा कविता संग्रह 'संसद से सडक तक' शीर्षक से प्रकाशित हुआ । ( )
3. धूमिल की कईं कविताएं सत्ता व व्यवस्था के बीच व्यक्ति के निष्क्रिय व क्रियाहीन मनोवृत्ति में न ढलते जाने की कहानी कहती हैं। ( )
4. धूमिल की कविता का स्वर उद्घोषण मूलक है। ( )
5. कला और जीवन अविभाज्य हैं। ( )
6. हर जनवादी व सच्चा कलाकार जीवन से अपनी ऊर्जा ग्रहण करता है। ( )
7. धूमिल भंगिमा के कवि हैं और यह भंगिमा उन्होंने स्वंय से ग्रहण की है। ( )
8. कई बार धूमिल ग्रामीण मन के कवि दिखने लगते हैं। ( )

9. धूमिल लोकधर्मी चेतना के केवी हैं। ( )

10. धूमिल लोक मुहावरों को प्रयोग नहीं करते। ( )

16.4 धूमिल कविता की बिम्ब योजना

धूमिल की कविता अपनी बिम्बधर्मिता के कारण नवीन व सार्थक रही है। आधुनिक कविता अपने बिम्बों से पहचानी जाती है। जिस कविता में बिम्ब जितने टटके होंगे, कविता उतनी ही सार्थक होगी। धूमिल के बिम्ब चित्रात्मक भी हैं और वैचारिक भी।

16.4.1 धूमिल के बिम्ब

धूमिल के बिम्ब उनकी वैचारिक व तीखी वर्ग चेतना की निर्मिति हैं। परंपरागत बिंबों के अतिरिक्त धूमिल को बिंबों को ढालने की कला मालूम है। कविता- ''वह किसी गँवार आदमी की ऊब से/पैदा हुई थी और/एक पढ़े-लिखे आदमी के साथ/शहर में चली गई'' या ''उसने जाना कि प्यार/घनी आबादीवाली बस्तियों में/मकान की तलाश है''। इन पंक्तियों को देखें तो आप पाएंगे कि कविता को भी बिम्ब में ढालने की कला धूमिल ही जान सकते हैं। धूमिल के बिम्ब सौंदर्यमूलक ही नहीं होते अपितु उनकी गहरी वैचारिकी से निर्मित होते हैं। कई बार लगता है कि धूमिल के बिम्ब बेतरतीब हैं, किन्तु तब उसे कविता के व्यंग्यार्थ से मिलाना पड़ता है। बीस साल बाद कविता की पंक्ति देखें- "जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरूरत होती है?/और बिना किसी उत्तर के चुपचाप/आगे बढ़ जाता हूँ/क्योंकि आजकल मौसम का मिजाज यूं है/कि खून में उड़ने वाली पत्तियों का पीछा करना/लगभग बेमानी है।'' स्पष्ट है कि धूमिल दृश्य को बिम्ब बनाने की कला जानते हैं। सामान्यतः बिम्ब, दृश्य में ढल जाते हैं, किन्तु धूमिल दृश्य को बिम्ब में ढालने की कला जानते हैं। यह हुनर धूमिल को विशिष्ट बनाता है। जनतंत्र के सूर्योदय में कविता की पंक्ति देखें-''शहर की समूची/पशुता के खिलाफ/गलियों में नंगी घूमती हुई/पागल औरत के श्गाभिन पेट'' की तरह/सड़क के पिछले हिस्से में/छाया रहेगा पीला अंधकार''। इस कविता में भी दृश्य, बिम्ब में ढल रहा है। धूमिल की प्रसिद्ध कविता अकाल-दर्शन की पंक्ति देखें-''वह कौन-सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है/कि जिस उम्र में/मेरी माँ का चेहरा/झुर्रियों की झोली बन गया है/उसी उम्र की मेरे पड़ोस की महिला/के चेहरे पर/मेरी प्रेमिका के चेहरे-सा/लोच है''।

समाज की विसंगतियों, विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को इंगित करने के लिए धूमिल आसपास के बिम्ब तलाशते हैं या कहें कि आसपास के दृश्यों को बिम्ब में ढालते हैं।

यह धूमिल की विशिष्ट कला है। धूमिल कविता में उद्घोषणा करते हैं। "...कविता/घेराव में/किसी बौखलाए हुए आदमी का/संक्षिप्त एकालाप है।" या "...'जनतंत्र'/जिसकी रोज सैकड़ों बार हत्या होती है/और हर बार/वह भेड़ियों की जुबान पर जिंदा है!"। धूमिल की कविता में स्पष्ट कथन बहुत हैं। तयशुदा निष्कर्ष भी। कवि अपने निष्कर्षों को लेकर आश्वस्त है। यह आश्वस्ति धूमिल की कला को बल प्रदान करती है।

16.4.2 धूमिल द्वारा नए बिम्ब प्रयोग

धूमिल की कविता अपने बिम्ब व व्यंग्यार्थ के कारण बहुचर्चित रही है। भ्रमवश कुछ लोगों ने धूमिल की कविता को सपाटबयानी कह दिया है। किंतु सत्य यह है कि धूमिल ने आम जन के मुहावरे, लोकोक्ति को भी नवीन बिम्बों में ढाल दिया है। धूमिल के बिम्ब उनकी वैचारिकी व भंगिमा की उपज हैं। पटकथा कविता की शुरूआत होती है-

जब मैं बाहर आया

मेरे हाथों में

एक कविता थी और दिमाग में

आँतों का एक्स-रे ।

वह काला धब्बा

जो कल तक एक शब्द थाय

खून के अँधेरे में

दवा की शीशी का ट्रेडमार्क

बन गया था।

कविता की उपर्युक्त पंक्तियों को देखते हुए कुछ बातें स्पष्ट होती हैं। हाथ में कविता सृजन का प्रतीक है और दिमाग में आँत का एक्स-रे भूख, बदहाली, अभाव का सूचक। धूमिल एक साथ सृजन व भूख के द्वंद्व को उभारते हैं। यह द्वंद्व का विषय नहीं, यह विरोधाभास है। धूमिल अपनी कविता में दो प्रकार के भिन्न-भिन्न चित्र उभारते चलते हैं। यह धूमिल का विशिष्ट प्रयोग है। पटकथा कविता की ही कुछ पंक्ति देखें-

शब्दों के जंगल में/हम एक-दूसरे को काटते थे/भाषा की खाई को/जुबान से कम और जूतों से/ज्यादा पाटते थे..... मैंने देखा कि मैदानों में/नदियों की जगह/मरी हुई सांपों की केंचुले बिछी हैं.... जनता क्या है?/एक शब्द...सिर्फ एक शब्द हैः/कुहरा और कीचड़

और काँच से/बना हुआ.../एक भेड़ है/जो दूसरों की ठंड के लिए/अपनी पीठ पर/ऊन की फसल ढो रही है।''। स्पष्ट कि धूमिल के बिम्ब केवल सौंदर्य या चित्र-उपस्थापना के लिए नहीं आते, अपितु वे पूरी सामाजिक मनोवृत्ति को एक बिम्ब में उतार देते हैं।

पटकथा कविता की पंक्ति देखें-''वे जिसकी पीठ ठोंकते हैं-/उसके रीढ़ की हड्डी गायब हो जाती है/वे मुस्कराते हैं और/दूसरों की आँख में झपटती हुई प्रतिहिंसा/करवट बदलकर/सो जाती है''। इस प्रकार धूमिल अपने बिंबों से केवल चित्र नहीं बनाते अपितु एक सामाजिक यथार्थ की पूरी संरचना भी निर्मित करते हैं। धूमिल की प्रसिद्ध कविता 'हत्यारी संभावनाओं के नीचे' की निम्न पंक्ति को देखें-

मुर्गे की बाँग पर

सूरज को टाँगकर

सो जाओ

हत्याओं के खिलाफ

ओढ़कर

निकम्मी आदतों का लिहाफ।

प्रस्तुत पंक्तियों को देखें। यहां कवि का उद्देश्य केवल नए बिम्ब की सृष्टि करना ही नहीं है। धूमिल अपने बिंबों से प्रतिरोध भी करते हैं, व्यंग्य भी करते हैं। धूमिल की एक अन्य कविता 'भाषा की रात' की कुछ पंक्ति देखें-

बजट के अँधेरे में

नींद का

सविनय अवज्ञा आंदोलन

चल रहा है

नारों के पीछे

चीजों का नाटक बनाती हुई

भीड़ में

किसी बेशऊर आदमी का

बैरंग पुतला

चिट्ख-चिट्ख चल रहा है

उसकी राख

फुटपाथ पर पड़े भिखारी के

खाली कटोरे में

गिर रही है

यहां निर्थक जीवन की विडम्बना को कवि ने बखूबी पकड़ा है। इसी प्रकार धूमिल के ढेरों प्रयोगों को देखा जा सकता है।

16.4.3 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! आपने धूमिल-कविता की बिम्ब योजना का अध्ययन कर जो ज्ञान अर्जित किया है, उसका स्व-मूल्यांकन आप निम्न रिक्त स्थान भरकर करें :-

1. .....कविता अपने बिम्बों से पहचानी जाती है।
2. कविता को भी बिम्ब में ढालने की कला ही..... जान सकते हैं।
3. धूमिल के बिम्ब.....ही नहीं होते अपितु उनकी गहरी वैचारिकी से निर्मित होते हैं।
4. .....की विसंगतियों विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को इंगित करने के लिए धूमिल आसपास के बिम्ब तलाशते हैं।
5. धूमिल की कविता में.....कथन बहुत हैं।
6. धूमिल की कविता अपने.....के कारण बहुचर्चित रही है।
7. भ्रमवश कुछ लोगों ने धूमिल की कविता को.....कह दिया है।
8. धूमिल एक साथ सृजन व.....के द्वंद्व को उभारते हैं।
9. धूमिल के बिम्ब पूरी सामाजिक.....को एक बिम्ब में उतार देते हैं।
10. धूमिल अपने बिम्बों से.....भी करते हैं, व्यंग्य भी करते है।

16.5 धूमिल की प्रतीक योजना व व्यंग्यार्थ

16.5.1 सपाटबयानी और धूमिल

धूमिल की कविता अपनी जटिल व संश्लिष्ट संरचना के कारण पाठकों का ध्यान खींचती रही है। धूमिल काव्य की इस जटिलता या संश्लिष्टता को न समझ पाने के कारण डॉ नामवर सिंह जैसे आलोचक धूमिल को सपाटबयानी का कवि कह देते हैं। सपाटबयानी कह देने से एक भ्रम निर्मित होता है। सपाटबयानी धूमिल की कविता की

शैली का एक रूप है। धूमिल की कविता संरचना बेहद जटिल है।

धूमिल की कविता प्रतीक रचते चलती है। वह साधारण से दिखने वाले या रोजमर्रा से लगने वाले दृश्यों में विशिष्ट अर्थ भरते चलती है। हत्या को मनोवृत्ति से आगे ले जाकर संस्कृति में ढालने के प्रयास को धूमिल बखूबी पकड़ते हैं और उसे विशिष्ट प्रतीक बनाते हैं। कविता शीर्षक कविता की पंक्ति देखें-

और हत्या अब लोगों की रुचि नहीं-

आदत बन चुकी है

वह किसी गँवार आदमी की ऊब से

पैदा हुई थी और

एक पढ़े-लिखे आदमी के साथ

शहर में चली गई

धूमिल इस तरह के अनेक प्रयोग करते हैं। कविता को जब वे प्रतीक बनाते हुए कहते हैं- ...कविता/घेराव में/किसी बौखलाए हुए आदमी का/संक्षिप्त एकालाप है'। तब वे कविता को सिर्फ पारिभाषित ही नहीं कर रहे होते हैं, अपितु उसे क्रियापरक अर्थ यानी प्रतीक भी बना रहे होते हैं। अकाल-दर्शन कविता में अकाल को दर्शन में ढालने की मनोवृत्ति किस प्रकार एक प्रतीक बुन रही है, धूमिल उस तरफ ईशारा करते हैं-

उस मुहावरे को समझ गया हूं

जो आजादी व गांधी के नाम पर चल रहा है

जिससे न भूख मिट रही है, न मौसम

बदल रहा है

लोग बिलबिला रहे हैं

पत्ते और छाल

खा रहे हैं

मर रहे हैं, दान

कर रहे हैं।

जलसों-जुलूसों में भीड़ को पूरी ईमानदारी से

हिस्सा ले रहे हैं और

अकाल को सोहर की तरह गा रहे हैं।

यहां आजादी व गांधी कैसे निरर्थक शांति पाठ में रूपांतरित हो गए हैं, इस तथ्य को धूमिल ने बखूबी पकड़ा है। धूमिल इस तरह अनेक प्रतीक रचते हैं। नक्सलबाड़ी उनके यहां विरोध का प्रतीक है। कविता धूमिल के लिए भाषा में आदमी होने की तमीज है। कुत्ता एक मनोवृत्ति है, जो भूख व वहशीपन का प्रतीक है। संसद तेल की घानी बन जाती है, जिसमें आधा-तेल व आधा पानी है। 'रोटी व संसद' कविता में संसद किस प्रकार भूख से खेलने वाली सत्ता का प्रतीक बन गयी है, इस संरचना को धूमिल बखूबी दिखाते हैं। धूमिल मुहावरों को प्रतीक बनाते हैं। शान्ति पाठ धूमिल के यहां अकर्मण्यता का सूचक बन जाता है। इसी प्रकार ढेरों प्रतीक धूमिल की कविता को सार्थकता प्रदान करते हैं।

16.5.2 धूमिल कविता की व्यंग्य योजना

श्रेष्ठ कविता की एक महत्वपूर्ण पहचान होती है कि वह प्रतीक रच पाने में सक्षम है या नहीं। धूमिल की कविता व्यंग्य को सीधे-सीधे नहीं पकड़ती। नागार्जुन के व्यंग्य सपाट हैं। वे पंक्तियों के आधार पर पकड़े जा सकते हैं, किन्तु धूमिल के व्यंग्य सम्पूर्ण रचना में विन्यस्त रहता है। वास्तविक कविता या बड़ी कविता के लिए यह जरूरी होता है कि रचना का व्यंग्यार्थ पूरी रचना में विन्यस्त हो। धूमिल की काव्य कला को समझने के लिए उनकी वाक्य संरचना को देखना भी उचित होगा। कविता शीर्षक कविता का समापन इन पंक्तियों से होता है- कविता/घेराव में/किसी बौखलाए हुए आदमी का/संक्षिप्त एकालाप है।''। पूरी कविता जिस तरह से एक निराशा व विडंबना की सृष्टि करती है, उसे कवि समापन तक आते-आते पलट देता है। धूमिल की कविताओं का अंत एक सचेत कवि की टिप्पणी के रूप में होता है। बीस साल बाद कविता का अंत एक प्रश्न से होता है-'क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है'? जाहिर है अंत तक कवि की अपनी सचेत भूमिका स्पष्ट हो जाती है। वैसे धूमिल अपनी कविताओं में सचेत ढंग से उपस्थित हैं। धूमिल की प्रसिद्ध लंबी कविता पटकथा हो या अन्य कविता, कवि स्वयं एक पात्र के रूप में सचेत ढंग से उपस्थित है। कवि की प्रत्यक्ष उपस्थिति या स्वयं एक पात्र की भूमिका में होने के कारण धूमिल अपनी कविता को सचेत मोड़ देने में सक्षम हो सके हैं। 'अकाल-दर्शन' कविता का समापन इन पंक्तियों से होता है- 'क्रांति-/यहाँ के असंग लोगों के लिए/किसी अबोध बच्चे के-/हाथों की जूजी है'। यहां भी कवि अपने निष्कर्ष के साथ उपस्थित है। धूमिल की प्रसिद्ध कविता पटकथा भी इसी प्रकार कवि की सचेत टिप्पणियों के कारण विशेष रूप से पाठकों का ध्यान आकर्षित कर सकी है।

धूमिल की सार्थकता उनकी व्यंग्यधर्मी चेतना है, जो उनकी कविताओं में पंक्ति-दर-पंक्ति सामने आती है। धूमिल की एकांत-कथा कविता की शुरुआत इन पंक्तियों से होती है-''मेरे पास उत्तेजित होने के लिए/कुछ भी नहीं है/न कोकशास्त्र की किताबें/न युद्ध की बात/न गद्देदार बिस्तर/न टाँगे, न रात/चाँदनी/कुछ भी नहीं''। इन पंक्तियों में व्यंग्य साथ-साथ चलता है। इसी कविता के समापन की पंक्ति देखें-''जब/सड़कों में होता हूं/बहसों में होता हूँ :/रह-रह चहकता हूँ/लेकिन हर बार वापस घर लौटकर/कमरे के अपने एकांत में/जूते से निकाले गए पाँव-सा/महकता हूँ।''। जीवन का एकांत, व्यक्तिबद्धता, संकीर्णता में दुर्गंध हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इस प्रकार धूमिल की कविताओं में व्यंग्य एक टेक के समान आता है।

धूमिल की लंबी कविता पटकथा में व्यंग्य एक टेक की तरह-तरह पूरी रचना में विन्यस्त हो गया है। पटकथा की कुछ पंक्तियों को देखें-

"मैं अपनी सम्मोहित बुद्धि के नीचे/उसी लोकनायक को/बार-बार चुनता रहा/जिसके पास हर शंका और/हर सवाल का/एक ही जवाब था/यानी कि कोट के बटन-होल में/महकता हुआ एक फूल/गुलाब का।''। पंक्तियों के व्यंग्य कितना तीखा है, यह हम आसानी से समझ सकते हैं। इसी कविता की कुछ पंक्ति देखें- विधवाएँ तमगा लूट रही हैं/सधवाएँ मंगल गा रही हैं..... सबसे बड़ा बौद्ध-मठ/बारूद का सबसे बड़ा गोदाम है..... ऐसा जनतंत्र है जिसमें/जिंदा रहने के लिए/घोड़े और घास को/एक-जैसी छूट है..... वे जिसकी पीठ ठोंकते हैं-/उसके रीढ़ की हड्डी गायब हो जाती है..... हां यह सही है कि कुर्सियां वहीं हैं/सिर्फ, टोपियाँ बदल गईं हैं...''मैंने जिसकी पूँछ/उठायी है उसको मादा/पाया है..... तो वहाँ एक ईमानदार आदमी को/अपनी ईमानदारी का/मलाल क्यों है?''। इस प्रकार ढेरों वाक्य धूमिल की कविताओं में भरे पड़े हैं।

16.5.3 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ में आपने जो धूमिल की प्रतीक योजना व व्यंग्यार्थ का अध्ययन किया है। उसका स्व-मूल्यांकन निम्न दिए बहुवकिल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर का चुनाव करके करें। यह स्व-मूल्यांकन आपके ज्ञान को सार्थक परिणाम देगा।

1. धूमिल को सपाटबयानी का कवि किसने कहा है ?

(क) राजुकमार वर्मा (ख) नगेन्द्र

(ग) मुक्तिबोध (घ) डॉ. नागर सिंह

2. 'और हत्या अब लोगों की रूचि नहीं -

आदत बन चुकी है।' किस कविता की पंक्ति है।

(क) पटकथा (ख) कविता

(ग) नक्सलबाड़ी (घ) हत्यारी संभावनाओं के नीचें

3. आजादी व गांधी के निर्थक शांति पाठ को किस कविता में रूपांतरिक किया गया है ?

(क) रोटी और संसद (ख) नक्सलबाड़ी

(ग) अकाल-दर्शन (घ) पटकथा

4. शांति पाठ धूमिल के यहां किसका सूचक हैं?

(क) अकर्मण्यता (ख) ज्ञान

(ग) यश (घ) कर्म

5. किसके व्यंग्य सपाट हैं ?

(क) धूमिल (ख) नागार्जुन

(ग) मुक्तिबोध (घ) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

6. 'मेरे पास उत्तेजित होने के लिए / कुछ भी नहीं है'। किस कविता की पंक्ति है ?

(क) एकांत-कथा (ख) अकाल-दर्शन

(ग) पटकथा (घ) रोटी और संसद

16.6 सारांश

धूमिल हिंदी कविता की श्रेष्ठ उपलब्धि हैं। उन्होंने हिंदी कविता को नए मुहावरे प्रदान किये तथा परिष्कृत शैली प्रदान की। धूमिल की बिम्ब संरचना व व्यंग्यधर्मी चेतना इन्हें हिंदी का श्रेष्ठ कवि बनाती है। धूमिल मोहभंग के कवि के रूप में ख्यात हैं। किंतु इस मोहभंग हताशा के साथ ही कविता की मुनासिब कार्रवाई भी है। धूमिल को कविता से आशा है। धूमिल कहते हैं कि- 'वक्त बहुत कम है। इसलिए कविता पर बहस शुरू करो और शहर को अपनी ओर झुका लो यानी ऐसे कठिन समय में धूमिल की आशा कविता या आमजन से बनी हुई है। इस प्रकार धूमिल मोहभंग के कवि तो हैं, किन्तु हताशा के कवि नहीं हैं।

धूमिल ने हिंदी कविता को नई भाषा दी। नए बिम्ब दिए व नई भंगिमा दी। धूमिल की संरचना बिम्ब व व्यंग्य के बीच आवाजाही करती है। इसलिए धूमिल को सपाटबयानी के सहारे समझने का प्रयास उचित नहीं है। धूमिल जन मन के कवि हैं।

16.7 कठिन शब्दों के अर्थ

1. मोहभंग- किसी व्यवस्था, विचार के प्रति आस्था की समाप्ति से उपजी मनःस्थिति
2. आवेगात्मक- तीव्र ढंग से आया मनोभाव
3. भदेसपन- ठेठ व ग्रामीण शब्द व मुहावरे की भंगिमा
4. अविभाज्य- जिसको विभाजित न किया जा सके।
5. अमूर्तन- वायवी विचार
6. महरी- घर में कामकाज करने वाली नौकरानी
7. जाँगर- मेहनत करने का मनोभाव व क्षमता
8. टटका- ताजा
9. बेतरतीब- अस्त-व्यस्त
10. सपाटबयानी- किसी कथन को सीधे-सीधे कहने की शैली
11. संश्लिष्ट-जटिल
12. सोहर- संतान उत्पन्न होने पर गाये जाना वाला लोक गीत।

16.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1. धूमिल की बिम्ब योजना पर विचार कीजिये।

प्र. 2. धूमिल की काव्य कला पर टिप्पणी कीजिये।

प्र. 3. धूमिल की प्रतीक योजना पर विचार कीजिये।

प्र. 4. धूमिल की भाषा योजना को रेखांकित करें।

प्र. 5. धूमिल मोहभंग के कवि हैं, इस कथन की व्याख्या कीजिये।

प्र. 6. धूमिल काव्य के आधार बिंदुओं को रेखांकित कीजिये।

16.9 उत्तर कुंजी

16.3.3 स्व-मूल्यांकन 1. सही 2. गलत 3. गलत 4. सही 5. सही 6. सही 7. गलत 8. सही 9. सही 10. गलत

16.4.3 स्व-मूल्यांकन 1. आधुनिक 2. धूमिल 3. सौंदर्यमूलक 4. समाज 5. स्पष्ट 6. बिम्ब व व्यंग्यार्थ 7. सपाटबयानी 8. भूख 9. मनोवृत्ति 10. प्रतिरोध

16.5.3 स्व-मूल्यांकन 1. डॉ. नामवर सिंह 3. कविता 4. अकाल-दर्शन 5. नागार्जुन 6. एकांत-कथा

16.10 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का आधुनिक इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007
2. संसद से सड़क तक, धूमिल, राजकमल प्रकाशन,1972
3. जनवादी समझ और साहित्य, रामनारायण शुक्ल, बनारस विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1985

निर्धारित कविताओं का संवेदनागत और शिल्पगत वैशिष्ट्य

रूपरेखा

17.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम
17.2 प्रस्तावना
17.3 मुनासिब कारवाई
    17.3.1 मुनासिब कारवाई : आलोचनात्मक संदर्भ
    17.3.2 मुनासिब कारवाई : संवेदनागत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य
    17.3.3 स्व-मूल्यांकन
17.4 मोचीराम कविता
    17.4.1 मोचीराम कविता : आलोचनात्मक संदर्भ
    17.4.2 मोचीराम : संवेदनागत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य
    17.4.3 स्व-मूल्यांकन
17.5 नक्सलबाड़ी
    17.5.1 नक्सलबाड़ी कविता : आलोचनात्मक संदर्भ
    17.5.2 नक्सलबाड़ी : संवेदनागत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य
    17.5.3 स्व-मूल्यांकन
17.6 सारांश
17.7 कठिन शब्दों के अर्थ
17.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
17.9 उत्तर कुंजी
17.10 पठनीय पुस्तकें

17.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको धूमिल की मुनासिब कारवाई, मोचीराम व नक्सलबाड़ी कविताओं की संवेदना और शिल्प से अवगत करवाना है।

इस आलेख को पढ़ने के पश्चात आप -

- धूमिल की कविताओं में आये उनके लोकतांत्रिक कवि रूप से परिचित होंगे।
- धूमिल की मुनासिब कारवाई कविता के भावार्थ को समझ सकेंगे।
  मोचीराम कविता की अर्थ व्यंजना को समझ सकेंगे।
- नक्सलबाड़ी कविता की वैचारिकी से परिचित हो सकेंगे।
- धूमिल की काव्य कला से परिचित हो सकेंगे।
- धूमिल की कविता में व्यक्त मुहावरे से परिचित हो सकेंगे।

17.2 प्रस्तावना

धूमिल साठोत्तरी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे और सुदामा पांडेय का लोकतंत्र धूमिल के कविता संग्रह हैं। किंतु धूमिल की कीर्ति का आधार संसद से सड़क तक (1972) है। इस संग्रह में धूमिल की चर्चित व महत्वपूर्ण कविताएँ संग्रहित हैं।

इस आलेख संख्या में धूमिल की तीन कविताएँ चयनित हैं। मुनासिब कारवाई, मोचीराम व नक्सलबाड़ी को इस आलेख में रखा गया है। तीनों कविताएँ धूमिल की चर्चित कविताएँ रही हैं। मुनासिब कारवाई में धूमिल कविता की दो परिभाषाएँ देते हैं। 'कविता शब्दों की अदालत में मुजरिम के कटघरे में खड़े बेकसूर आदमी का हलफनामा है'। तथा 'कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है'।

मोचीराम कविता धूमिल की वर्गचेतना की प्रतिनिधि कविताओं में से एक है। मोचीराम यहां पेशे व जाति से आगे एक वर्ग व एक चेतना का प्रतीक बन जाता है। इसी प्रकार नक्सलबाड़ी धूमिल की वैचारिक व आंदोलनधर्मी कविता है। नक्सलबाड़ी भूमि सुधार व भूमि अधिग्रहण के द्वंद्व पर रचित कविता है। इन कविताओं को पढ़कर हम

धूमिल के क्रांतिकारी वर्ग चेतस कवि रूप को समझने की दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

17.3 मुनासिब कारवाई

17.3.1 मुनासिब कार्रवाई : आलोचनात्मक संदर्भ

मुनासिब कारवाई धूमिल की चर्चित कविता है। कविता में व्यंग्यात्मक तेवर भी है और कवि का अपना घोषणापत्र भी। कविता का संदेश इस तथ्य में निहित है कि अकेला कवि कटघरे के समान हो जाता है। कविता और व्यक्ति की मुक्ति समाज से जुड़कर ही सम्भव हो सकती है।

मुनासिब कार्रवाई में धूमिल कहते हैं कि अकेला कवि कटघरा होता है, क्योंकि वह समाज की गति में अपने योग देने की भूमिका से कटकर अलग हो जाता है। समाज से कट जाने से पूर्व कविता पर बहस आवश्यक है, यानी प्रतिरोध व एका के रास्ते पर चलना जरूरी हो जाता है।

रंगीन पत्रिकाओं के लुभावने चित्र व चरित्र हमारे सामने खोखले व टूटे ईमान से युक्त व्यक्तित्व ही खड़ा कर पा रहे हैं। ये दांत में फंसी हुई भाषा के समान हैं, जो अपुष्ट व अबूझ हैं, जो अपने अर्थ को खोते जा रहे हैं। खुफिया तनाव, घड़ी या समय की गति, वकील का लबादा यानी न्याय की पक्षधरता व अपने हिस्से की चीज को अलग करने का विवेक खत्म होता जा रहा है। ये अपना अर्थ खोते जा रहे हैं। ऐसे भयावह समय में शिनाख्त के लिए जरूरी है कि (सत्य-असत्य के विवेक के लिए) शब्द का प्रयोग सावधानी से करें ,सतर्कता से करें। बोरे के अनाज को तोलते हुए बाट की जगह किसान का चेहरा रख कर देखो। किसान का चेहरा, भाव बोरे से ज्यादा वजनदार है। क्योंकि उसमें उसका श्रम सम्मिलित है तथा उसकी आशाएं भीं।

कविता में न्याय की पकड़ आवश्यक है। शहर के कोतवाल की नीयत यांत्रिक है। उसका न्याय बदल गया है। अब वह न्याय की जगह अन्याय के साथ खड़ा है। न्याय अब आम आदमी से हटकर आढ़तियों (न्याय के रसूखदार) के पास चला गया है। लेकिन अब कविता के अर्थ को बदलने की जरूरत है। समय अब बदल गया है। समय अब स्थूल नहीं रह गया है। समय को ठीक करने के लिए अब घड़ीसाज के पास जाने की जरूरत नहीं हैं। युवा बोध से हीन समय में पुराने औजार भी बेकार हो चले हैं। आज की तथाकथित समझदारी तो वित्त मंत्री के ऐनक के शीशे के मोटे-पतले की माप करने व नेता के भाइयों के नाम कोटे की संख्या पता लगाने में व्यक्त हो रही है। अर्थात निरर्थक कार्यों में (अरचनात्मक) लिप्त होकर भी आज व्यक्ति समझदार बना हुआ है।

धूमिल कहते हैं कि चरित्रहीन के घर का चावल ही सबसे महीन है अर्थात चरित्रहीन व्यक्ति की बातें ही सबसे ज्यादा असरकारक व रहस्यमय हैं। उनमें समाज

की बारीकियां ज्यादा हैं। ऐसी स्थिति में, ऐसे आपराधिक समय में कविता पर बहस जरूरी हो जाती है। लेकिन कविता गूंगे के मुंह से नहीं फूटती, और यदि फूटती भी है तो वह उसके बाह्य रूपों को ही बता सकती है। फिर कविता क्या है? कवि कहता है कि कविता तो परेशान, संत्रस्त आम आदमी, जो मुजरिम की भांति कटघरे में खड़ा है, बेकसूर आम आदमी का हलफनामा या बयाननामा है। यानी घोषणापत्र है। आम आदमी की सच्ची भावनाएं ही कविता में व्यक्त दस्तावेज हैं। लेकिन यह समझना भूल होगी कि कविता का काम चरित्र बनाना या कहें कि चमकाना है। नहीं, कविता तो भाषा में आदमी बनने की तमीज है। यानी भाषा में मनुष्य बनने की विधा, अनुशासन ही कविता है। इस प्रकार संघर्षरत आदमी अपने पुराने तेवर में लौटता है और अपने से खोया व्यक्ति शहर की संभावना बन उठता है। लेकिन सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वह चालक व धूर्त आदमी , सच्चे आम आदमी को सामाजिक गति से काटकर अलग करने पर तुला हुआ है। वह व्यक्ति आदमी के भेष में दरिंदा है, क्योंकि उसके हाथ-पैर तो पंगु हो चुके हैं अर्थात वह श्रम से कट चुका है, किन्तु उसके नाखून सुरक्षित हैं अर्थात उसके अंदर की पशुता, हिँसा जीवित है।उसने प्रतिरोध में खड़े व्यक्ति को तोड़ लिया है। वह व्यक्ति सुख से अघाया हुआ है और भौतिक सुविधाओं से युक्त है। इसीलिए वह तुम्हें अकेला कर देने के षड्यंत्र में लिप्त है, क्योंकि उसे पता है कि अकेले आदमी की बातों को कोई सच नहीं मानता और न उसमें बल होता है।

कवि कहता है कि वक्त कम है। इसलिए निर्रथक कामों में उसे मत गंवाओ। चूंकि वक्त कम है, इसलिए कविता पर बहस आवश्यक है। कविता ही सत्य तक पहुंचने की अंतिम आस है। वक्त कम है और ऐसे समय में कविता की ताकत तभी तक सुरक्षित है, जब तक कि वह अपने वार को तीव्र ढंग से ,सही समय से कर दे रही है। जैसे कसाई के गंडासे से बोटी का कटना आवश्यक हो उठता है, वैसे ही कविता यदि सही समय पर अपना कार्य करे तो वह सामाजिक समस्याओं को हल करने की दिशा में आवश्यक दस्तावेज बन सकती है।

मुनासिब कार्रवाई धूमिल की सचेत बौद्धिकी को व्यक्त करती अप्रतिम कविता है। इस कविता में कवि ने सच्चे प्रगतिशील कविकर्म का परिचय दिया है। आलोच्य कविता में कवि ने अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला है-

- धूमिल ने संकेत किया है कि कवि व कविता की मुक्ति समाज के साथ जुड़ कर ही सम्भव हो सकती है। व्यक्ति व कवि अकेले होकर कटघरे में हो जाता है। इस अकेलेपन से मुक्ति समाज के साथ मिलकर व कविता पर

बहस शुरू कर ही सम्भव हो सकती है। कविता पर बहस का अर्थ है कि सामाजिक यथार्थ को संवेदनिक यथार्थ में बदलने की प्रक्रिया में सम्मिलित हो जाना।

- धूमिल कहते हैं कि भाषा का सचेत प्रयोग आवश्यक है। भाषा के सचेत प्रयोग का अर्थ है कि सत्य बिना अराजक ढंग से अभिव्यक्त हुए बिना भी प्रकट हो जाये।
- कवि कहता है कि यथार्थ को प्रकट करने के लिए नए औजारों की जरूरत है। पुराने औजारों से यह सत्य प्रकट नहीं हो सकता। आज की व्यावहारिक सच्चाई सत्य तक पहुंचाने में नाकाफी है। क्योंकि वह मूल यथार्थ तक नहीं पहुंच पा रही।
- आज के कठिन समय में कविता पर बहस आवश्यक हो उठती है। लेकिन कविता कोई स्थूल चीज नहीं है। बल्कि कविता मुजरिम के कटघरे में खड़े व्यक्ति का हलफनामा है। यानी कविता ही आम आदमी का घोषणापत्र है।
- कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है। धूमिल की यह परिभाषा हिंदी की सर्वाधिक लोकप्रिय परिभाषाओं में से एक है। कविता आदमी को परिष्कृत करती है। कविता मनुष्य के अंदर परिवर्तन उपस्थित करती है। बिना आंतरिक परिवर्तन के मनुष्यता जीवित नहीं रह सकती। कविता यही कार्य किया करती है। इसीलिए कवि ने कविता को आदमी होने की तमीज कहा है।
- कवि और कविता की मुक्ति अकेले में संभव नहीं है। अकेला कवि कटघरा होता है। कवि व आम इंसान को अलग-थलग करने के लिए सत्ता व वर्चस्ववादी ताकतें प्रयासरत हैं। वे श्रम से अलग-थलग हैं, किंतु अपनी हैवानियत में जिंदा हैं। व्यवस्था अपनी सुविधा के लिए आम व्यक्ति को अकेला करने के लिए निरंतर सक्रिय है।
- कविता ही यथार्थ के उद्घाटन में सक्षम है। किंतु उसके सामने चुनौती बड़ी है। कविता का काम ज्यादा सूक्ष्म है। कविता सत्य तक तभी पहुंच सकती है जब वह समय के यथार्थ को तीव्र ढंग से अभिव्यक्त कर सके।

17.3.2 मुनासिब कारवाई : संवेदनागत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य

मुनासिब कारवाई धूमिल की प्रतिरोधी चेतना को दर्ज करती महत्वपूर्ण कविता है। यह कविता अपने कथ्य भंगिमा और व्यंग्य के कारण विशिष्ट रही है। संक्षेप में कविता की संवेदना को निम्न बिंदुओं के आलोक में समझा जा सकता है-

- मनुष्य के अलगावपन व अकेलेपन को तोड़ने के लिए कविता (भाव, संवेदना) पर बातचीत ही सार्थक है। कविता पर बहस करना संवेदना को बचाये रखने की एक सार्थक पहल है।
- मुनासिब कारवाई भाषा के बचाव और क्रिया की कविता है। भाषा द्वारा क्रिया की उत्पत्ति इसका एक अहम पड़ाव है। भाषा को धँसाने का अर्थ संवेदना को जाग्रत करने से है।
- कविता के अर्थ बदलने को मनुष्य की नियति के बदलने के अर्थ में देखा जा सकता है। मनुष्य का सामान्य व्यवहार भी बदल चुका है। ऐसे में कविता उस बदलते व्यवहार की निरीक्षिका के तौर पर सामने आती है।
- समाज की विसंगतिपूर्ण स्थितियों को पकड़ने के लिए कविता पर बहस शुरू होनी आवश्यक है। समाज की विसंगतिपूर्ण स्थितियों को कविता ही उद्घाटित कर सकती है। धूमिल कविता में कहते हैं कि- 'कविता-'शब्दों की अदालत में' मुजरिम के कटघरे में खड़े बेकसूर आदमी का 'हलफनामा है'। यह पंक्ति कविता को प्रतिबद्ध कर्म से जोड़ती है।
- धूमिल अकेले व्यक्ति और कवि को कटघरा मानते हैं। समाज में बदलाव मनुष्य की सामूहिक क्रियाशक्तियों से जुट कर ही सम्भव हो सकता है।
- धूमिल इस कविता में मनुष्य की पाशविक वृत्तियों को बराबर उजागर करते चलते हैं। बिना इस पहचान के मनुष्य के मूल सत्य तक नहीं पहुंचा जा सकता। 'मुनासिब कारवाई' मनुष्य के पाशविक वृत्तियों की पहचान करती चलती है।
- कविता, भाषा में आदमी होने की तमीज है। यह वाक्य धूमिल की अपनी रचनात्मक समस्या है।
- 'मुनासिब कारवाई' ढहते जाते समाज में कविता द्वारा रचनात्मक प्रतिरोध की कविता है।

शिल्पगत वैशिष्ट्य

मुनासिब कारवाई कथन की भंगिमा के कारण तो चर्चित रही ही है, साथ ही शिल्पगत वैशिष्ट्य के कारण भी महत्वपूर्ण रही है। कविता का शिल्प जटिल है। संक्षेप में कविता के शिल्प पर कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं-

- कविता का शिल्प जटिल है। कहीं कविता वर्णात्मक हो उठती है तो कहीं निष्कर्षात्मक।
- शिल्प की दृष्टि से कविता की जटिलता का कारण यह रहा है कि कविता में निष्कर्ष व वर्णन की क्रमिक पद्धति नहीं रखी गयी है।
- कविता में लोक भाषा की रवानगी तो मिलती ही है। साथ ही प्रतीक, बिंबों में भी लोक तत्व की बहुलता है। यही कारण है कि कविता में भदेस के तत्व बहुतायत हैं।
- कविता वर्णात्मक तो है, किन्तु बीच-बीच में संवाद के प्रयोग भी बहुतायत हैं। संवादात्मक शैली के प्रयोग के कारण कविता में बहस व तर्क के लिए पर्याप्त गुंजाइश रही है। अतः कविता अपने शिल्प वैशिष्ट्य में आकर्षक व महत्वपूर्ण रही है।

17.3.3. स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थियों ! इस पाठ से अभी तक प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही / गलत चिहन द्वारा देकर करें। यह मूल्यांकन आपके अध्ययन का एक सोपान है।

1. मुनासिब कार्यवाई कविता का सन्देश इस तथ्य में निहित है कि अकेला कवि कटघरे के समान हो जाता है। ( )
2. रंगीन पत्रकाओं के लुभपावने चित्र व चरित्र हमारे सामने ईमान से युक्त व्यक्तित्व खडे करते है। ( )
3. कविता में न्याय की पकड़ आवश्यक नहीं है। ( )
4. धूमिल कहते हैं कि चरित्रहीन के घर का चावल ही सबसे महीन है। ( )
5. कविता सत्य तक पहुँचने कि अंतिम आस है। ( )
6. यथार्थ को प्रकट करने के लिए नए औजारों की जरूरत है। ( )
7. कविता ही आम आदमी का घोषणापत्र है। ( )

8. मुनासिब कारवाई भाषा के बचाव और क्रिया की कविता नहीं है। ( )

9. मुनासिब कारवाई कविता का शिल्प सरल है। ( )

10. मुनासिब कारवाई कविता में निष्कर्ष व वर्णन की क्रमिक पद्धति रखी गयी है। ( )

17.4 मोचीराम

17.4.1 आलोचनात्मक संदर्भ : मोचीराम

मोचीराम धूमिल की चर्चित कविता है। यह कविता कवि और सचेतन अनुभवी मोचीराम के मध्य संवाद पर आधारित है। मोचीराम के संवाद के माध्यम से कवि ने अपनी लोकपक्षरता सिद्ध की है। मोचीराम श्रमशील वर्गचेतना का प्रतीक है।

कविता में मोचीराम कवि से संवाद करने को उत्सुक होते हुए कहता है- मोचीराम ने रांपी से ऊपर उठाते हुए एक क्षण को मेरा चेहरा यानी मेरी मनोदशा भांपी और फिर जब उसे विश्वास हो गया कि मैं उसकी बातों को समझ सकता हूँ, तब उसने हँसते हुए कहा कि बाबूजी! मैं सच कहता हूँ कि मेरी निगाह में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। मेरे लिए हर व्यक्ति एक जोड़ी जूते के समान है। अर्थात व्यक्ति की, मनुष्य की सामाजिक पहचान वस्तु-जगत के अनुभव के आधार पर ही तय होती है। मोचीराम का सामाजिक अनुभव निश्चयात्मक भाषा में व्यक्त हो रहा है, क्योंकि उसे व्यक्ति मनोभाव व वस्तु जगत का गहरा ज्ञान है। सामान्य भाषा में या लोकव्यवहार में भी कहते हैं कि व्यक्ति की पहचान उसके जूतों से होती है। मोचीराम सामाजिक मनोभाव से आगे अनुभव सत्य तक अपने वक्तव्य को ले जाता है। इसीलिए तो वह जूतों की मरम्मत को व्यक्ति की मरम्मत से जोड़ देता है। मोचीराम कहता है कि जूते की नाप से बाहर कोई नहीं है। जूते की नाप मोचीराम के अनुभव की नाप से पुष्ट हुए हैं। मोचीराम आदमी की पीड़ा,दर्द, संवेदना भी माप लेता है। यही कारण है कि एक सामान्य आदमी की पीड़ा को वह जूतों की स्थिति से महसूस कर लेता है। मोचीराम और जूतों की मरम्मत के बीच एक मनुष्य की पीड़ा भी चलती रहती है। जूतों पर मोचीराम के हथौड़े की चोट सामने खड़े व्यक्ति के सीने पर पड़ती है, क्योंकि वह आदमी की बिगड़ती स्थिति को महसूस करता है।

मोचीराम कहता है कि मेरे पास तरह-तरह के जूते मरम्मत के लिए आते हैं। ये जूते व्यक्ति की हैसियत बताते हैं। जूता व्यक्तित्व का परिचायक भी होता है। हर जूते की शक्ल अलग-अलग होती है, जैसे कि हम मनुष्य का चरित्र व व्यक्तित्व। जैसे एक जूता मेरे पास आया। उसमें ढेर सारे पैबंद लगे हुए थे। यह पैबंद का जूता जिस

मनुष्य का है, उसके चेहरे पर चेचक के दाग हैं। जूते के चकत्ते और चेचक में अंतर नहीं है,क्योंकि दोनों का सौंदर्य नष्ट हो चुका है। यानी व्यक्ति का चेहरा उसकी अवस्था व मनोवृत्ति का ठीक-ठीक परिचय बता रहा है। उस व्यक्ति की फीकी हँसी वैसी ही है, जैसे कि किसी टेलीफोन के खंभे पर कोई पतंग फंस जाती है। मैं उससे कहना चाहता हूँ कि इस फटे जूते पर क्यों अपना पैसा फूंक रहे हो?किन्तु यह कहते हुए मेरी जुबान लड़खड़ा जाती है। उस आदमी की दशा के प्रति मोचीराम के मन में सहानुभूति जगती है क्योंकि वह तो उसी की जाति यानी वर्ग का है। मोचीराम के मन में उसके प्रति सहानुभूति जन्मती है। ऐसे समय में मोचीराम कहता है कि मैं तब उसके जूते की चकतियों की जगह आंखें टांकता हूँ। मोचीराम को उस व्यक्ति के प्रति गहरी करुणा है, इसीलिए जूते में वह अपनी आंखें या संवेदना टांगता है।

मोचीराम कहता है कि एक जूता और है जो पांव को लांघ गया है। यह दूसरा जूता आर्थिक निश्चिन्तता, मौकापरस्ती व आरामतलबी व दिखावे का सूचक है। वह वर्ग श्रेष्ठता का प्रतीक है। मोचीराम उस व्यक्ति को अक्लमंद नहीं मानता। वह लालची है और बिना श्रम के सुख चाहता है। वह व्यक्ति मोचीराम को ढेर सारे निर्देश देता है, किन्तु उसका उचित पारिश्रमिक नहीं देता। वह चरित्रहीन है। उसकी हरकतों से मोचीराम के मन में पीड़ा उभरती है। मोचीराम की दूसरी पीड़ा यह है कि उसके पेशे और जूते के बीच में एक आम आदमी है। आम आदमी पर टांके तो पड़ते हैं किंतु उसकी चोट हृदय पर दर्ज होती है। ईमानदार श्रम का सम्मान नहीं होगा तो वह चुभेगा ही। मोचीराम ईमानदारी से अपने हिस्से की मेहनत कर रहा है। धर्म व दलाली के नाम पर काम का कोई औचित्य नहीं है। मोचीराम के मन में भी वसंत ऋतु आता है। वह भी चाहता है कि इस काम से कुछ क्षण के लिए मुक्त हो,फिर उसे लगता है कि यदि वह श्रम नहीं करेगा तो पेट कैसे चलेगा? मोचीराम फिर श्रम की ओर लौट आता है। मोचीराम के जीवनबोध को देखकर कुछ लोग कहते हैं कि तुम मोची नहीं शायर हो। मोचीराम अनुभवी व विचारशील प्राणी है। सच को लोग रोमानी बना देना चाहते हैं। किंतु लोग एक गलतफहमी के शिकार हैं। हर व्यक्ति के भीतर सच्चाई है। किंतु कुछ लोगों को सच्चाई समझ में आ चुकी है। किंतु कुछ लोग ऐसे भी हैं कि पेट की आग के कारण अन्याय को चुपचाप सह लेते हैं। किंतु मोचीराम जनता है कि इंकार से भरी हुई चीख और एक समझदार चुप दोनों भविष्य गढ़ने में एक ही तरह का फर्ज अदा करते हैं। कवि के लिए एक ओर प्रतिरोध जरूरी है तो दूसरी ओर संयम भी आवश्यक है। भविष्य में चुप और चीख दोनों की अपनी अर्थवत्ता है। मोचीराम उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो वस्तुजगत के यथार्थ को जीवन अनुभव व विवेक से हल करते हैं।

मोचीराम कविता धूमिल की लोकधर्मी चेतना की प्रतिनिधि कविता है। मोचीराम श्रमिक वर्ग का प्रतीक है। किंतु मोचीराम बौद्धिक जनचेतना का प्रतीक पात्र है। मोचीराम कविता अपने तेवर के कारण भी चर्चित रही है। यहां कुछ विशेष विशेषताओं की ओर इंगित करना आवश्यक है।

- मोचीराम श्रम से जुड़ा हुआ है। श्रम से जुड़ा व्यक्ति सामाजिक जीवन अनुभूति के सबसे ज्यादा करीब होता है। मोचीराम के लिए व्यक्ति का दो जोड़ी जूतों में रूपांतरित हो जाने का अर्थ यह है कि व्यक्ति की वर्गीय स्थिति व व्यक्ति की मनोदशा को मापने के लिए श्रम एक आवश्यक मापदंड है।
- श्रम और मोचीराम के बीच समय की अपनी गति भी है। समय परिवर्तनशील है। इस तीव्र बदलाव व जटिल परिस्थितियों के बीच कविता का कार्य भी कठिन है।

17.4.2 मोचीराम : संवेदनागत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य

- मोचीराम धूमिल की बहुचर्चित कविता रही है। इस कविता में धूमिल ने मोचीराम के बहाने व्यक्ति, समाज के मनोविज्ञान को बखूबी उद्घाटित किया है। संक्षेप में मोचीराम कविता के संवेदनागत वैशिष्ट्य को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैः
- मोचीराम एक चरित्र केंद्रित कविता है। किंतु इस कविता में चरित्र के बहाने सामाजिक मनोवृत्ति व यथार्थ का उद्घाटन करना कवि का उद्देश्य रहा है।
- मोचीराम के लिए व्यक्ति के बड़े-छोटे होने से ज्यादा महत्व इस बात के लिए है कि उसे मरम्मत (सुधार) की कितनी आवश्यकता है। कविता एक साम्य की पड़ताल करती है।
- जूते की नाप और टांके पड़ने के माध्यम से कवि आम आदमी के संघर्ष व उसकी विवशता को बखूबी उद्घाटित कर रहा है।
- कविता, जूते में माध्यम से व्यक्ति के संघर्ष, पीड़ा, विवशता को उद्घाटित करती है।
- मोचीराम एक प्रतीक बन जाता है। मोचीराम सामाजिक व्यवस्था की समझ व उसकी मरम्मत का एक रूपक बन जाता है।

- मोचीराम कविता जिंदा रहने के लिए सही तर्क को हमारे सामने रखती है। इस कविता में धूमिल की कथ्य भंगिमा बहुत संतुलित है। कुछ कविताओं में धूमिल आक्रामक हो उठते हैं, किन्तु मोचीराम कविता में धूमिल का स्वर संयमित है।
- मोचीराम कविता इस मिथ को तोड़ती है कि पेशा एक जाति है। कविता इस तथ्य को हमारे सामने रखती है कि आग और सच्चाई व्यक्ति के मूल में है।
- मोचीराम कविता 'इनकार से भरी हुई एक चीख' और 'एक समझदार चुप' के महत्व को हमारे सामने रखती है।
- शिल्पगत वैशिष्ट्य
- मोचीराम कविता अपने शिल्पगत वैशिष्ट्य व भंगिमा के कारण महत्वपूर्ण है। संक्षेप में कविता की कतिपय विशेषताएं महत्वपूर्ण है।
- मोचीराम कविता संवादात्मक कविता है। कवि और मोचीराम के मध्य संवाद के माध्यम से कविता सार्थक संवाद रचती-बुनती है।
- कविता वर्णात्मक व चित्रात्मक दोनों शैलियों को लेकर चलती है।
- कविता में बोलचाल के शब्दों के प्रयोग से प्रामाणिकता प्रदान की गई है।
- मोचीराम शिल्प की दृष्टि से अनेक चित्र हमें पकड़ाती है।
- मोचीराम कविता में बिम्ब व प्रतीक का सार्थक प्रयोग हुआ है।

17.4.3 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! 'मोचीराम' कविता की संवेदना और शिल्प पक्ष का अध्ययन तो आपने कर लिया, अब आप निम्न रिक्त स्थान भरकर इस अध्ययन का स्व-मूल्यांकन भी अवश्य करें -

1. मोचीराम कविता कवि और सचेतन अनुभवी मोचीराम के मध्य..... पर आधारित है।
2. .....ने हँसते हुए कहा मैं सच कहता हूँ कि मेरी निगाह में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा।
3. मोचीराम का सामजिक अनुभव.....भाषा में व्यक्त हो रहा है।

4. मोचीराम के जीवनबोध को देखकर कुछ लोग कहते हैं कि तुम मोची नहीं.....हो।

5. मोचीराम उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो.....के यथार्थ को जीवन अनुभव व विवेक से हल करते हैं।

6. मोचीराम.....वर्ग का प्रतीक है।

7. .....एक चरित्र केन्द्रित कविता है।

8. मोचीराम कविता.....के माध्यम से व्यक्ति के संघर्ष, पीड़ा, विवशता को उदघाटित करती है।

9. मोचीराम कविता इस मिथ को तोड़ती है कि.....एक जाति है।

10. इस कविता में.....के शब्दों के प्रयोग से प्रमाणिकता प्रदान की गेई है।

17.5 नक्सलबाड़ी कविता

17.5.1 नक्सलबाड़ी : आलोचनात्मक संदर्भ

नक्सलबाड़ी धूमिल की चर्चित कविता है। नक्सलबाड़ी आंदोलन ने बड़े स्तर पर बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया था। धूमिल के ऊपर भी इस आंदोलन का प्रभाव पड़ा था। यह कविता संसद से सड़क तक में संग्रहित है।

सन 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी नामक स्थान पर सरकार के भूमि अधिग्रहण कानून के खिलाफ मजदूरों ने एक आंदोलन किया था। यह कविता उसी आंदोलन से प्रभावित है।

नक्सलबाड़ी कविता में कवि कहता है कि-सहमति को समकालीन समस्याओं के साथ जोड़कर नहीं देखा जा सकता। अर्थात तत्कालीन भूमि अधिग्रहण से हमारी सहमति नहीं है। इस सहमति को युवाओं का समर्थन नहीं दिया जा सकता। जंगल यानी व्यवस्था से संघर्ष करने के बाद व उनकी बातों को स्वीकार करने के पश्चात व्यवस्था के समर्थक लोगों ने उसको समझाया कि भूख से बचने का उपाय सोना है अर्थात उसका अतिक्रमण करना। मगर वह व्यक्ति उन लोगों की बातों से सहमत न थे और वे उसकी बातों में नहीं आये। लेकिन उनके पास शब्द नहीं हैं, क्योंकि वे चरित्रहीन पथभ्रष्ट होकर अपने शब्द भूल गए हैं। फिर भी हकलाते हुए उसने कहा-मुझे अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है। क्योंकि इस प्रजातंत्र से वह सहमत नहीं है। क्योंकि इस प्रजातंत्र में मजदूरों के लिए स्पेस नहीं है। इस प्रजातंत्र में हम अपने

ही हालात के हाथ गिर पड़ेंगे। समस्या यह भी है कि इस भूख के सिवा तुम्हारे पास सुरक्षित जगह और है भी क्या? जहां खड़े होकर तुम छद्म नैतिकता से लड़ोगे। पूरी उम्र तो तुम दूसरों की दलाली करते रहे हो, फिर वही करते रहोगे। तुम्हारी नैतिकता जब उनके पक्ष में खड़ी हो जाएगी तो तुम कैसे लड़ोगे?

यह भयावह समय है। अब तो संभावना भी समाप्त हो चुकी है। पुराने लुभावने नारे विज्ञापन चुनाव के बाद बदल गए हैं। पुराने देश प्रेम की कहानियां हृदय से मिट चुकी हैं। सड़क और संसद दोनों स्वार्थ की बलि चढ़ चुके हैं। इस व्यवस्था में कोई सुनने वाला नहीं। सब-के-सब व्यवस्था के पक्ष में चले गए हैं। इस समय विपक्ष में केवल कविता खड़ी है।नक्सलबाड़ी धूमिल की कविताओं का प्रस्थान बिंदु रहा है। धूमिल की वैचारिक यात्रा के निर्माण में नक्सलबाड़ी आंदोलन की बड़ी भूमिका रही है। धूमिल की यह कविता उस वैचारिक स्मृति को प्रगाढ़ करने के निमित्त रची गयी है। नक्सलबाड़ी कविता की अंतर्निहित विशेषताओं के कारण कुछ बिंदुओं को देखना उचित होगा।

- सहमति समकालीन मुहावरा नहीं है, क्योंकि समकालीन चिंतन प्रश्न-प्रतिप्रश्न पर टिका हुआ है।
- कवि ने कहा है कि उसे अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है। कवि के अनुसार वर्तमान प्रजातंत्र अश्लीलता व शोषण पर टिका हुआ है। इस प्रजातंत्र में सत्य को धारण करने की क्षमता नहीं रह गयी है। इसलिए कवि को अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है।
- धूमिल कहते हैं कि व्यक्ति का सबसे बड़ा सच खाली पेट यानी भूख होती है। एक भूखे व्यक्ति की सबसे बड़ी नैतिकता रोटी है। इस नैतिकता और मजबूरी के बीच मनुष्य का जीवन चलता रहता है।
- इश्तहार व लुभावने विज्ञापन तभी तक उपयोगी रहते हैं, जब तक कि शोषण की प्रक्रिया चलती रहती है। देश-प्रेम के शब्द व कहानियां पुरानी पड़ चुकी हैं।
- इस कठिन समय में विपक्ष या विरोध को केवल कविता ही जीवित किये हुए है।

17.5.2 नक्सलबाड़ी : संवेदनागत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य

नक्सलबाड़ी धूमिल की वैचारिक कविता है। इस कविता में धूमिल की वैचारिकी अपने उन्नत रूप में अभिव्यक्त हुई है। संक्षेप में नक्सलबाड़ी कविता की कतिपय विशेषताएं हैं-

- सार्थक वक्तव्य ही धूमिल की कविताओं की विशेषता है। नक्सलबाड़ी कविता में सार्थक वक्तव्यों की खोज की गई है।
- कविता के लिए दूसरे प्रजातंत्र की खोज का अर्थ यह है कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था असंगतिपूर्ण है।
- नक्सलबाड़ी कविता विपक्ष एवं आंदोलन की कविता है। यही इसकी संवेदनागत विशेषता है।
- नक्सलबाड़ी कविता में भूख और आंदोलन के परस्पर अंतरसंबंध को उद्घाटित करती है।
- भूख से तनी मुठी का नाम नक्सलबाड़ी है। यह कथ्य अव्याप्त है। नक्सलबाड़ी कविता में विरोध का स्वर मुखर है।
- विपक्ष में सिर्फ कविता का होना एक सार्थक संकेत है।

शिल्पगत वैशिष्ट्य

- शाब्दिक व्यंजना से कविता की शुरुआत होती है। सहमति व असहमति के द्वंद्व से कविता की शुरुआत होती है।
- नक्सलबाड़ी कथ्य की दृष्टि से अधूरी कविता है। इसलिए शिल्प की दृष्टि से भी यह तथ्य ओझल न हो सका है।
- खाली पेट व भूख ही विरोध के प्रतीक बन गए हैं।

17.5.3 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! 'नक्सलबाडी' कविता के संवेदना और शिल्प का अध्ययन करने के उपरान्त अब आप अपने इस अध्ययन की परख नीचे दिए बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा करें-

1. नक्सलवाडी आंदोलन ने बडे स्तर पर किसको प्रभावित किया ?

   (क) नक्सलबाड़ (ख) बुद्धिजीवि

   (ग) अशिक्षित (घ) श्रमिक वर्ग

2. नक्सलबाडी कविता किस संग्रह में संग्रहित है ?

   (क) संसद मे सड़क तक (ख) सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र

   (ख) कल सुनना मुझे (घ) इनमें से कोई नहीं

3. सरकार के भूमि अधिग्रहण कानून के खिलाफ पश्चिम बंगाल के नक्सलबाडी मजूदरों ने आंदोलन कब किया ?

(क) 1862 (ख) 1875

(ग) 1967 (घ) 1926

4. धूमिल की कविताओं का प्रस्थान बिन्दु कौन-सी कविता है ?

(क) मोचीराम (ख) मुनासिब कारवाई

(ग) संसद से सड़क तक (घ) नक्सलबाडी

5. कविता के लिए दूसरे प्रजातंत्र की खोज के अर्थ में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था कैसी है ?

(क) असंगतिपूर्ण (ख) संगतिपूर्ण

(ग) शांतिपूर्ण (घ) व्यवस्थित

6. कविता में खाली पेट व भूख किसका प्रतीक बन गए हैं?

(क) गरीबी (ख) निम्न वर्ग

(ग) विरोध (घ) शोषण

17.6 सारांश

प्रिय छात्रों, इस आलेख संख्या का आपने अध्ययन किया। इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आपने जाना कि धूमिल की कविताएं स्वतंत्रता पश्चात के मोहभंग की कविताएं हैं। धूमिल की कविताएं नए प्रजातंत्र की तलाश की परिकल्पना पर आधारित हैं। मुझे अपनी कविताओं के लिए नए प्रजातंत्र की तलाश है, यह धूमिल का प्रसिद्ध वाक्य है। मुनासिब कारवाई कविता भाषा में आदमी होने की तमीज पर आधारित है।

मोचीराम कविता में मोचीराम एक अनुभवी वर्ग चेतना का प्रतीक है। इस कविता के माध्यम से हमने जाना कि हर व्यक्ति अपनी वर्गीय सीमाओं से बधा हुआ है। मोचीराम के लिए हर व्यक्ति एक जोड़ी जूता है। इसका तात्पर्य यह है कि हर व्यक्ति की मनोदशा व मनोवृत्ति उसकी वर्गीय स्थिति से जुड़ी हुई है।

नक्सलबाड़ी कविता भूमि अधिग्रहण के विरोध में हुए मजदूरों के आंदोलन पर आधारित है। भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आम आदमी का संघर्ष एक होकर ही लड़ा जा सकता है। यह कविता आम आदमी की एकता को प्रदर्शित करती है।

17.7 कठिन शब्द

1. कटघरा- एक बंद घेरा
2. शिनाख्त-पहचान करना
3. बाट- सामान तौलने में प्रयुक्त
4. आढ़तिया- अनाज का व्यापार व खरीद करने वाला
5. चुंगी- अनाज की खरीद-बिक्री का स्थान
6. बसूले- बढ़ई का औजार
7. गल्ले- अनाज
8. हलफनामा- शपथपत्र
9. तमीज- संस्कार
10. अघाया-तृप्त
11. ठीहे-स्थान
12. प्रजातंत्र-लोकतंत्र, जनता का शासन
13. हिज्जे- अक्षर
14. हज्जाम-नाई
15. बेमुरव्वत-बिना दया के
16. पतियाए-स्वीकार किया हुआ
17. पेशेवर-काम को लेकर व्यावसायिक दृष्टि वाला
18. नवैयत-पूंजी, धन की स्थिति
19. चिहुँकर- घबरा कर
20. तांत- एक प्रकार का कपड़ा

17.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1 'मुनासिब कारवाई' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

प्र. 2 धूमिल की कविता 'मुनासिब कारवाई' के शिल्प पर विचार कीजिए।

प्र. 3 धूमिल की कविता 'मोचीराम' की संवेदनागत समीक्षा करें।

प्र. 4 'मोचीराम' कविता के शिल्प पर चर्चा करें।

प्र. 5 'नक्सलबाड़ी' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालें।

प्र. 6 'नक्सलबाड़ी' कविता के शिल्प पर प्रकाश डालिए।

17.9 उत्तर कुंजी

17.3.3 स्व-मूल्यांकन : 1. सही 2. गलत 3. गलत 4. सही 5. सही 5. सही 7. सही 8 गलत 9. गलत 10. गलत

17.4.3 स्व-मूल्यांकन : 1. संवाद 2. मोचीराम 3. निश्चयात्मक 4. शायर 5. वस्तुजगत 6. श्रमिक 7. मोचीराम 8. जूते 9. पेशा 10. बोलचाल

17.5.3 स्व-मूल्यांकन : 1. बुद्धिजीवि 2. संसद से सड़क तक 3. 1967 4. नक्सलबाडी 5. असंगतिपूर्ण 6. विरोध

17.10 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का आधुनिक इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, नईदिल्ली, 2007
2. संसद से सड़क तक, धूमिल, राजकमल प्रकाशन,1972
3. जनवादी समझ और साहित्य, रामनारायण शुक्ल, बनारस विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1985

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताएँ

रूपरेखा

18.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

18.2 प्रस्तावना

18.3 केदानाथ सिंह की काव्यगत विशेषताएँ

18.4 स्व-मूल्यांकन

18.5 सारांश

18.6 कठिन शब्द

18.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

18.8 उत्तर कुंजी

18.9 पठनीय पुस्तकें

18.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको इस ज्ञान से परिचित करवाना है कि केदारनाथ सिंह समकालीन हिन्दी कविता के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। यह मुख्य रूप से मानवीय संवेदना के कवि हैं। इनकी संवेदना मानव जीवन तक सीमित न रहकर मानवेत्तर प्राणियों के प्रति भी देखी जा सकती है।

इस अध्याय के अध्ययनोपरान्त आप केदारनाथ सिंह के काव्य में चित्रित गाँव, नगर, महानगरीय जीवन शैली , किसान जीवन, विस्थापन की पीड़ा और भाषा शैली से अवगत हो सकंगे।

18.2 प्रस्तावना :

आधुनिक काल के प्रमुख कवियों में से एक केदारनाथ सिंह ने लगभग 1950 ई० में हिंदी काव्य जगत में प्रवेश किया। वह युग प्रयोगवाद और नयी कविता के संधिकाल का था। प्रयोगवाद में प्रगतिशील रचनाधर्मिता से जुड़े कई रचनाकार शामिल हुए थे। उनमें प्रगतिवादी कविता की कई विशेषताएँ तो थी ही, साथ ही उनकी सीमाएं भी थीं।

केदारनाथ सिंह की रचनाओं पर प्रगतिवादी तत्त्वों का प्रभाव तो पड़ा ही लेकिन 'नयी कविता' के कवियों में निश्चितरूप से वे सबसे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। साठोतरी कविता से लेकर जनवादी कविता आंदोलनों तक का प्रभाव भी उनकी कविताओं में परिलक्षित है। केदारनाथ सिंह की कविताएँ सोद्देश्य मालूम पड़ती हैं।

उन्होंने किसी ऐसे जगत की कविताओं का सृजन नहीं किया जो अबूझ और अजानी हो। उनका समस्त रचना संसार अपने आस-पास के परिवेश की रचनात्मक प्रतिक्रियाएं हैं। वे अपनी पीढ़ी के अन्य कवियों की तरह स्वयं को लेकर ही कविता नहीं लिखते रहे। उनका 'स्व' इतना व्यापक है कि उसकी परिधि में गांव-जवार , कस्बे, महानगर, छोटे-बड़े लोग, पारम्परिक व युगीन आदर्श, पशु-पक्षी, प्रकृतिक आनंद व विपदाएँ, भूखण्ड, कोई टीला, कोई पुल, कोई अधबनी इमारत, सब कुछ आ जाता है और वह उनका निजी संदर्भ बन जाता है। केदार जी की निजता का अनंत फैलाव ही इनकी कविता का फैलाव है। अपनी तमाम विशेषताओं के कारण वे एक सच्चे, आत्मीय, भरोसेमंद और विस्तृत अर्थों में भारतीय कवि के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं। हालांकि परमानन्द श्रीवास्तव उनके नास्टेल्जिया को यूटोपिया कहना पसंद करते हैं। उन्होंने इसके तर्क भी दिये हैं। वे कहते हैं- "हिन्दी के समकालीन काव्य परिदृश्य में केदारनाथ सिंह जैसे कवि जो बार-बार गांव की ओर जाकर कविता का नया मुहावरा, कविता के लिए नयी ऊर्जा प्राप्त करना चाहते हैं, वह संहार और विनाश की ताकतों के विरुद्ध एक स्पष्ट साहसिक काव्यात्मक निर्णय है। यह रोमान या नास्टेल्जिया नहीं है अपितु यह सकारात्मक यूटोपिया है जिसे प्रतिरोध चेतना का समशील कहा जा सकता है।"

18.3 केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताएँ

भावगत वैशिष्ट्य

प्रकृति चित्रण:- केदारनाथ सिंह चूंकि लोक-जीवन की संवेदना को समझने में निश्णात रहे हैं साथ ही उसके स्वभाव को खूब पहचाने हैं। इसीलिए इनकी रचनाओं में केवल लोग-बाग ही नहीं हैं बल्कि प्रकृति भी है। और प्रकृति उनके यहां लोगों से कम महत्त्वपूर्ण हो ऐसा भी नहीं है। केदार जी ने कभी भी केवल मनुष्य केन्द्रित कविता पर जोर नहीं दिया। वे मानवेतर की भी मनुष्य समाज से साझीदारी के हिमायती रहे हैं और उनकी रचनाओं में प्रकृति का मनोरम रूप सदैव विद्यमान रहा है। प्रकृति की छोटी-मोटी हलचलें भी पूरी गरिमा के साथ उनकी रचनाओं में उपस्थित हैं। प्रकृति के अतिसूक्ष्म क्रियाकलाप भी कवि के लिए न सिर्फ कौतूहल पूर्ण रहे हैं बल्कि उसे वे एक

बालसुलभ विस्मय के साथ कविता मैं उपस्थित करते रहे हैं। उनकी यह शैली कविता को और अर्थपूर्ण और संवेदनशील बनाती है। उनके यहाँ जड़ और चेतन का कोई फर्क नहीं मिलता इसलिए प्रकृति न सिर्फ मनुष्य बल्कि जड़ वस्तुओं से भी अपना गहरा हेलमेल रखे हुए है। पृथ्वी, पहाड़, नदियां, चट्टानें, नीम, तारे, जलकुम्भी, कौआ, सारस, चील, मेमने, भेड़, बैल, घोड़ा, सियार, गाय, दीमक बिच्छू, कठफोड़वा, टमाटर, धान की मंजरियां, बबूल, बरगद, बारिश, हवा, मौलसिरी का पेड़, आलू, चिटियां, गेहूं के पौधे, घड़ियाल, सूअर, गरिया, घाँसला, प्याज, ठीकरा कुदाल, नमक, कुएं, मधुमक्खियां, झरबेरी, बाघ, संतरा और शिरीश के फूल की व्यापक दुनिया है। यह प्रकृति की विशाल दुनिया मनुष्य के इर्द-गिर्द ही है, उसी से कोई न कोई रिश्ता बनाये निर्जन प्रकृति यहां नहीं है। गंगा में स्नान करने का वर्णन कवि इन शब्दों में करते हैं-

"बरसों बाद

आज गंगा में नहाया

देर तक

खूब डूबा-उतराया

एक पक्षी की तरह

घूंट-घट जल पिया

आत्मा ने देर तक

गहरे अथाह जल से बातें की

जल से निकलकर

बैठा रहा रेती पर

गीली देह को

बालू के गरम-गरम गमछे से पौछा

अच्छा लगा बालू

बालू का स्पर्श।"

बालू जैसी चीज को केदारजी जिस ढंग से अपनी कविताओं में स्थान देते हैं यही उनकी संवेदनशीलता का परिचायक है।

महानगरीय जीवन की त्रासदी :- उनकी कविताओं में एक ओर जहाँ छोटे शहरों , कस्बों यथा बनारस, पडरौना आदि की प्रकृति, जीवन और समस्याएँ हैं तो दूसरी ओर

दिल्ली जैसे महानगरों की चुनौतियाँ भी हैं। महानगर के एकाकी जीवन से न केवल केदारनाथ सिंह पीड़ित थे बल्कि यह सत्य है कि हर वह व्यक्ति जो छोटे गाँवों-कस्बों से बड़े शहरों में जाता है उन सब के सामने यह एक बड़ी चुनौती होती है कि 'अपने' लोगों के बिना आगे का जीवन कैसे गुजारा जाए। शहर की परिचयहीनता को स्पष्ट करते हुए वे 'एक और अकाल' कविता में कहते हैं

'मैंने खुद को समझाया यार, दुःखी क्यों होते हो

इतने कट गये

बाकी कट ही जायेंगे दिन

क्योंकि शहर में लोग तो हैं

फिर एक दिन

जब किसी तरह नहीं कटा दिन

तो मैं निकल पड़ा

लोगों की तलाश में

मैं एक-एक से मिला

मैंने एक-एक से बात की

मुझे आश्चर्य हुआ लोगों को तो लोग

जानते तक नहीं थे।"

महानगरों में 'पहचान का संकट' सबसे बड़ी त्रासदी के रूप में उभरा है। वे आजीवन अपनी रचनाओं में इस प्रश्न को उठाते रहे।

यथार्थ और रोमानियत का संगम :- केदारनाथ सिंह की कविताओं को रोमानियत की भीनी और मीठी खुशबू मोहक बनाती है। यह वही तत्व है जो उन्हें हिन्दी कविता में चिर युवा बनाये हुए है। उनकी परवर्ती पीढ़ियां सबसे पहले किसी से आकृष्ट होती हैं तो वे केदार जी ही हैं। उनका यह काव्य स्वभाव ठोस लगती वस्तुओं को भी अमूर्त बना देता है और अमूर्त वस्तुएं स्वतः ठोस बन जाती हैं। ढेर सारी सब्जी काटने के बाद पड़ा चाकू उन्हें चिड़िया के पर की तरह कोमल लगने लगता है और पैंसठ की उम्र में घास में गाड़ा गया टूटा दांत उगने की संभावना से लैस जान पड़ता है। केदारनाथ सिंह अपने दौर में अकेले रुमानी कवि नहीं रहे हैं श्रीकांत वर्मा और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना में भी वह प्रवृत्ति दिखाई देती है। आदर्शों से लैस युवकों का कविता से ऐसा रिश्ता प्रायः

रहा है। केदार जी की आरम्भिक कविताओं में रुमानियत का प्रभाव अधिक रहा, जिसने लोगों का ध्यान बरबस अपनी ओर आकृष्ट किया। बाद में वह शब्दों के कोमल बर्ताव की ओट में छिप गया है। वह चित्रों से निकलकर ध्वनियों और आकांक्षाओं में प्रवेश कर गया है। उनके अग्रज कवि शमशेर बहादुर सिंह भी उनकी कविता में रुमानियत देखते हैं। बाद में केदारनाथ सिंह ने गीतों का रास्ता छोड़ दिया इसके बावजूद सपना, उच्छ्वास और एक युवक के आदशों की पवित्र रंगीनी उनके यहां खास तौर पर दिखाई पड़ती है। रवीन्द्रनाथ और येट्स के स्वर, कुछ आधुनिक स्वर में रूपायित हो नये केदार के सांचे में ढले हुए मिलेंगे। युवकों के वे प्रिय कवि हैं। एक टटकापन उनके प्रकृति के रोमानी चित्र में मिलेगा। शब्दों की मधुरता पर वे खास ध्यान देते हैं। केदार जी की रुमानियत ने उन्हें यथार्थ से पलायन नहीं सिखाया है बल्कि वे उसके बल पर नये यथार्थ की रचना करने में सफल रहे हैं। जो वस्तु, विचार और संवेदना को जड़ होने से रोकती है। केदारजी वस्तुओं को ऐसे कोण पर रखते हैं जहां से वे अनेकार्थता को प्राप्त करती हैं और हर अर्थ अपने आप में पूर्ण होता है। 'बाघ' बीसवीं सदी की एक महत्त्वपूर्ण कृति बन सकी तो उसमें रुमान का भी योगदान है। केदार जी ने रुमानियत को वस्तुस्थिति से पलायन नहीं बल्कि कविता की एक बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित किया है। केदारनाथ सिंह की कुछ कविताओं में एक प्रकार के रोमांटिक फैसिनेशन का आभास मिलता है। ऐसी कविताओं में सर्वाधिक चर्चित और उल्लेखनीय रचना है 'अनागत', जो अनेक अर्थों की संभावना से युक्त है। कवि की इस तरह की रुमानी रहस्यमयी भावुकता ने निश्चित ही बहुत सारे परवर्ती और कुछ पूर्ववर्ती कवियों को भी प्रभावित किया।

एकलाप और जनसंवाद :- केदारनाथ सिंह की कविताओं की एक बड़ी विशेषता संवादधर्मिता है। संवाद को नाटकों की बड़ी विशेषता के रूप में रेखांकित किया जाता है, परन्तु वह हमारे दैनिक जीवन की विशेषता है। भाषा मूलतः संवाद करने का काम करती है, यह संवाद व्यक्तियों, समाज से या खुद से भी हो सकता है। केदारनाथ अपनी बहुतेरी कविताओं में आत्मलाप करते नज़र आते हैं, परन्तु उसी बहाने वे समाज के बड़े सवालों से जूझ रहे होते हैं-

"तुम्हें नूर मियाँ की याद है केदारनाथ सिंह
कैसे हो मेरे भाई जगननाथ"

इस तरह की अनेक कविताएँ हैं जिनमें कवि ने पात्र विशेष से या त्रिलोचन जैसे सहयोगी कवियों से संवाद स्थापित किया है और साधारण सी बात में से नई और बड़ी बात पैदा की है।

वैश्विक दृष्टी :- किसी कवि की रचना तभी चिरकाल तक जीवित रह सकती है जब उसमें लोक-कल्याण की भावना निहित होगी। उसी प्रकार किसी कविता के महत्व का एक पैमाना यह भी होता है कि उसका दायरा कितना विस्तृत है। स्थानीयता और समकालीनता से जुड़ते हुए भी वह दिक्काल का कितना अतिक्रमण करता है। इस दृष्टी से केदारनाथ जी की कविता के पात्र विश्व नागरिक हैं। यह अनायास नहीं है कि उनकी कविताओं में बुद्ध बार-बार आते हैं, इस समय दुनिया को बुद्ध की करूणा से ज्यादा भला और किस चीज़ की जरूरत होती। सत्ता से लगातार हारते और हिम्मत हारते साहित्य को बुद्ध से ज्यादा ऊर्जा कौन देगा। कई बार ऐसा लगता है कि केदारनाथ सिंह के स्थानीयता और वैश्विकता में गहरा अन्तर सम्बंध है, दोनों एक-दूसरे को देखने की दृष्टी देते हैं। निश्चित रूप से इसमें कवि ने तमाम देशों के यात्री होने और बहुपठित होने की भी भूमिका वर्णित की है, परन्तु उसके मूल में वह सौन्दर्य बोध है, जो पूरी दुनिया को एक सूत्र में बाँधता है-

"कि उंगलिमाल छुटा घूम रहा है शहर में

और सुजाता अपने शहर के

किसी छतुहा अस्पताल में भर्ती है"

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा कवि ने आज के किसी डकैत, आतंकी, अपराधी का नाम न लेकर ऐतिहासिक डाकू अंगुलिमाल को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। आज जबकि उस युग की अपेक्षा अपराध में कई गुणा ज्यादा वृद्धि हुई है तब कवि का यह कहना कि अंगुलिमाल जैसे कई डकैत छुट्टा घूम रहे हैं शहर में यथार्थ स्थिति का परिचायक है। हत्या, अपहरण, बलात्कार जैसे दुश्कर्म बुद्ध के इस देश में खुल रूप में हो रहे हैं लेकिन बुद्ध इसकी ही सुध ले रहे हैं, विडम्बना यह है कि 'सुजाता' जो ज्ञान का प्रतीक है। जिसकी खीर खाने के बाद ही स्वयं बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई वैसा ज्ञान आज पुतहा अस्पतालों में भर्ती हैं।

जीवन सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण :- केदारनाथ सिंह की कविता जीवन-सौन्दर्य और प्रेम के केन्द्र में बँधती हुई मानवता की परिधि का निर्माण करती है क्योंकि उनकी कविता में भविश्य के सुखद विस्तार की झलक दिखाई देती है। केदारनाथ सिंह एक ऐसी दुनिया का सपना देखते हैं जिसमें सभी प्राणियों को एक समान दृष्टी से देखा जाता है।

"उसका हाथ

अपने हाथ में लेते हुए मैंने सोचा

दुनिया को

हाथ की तरह गर्म होना चाहिए।"

विस्थापन का दंश :- केदारनाथ सिंह की कविताओं में विस्थापन का दंश भी प्रमुखता से उभरा है। उन्हें दिल्ली में यह महसूस होता था जैसे वे अपनी जड़ों से कट चुके हैं। वस्तुतः विस्थापन का बोध दिल्ली की उपज है। यह बोध बाद में स्थाई बनता चला गया और गहराता गया। जब उन्हें यह महसूस हुआ कि वे सिर्फ दिल्ली में ही विस्थापित नहीं हैं बल्कि वे अपने मूल स्थान से भी विस्थापित हो चले हैं। गाँव में भी वे परदेसी हैं, बाहरी व्यक्ति हैं, वे मेहमान हैं, जिन्हें दिल्ली लौट जाना है। विस्थापन का दोहरा दंश उन्हें टीसता और आहत करता है। 'गाँव आने पर' कविता में उसकी अभिव्यक्ति यूं हुई है-

"क्या करूँ मैं?

क्या करूँ, क्या करूं कि लगे

कि मैं इन्हीं में से हूँ

इन्हीं का हूँ

कि यही हैं मेरे लोग

जिनका में दम भरता हूँ कविता में

और यही यही जो मुझे कभी नहीं पढ़ेंगे।"

केदार जी विस्थापन की मनोस्थिति पर स्वयं ही कहते हैं- "विस्थापन की पीड़ा को मैं बहुत लम्बे अरसे से अनुभव करता हूँ। जो गांव से आये हैं, वे गांव के रहे नहीं, महानगर के हो नहीं सके तो न यहाँ के रहे, न वहाँ के रहे। यह अजब विस्थापन की स्थिति है, जिसे झेलना हमारी नियति है। अभी गांव पिछले दिनों गया था, तो वहां अपना इरिलिवेन्स महसूस हुआ। मैं क्यों आया यहां? मैं क्यों हूँ यहाँ?" विस्थापन इक्कीसवीं सदी का एक कट सत्य है। जिसे केदारजी भलीभाँति समझते हैं। उनकी बाद कि रचनाएँ विस्थापन के मनोविज्ञान से स्पष्ट रूप से प्रभावित दिखाई पड़ती हैं।

किसान जीवन का यथार्थ :- कई वर्षों से महानगर में रहने के उपरान्त भी केदारनाथ सिंह का हृदय गांव की संस्कृति में रचा बसा है। केदारनाथ सिंह की कविता का विषय क्षेत्र अत्यन्त सहज एवं विस्तृत है। इन्होंने गाँव की साधारण से साधारण वस्तुओं को कविता का विषय बनाया क्योंकि उनका अनुभव संसार व्यापक एंव गहरा

है, 'आखिन देखी' है। वे यथार्थ की मिठास एवं कड़वाहट में जीते हैं और उनकी कविता यथार्थ की अनुभूति और मुक्ति की कामना तथा आस्था और विश्वास के सहारे जीती है। केदारनाथ सिंह जब भारतीय कृषक जीवन की पीड़ा का यथार्थ वर्णन करते हैं तो प्रेमचन्द याद आते हैं। प्रेमचंदीय संवेदना का विस्तार केदार की कविताओं में दिखाई देता है। किसान के आर्थिक दोहन को 'दाने' शीर्षक कविता में अत्यन्त प्रभावित ढंग से प्रस्तुत किया है।

"नहीं

हम मंडी नहीं जाएँगे

खलिहान से उठते हुए

कहते हैं दाने

जाएँगे तो फिर लौटकर नहीं आएँगे

जाते जाते

कहते आते हैं दाने।"

स्व-मूल्यांकन : क

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को थोड़ा विश्राम दे और अभी तक प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन नीचे दिए रिक्त स्थान के अभ्यास से करें-

1. केदारनाथ सिंह.....की संवेदना को समझने में निष्णात रहे हैं।
2. केदार ने कभी भी केवल.....केन्द्रित कविता पर जोर नहीं दिया।
3. केदारनाथ की कविताओं को .....की भीनी व मीठी खुशबू मोहक बनाती है।
4. ढेर सारी सब्जी काटने के बाद पड़ा चाकू केदार को.....के पर एक तरह कोमल लगने लगता है।
5. संवाद की दृष्टि से केदार अपनी बहुतेरी कविताओं में.....करते नजर आते हैं।
6. दायरे की दृष्टि से केदारनाथ की कविता के पात्र.....नागरिक है।
7. केदार की कविता जीवन-सौन्दर्य और प्रेम के केन्द्र में बंथती हुई..... की परिधि का निर्माण करती है।

8. केदारनाथ की कविताओं में.....का दंश भी प्रमुखता से उभरा है।

स्व-मूल्यांकन : ख

प्रिय विद्यार्थियों ! अपने अध्ययन को कुछ क्षणों का पुनः विश्राम देकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही / गलत चिह्न द्वारा देकर अपने अर्जित ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करें-

1. केदारनाथ सिंह भाषा के प्रति अधिक सचेत हैं। ( )
2. केदार का ग्राम्यांचल से अत्यन्त अपनत्व भाव है ( )
3. इनकी कविता में भाषा की लायत्मकता नहीं बनी रहती। ( )
4. इनकी काव्य-भाषा में मात्र संपन्न जीवन की भीनी गंध है। ( )
5. इनकी कविताओं में बिम्ब नहीं, बल्कि बिम्बों में कविता जीवित है। ( )
6. इनकी प्रारम्भिक कविताओं में सहृदय की रागात्मक वृत्तियों का परिचय नहीं मिलता है। ( )
7. केदार की परवर्ती कविताओं में विचारात्मक वृत्ति विद्यमान है। ( )
8. इनकी कविताओं में प्रतीकों के नए अर्थ खुलते हैं। ( )
9. केदार प्रकृति के भीतर से ही नए-नए प्रतीक व बिम्ब गढ़ते हैं। ( )
10. केदार की कविताओं में देशज शब्दों का प्रयोग प्राण का संचार नहीं कर पाता। ( )

भाषागत वैशिष्ट्य :- केदारनाथ सिंह भाषा के प्रति अधिक सचेत हैं। कवि की भाषा परम्परागत लोक काव्यधारा से प्रभावित है। केदार ने भाषा की सांगीतिक प्रस्तुति की है। गीत के माध्यम से कविता में प्रवेश करने वाले केदारनाथ सिंह का ग्राम्यांचल से अत्यन्त अपनत्व भाव है। इसलिए इनकी कविता में देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है। केदारनाथ जहाँ गीत की लयात्मकता एवं ग्राम्यांचल से अपने शब्दों को हृदयगम करते हैं, वहीं वर्तमान जीवन की विसंगतियों से चाहे वह शहरी हो या गाँव की, उसकी भी मार्मिक, सहज एवं उत्तेजक प्रस्तुति करते हैं। केदारनाथ सिंह की काव्य-भाषा की विशेषता रही है कि जीवन की विसंगतियों की प्रस्तुति में खुरदुरे ही नहीं, अपितु कोमत्र, सरल शब्दों के प्रयोग किये हैं। यही कारण है कि उनकी कविता में भाषा की लयात्मकता बनी रहती है उनकी भाषा, कहानी एवं नाटक तत्वों से भी प्रभावित है केदार की भाषा यथार्थ की आँच से पकी है। काव्य-भाषा की दृष्टी से नयी कविता के

कवियों में केदारनाथ सिंह महत्त्वपूर्ण कवि हैं। केदारनाथ सिंह की काव्य-भाषा में लोक-जीवन की भीनी गंध है। इस गंध में लोक-जीवन का संघर्श नहीं है, उसका कोमल पक्ष है। लय के साथ उन्होंने तरह-तरह के प्रयोग किये हैं।

बिम्ब योजना :- काव्य-शिल्प में बिम्ब की आवश्यकता अनिवार्य मानने वाले कवि केदारनाथ सिंह की कविताओं में बिम्ब की सहज प्रभावोत्पादक प्रस्तुति हुई है कहना अत्युक्ति न होगा कि इनकी कविताओं में बिम्ब नहीं, बल्कि बिम्बों में कविता जीवित है। इनकी कविता पूर्णरूप से बिम्ब फलक पर ही रची-बसी है। इनकी कविताओं में बिम्ब निर्मित समीचीन भावों एवं परिवेशों के अनुरूप बन पड़े हैं। इनकी कविताओं में बिम्ब-निर्माण की दृष्टी से काफी उतार-चढ़ाव है। इनकी प्रारम्भिक कविताओं में सहदय की रागात्मक वृत्तियों का परिचय मिलता है, जबकि परवर्ती कविताओं में रागात्मक वृत्ति की जगह विचारात्मक वृत्ति विद्यमान है। इसीलिए आधुनिक जीवन की विसंगतियों को मूर्त रूप देने के लिए इन्होंने बिम्ब ही नहीं, अपितु बिम्बों की शृंखला ही प्रस्तुत की है। इनकी कविताओं में बिम्ब-चयन विशेषकर प्राकृतिक लोक जीवन दैनिन्द्रिय जीवन से किये गये हैं। जीवन की असमानताओं व पीड़ाओं को प्रस्तुत करने में इनके बिम्ब अद्वितीय हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि इनकी बिम्ब-रचना सहज एवं संवेग है। केदारनाथ सिंह ने निम्न पंक्तियों में 'अक्टूबर माह' के माध्यम से पूरे घर के वातावरण को चित्रित किया है-

"घर सुन्दर था
जैसे की आम तौर पर होता है
अक्टूबर के शुरू में"

अक्टूबर सम्पूर्ण बिम्ब खड़ा करने में सक्षम है। अक्टूबर वह महीना है, जिसमें न ज्यादा गर्मी होती है, न ही ज्यादा सर्दी। शरद ऋतु हर ओर सुंदरता बिखेरती है। ऐसे खूबसूरत महीन से घर की सुन्दरता की तुलना करना यह बताता है कि उनकी दृष्टी प्रकृति के हर पक्ष पर थी यही कारण है कि उनके बिंबो में जीवंतता है।

प्रतीक योजना :- केदारनाथ सिंह की कविताओं में प्रतीकों का प्रयोग भी प्रमुखता से हुआ है। इनकी कविताओं में प्रतीकों के नए अर्थ खुलते हैं। केदारनाथ सिंह की कविता में शब्द, वाक्य तथा शीर्षक तक में प्रतीक की सुन्दर योजना दृष्टी गोचर होती है। केदारनाथ सिंह ने प्रतीकों के स्रोतों तथा प्रतीकों की महत्ता के सम्बन्ध में दृढ़ विश्वास के साथ 'तीसरा सप्तक' में कहा है- "मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि आधुनिक जीवन की जटिलताओं और अन्तर्विरोधों को व्यक्त करने के लिए लोक-साहित्य, लोक-धर्म पुराण

तथा इतिहास के खण्डहरों में बहुत से ऐसे अज्ञात प्रतीक और अदृश्य बिम्ब पड़े हुए हैं जिनकी खोज के द्वारा नयी कविता की सम्भावना का पथ और भी प्रशस्त किया जा सकता है। केदारनाथ सिंह ने लोक से जुड़े हुए प्राकृतिक, सांस्कृतिक, पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित उपमानों का प्रयोग किया है। केदार की कविता केवल बोलती ही नहीं, बल्कि दिखती भी है कविता के एक-एक शब्द अपने रूप, रस, गंध, स्पर्श द्वारा अपनी उपस्थिति का प्रत्यक्ष बोध कराते हैं इनकी कविताएँ बिम्बों के लिए जानी जाती हैं। वे स्वयं कविता में बिम्ब को अनिवार्य मानते हैं उनकी कविता में प्रतीकों का सुन्दर इस्तेमाल हुआ है इनकी कविताओं में प्रयुक्त उपमान गँवई गंध जैसे परिचित एवं प्रभावोत्पादक हैं। उपमान योजना में कवि की सूक्ष्म पकड़ का कोई जोड़ नहीं है।

जिन प्रतीकों और बिंबों पर अन्य कवियों की दृष्टी नहीं जाती केदारनाथ जी वहाँ तक पहुंचते हैं। वे प्रकृति के भीतर से ही नए-नए प्रतीक और बिंब गढ़ते हैं। जब से संसार है तब से ही दूब है लेकिन दूब को इस तरह केन्द्र में रखकर लिखने का प्रयास किसी ने भी इस ढंग से नहीं किया। दूब प्रतीक है जीवन की जीवंतता का, बहुत बाकी होने का। तभी तो कवि कहता है-

"अब बहुत कुछ है
अगर बची है दूब....."

केदारनाथ जी का पूरा बचपन गाँव और यौवन छोटे शहरों में बीता है। ये प्रतीक इन्होंने वहीं से ग्रहण किये हैं। अकाल की भयावहता गाँवों में शहरों की अपेक्षा कहीं अधिक महसूस होती है। शहरों में लोग साधन संपन्न होते हैं, अकाल की विभीषिका को वह झेल लेते हैं, लेकिन गांवों के लोग संसाधनों के अभाव में बहुत कष्ट झेलते हैं। कवि ने इसलिए 'दूब' जैसे कोमल और छोटे प्राकृतिक पदार्थ को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत कर आमजन को विषम परिस्थितियों में जीवित रहने का सम्बल दिया है। इसी तरह 'नमक' कविता में 'नमक' अपने आप में स्वयं एक प्रतीक है जो निस्वार्थ भाव से दूसरी चीज़ों की गुणवत्ता और स्वाद बढ़ाने के लिए खुद को समर्पित कर देता है। वैसे ही जैसे पत्नी घर के अन्य लोगों की खुशियों की खातिर कुछ भी करने और सुनने के लिए स्वयं तैयार रहती है। देशज शब्दों का प्रयोग कविता में प्राण का संचार करती है।

आंचलिकता :- केदारनाथ सिंह की भाषा में लोक-जीवन की गंध है यह गंध विशेषकर भोजपुरी अंचल की, जिसमें मिठास है, खनक है भोजपुरी ग्राम्य-परिवेश के अनेक शब्द इनकी कविताओं में प्रयुक्त हुए हैं। यथा पहर, ठाँव, पाहुन, कोरा, छूछा,

दीठियों भिनसारे, जिया, जोहना, लुकना आदि ग्राम्यांचल से विशेष लगाव के कारण देशज शब्दों का वे प्रयोग करते हैं। आधुनिक जीवन की विसंगतियों को प्रस्तुत करने में भी देशज शब्दों की प्रभावमयता अदभुत है। इनकी कविता भावुकता से नहीं, समझदारी से लिखी गयी कविता है। वे कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हैं और साधारण तथा देशज शब्दों से कविता बनाते हैं। यही कारण है कि उनकी काव्य-भाषा इकहरी नहीं हो पाती है।

शब्द चयन :- शब्दों की कारीगरी में केदारनाथ सिंह अप्रतिम है। उनकी यह विशेषता है कि एक-एक शब्द का चयन अपनी कविताओं में बहुत ही सहजता तथा सरलता से करते हुए उसके महत्व को स्थापित करते हैं। कवि शब्दों के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न करते हैं। वे लिखते हैं-

"कहीं एक पत्ता

पट्ट से

गिरता है ज़मीन पर।"

'पट्ट से' के बिना भी पंक्ति पूरी हो सकती थीं लेकिन वह ध्वनि नहीं उत्पन्न हो पाती जिसे कवि उत्पन्न करना चाहता है इसलिए वहाँ पर 'पट्ट' का प्रयोग बहुत व्यंजक है।

18.4 स्व-मूल्यांकन

प्रिय विद्यार्थीयों ! इस पाठ में अपने केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस पाठ से अर्जित ज्ञान का स्व-मूल्यांकन निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा करें। यह मूल्यांकन आपके अध्ययन को सार्थक बनाने में सहयोगी होगा।

1. 'एक और अकाल' कविता के लेखक कौन है ?

   (क) धूमिल (ख) मुक्तिबोध

   (ग) अज्ञेय (घ) केदारनाथ

2. महानगरों में सबसे बड़ी त्रासदी के रूप में क्या उभरा हैं ?

   (क) पलायन (ख) जिजीविषा

   (ग) संघर्ष (घ) पहचान का संकट

3. 'बाघ' कविता के लेखक कौन हैं ?

(क) केदारनाथ सिंह (ख) केदारनाथ अग्रवाल

(ग) श्रीकांत वर्मा (ग) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

4. केदार की कविताओं में बार-बार कौन आता हैं ?

(क) गौतम ऋषि (ख) बुद्ध

(ग) महात्मा गांधी (घ) राम

5. "कि उंगलिमाल छुटा घूम रहा है शहर में / और सुजाता अपने शहर के / किसी छतुहा अस्पताल में भर्ती है"। पंक्ति में सुजाता किसका प्रतीक है?

(क) ज्ञान (ख) मुर्ख

(ग) उच्च वर्ग (घ) सरकार

6. केदार के किस यथार्थ वर्णन में प्रेमचन्द याद आते हैं ?

(क) नारी जीवन (ख) शहरी जीवन

(ख) कृषक जीवन (घ) राजनीतिक जीवन

7. "अब बहुत कुछ है / अगर बची है दूब....." में दूब किसका प्रतीक है?

(क) हरयाली (ख) संघर्ष

(ग) निराशा (घ) जीवन की जीवंतता

6 केदारनाथ सिंह की भाषा में विशेषकर किस अंचल की गंध है?

(क) भोजपुरी (ख) बिहारी

(ग) बंगाली (घ) राजस्थानी

18.5 सारांश

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि केदारजी के अंदर एक किसान का सहजपन है। उनकी कविताओं में रोशनी उनकी अपनी मिट्टी से आती है, वह मिट्टी जो गाँव की है, जहाँ उनका बचपन गुजरा। केदार गाँव में गुजरे जीवन को अपने लिए स्मृतिकोश मानते हैं। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि तमाम आधुनिकता के बावजूद गाँव की हालत नहीं सुधरी है।

आधुनिकता ने लोक संस्कृति को विकृत किया उसे बाजारू बनाया, और जिस तरह की चेतना का विकास होना चाहिए था, वह गाँव में नहीं हो सका। यह पीड़ा बार-

बार केदारनाथ सिंह की रचनाओं में प्रकट होती है। शायद यही वजह है कि वे बड़ी पीड़ा के साथ अपने गाँव के एक किसान लालमोहर को याद करते हैं। वे कहते हैं कि 'मेरी आधुनिकता की एक चिंता यह है कि उसमें लालमोहर कहाँ है।' साथ ही जातिवाद का दंश भी उनकी आधुनिकता में शामिल है, जो उनके अपने गाँव से अब तक नहीं मिटा है। केदार इस तरह की चिंताएं अपनी कई कविताओं में व्यक्त करते हैं। एक उदाहरण नूर मियाँ हैं। 'सन 47 को याद करते हुए कविता को इस संदर्भ में याद किया जा सकता है। दुहराने की जरूरत नहीं कि केदार की कविता में लोक संस्कृति और आधुनिकता के तनाव की अभिव्यक्ति हुई है। गाँव और शहर के बीच के विस्थापन की पीड़ा से लेकर आधुनिकताबोध से उपजे दंश तो कवि के काव्य-कर्म के विषय बने ही हैं, उनकी कविता में एक ऐसे लोक की अनुगूंज है जो अंचलवाद से अलग एक संपूर्ण भारतीय लोक है। लोक और आधुनिकता का तनाव कवि की कविता को एक नई धार देता हुआ उसे एक अलग वैशिष्ट्य प्रदान करता है, और उसकी कविता को एक नया और व्यापक आयाम भी देता है।

18.6 कठिन शब्द

1. मौलसिरी - एक सदाबहार पेड जिसमें सुंगधित फूल लगते हैं।
2. अति मूक्ष्म - बहुत ही छोटा
3. निष्णात - कुशल, निपुण
4. पलायन - अपने स्थान या कार्य से विमुख होने की अवस्था या भाव
5. अंतर्विरोध -आंतरिक द्वन्द
6. कौतूहल - जिज्ञासा
7. रोमानियत - रेम प्रसंग, प्रेम की भावना
8. अतिक्रमण - सीमा का उल्लंघन

18.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1. केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

प्र. 2. केदारनाथ सिंह की भाषा शैली पर लेख लिखें।

प्र. 3. केदारनाथ सिंह के काव्य में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालें।

18.8 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क)

1. लोक-जीवन 2. मनुष्य 3. रोमानियत 4. चिड़िया 5. आत्मलाप 6. विश्व 7. मानवता 8. विस्थापन

स्व-मूल्यांकन (ख)

1. सही 2. सही 3. गलत 4. गलत 5. सही 6. गलत 7. सही 8. सही 9. सही 10. गलत

स्व-मूल्यांकन (ग)

1. केदारनाथ सिंह, 2 पहचान का संकट 3. केदारनाथ सिंह, 4. बुद्ध 5. ज्ञान 6. कृषक जीवन 7. जीवन की जीवंतता 8. भोजपुरी

18.9 पठनीय पुस्तकें

1. आधूनिक हिन्दी कविता में बिंब विधान, केदारनाथ सिंह, राधाकृषण प्रकाशन, दिल्ली, 2005
2. उत्तर कबीर और अन्य कविताएं, केदारनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019

3. मेरे समय के शब्द, केदारनाथ सिंह, राधाकृषण प्रकाशन, दिल्ली, 2016
4. केदारनाथ सिंह और उनका समय, निरंजन सहाय, मेधा पब्लिशिंग हाउस, 2013
5. केदारनाथ सिंह का काव्य लोक, डॉ. शेरपाल सिंह, साहित्य भवन प्रकशन, 2016

वर्तमान परिदृश्य और केदारनाथ सिंह

रूपरेखा

19.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

19.2 प्रस्तावना

19.3 वर्तमान परिदृश्य और केदारनाथ सिंह

स्व-मूल्यांकन : क, ख, ग

19.4 सारांश

19.5 कठिन शब्द

19.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

19.7 उत्तर कुंजी

19.8 पठनीय पुस्तकें

19.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको वर्तमान में केदारनाथ सिंह का अपने समकालीन कवियों में जो स्थान है उससे परिचित करवाना है।

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरान्त आप हिन्दी कविता में केदारनाथ सिंह की कविताओं में चित्रित समस्याओं तथा समकालीन कवियों में उनका स्थान एवं प्रासंगिकता से अवगत होंगे।

19.2 प्रस्तावना

केदारनाथ सिंह समकालीन काव्य परिदृश्य के एक अत्यंत सजग और महत्वपूर्ण कवि हैं। ये उन विरल कवियों में से हैं जिनमें प्रगतिशील कविता, प्रयोगवादी कविता, नयी कविता, साठोत्तरी कविता और जनवादी कविताओं की कई महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ एक साथ विद्यमान हैं। जीवन की हलचलों से संवाद बनाए रखकर ये हर वाद की सीमा और संभावना का संधान अपनी चौकन्नी आलोचकीय दृष्टी , व सतत अध्ययन से करते हुए अपने स्तर पर उसका निर्वाह और आवश्यकतानुसार अतिक्रमण करते

हुए रचनारत हैं। तीसरे सप्तक से उन्होंने अपनी काव्य-यात्रा आरम्भ की थी ये तीसरे सप्तक के महत्त्वपूर्ण कवि माने गये। तब से लेकर वर्तमान में भी वे चर्चा के केन्द्र में रहे तथा आलोचना के साथ ही आलोचकों के समक्ष चुनौती पेश करते रहे। एक पश्चिमी समीक्षक नें एक बार टिप्पणी की थी कि पाउंड और इलियट संस्कृति को लेकर चिन्तित रहे हैं, लोगों को लेकर नहीं जबकि विलियम कार्लस, विल्यिम टॉमस संस्कृति के साथ लोगों को लेकर भी चिंतित रहे हैं। पिछले दो-तीन दशकों की हिन्दी कविता की बेहतर अभिव्यक्तियों में ये दोनों चिन्ताएं किसी कवि को महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक बनाती हैं। लोगों को लेकर कवि चिंतित नहीं है तो अच्छी कविता नहीं लिख पायेगा पर संस्कृति के प्रति गहरी निष्ठा और उसकी चिन्ता ही लोगों की चिन्ता को अर्थ देती है। कहना न होगा कि केदारनाथ सिंह में संस्कृति और जन की चिन्ता एक दूसरे में ऐसी घुली मिली है कि दोनों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। जहाँ-जहाँ केदार जी भाषा की चिन्ता करते दिखायी देते हैं, वहां वे अनिवार्य रूप से जनता की चिन्ता कर रहे होते हैं।

19.3 वर्तमान परिदृश्य और केदारनाथ सिंह

केदार जी की कविताओं में व्यक्त समकालीन चिंताएं केदार जी के यहाँ मनुष्य और भाषा एक दूसरे के पर्याय हैं। केदार जी के यहाँ संस्कृति तभी सुरक्षित है जब लोग सुरक्षित हैं। उनके यहां मानवीय विडम्बना भाषा की विडम्बना में तब्दील हो जाती है और कहीं भाषा भी मनुष्य में। केदार जी के काव्य में चित्रित वे लोग हैं जिनकी संख्या देश में बहुत अधिक है। देश के ग्रामीण लोग ही केदार जी के काव्यपरिदश्य के आम लोग हैं और खास लोग भी यही हैं। केदार जी अपने काव्य संकलन 'अकाल में सारस' में 'अंगूठे का निशान' कविता में संस्कृति और जन के अन्तर्सम्बंध की विडम्बना को रेखांकित करते हुए लिखते हैं-

"किसने बनाये

वर्णमाला के अक्षर किसने बनाये

ये काले-काले अक्षर भूरे भूरे अक्षर

किसने बनाये

खड़िया ने

चिड़िया के पंख ने दीमकों ने ब्लैक बोर्ड ने

किसने

आखिर किसने बनाये वर्णमाला के अक्षर

सारे अक्षरों को अंगूठा दिखाते हुए धीरे से बोला

एक अंगूठे का निशान

और एक सोख्ते में

गायब हो गया।"

समकालीन त्रासदियों एवं प्रेम का संगम

केदारनाथ सिंह के मुहावरों के ताजेपन के पीछे यही रहस्य और शक्ति है। यह उसे नयी चमक और व्यापक अर्थ प्रदान करती है। संहार और विनाश की ताकतों से लड़ने के लिए जिस मानवीय और करुणामय परिवेश की आवश्यकता है केदार जी की दृष्टी में वह गाँव ही है। उनकी वैयक्तिक प्रेम कविताओं में भी लोक और जन के प्रति गहरी आस्था देखी जा सकती है। वे दुनिया की बातें सोचते हुए अपने प्रेम के बारे में सोचने लगते हैं, उसी प्रकार प्रेम पर सोचते हुए सम्पूर्ण विश्व की बात करने लगते हैं। अर्थात् उनके यहां जगत और प्रेम में कोई अन्तर नहीं है। यहाँ आकर उनका प्रेम गहरे अर्थ में एक सामाजिक गरिमा और व्यक्तित्व प्राप्त करता है। प्रेम पर सोचते हुए दुनिया पर सोचने का बेहतर उदाहरण है उनकी कविता 'हाथ'

"उसका हाथ

अपने हाथ में लेते हुए मैंने सोचा

दुनिया को

हाथ की तरह गर्म और सुन्दर होना चाहिए।"

सामान्य ग्रामीण जनता की बुनियादी समस्याएँ

जनता के निकट आने के क्रम में वे महानता का निशेध करते हैं। जहाँ जनसामान्य नहीं है, वे वहाँ किसी के होने पर यकीन नहीं करते। सामान्य उनके यहाँ अधिक गरिमामय है। 'ऊंचाई' कविता में वे लिखते हैं

"मेरे शहर के लोगों यह कितना भयानक है

कि शहर की सारी सीढ़ियां मिलकर

जिस महान ऊंचाई तक जाती हैं।

वहां कोई नहीं रहता।"

यह उनके परवर्ती काव्य-सोपान का महत्त्वपूर्ण प्रस्थान बिन्दु है। वे धूल की बात, जमीन और जनता की बात करते हैं तो ऊंचाई को खारिज भी करते हैं। उन्हें शहर की

भव्यता भयावह लगती है। मामूलियत की स्थापना की निरंतर कोशिश उनके यहां देखी जा सकती है। मामूली चीजों की उपेक्षा इनके मन में टीस पैदा करती है। उदाहरण के तौर पर 'आंकुसपुर' कविता को ही लें। कस्बे के एकदम छोटे से स्टेशन पर अधिकतर ट्रेनों के न रुकने की कवि के जन में गहरी पीड़ा है। यहाँ तक कि उसे स्टेशन का अस्तित्व ही व्यर्थ लगने लगता है। यह एक गहरी संलग्नता है अपने परिवेश और उसकी सीमाओं के प्रति इस कविता की पक्तियाँ दृश्टव्य हैं-

"सिर्फ दसबजिया यहाँ रुकती है

क्यों

आखिर क्यों?

फिर पृथ्वी पर क्यों है आंकुसपुर।"

स्व-मूल्यांकन : क

प्रिय विद्यार्थीयों! अपने अध्ययन को थोडा विश्राम देकर इस पाठ से अभी तक प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन निम्न प्रश्नों के उत्तर सही/गलत चिहन् द्वारा देकर करें-

1. केदार के यहाँ मनुष्य और भाषा एक दूसरे के पर्याय हैं। ( )
2. देश के शहरी लोग ही कदार के काव्य परिदृश्य के आम और खास लोग हैं।( )
3. 'अंगूठे का निशाना' कविता 'अकाल में सारस' काव्य संग्रह की है। ( )
4. संहार-विनाश की ताकतों से लड़ने हेतु जिस मानवीय व करूणामय परिवेश की आवश्यकता है वह केदारनाथ की दृष्टि में गाँव ही है। ( )
5. केदार प्रेम पर सोचते हुए सम्पूर्ण विश्व की बात करने लगते हैं। ( )
6. जहाँ जनसामान्य नहीं है, केदार वहाँ किसी के होने पर यकीन नहीं करते। ( )
7. मामूली चीजों की उपेक्षा इनके मन को प्रभावित नहीं करती। ( )

विस्थापन का दंश

केदारनाथ सिंह की कविताओं में विस्थापन का दंश भी प्रमुखता से उभरा है। उन्हें दिल्ली में यह महसूस होता था जैसे वे अपनी जड़ों से कट चुके हैं। वस्तुतः विस्थापन का बोध दिल्ली की उपज है। यह बोध बाद में स्थाई बनता चला गया और गहराता गया। जब उन्हें यह महसूस हुआ कि वे सिर्फ दिल्ली में ही विस्थापित नहीं हैं बल्कि

वे अपने मूल स्थान से भी विस्थापित हो चले हैं। गाँव में भी वे परदेसी हैं, बाहरी व्यक्ति हैं, वे मेहमान हैं, जिन्हें दिल्ली लौट जाना है। विस्थापन का दोहरा दंश उन्हें टीसता और आहत करता है। 'गाँव आने पर' कविता में उसकी अभिव्यक्ति यूं हुई है-

"क्या करूँ मैं?

क्या करूँ, क्या करूं कि लगे

कि मैं इन्हीं में से हूँ

इन्हीं का हूँ

कि यही हैं मेरे लोग

जिनका में दम भरता हूँ कविता में

और यही, यही जो मुझे कभी नहीं पढ़ेंगे।"

केदार जी विस्थापन की मनोस्थिति पर स्वयं ही कहते हैं- "विस्थापन की पीड़ा को मैं बहुत लम्बे अरसे से अनुभव करता हूँ। जो गांव से आये हैं, वे गांव के रहे नहीं, महानगर के हो नहीं सके तो न यहाँ के रहे, न वहाँ के रहे। यह अजब विस्थापन की स्थिति है, जिसे झेलना हमारी नियति है। अभी गांव पिछले दिनों गया था, तो वहां अपना इरिलिवेन्स महसूस हुआ। मैं क्यों आया यहां? मैं क्यों हूँ यहाँ?" विस्थापन इक्कीसवीं सदी का एक कट सत्य है। जिसे केदारजी भलीभाँति समझते हैं। उनकी बाद कि रचनाएँ विस्थापन के मनोविज्ञान से स्पष्ट रूप से प्रभावित दिखाई पड़ती हैं।

बेजुबानों और प्रकृति को आवाज़ देती कविताएँ

केदार जी ने बेजान वस्तुओं के चरित्र में एक ऐसी खासियत भर दी है कि वे न सिर्फ परिवेश का जरूरी हिस्सा बन जाती हैं, बल्कि अपने स्तर पर वह उसमें अपनी भूमिका निभाते हुए दिखायी देती हैं। उनका काव्यात्मक धरातल नयी रचनात्मक उर्वरा से सम्पन्न है। ये मनुष्य की तरह न सिर्फ वस्तुओं की शिनाख्त करते दिखायी देते हैं बल्कि उसे मनुष्य के विकास कार्य में अपने स्तर पर संलग्न पाते हैं। मनुष्य और प्रकृति के अन्तर्सम्बंध पर उसी क्रम में वे सार्थक टिप्पणियां भी करते चलते हैं। इनमें न सिर्फ नया रचनात्मक आस्वाद मिलता है बल्कि रुमानवाद की उस अबोध आकांक्षा से हमारा वास्ता पड़ता है जो काव्यात्मक यथार्थ को यथार्थ से अधिक सकारात्मक होने का दावा कर सकता है। प्रकृति के मामूली क्रियाकलापों को गरिमामय और रचनात्मक अर्थ देने के लिहाज से केदार जी हिन्दी कविता में उन विरल कवियों में ठहरते हैं। केदार जी 'यहां से देखो ' काव्य संग्रह के आरम्भ में ही मामूली चीजों की गरिमा को

रेखांकित करना कविता का एक मूल्य स्वीकार करते हैं 'कविता क्या है' कविता में वे लिखते हैं-

"कविता क्या है

बालों के गिरने पर नाई की चिन्ता

एक पत्ती के गिरने पर

राष्ट्र का शोष"

केदार जी के यहां उपलें की गंध फूल की गंध से बेहतर है। 'घुलते हुए गलते हुए' शीर्षक कविता में वे लिखते हैं-

"कहां से आती है।

उपलों से छनती हुई

फूल की खुशबू

उपलों की गन्ध मगर फूल की गंध से

अधिक भारी

अधिक उदार।"

अरुण कमल ने यहां से देखो पुस्तक के फ्लैप पर ठीक ही लिखा है "जो नश्ट हो जाता है वह कितना ही षूद्र क्यों न हो उन्हें दुखी करता है। (कीड़े की मृत्यु)। जीवन के प्रति वह सम्मान ही केदार जी के इस संग्रह की मुख्य अन्तर्वस्तु है।"

दुख का समाजशास्त्र

उनके यहाँ दुख भी एक दूसरे से जोड़ता है। एक दूसरे के अधिक निकट ले आता है। 'दुख' कविता में वे लिखते हैं-

"इस तरह छोटे-छोटे दुखों की

एक महान चारपायी

न जाने कब से बुनी जा रही है

मेरे शहर में

और तुम्हारे शहर में भी।"

यहाँ दुख केवल मेरे शहर का मामला नहीं है, तुम्हारे शहर का भी मामला है। केदार जी दुख को एक दूसरे के बीच का मामला नहीं रहने देते, इसे समूह के बीच

इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि वह उनकी लय में शामिल हो जाता है, जैसे वह उन्हीं का अजीज हो। वे लिखते हैं-

"दुख का कोई पहाड़ नहीं होता,

कोई समुद्र नहीं होता दुख सिर्फ हाथ होते / छोटे-छोटे

जो दिन भर रस्सी की तरह बुनते रहते हैं दुख को।"

अपने प्रिय कवि निराला पर लिखते हुए वे दुख को याद करते हैं जो उनके जीवन की सहचरी रही

"रोज कहीं टाँके पड़ते हैं

रोज उधड़ जाती है सीवन/ दुखता रहता है अब जीवन!"

केदारनाथ सिंह का दुख वैयक्तिकता का अतिक्रमण करने के कारण करुणा में तब्दील हो जाता है। वे गौतम बुद्ध की अहिंसा और करुणा से प्रभावित दिखाई देते हैं। उन्हें लगता है बुद्ध पर सोचना अपने ही समाज और अपने ही लोगों पर सोचना है। केदार जी प्रासंगिकता का रहस्य उनकी करुणा में भी छिपा है जो उनकी कविता को अधिक गरिमामय भी बनाता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि केदार जी बुद्ध के साथ-साथ कबीर से भी प्रभावित रहे हैं। उनका साहित्यिक चिन्तन मार्क्स, कबीर और बुद्ध से बार-बार टकराता है और उन्हीं के बीच अपना मार्ग प्रशस्त करता नज़र आता है, जो परवर्ती काल में अध्यात्म की तरफ झुका हुआ भी दिखायी पड़ता है।

स्व मूल्यांकन : ख

प्रिया विद्यार्थीयों ! आगे बढ़ने से पहले अभी तक प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन रिक्त स्थान भरकर कर लें। ताकि आपका अध्ययन सार्थक हो सके।

1. केदारनाथ को.....में यह महसूस होता था जैसे वे अपनी जड़ों से कट चुके हैं।
2. .....का बोध दिल्ली की उपज है।
3. केदार अपने.....से भी विस्थापित हो चले हैं।
4. विस्थापन.....सदी का एक कटु सत्य हैं।
5. केदार की बाद की रचनाएं विस्थापन के.....से स्पष्ट रूप से प्रभावित दिखाई पड़ती हैं।
6. केदार का.....धरातल नयी रचनात्मक उर्वरा से सम्पन्न हैं।

7. इनके यहां उपले की गंध.....की गंध से बेहतर हैं।
8. इनके दुख.....का अतिक्रमण करने के कारण करुणा में तब्दील हो जाता है।
9. केदार बुद्ध के साथ-साथ.....से भी प्रभावित रहे हैं।
10. इनका साहित्यिक चिन्तन.....,कबीर और बुद्ध से बार-बार टकराता है।

किसान जीवन का यथार्थ

कई वर्षों से महानगर में रहने के उपरान्त भी केदारनाथ सिंह का हृदय गांव की संस्कृति में रचा बसा है। केदारनाथ सिंह की कविता का विषय क्षेत्र अत्यन्त सहज एवं विस्तृत है। इन्होंने गाँव की साधारण से साधारण वस्तुओं को कविता का विषय बनाया क्योंकि उनका अनुभव संसार व्यापक एंव गहरा है, 'आखिन देखी' है। वे यथार्थ की मिठास एवं कड़वाहट में जीते हैं और उनकी कविता यथार्थ की अनुभूति और मुक्ति की कामना तथा आस्था और विश्वास के सहारे जीती है। केदारनाथ सिंह जब भारतीय कृषक जीवन की पीड़ा का यथार्थ वर्णन करते हैं तो प्रेमचन्द याद आते हैं। प्रेमचंदीय संवेदना का विस्तार केदार की कविताओं में दिखाई देता है। किसान के आर्थिक दोहन को 'दाने' शीर्षक कविता में अत्यन्त प्रभावित ढंग से प्रस्तुत किया है।

"नहीं
हम मंडी नहीं जाएँगे
खलिहान से उठते हुए
कहते हैं दाने
जाएँगे तो फिर लौटकर नहीं आएँगे
जाते जाते
कहते आते हैं दाने।"

यथार्थ और रुमानियत का संगम

केदार जी क्षुब्ध पीढ़ी के आक्रामक कवि नहीं हैं वे यथार्थवादी रुमानियत के कवि हैं। उनके पास उल्लासपूर्ण बड़बोलापन नहीं है। वे जमीन के पकने की प्रक्रिया को उद्दीप्त करने की दिशा में संतुलित और सुनियोजित आंच के पक्षधर हैं। वे उस समय की प्रतीक्षा के प्रति आस्थावान हैं जब रुखानी का जरा सा हिलना भी निर्णायक

हो सकता है। वे पशुओं के बुखार के मौसम की नब्ज पहचानते हैं इसीलिए अतिरिक्त अधीरता की कमजोरी से बचे हुए हैं। शायद यही कारण है कि उनकी कविताएँ कोई लम्बी यात्रा नहीं कर पातीं। हर बार उनकी कविताएँ नये सिरे से अपनी सड़क पार करती हैं। इस विश्वास के साथ कि शायद सड़क के उस पार दुनिया कुछ बेहतर हो गयी है किन्तु आस्था का अक्षय पाथेय मोहभंग के बावजूद उन्हें संत्रस्त नहीं करता। वे अपनी उदास पृथ्वी को प्रियतमा के गर्म हाथ की तरह सुन्दर होने की कामना करते हैं। केदारनाथ सिंह वैचारिक आग्रह के शिकार कभी नहीं रहे। उनके पास प्रगतिशील दृष्टी जरूर है, लेकिन अन्धानुकरण नहीं है। उनके वैचारिक आग्रहों के निर्णायक देश का मौजूदा परिवेश, उसकी विडम्बनाएँ और काव्यात्मक अनुभव हैं। वे अपने जीवनानुभवों से अधिक कुछ रचते हैं। अपने अनुभवों में वे दूसरों के अनुभवों को तो जोड़ते ही हैं बल्कि उन अनुभवों की अभिव्यक्ति के क्रम में उनकी भाषा के संस्कार और काल्पनिकता को भी शामिल करते हैं। इन्हीं अर्थों में हम यह कह सकते हैं कि केदार जी की कविताओं में न सिर्फ एक नया रचनात्मक आस्वाद है, बल्कि एक नया जीवन आस्वाद भी है। उनके यहां "आत्मा ठण्डे ठण्डे जल से बात करती हुई देखी जा सकती है। बालू के नर्म-नर्म तौलिये से देह पोछी जा सकती है।" केदार जी के लिए कविता हथियार नहीं है, किन्तु ढाल जरूर है। वह ढाल जो मनुष्य की निरन्तर जर्जरित होती हुई आस्था विश्वास और जिजीविशा को एक आड़ देती है। इस दृष्टी से वे विध्वंस के नहीं निर्माण के कवि हैं।

केदारनाथ सिंह जी का समकालीन पीढ़ी पर प्रभाव

शमशेर बहादुर सिंह ने बहुत पहले 'अभी बिल्कुल अभी' की समीक्षा करते हुए लिखा था कि केदारनाथ सिंह युवकों के प्रिय कवि हैं। शमशेर की यह पारखी दृष्टी अपने ऐतिहासिक क्रम में ब्याज सहित प्रतिफलित हुई । आज केदार जी युवकों के प्रिय और आदर्श कवि के रूप में जाने जाते हैं। परवर्ती पीढ़ी पर केदार जी का प्रभाव परिलक्षित किया जा सकता है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में भाषा और अभिव्यक्ति के बीच एक गहरा तादात्म्य है जिससे एक-एक विलक्षण तराश और कलात्मकता आयी है जिसका अनुकरण उनकी परवर्ती पीढ़ियों के कई कवि करते नज़र आते हैं। मंगलेश डबराल की कविता पर बात करते हुए इसकी प्रकारांतर से चर्चा करते हुए विनोद भारद्वाज लिखते हैं-"मंगलेश डबराल बहुत महत्वाकांक्षी कविता नहीं लिखते। उनकी बहुत कविताओं को पढ़ते हुए किसी तराशे हुए मूर्तिशिल्प की याद आती है। यह शिल्प काश्ठ, संगमरमर या किसी भी तरह के पत्थर में हो सकता है। खुरदरे टेक्सचर का

इस्तेमाल मंगलेश को पसंद नहीं है। अभिव्यक्ति और भाषा की सफाई उनकी काव्यकला का बुनियादी गुण है। पूर्ववर्ती कवियों में यह गुण केदारनाथ सिंह में सबसे अधिक नजर आता है।''

सामाजिक चेतना के शुष्क धरातल को संगीतात्मक बनाने के लिहाज़ से भी केदार जी जाने जाते हैं जो पाठक को बरबस आकृष्ट करता है। साथ ही शब्दों की मितव्ययिता ने उनकी कविता को अधिक सारगर्भित बनाया है। इनका जिक्र कतिपय अन्य कवियों के साथ करते हुए नामवर सिंह कहते हैं-संगीतधर्मी प्रयोगों की झीनी खूबसूरती से ढकी हुई सामाजिक चेतना के कवि शमशेर ने नयी कविता को सम्भवतः सबसे अधिक स्वर सम्पन्न बनाया है। इनके सधर्मा कुछ और नये नाम जुड़ते हैं जिनमें सर्वेश्वर, केदारनाथ सिंह, अजित कुमार तथा सूर्य प्रताप के नाम मुख्य हैं।

केदारजी की विकास यात्रा

केदार जी ने काव्य यात्रा के लगभग आरम्भिक दौर में ही प्रर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी और इसमें उनकी हर कृति के साथ इजाफा होता रहा। उनके आरम्भिक दौर की चर्चा करते हुए अजीत कुमार लिखते हैं- ''सन् पचास के आस-पास प्रतीक'' में प्रकाशित अपनी दो-एक कविताओं से ही केदारनाथ सिंह को जो ख्याति मिली थी वह अनेक कवियों को जीवन भर नसीब नहीं होती। 'झरने लगे नीम के पत्ते' 'छाने लगी उदासी मन मन में', 'आज पिया पिछवारे पहरू ठनका किया' जैसी उनकी उस समय की कविताओं में इतनी ताजगी थी और केदार उन्हें सुनाते भी ऐसे भावभीने स्वर में थे कि लगभग चालीस साल बाद प्रकाशित उनके चौथे और उल्लेखनीय काव्य संग्रह 'अकाल में सारस' (1983-87 की इकसठ कविताएं) पढ़ते हुए भी मन प्रायः उन्हीं कविताओं में जा रमता है। केदार जी प्रारंभ से ही अध्ययनशील व्यक्ति रहे हैं। वे पाश्चात्य व भारतीय कविता के गंभीर अध्येता माने जाते हैं। उन्होंने न सिर्फ उन पर लिखा है बल्कि कई कवियों की रचनाओं का अनुवाद भी किया है। विश्व कविता से उनकी रचनाशीलता के बीच लगातार संवाद रहा है। विश्व कविता के आलोक में वे अपनी रचनाशीलता को मांजते एवं विकसित करते रहे।

स्व-मूल्यांकन (ग)

प्रिय विद्यार्थीयों ! आपने इस पाठ का अध्ययन कर लिया है अब आप इस पाठ से प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वार करें-

1. केदारनाथ सिहं का हृदय किस संस्कृति में रचा-बसा है।

(क) शहर (ख) गाँव

(ग) नगर (घ) महानगर

2. किसकी संवेदना का विस्तार केदार की कविताओं में दिखता है।

(क) प्रेमचंद (ख) शिवमुर्ति

(ग) गांधी (घ) बुद्ध

3. केदार किस रुमानियत के कवि हैं ?

(क) क्षुब्ध पीढी (ख) यथार्थवादी

(ग) आदर्शवादी (घ) आक्रामक कवि

4. केदार अपनी उदास पृथ्वी को किसके गर्म हाथ की तरह सुन्दर होने की कामना करते है ?

(क) प्रियतमा (ख) माँ

(ग) बहन (घ) भाभी

5. केदार के लिए कविता क्या है ?

(क) हथियार (ख) ढाल

(ग) अर्थ (घ) शब्द

6. 'अभी बिल्कुल अभी' की समीक्षा किसने की है ?

(क) केदारनाथ सिंह (ख) मुक्तिबोध

(ग) नागार्जुन (घ) शमसेर बहादुर सिंह

7. किसी मितव्ययिता ने कादर की कविता को अधिक सारगर्भित बनाया है ?

(क) शब्दों (ख) अर्थ

(ग) कथ्य (घ) शैली

8. केदार के लिए यह किसने कहा कि, "सन पचास के आस-पास प्रतीक में प्रकाशित अपनी दो-एक कविताओं से ही केदारनाथ को जो ख्याति मिली थी वह अनेक कवियों को जीवन भर नसीब नहीं होती"।

(क) शमशेर बहादुर सिंह (ख) अजीत कुमार

(ग) मंगलेश डबराल (घ) नामवर सिंह

19.4 सारांश

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि केदार जी का काव्य-संसार एक ऐसे कवि का संसार है जो विश्व कविता के समक्ष अपनी तमाम विशिष्टताओं के कारण सम्पूर्ण भारतीय कविता का प्रतिनिधित्व करता है। केदार जी आलोचक नहीं हैं किन्तु विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी टिप्पणियों व समीक्षाओं ने हिन्दी आलोचना साहित्य को समृद्ध किया है और किसी हद तक मार्गदर्शन भी किया है। समकालीन रचना जगत की चुनौतियों व संघर्षों को उनकी टिप्पणियां शिद्दत से उठाती रही हैं और आलोचकों का ध्यान रचनाशीलता के नये विमर्शों के प्रति आकृष्ट कराती रही हैं। उनके साहित्य व साहित्येतर सरोकारों व संस्मरणात्मक निबंधों की कतिपय पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनमें 'मेरे समय के शब्द', 'कब्रिस्तान मैं पंचायत' व उनकी शोधपरक पुस्तकों 'कल्पना और छायावाद' तथा 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान' शामिल हैं। उनके साक्षात्कारों की पुस्तक 'मेरे साक्षात्कार' को भी इसी से जोड़कर देखा जाये तो उनकी टिप्पणियों में स्वयं उनका वह काव्य-संसार झांकता दिखायी देता है, जो उनकी कविताओं का पूरक है वे मामूली और गैर मामूली लोग दिखायी देते हैं जिनकी चिन्ता उनकी कविताओं की चिन्ता भी है। ये मुद्दे व सरोकार साफ दिखायी देंगे जिनसे छनकर उनके बिम्ब कविताओं में प्रवेश करते हैं। वह संसार दिखायी देगा जो कविताओं में अमूर्त है। इस प्रकार केदार जी का लेखन भी उनके व्यक्तित्व व काव्य संसार से गहरे तौर पर आबद्ध है और उसका पूरक भी।

19.5 कठिन शब्द

1. विरल -दुर्लभ, एकांत
2. खारिज-निकाला हुआ, बहिष्कृत
3. भव्यता - सजावट, सुंदरता
4. संतुलित -बिल्कुल ठीक
5. सुनियोजित - पहले से तय किया हुआ, योजनाबद्ध
6. कतिपय - कुछ, जिनकी संख्या कम हो

19.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1. वर्तमान परिदृश्य में केदारनाथ सिंह की कविताओं का मूल्यांकन करें।

प्र. 2. समकालीन कवियों में केदारनाथ सिंह का स्थान निर्धारित कीजिए।

प्र. 3. केदारनाथ सिंह की विकास यात्रा पर टिप्पणी करें।

19.7 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन क - 1 सही 2. गलत 3. सही 4. सही 5. सही 6. सही 7. गलत

स्व-मूल्यांकन ख - 1. दिल्ली 2. विस्थापन 3. मूल स्थान 4. इक्कीसवीं 5. मनोविज्ञान 6. काव्यात्मक 7. फूल 8. वैयक्तिकता 9. कबीर 10. मार्क्स

स्व-मूल्यांकन ग - 1. गांव 2. रेमचन्द 3. यथार्थवादी 4. प्रियतमा 5. ढाल 6. शमशेर बाहदुर सिंह 7. शब्दों 8. अजीत कुमार

19.8 पठनीय पुस्तकें

1. उत्तर कबीर और अन्य कविताएं - केदारनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
2. मेरे समय के शब्द - केदारनाथ सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1985
3. मेरे साक्षात्कार - केदारनाथ सिंह, किताब घर प्रकाशन,नई दिल्ली, 2008
4. आधुनिक कवि - विश्वम्भर मानव,लोकभारती प्रकाशन, 2008
5. मेरे समय के शब्द, केदारनाथ सिंह, राधाकृषण प्रकाशन, दिल्ली, 2016
6. केदारनाथ सिंह और उनका समय, निरंजन सहाय, मेधा पब्लिशिंग हाउस, 2013

निर्धारित कविताओं का संवेदनागत और शिल्पगत वैशिष्टय

रूपरेखा

20.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

20.2 प्रस्तावना

20.3 निर्धारित कविताओं का संवेदनागत और शिल्पगत वैशिष्टय

20.3.1 नमक

20.3.2 बुद्ध से

स्व-मूल्यांकन : क

20.3.3 अकाल में दूब

20.3.4 उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएँ

स्व-मूल्यांकन : ख

20.3.5 रोटी

स्व-मूल्यांकन : ग

20.4 सारांश

20.5 कठिन शब्द

20.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

20.7 उत्तर कुंजी

20.8 पठनीय पुस्तकें

20.1 उद्देश्य एवं अपेक्षित परिणाम

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य आपको पाठ्यक्रम में निर्धारित केदारनाथ सिंह की पाँचों कविताओं की मूल संवेदना और उनके शिल्पगत वैशिष्टय का ज्ञान देना है।

इस अध्याय के अध्ययनोपरान्त आप केदारनाथ सिंह की चयनित पाँच कविताओं के माध्यम से स्त्री जीवन का यथार्थ, बढ़ती हिंसात्मक प्रवृति, मनुष्य की जिजीविषा, संघर्ष तथा ग्रामीण परिवेश और उनके यथार्थ से अवगत हो सकेंगे।

20.2 प्रस्तावना

केदारनाथ सिंह मुलतः मानवीय संवेदना के कवि हैं और इन्होंने हिन्दी काव्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आज़ादी के बाद के जिन कवियों ने समकालीन कविता को एक नई दिशा प्रदान की उनमें केदारनाथ सिंह का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। केदारनाथ जी की भाषा-शैली के संदर्भ में अगर बात की जाए तो उसमें सहजता, बिंबमयता, और वैचारिकता ये तीनों गुण मुख्य रूप से उद्घाटित हुए हैं। विशेष रूप से इन्होंने बिंब विधान पर अधिक बल दिया है जिससे इनकी कविता सुन्दर और यथार्थ के अधिक निकट दिखाई देती है।

20.3 निर्धारित कविताओं का संवेदनागत और शिल्पगत वैशिष्टय

20.3.1 'नमक' कविता की संवेदना और शिल्प

'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' कवि केदारनाथ सिंह का सर्वश्रेष्ठ कविता संग्रह है। इसका प्रकाशन 1995 ई० में हुआ। इस संग्रह में संकलित उनकी एक विशिष्ट कविता है 'नमक'। इस कविता में नायक स्वयं 'नमक' है, जो अपने अस्तित्व को खोजता हुआ इधर-उधर भटकता है। एक षाम महानगर के एक मोहल्ले से गुजरते हुए वह चुपके से एक सुंदर शैली में सुसज्जित घर में घुस गया तथा किसी चम्मच की सहायता से हौले से दाल में घुल गया। उस परिवार के भोजन को सुस्वादु बनाने के लिए नमक ने खुद को घुला लिया। वह संतुश्ट था। उस घर की स्त्री में स्वयं को रखकर सबकी तृप्ति की बांट जोह रहा था। लेकिन भोजन की टेबल पर गृहस्वामी का पुरुष त्व हौले से जागा- ''दाल फीकी है''। फिर व्यक्ति ने आक्रोशित हो अपने अहंकार का प्रदर्शन करते हुए लगभग चखते हुए कहा- ''मैं कहता हूँ फीकी है।'' पूरे परिवार और उस मर्द का स्वाद बढ़ाने के लिए स्वयं को घुला देने वाला नमक एवं स्त्री अवाक् हो कर चुप रही, बच्चे तथा कोने में बैठा कुत्ता अपलक एक-दूसरे को ताकता रहा। पुरुष कुर्सी छोड़ कर उठ गया, धीरे-धीरे कुर्सियों पर से सब उठ गए। नमक कहीं नही जा सकता था क्योंकि वह भोजन में घुल चुका था। इसलिए वह चुपचाप बैठा रहा, उसने आँख उठाकर बच्चों की ओर देखा, बच्चे ने कुते और कुत्ते ने जाती हुई स्त्री की ओर देखा और आखिर मैं नमक इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि-

''न सही दाल

कुछ-न-कुछ फीका जरूर है

सब सोच रहे थे

लेकिन वह क्या है''

यह कवि की दृष्टी से बेहद चुनौतीपूर्ण सवाल है कि आखिर वह क्या है जो फीका है। वस्तुतः पति-पत्नी, बच्चों के बीच प्रेम का जो रिश्ता होता है, वह फीका है पर स्थिति ऐसी आ गयी है कि लाख सोचने के बावजूद किसी भी व्यक्ति को यह बात समझ नहीं आती है। यह कविता मनुष्य समाज की बदलती मनःस्थिति पर भी सवालिया निशान लगाती है।

सन् 1990 ई० में लिखी गयी यह कविता आज के टूटते पारिवारिक जीवन में कितनी प्रासंगिक है, इसका मूल्यांकन सहज ही किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श का यह प्रारम्भिक दौर था। वस्तुतः यह कवित्ता कई मोर्चों पर संघर्श करती नज़र आती है। स्त्री अस्मिता के प्रश्न तो सम्पूर्णतः इस कविता में मुखरित होते हैं। एकाकी परिवार का टूटन भरा वातावरण कवि के विचारों के केंद्र में है। जहाँ स्त्री के हृदय को समझने वाला कोई नहीं है। चूँकि केदार जी ग्रामीण पृष्ठभूमि से लगाव रखते हैं और बार-बार उन्हें ग्राम्य जीवन का ख्याल आता है, वे जानते हैं कि इन स्थितियों में बाप, दादा, सास, ससुर आदि कैसे माहौल को संभाल लेते हैं। महानगरों में पारिवारिक मूल्यबोध जिस तीव्रता से टूट रहे हैं, उसे देख कर कवि इस कदर व्यथित होते हुए कि लिखता है-

"उस समूचे घर में एक कुत्ते के अलावा
इसे कोई नहीं जानता।"

स्पष्ट है कि कवि को मानवेतर प्राणी इस उत्तर आधुनिक जीवन में मनुष्यों से कहीं ज्यादा संवेदनशील दिखाई पड़ते हैं।

शिल्प

शिल्पगत और भाषागत दृष्टी से देखा जाए तो केदारनाथ सिंह जी की यह कविता बहुत सरल भाषा में रचित है। केदार जी अपने बिंबों और प्रतीकों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हैं लेकिन इस कविता में उनकी सहजता परिलक्षित होती है। महानगरीय समाज का जो यथार्थ है उसे काव्यबद्ध करते हुए उन्होंने कठिनाई का सहारा नहीं लिया है। प्रवाहमयी, सहज, सरल और सुगम भाषा में उन्होंने इस कविता को ऐसा आकर्षक रूप प्रदान किया है जो जन सामान्य को बिना जतन किये समझ आ सके। शब्दों की कारीगरी में केदारजी अप्रतिम हैं। वे एक-एक शब्द की महता स्थापित करते हैं। निम्न पंक्तियों में 'अक्टूबर' माह के माध्यम से घर के पूरे वातावरण का परिचय दिया हैं निम्न पंक्तियों में यह भाव दृष्टव्य है-

"घर सुन्दर था

जैसा की आम तौर पर होता है

अक्टूबर के शुरू में।"

अक्टूबर संपूर्ण बिंब खड़ा करने में सक्षम है। अक्टूबर वह महीना है, जिसमें न ज्यादा गर्मी होती है, न ही ज्यादा सर्दी। शरद ऋतु हर ओर सुंदरता बिखेरती है। ऐसे खूबसूरत महीने से घर की सुन्दरता की तुलना करना यह बताता है कि उनकी दृष्टी प्रकृति के हर पक्ष पर थी यही कारण है कि उनके बिंबों में जीवंतता है। 'नमक' स्वयं अपने आप में एक प्रतीक है जो निस्वार्थ भाव से दूसरी चीज़ों की गुणवत्ता और स्वाद बढ़ाने के लिए खुद को समर्पित कर देता है। वैसे ही जैसे पत्नी घर के अन्य लोगों की खुशियों की खातिर कुछ भी करने और सुनने के लिए स्वयं तैयार रहती है। देशज शब्दों का प्रयोग कविता में प्राण का संचार करता है।

20.3.2 'बुद्ध से' कविता की संवेदना और शिल्प

यह अनायास नहीं है कि केदारनाथ सिंह के लगभग हर काव्य संग्रह में गौतम बुद्ध पर कविता रहती है। गौतम बुद्ध का मूल संदेश करुणा ही है। वे बुद्ध से लेकर कबीर तक की यात्रा करते दिखायी देते हैं। बुद्ध सी करुणा और कबीर सी आक्रामकता दोनों मिल-जुल कर उनकी काव्य-संवेदना को एक नयी दिशा प्रदान करती है। बुद्ध के संदर्भ में उन्हें पोखरण में किया गया परमाणु परीक्षण भी याद आता है जिसका नाम रखा गया-'बुद्ध की मुस्कान'। पोखरण में हुए विस्फोट को 'बुद्ध की मुस्कान' नाम देने को वे भाषा का ध्वंस करार देते हैं। अपनी महत्त्वपूर्ण कविता 'बुद्ध से' में कवि बुद्ध से संवाद करते हुए उन्हें आज की संवेदनहीनता, जड़ता और निरंतर बढ़ती जा रही हिंसा की घटनाओं से जोड़ देते हैं। तथाकथित सभ्य समाज किस तरह कमजोर-कोमल चीजों को अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए तहस-नहस करता जा रहा है, कवि उसे रेखांकित करता है-

"भन्ते, आज सोमवार है

इस नयी सदी के पहले सप्ताह का

पहला दिन

मैं अपने शहर के लगभग बीचोबीच खड़ा हूँ

और आपसे कुछ कहने के लिए

शब्द तलाश रहा हूँ

मेरे चारों ओर घना कोहरा है

उतना ही घना जितना कल था

यानी पिछली सदी में।"

इन पंक्तियों में एक साथ कई पीड़ाओं को कवि व्यक्त करने की कोशिश करता दिखाई पड़ता है। वह देख रहा है नयी सदी का पहला सूर्योदय भी कुहासे के बीच खो रहा है। सवाल यह उठता है कि यह कुहासा किसका प्रतीक है। सिर्फ सदी बदलने से समस्याएं नहीं खत्म हो जाती हैं, कवि यह बात समझता है। सम्पूर्ण विश्व में साम्राज्यवादी ताकतों के मजबूत होने से विश्व आतंकवाद से लेकर गृहयुद्ध तक की आग में जल रहा है। धुआँ, कुहासा और त्रासदी इतनी गहरी है कि कवि को उपयुक्त शब्दों की तलाश करनी पड़ती है। इस नई सदी में समस्याएं उत्तरोत्तर विकराल होंगी, यह कवि जानता है। इसीलिए वह एक ऐसा शब्द तलाशता है जिसमें मानव-जीवन की सारी त्रासदियाँ शामिल हो जाएं। तमाम त्रासदियों के बीच उन्हें बुद्ध का स्मरण होता है और वे कहते हैं-

"अभी पिछले ही सप्ताह मैं सारनाथ गया था

वही आपका प्रिय मृगदाव -

और हैरान रह गया यह देखकर

कि वहाँ के सारे हिरन मार डाले गए हैं।

और अब वहाँ सिर्फ एक मादा घड़ियाल है

जो अपने अंडों की तलाश में

हिंडोर रही है रेती।"

केदारनाथ सिंह जिस क्षेत्र के रहने वाले थे तथा जहां रहकर उन्होंने अध्यापन-कार्य शुरू किया, उसके समीप ही कुशीनगर है। यहां बुद्ध ने अपना अंतिम समय बिताया था। यहीं उनकी मृत्यु हुई थी। यह स्थान भी केदारनाथ जी को प्रिय था, बल्कि एक समय वे यहां बसना चाहते थे। स्पष्ट है कि केदारनाथ सिंह बुद्ध के मार्ग पर चलने वाले पथिक थे। आज के समाज की सच्चाई व्यक्त करते हुए वे लिखते हैं-

"उंगलिमाल छुट्टा घूम रहा है शहर में

और सुजाता अपने शहर के

किसी छुतहा अस्पताल में भर्ती है।"

दुर्दांत डकैत के रूप में बुद्ध के समकालीन कुख्यात रहे अंगुलिमाल की तरह आज कई प्रकार के डकैत खुलेआम घूम रहे हैं। कवि को अफसोस इस बात का है कि कोई बुद्ध नहीं दिखाई पड़ता है जो ऐसे अंगुलिमालों को समझा सके।

सम्पत्ति हड़पने वाले डकैत हों, स्त्रियों की इज्जत-अस्मत लूटने वाले डकैत हों या वोट हड़पने वाले डकैत हों, सभी के सभी सामान्य जनता के लिए दुःस्वप्न सुरीखे ही हैं। वे किसी के भी शरीर और हृदय को छलनी कर अस्पताल पहुंचा सकते हैं। दुखद पहलू यह है कि इन समस्याओं के निवारण का कोई सार्थक उपाय कवि को नहीं सूझता। कविता की अंतिम पंक्तियों में वे कहते हैं-

"दुःख है

तो उसका निदान भी होगा ही

पर महाभिशग क्या निर्वाण के अलावा

इसका कोई इलाज नहीं ?"

यह पंक्ति न केवल कवि केदारनाथ सिंह के लिए आजीवन चुनौती बनी रही बल्कि हम सब के लिए आज भी यह चुनौती ही है। दुख के निवारण का कोई स्पष्ट पथ उन्हें दूर-दूर तक नज़र नहीं आता। सम्भवतः इसीलिए वे कविता की अंतिम पंक्तियों में इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि 'निर्वाण' ही एकमात्र विकल्प है जो हमें दुखों के सागर में डूबने से बचा सकता है।

शिल्प

कविता का शिल्प केदार जी की अन्य कविताओं की तरह प्रतीकों से परिपूर्ण है, भाषा सुगम और संगठित है, शब्दों का संयोजन उत्तम कोटि का है।

ऐतिहासिक पात्रों और शब्दों का प्रयोग करके केदारनाथ सिंह ने इस कविता की अर्थवत्ता में वृद्धि की है। कविता की ये पंक्तियाँ दृश्टव्य हैं-

"पता तो यह चला भन्ते

कि उंगलिमाल छुट्टा घूम रहा है शहर में

और सुजाता अपने शहर के

किसी छूटहा अस्पातल में भर्ती है।"

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा कवि ने आज के किसी डकैत, आतंकी, अपराधी का नाम न लेकर ऐतिहासिक डाकू अंगुलिमाल को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। आज

जबकि उस युग की अपेक्षा अपराध में कई गुणा ज्यादा वृद्धि हुई है तब कवि का यह कहना कि अंगुलिमाल जैसे कई डकैत छुट्टा घूम रहे हैं शहर में यथार्थ स्थिति का परिचायक है। हत्या, अपहरण, बलात्कार जैसे दुष्कर्म बुद्ध के इस देश में खुले रूप में हो रहे हैं लेकिन बुद्ध इसकी सुध नहीं ले रहे। बिडम्बना यह है कि 'सुजाता' जो ज्ञान का प्रतीक है जिसकी खीर खाने के बाद ही स्वयं बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई वैसे ज्ञान आज छुटहा अस्पतालों में भर्ती हैं, जिन्हें कोई छूना नहीं चाहता, जिनके बारे में यह धारणा बन गयी है कि वे समाज में संक्रामक रोग का प्रचार करेंगे। केदारनाथ सिंह समाज की इन कटु सच्चाइयों को कविताओं में प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कविता में 'सारनाथ' भी प्रतीक के रूप में ही इस्तेमाल किया गया है। कुल मिलाकर देखा जाए तो कविता इस उत्तर आधुनिक समय में बुद्ध की प्रासंगिकता को सिद्ध करती हुई दिखाई देती है।

स्व-मूल्यांकन (क)

प्रिय विद्यार्थीयों ! आपने इस पाठ में अभी तक 'नमक' तथा 'बुद्ध से' दो कविताओं का संवेदनागत और शिल्पगत अध्ययन किया है अब इस अध्ययन का बहुविकल्पीय प्रस्नों द्वारा स्व-मूल्यांकन कर अपने ज्ञान को परिपक्व बनाएं-

1. उत्तर कबीर और अन्य कविताएं काव्य संग्रह का प्रकाशन वर्ष क्या है ?

   (क) 1992 (ख) 1994

   (ग) 1995 (घ) 1996

2. नमक कविता किस काव्य संग्रह में संकलित है ?

   (क) उत्तर कबीर और अन्य कविताएं

   (ख) अभी बिल्कुल भी

   (ग) जमीन पक रही है

   (घ) यहाँ से देखो

3. 'न सही दाल / कुछ न कुछ फीका जरूर है' पंक्ति किस कविता की है ?

   (क) रोटी (ख) नमक

   (ग) उम्मीद नहीं चोडती कविताएं (ख) अकाल में

4. 'नमक' कविता में क्या फीका है ?

(क) पति-पत्नी-संतान का रिश्ता (ख) दाल का नमक

(ग) व्यवस्या में गाटा (घ) नमक

5. 'नमक' कविता कब लिखी गई ?

(क) 1996 (ख) 1995

(ग) 1989 (घ) 1990

6. किसकी अस्मिता के प्रश्न सम्पूर्णत: नमक कविता में मुखरित होते हैं ?

(क) नारी (ख) किसान

(ग) पुरुष (घ) मज़दूर

7. पोखरण में किए गए परमाणु परीक्षण को क्या नाम दिया गया है ?

(क) बुद्ध की मुस्कान (ख) बुद्ध का ज्ञान

(ख) बुद्ध की नाम (घ) बुद्ध का साथ

8. 'शब्द तलाश रहा तूँ / मेरे चारों ओर घना कोहरा है'। किस कविता की पंक्ति हैं ?

(क) नमक (ख) अकाल में दूब

(ग) रोटी (घ) बुद्ध से

9. बुद्ध ने अपना अंतिम समय कहाँ बिताया था ?

(क) कुशीनगर (ख) चकिया गांव

(ग) लुम्बिनी (घ) कोसल राज्य

10. केदारनाथ किसके पथ पर चलने वाले पथिक थे ?

(क) गाँधी (ख) अरविंद

(ग) रविन्द्रनाथ टैगोर (घ) बुद्ध

20.3.3 'अकाल में दूब' कविता की संवेदना और शिल्प

भारतीय काव्य संसार में केदारनाथ सिंह 'धन्यवाद' के कवि हैं। उनके पास स्वीकार का बड़ा हृदय है, जहाँ यथार्थ की जमीन पर परम्परा-आधुनिकता, सुख-दु:ख, गाँव-शहर, खेत और बाजार एक साथ रहना चाहते हैं। केदार जी की कवितायें जीवन

की तमाम चुनौतियों में उम्मीद की खोज करती दिखाई पड़ती हैं। यह उम्मीद मानवता के साहस विश्वास और जिजीविषा की गवाही है। 'अकाल में सारस' ऐसी ही कविताओं का संग्रह है, जिसमें 1983-87 के मध्य रची गयी कवितायें संकलित हैं। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत यह संकलन कविता को भाषा और भाव दोनों ही स्तर पर 'भारत' की जमीन पर खड़ा करता है। ये कविताएँ पाठक के साथ संवाद करती हैं और कविता और मनुष्य के बीच के शाश्वत सम्बन्ध को व्यक्त करती हैं। केदार जी कविता में परम्परा और आधुनिकता के मध्य विरोध की बजाय संवाद का रिश्ता देखते हैं। अतीत वर्तमान पर अपने विचार थोपता नहीं है। एक किसान बाप अपने बेटे को जीवन के सूत्र देता है लेकिन उसकी अनिवार्यता को खारिज करता है, जिससे जीवन में विकल्प बने रहें, जहाँ से विकास का रास्ता फूटता है। कवि जमीन से जुड़ने का 'एक छोटा सा अनुरोध' भी करता है पर उसकी भाषा आसमान के इंकार की नहीं है।

केदार जी के लिए दुःख शिकायत की बजाय जागृति पैदा करता है। इस जागृति में स्वप्न के बजाय यथार्थ उनका अधिक साथ देता है। 'अकाल में सारस' और 'अकाल में दूब' उम्मीद की कविताएँ हैं। रोहिताश्व ने 'मिट्टी की रोशनी' में कहा भी है कि 'अकाल में दूब' कविता विपरीत स्थितियों में सूखे अकाल की स्थिति में दूब के अगर बचे रहने की गवाही देती है, तो यह अकाल की विषमता के समानान्तर आशा-विश्वास और जीवन सौन्दर्य की अनुभूति है, यहां नश्वरता के बरक्स अनश्वरता का सौन्दर्य बोध गतिशील है।

केदार जी की अकाल पर लिखी दोनों कविताओं में उनकी नाटकीय शैली विद्यमान है। 'अकाल् में दूब' में पूरा दृश्य एक समारोह जैसा है जिसमें चित्र और स्थितियां बोलती हैं, मंत्रणा करती हैं और अकाल में यदि दूब बची है तो जीवन की आशा भी बची है। यह कविता निष्कर्ष तः पाठक को पहुंचाती है। यह जीवन की वह कुंजी है जिस तक केदार जी की कई कविताएं पहुंचती हैं अथवा पहुंचाने की कोशिश करती हैं। यहां संवेदना के अकाल की स्थिति में दूब है। 'लोक संवेदना में अकाल के दिनों में दूब पानी का, जीवन का, प्राण तत्व का पर्याय है। 'अकाल में दूब' कविता में यह ध्वनित होता है-

"कहते हैं पिता

ऐसा अकाल कभी नहीं देखा

ऐसा अकाल कि बस्ती में

दूब तक झुलस जाय

सुना नहीं कभी

अचानक मुझे दिख जाती है

शीशे के बिखरे हुए टुकड़ों के बीच

एक हरी पत्ती

दूब है

हां-हां दूब है-

पहचानता हूं मैं

लौटकर यह खबर

देता हूं पिता को

अंधेरे में भी

दमक उठता है उनका चेहरा

अभी बहुत कुछ है

अगर बची है दूब।"

पहली नजर में किसी को लग सकता है कि विषय वस्तु के चयन के तहत ये कविताएं यथार्थपरक होते हुए भी अन्ततः कलारूप को ही अधिक तरजीह देती प्रतीत होती है, किन्तु ऐसा है नहीं। दरअसल बाह्य उपकरणों, कवि के औजारों को ही कथ्य मान लेने से ऐसा भ्रम होता है केदार जी के यहां वस्तु जगत एक भाव जगत तक ले जाने का माध्यम है यहां भी ऐसा ही हुआ है।

शिल्प

प्रतीक और बिम्ब योजना में कवि केदारनाथ सिंह सिद्धहस्त है। वे प्रकृति के भीतर से ही नए-नए बिम्ब गढ़ते हैं। जिन प्रतीकों और बिंबों पर अन्य कवियों की दृष्टी नहीं जाती केदारनाथ जी वहाँ तक पहुंचते हैं। जब से संसार है तब से ही दूब है लेकिन दूब को इस तरह केन्द्र में रखकर लिखने का प्रयास किसी ने भी इस ढंग से नहीं किया। दूब प्रतीक है जीवन का जीवंतता का बहुत बाकी होने का। तभी तो कवि कहता है-

"अब बहुत कुछ है

अगर बची है दूब....।"

केदार जी का पूरा बचपन गाँव और यौवन छोटे शहरों में बीता है। ये प्रतीक इन्होंने वहीं से ग्रहण किये हैं। अकाल की भयावहता गाँवों में शहरों की अपेक्षा कहीं ज्यादा महसूस होती है। शहरों में लोग साधन संपन्न होते हैं, अकाल की विभीषिका को वह झेल लेते हैं, लेकिन गाँवों के लोग संसाधनों के अभाव में बहुत कष्ट झेलते हैं। कवि ने इसलिए 'दूब' जैसे कोमल और छोटे प्राकृतिक पदार्थ को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत कर आमजन को विशम परिस्थितियों में जीवित रहने का सम्बल दिया है।

20.3.4 उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएँ की संवेदना और शिल्प

'अकाल में सारस' कविता संग्रह की एक महत्त्वपूर्ण कविता है 'उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएँ'। कवि केदारनाथ सिंह की इस कविता में द्वंद्व को महसूस किया जा सकता है। सृष्टि के शाश्वत और गतिमान चक्र को कवि ने अनोखे अंदाज में प्रस्तुत किया है। कविता की आरंभिक पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार हैं-

"जरा हवा चलती है

कहीं एक पत्ता

पट्ट से

गिरता है जमीन पर"

इन पंक्तियों में कवि कोई अनोखी बात नहीं कह रहा है परन्तु इन पंक्तियों के पीछे जो दर्शन छिपा है उसे समझना अत्यावश्यक है। हवा का चलना और पत्ते का गिरना यह इंगित करता है कि स्थितियाँ प्रतिक्षण बदल रही हैं। वक्त चाहे कितना भी अच्छा चल रहा है, वह पल भर में बदल सकता है। वे कोई तूफान की बात नहीं करते जिससे पूरा पेड़ या पत्ता टूट रहा है। 'जरा हवा' चलने से ही पत्ता टूट गया है। इसलिए वे कविता के पाठकों को भी तमाम चुनौतियों के लिए तैयार रहने को कहते हैं। यही कारण है कि वे कहते हैं-

"एक महान कविता

ऊबने लगती है

अपनी स्फटिक गरिमा के अंदर

और जब सारा शहर सो जाता है

तो इन सारी कविताओं में

भरा अवसाद

दुनिया पर बरसता है

सारी-सारी रात"

ये पंक्तियाँ कविता के द्वंद्व को उजागर करती है। कवि या आलोचक जिन कविताओं को महान बताते हैं उनमें भी अवसाद भरा होता है, कवि उस ओर इशारा करते दिखाई पड़ते हैं। वस्तुतः यह जगत ही अन्तर्द्वन्द्व से भरा हुआ है। इस ब्रह्मांड में यह कल्पना करना कि कोई भी तत्व, जिसे हम जैसा देखते हैं वैसा ही होगा, असल में हमेशा ऐसा नहीं होता है। कविता की गरिमा और मर्यादा के पीछे विशाद, अवसाद, पीड़ा, त्रासदी और न जाने कौन-कौन से तत्त्व शामिल रहते हैं, केदार जी इन पंक्तियों में उसी ओर इशारा करते हैं।

कविता की तमाम सीमाओं को जानते हुए भी कविता की मजबूत जीवनीशक्ति उन्हें, सम्बल देती है। वे देखते हैं कि सम्पूर्ण विश्व गम्भीर त्रासदी से जूझ रहा है। साम्राज्यवाद दुनिया को लील रहा है लेकिन फिर भी उन्हें और उनकी कविता को भरोसा है कि 'मौसम' चाहे जैसा भी हो एक दिन बदलेगा जरूर। 'धन्यवाद' की आवृत्ति से स्पष्ट है कि वे जीवन में विश्वास करने वाले कवि है और उनकी कविताओं की भी प्रवृत्ति इससे अलग नहीं है।

शिल्प

शिल्प की दृष्टी से अगर इस कविता का मूल्यांकन करें तो कवि की सहजता का बोध होता है। कविता आकार में तो लघु है, लेकिन अपने भीतर गम्भीर निहितार्थ समाहित किये हुए है। इस कविता में लय और गति का अद्भुत सामंजस्य दिखाई पड़ता है। भाषा सामान्य रूप से सहज और प्रवाहमान है। केदारनाथ सिंह की भाषिक विशेषता यह है कि वे जानते हैं कि भले ही उनकी कविताओं को ग्रामीण लोग नहीं पढ़ेंगे बावजूद इसके वे उन्हीं की भाषा में कविता रचते हैं कि अगर भूले-भटके भी कभी हित ने उनकी कविता पढ़ी तो वे उसे समझ सकेंगे। कवि शब्दों के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न करते हैं वे लिखते हैं-

"कहीं एक पत्ता

पट्ट से

गिरता है जमीन पर।"

'पट्ट से' के बिना भी पंक्ति पूरी हो सकती थी लेकिन वह ध्वनि नहीं उत्पन्न हो पाती जिसे कवि उत्पन्न करना चाहता है इसलिए वहाँ पर 'पट्ट' का प्रयोग बहुत व्यंजक है। पूरी कविता एक लय में बद्ध है। देशज और लोक शब्दों के प्रयोग में निश्णात कवि केदार इस कविता में 'टाइप' जैसे अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। केदारनाथ सिंह की यह विशेषता है कि वे कहीं के भी शब्दों का सुन्दर चयन अपनी रचनाओं के लिए कर लेते हैं। मुक्त छंद में लिखी गयी यह कविता अपने विशिष्ट शैली गत प्रयोगों की वजय से पाठकों को आकर्षित करती है।

स्व-मूल्यांकन (ख)

प्रिय विद्यार्थीयों ! अपने अध्ययन को कुछ क्षणों का विश्राम देकर अकाल में दूब और उम्मीद नहीं छोडती कविताएं जो संवेदनागत अध्ययन आप कर चुके हैं उसका रिक्त स्थान भरकर स्व मूल्यांकन भी करें। ताकि आप अपने अध्ययन को सार्थक कर सकें।

1. केदारनाथ के पास स्वीकर का बड़ा.....है।
2. इनकी कविताएं जीवन की तमाम चुनौतियों में.....की खोज करती दिखाई पड़ती हैं।
3. उम्मीद.....के साहस, विश्वास और जिजीविषा की गवाही है।
4. केदार कविता में परम्परा और आधुनिकता के मध्य विरोध की बजाय..... का रिश्ता देखते हैं।
5. केदार के लिए दुख शिकायत की अपेक्षा.....पैदा करता है।
6. इनकी अकाल पर लिखी दोनों कविताओं में..... शैल विद्यमान है।
7. इनका पूरा बचपन गाँव और यौवन.....में बीता है।
8. .....कविता संग्रह की महत्वपूर्ण कविता 'उम्मीद नहीं छोड़ती कविताएं' हैं।
9. केदार कविता के.....को भी तमात चुनौतियों के लिए तैयार रहने को कहते हैं।
10. केदार देखते है कि सम्पूर्ण विश्व गम्भीर.....से जुझ रहा है।

20.3.5 'रोटी' कविता की संवेदना और शिल्प

कई कवियों ने 'रोटी' पर कविताएँ लिखी हैं। केदारनाथ सिंह की भी कई रचनाओं में रोटी के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। स्वतंत्र रूप से 'रोटी' शीर्षक कविता भी उन्होंने लिखी। केदार जी पर विमर्श करते हुए यह बात हमेशा ध्यान में रखी जानी चाहिए कि वे ग्रामीण संवेदनाओं के कवि हैं। उन्होंने अपने आरंभिक जीवन में ही 'रोटी' की अहमियत को समझ लिया था। वे जिस परिवेश में पले-बढ़े, वहाँ अन्न का अनादर करना न केवल अशोभनीय था अपितु पाप सरीखा था। आज भले ही महानगरीय संस्कृति के विकसित होने पर लोग प्लेटों में आधा भोजन छोड़ना शान की बात समझते हैं लेकिन ग्रामीण समाज इसे आज भी हर स्तर पर रोकने की कोशिश करता है। अन्न उपजाने के पीछे जो कठोर परिश्रम होता है उसे ग्रामीण लोग जानते हैं, वे यह भी जानते हैं कि गरीबी, भुखमरी के इस दौर में कई घरों में चूल्हा नहीं जलता। ऐसे में रोटी के प्रति उनका सम्मान स्वाभाविक ही है। अपनी एक कविता में वे लिखते हैं-

"रात को रोटी जब भी तोड़ना

तो पहले सिर झुकाकर के

गेहूँ के पौधे को याद कर लेना"

यह आदर की भावना यूँ ही उत्पन्न नहीं होती। 'रोटी' कविता जहाँ से आरम्भ हो रही हैं वह पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

"उसके बारे में कविता करना

हिमाकत की बात होगी

और वह मैं नहीं करूँगा"

रोटी बनने की जो प्रक्रिया है वह कवि को अंदर तक झकझोर देती है। वह जानता है कि रोटी जब किसी की थाली में परोसी जाती है उससे पहले जो उसकी रचना प्रक्रिया है वह बेहद कष्टदायी है। गेहूँ की बालियों से आटे तक का सफर, फिर आटे का गुथा जाना, बेला जाना और फिर तवे पर पकना। यह एक ऐसी प्रक्रिया जिसे कवि ने नजदीक से देखा है। इसीलिए वह रोटी को 'दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक चीज' बताता है। यह कविता हमें कई स्तरों पर सोचने को मजबूर करती है। केदारनाथ लिखते हैं-

"मैंने उसका शिकार किया है

मुझे हर बार ऐसा ही लगता है

जब मैं उसे आग से निकलते हुए देखता हूँ"

वस्तुतः रोटी कोई शिकार की जाने वाली वस्तु नहीं है लेकिन आज की पूंजीपति राजनीति प्रतिदिन उनका शिकार कर रही है जो अन्न उपजाते हैं, जिससे रोटी बनना सम्भव हो पाता है। ऐसे कृषक मजदूर बनने पर मजबूर हैं, शहरों की ओर पलायन को मजबूर हैं और सरकार के विकास के नाम पर अपनी कृषि योग्य भूमि से विस्थापित होने को मजबूर हैं। यह विडंबना है कि कोई भी नेता चुनाव लड़ने से पहले किसानों की ही बातों को अपने घोशणापत्र के केंद्र में रखता है, लेकिन सांसद-विधायक, बनते ही उनकी चिंता और वफादारी के केंद्र में अन्य लोग चले आते हैं और किसान नेपथ्य में चला जाता है। कविता की अंतिम पंक्तियाँ बहुत मार्मिक हैं। वे लिखते हैं-

"आप देखेंगे

दीवारें धीरे-धीरे

स्वाद में बदल रही हैं।"

आखिर यह किसकी दीवारें हैं जो स्वाद की वस्तु बन रही हैं? और कौन है वह जो इसका स्वाद चख पा रहा है। सच्चाई यह है कि किसान और आदिवासी समाज आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। उन्हीं के घर, जंगल और जमीन पर पूंजीपतियों की नजर हैं, उन्हें उनकी ही भूमि से बेदखल कर पूंजीपति वर्ग वहाँ के खनिजों को निकाल कर मालामाल बनने के प्रयास में है। कवि ने सूक्ष्म संवेदनात्मक ढंग से इस कविता में 'रोटी' को केंद्र में रखकर आज के यथार्थ से समाज को अवगत कराने का सुंदर प्रयास किया है।

शिल्प

केदारनाथ सिंह मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि है। अपनी कविताओं में उन्होंने बिंब-विधान पर अधिक बल दिया है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में शोर-शराबा ना होकर, विद्रोह का शांत और संयम स्वर सशक्त रूप में उभरता है। 'जमीन पक रही है' संकलन में जमीन, रोटी, बैल आदि उनकी इसी प्रकार की कविताएँ हैं। संवेदना और विचारबोध उनकी कविताओं में साथ-साथ चलते हैं। जीवन के बिना प्रकृति और वस्तुएँ कुछ भी नहीं हैं यह अहसास उन्हें अपनी कविताओं में आदमी के और समीप ले आया है। इस प्रक्रिया में केदारनाथ सिंह की भाषा और भी नम्य और पारदर्शी हुई है और उनमें एक नयापन आया है। उनकी कविताओं में रोजमर्रा के जीवन के अनुभव परिचित बिंबों में बदलते दिखाई देते हैं। शिल्प में बातचीत की सहजता और अपनापन अनायास ही दृष्टी गोचर होता है। गंवई भाषा की छोंक भी कविता की विशेषता है 'पकना' जैसे शब्द उसी के द्योतक हैं।

स्व-मूल्यांकन (ग)

प्रिय विद्यार्थियों ! आपने 'रोटी' कविता का संवेदनागत अध्ययन तो कर लिया, अब आप इस अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का स्व-मूल्यांकन निम्न प्रश्नों के उत्तर सही / गलत चिहन् द्वारा देकर करें। यह स्व-मूल्यांकन आपके अध्ययन को सार्थकता तक पहुँचाएगा-

1. कई कवियों ने 'रोटी' पर कविताएं लिखी हैं। ( )
2. केदार को 'रोटी' की अहमियत को समझने में समय लगा ( )
3. अन्न उपजनो के पीछे जो कठोर परिश्रण होता है उसे शहरी लोग जानते हैं। ( )
4. रोटी की रचना प्रक्रिया बेहद कष्टदायक है। ( )
5. केदार रोटी को दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक चीज बताते हैं। ( )
6. किसान और आदिवासी समाज आज अपने अस्तित्व की लड़ाई नहीं लड़ रहा है।( )
7. केदार की कविताओं में रोजमर्रा जीवन के अनुभव परिचित बिम्बों में बदलते दिखाई देते हैं। ( )

20.4 निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि केदारनाथ सिंह मूलतः मानवीय संवेदना के कवि हैं इनकी संवेदना किसी दायरे तक सीमित नहीं है बल्कि समस्त चराचर मनुष्य , पशु, पक्षी, प्रकृति, पहाड़, जंगल आदि तक इनकी संवेदना दिखाई देती है। इन्होंने अपनी कविता में बिंब विधान पर अधिक बल दिया है इनकी कविताओं में किसी तरह का शोर शराबा न होकर विद्रोह का शांत और संभत स्वर सशक्त रूप से उभरता है। उनकी कविताओं में रोजमर्रा के जीवन के अनुभव परिचित बिंबों में बदलते दिखाई देते हैं। शिल्प में बातचीत की सहजता और अपनापन झलकता है।

20.5 कठिन शब्द

1. अवाक - चकित, विस्मित
2. अस्मत - पतिव्रत, सतीत्व
3. जिजीविषा - जीवन की चाह
4. विषमता - कठिनाई, प्रतिकूल

5. नश्वरता - नष्ट हो जाने का भाव, अचिरता

6. विषाद - उदासी, शोक

7. अस्तित्व - वजूद, उपस्थिति

8. अंतर्द्वन्द्व - मानसिक संघर्ष, दुविधा

20.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र. 1. 'नमक' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डाले।

प्र. 2. 'बुद्ध से' कविता का भावार्थ स्पष्ट करें।

प्र. 3. 'रोटी' कविता का मूल्यांकन करे।

20.7 उत्तर कुंजी

स्व-मूल्यांकन (क) 1. 1995 2. उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ 3. नमक 4. पति-पत्नी-संतान का रिश्ता 5. 1990 6. नारी 7. बुद्ध की मुस्कान 8. बुद्ध से 9. कुशीनगर 10 बुद्ध

स्व-मूल्यांकन (ख) 1. हृद्य 2. उम्मीद 3. मानवता 4. संवाद 5. जागृति 6. नाटकीय 7. छोटे शहरों 8. अकाल में सारस 9. पाठकों 10 त्रासदी

स्व-मूल्यांकन (ग) 1. सही 2. गलत 3. गलत 4. सही 5. सही 6. गलत 7. सही

20.8 पठनीय पुस्तकें

1. उत्तर कबीर और अन्य कविताएं - केदारनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
2. मेरे समय के शब्द - केदारनाथ सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1985
3. मेरे साक्षात्कार - केदारनाथ सिंह, किताब घर प्रकाशन,नई दिल्ली, 2008
4. आधुनिक कवि - विश्वम्भर मानव,लोकभारती प्रकाशन, 2008
5. मेरे समय के शब्द, केदारनाथ सिंह, राधाकृषण प्रकाशन, दिल्ली, 2016
6. केदारनाथ सिंह और उनका समय, निरंजन सहाय, मेधा पब्लिशिंग हाउस, 2013